लेखक द्वारा कुछ षब्द : यह टीका कैसे आपकी सहायता कर सकती है?

बाइबलीय अनुवाद एक बुद्धिसंगत और आत्मिक प्रक्रिया है जो प्राचीन प्रेरणा पाए हुए लेखक को इस तरह समझने की कोषिष करता है कि परमेष्वर का संदेष आज के समय में समझा और लागू किया जा सके।

आत्मिक प्रक्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण है पर इसे वर्णन करना कठिन है। इसमें परमेष्वर की षरण में जाना और परमेष्वर के प्रति खुल्लापन ज़रूरी है। भूख होना ज़रूरी है (1) परमेष्वर के लिए, (2) उन्हें जानने के लिए, (3) उनकी सेवा करने के लिए। इस प्रक्रिया में प्रार्थना, पाप स्वीकार करना और जीवन षैली में परिवर्तन के लिए तैयार होना षामिल है। बाइबल की अनुवाद प्रक्रिया के लिए पवित्र आत्मा का होना ज़रूरी है पर ईमानदार और भक्त मसीही कैसे बाइबल को अलग रीति से समझते हैं ये एक रहस्य है।

बुद्धिसंगत प्रक्रिया का वर्णन करना आसान है। हमें मूलपाठ में ही बने रहना चाहिए और बिना पक्षपात के और अपने व्यक्तिगत या कलीसियाई पृश्ठभूमी से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हम सभी एतिहासिक रूप से सषर्त है। हम में से कोई भी मन से बाहर के या स्वतंत्र अनुवादक नहीं है। यह टीका अनुवाद के तीन सिद्धान्त के साथ बुद्धिसंगत प्रक्रिया को सावधानी से प्रयोग करने के कार्य को प्रस्तुत करती है ताकी हम अपनी पृश्ठभूमी पर विजय पा सकें।

पहला सिद्धान्त

पहला सिद्धान्त यह है कि बाइबल की पुस्तक किस ऐतिहासिक घटना के समय लिखी गई उसे लिखिए और किस ऐतिहासिक घटना के कारण यह लिखी गई। वास्तविक लेखक का इसे लिखने का कोई उद्देष्य था और एक संदेष था जिसे वह बताना चाहते थे। मूलपाठ का अर्थ हमारे लिए कभी भी वो नहीं हो सकता जो अर्थ उसके वास्तविक, प्राचीन और प्रेरणा प्राप्त लेखक के लिए नहीं था। उनका उद्देष्य ही इसकी कुंजी है न कि हमरी ऐतिहासिक , भावनात्मक, सांसकृतिक, व्यक्तिगत या कलीसियाई आवष्यकता। यह लगातार दोहराया जाना चाहिए कि प्रत्येक बाइबलीय मूलपाठ का केवल एकमात्र अर्थ होता है। यह वही अर्थ है जिसे आज के समय के लिए पवित्र आत्म की अगुवाई में वास्तविक लेखक बताना चाहते थे। इस एक अर्थ की विभिन्न संस्कृतियों और परिस्थितियों में विभिन्न व्यवहारिकताऐं हो सकती हैं। पर यह तमाम व्यवहारिकताऐं वास्तविक लेखक के केंन्द्रीय सत्य से जुड़ी होनी चाहिए। इसी कारण बाइबल की हरेक पुस्तक की भूमिका प्रदान करने के उद्देष्य से यह पढ़ने में मार्गदर्षन देने वाली टीका बनाई गई है।

दूसरा सिद्धान्त

दूसरा सिद्धान्त यह है कि मूलपाठ के पूर्ण लेखन संदर्भ को पहचानना। बाइबल की सम्पूर्ण पुस्तकें एक ही लेख हैं। अनुवादक को कोई अधिकार नहीं कि वह किसी एक सत्य का प्रयोग करे और बाकी भाग को एसे ही छोड़ दे।एक भाग का अनुवाद करने से पहले हमें बाइबल की पूरी पुस्तक के उद्देष्य को समझना होगा। एक भाग जैसे– पाठ, अनुच्छेद, और आयत का कभी भी वह अर्थ नहीं हो सकता तो पूरे भाग का नहीं है। अनुवाद पूर्ण भाग का व्याख्यान करने के साथ षुरू होना चाहिए और फिर आयतों के अनुवाद तक पंहुचना चाहिए। इसलिए यह टीका बनाई गई ताकी विद्यार्थी प्रत्येक लिखित संदर्भ को समझ सके। अनुच्छेद और अध्याय प्रेरणा पाए हुए नहीं हैं पर वह हमारी सहायता करते हैं कि एका ही सोच या विशय के भाग को समझ सकें।

एक षब्द, मुहावरा, वाक्यांष या वाक्य का अनुवाद नहीं परन्तु सम्पूर्ण अनुच्छेद का अनुवाद करना ही लेखक के उद्देष्य को समझने की कुंजी है। अनुच्छेद षीर्शक पर आधारित होता है और अधिकतर ये केन्द्रीय विशय या षीर्शक वाक्य के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक अनुच्छेद के षब्द, मुहावरे, वाक्यांष और वाक्य उसके षीर्शक पर आधारित होते हैं। ये उसे सीमित करते हैं, बड़ाते हैं, व्याख्या करते हैं और उससे सवाल करते हैं। सही तरह से व्याख्या करने की कुंजी ये है कि प्रत्येक अनुच्छेद को लिखने के पिछे के लेखक के उद्देष्य को समझना जिनके जुड़ने से ही बाइबल का निर्माण हुआ है। ये अध्ययन टीका इसलिए रची गई ताकी विद्यार्थी विभिन्न अंग्रेजी अनुवादों की आपस में तुलना करके अनुवाद कर सके। इन अनुवादों का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि ये भिन्न प्रणालियों से रचे गए हैं।

1. यूनाईटेड़ बाइबल सोसाइटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती है। यह मूलपाठ नवीन बुद्धि जीवीयों द्वारा अनुच्छेदों में बाँटा गया। रोमियों की पत्री

2. न्यू कींग जेम्स वरषन हरेक षब्द का अनुवाद करके रचा गया जो कि यूनानी हस्त लेख परम्परा जिसे टक्सटस रेसिप्टस कहते हैं पर आधारित है। इसके अनुच्छेद बाकी अनुवादों की अपेक्षा बड़े हैं। यह बड़े अनुच्छेद विद्यार्थी की सहायता करते हैं कि वह जुड़े हुए षीर्शक को देख सके।

3. न्यू रिवाईस्ड़ स्टेन्ड़र्ड़ वरषन नवीनतम हरेक षब्द का अनुवाद है। यह दोनों अनुवादों के मध्य के बिन्दु पर केन्द्रीत है। विशय को पहचानने के लिए इसके अनुच्छेद काफी सहायक हैं।

4. टूड़ेस ईंग्लीस वरषन यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का षक्तियुक्त समानता का प्रकाषन है। इसमें बाईबल का इस तरह अनुवाद किया गया है कि आज के समय के अंग्रेज़ी बोलने वाले यूनानी मूलपाठ के अर्थ को समझ सकें। अधिकतर, विषेश रूप से सुसमाचारों में, अनुच्छेदों को इसमें वक्ता के आधार पर न कि विशय के आधार पर, ठीक उसी प्रकार जैसे कि एन आई वी में। अनुवाद के उद्देष्य के लिए यह सहायक नहीं है। यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि यू बी एस और टी ई वी एक ही प्रकाषन ने प्रकाषित किए हैं पर फिर भी इनके अनुच्छेद विभाजन में कितना अंतर है।

5. यरूषलेम बाइबल फ्रांस कैथलिक अनुवाद पर आधारित एक षक्तियुक्त समानता का अनुवाद है।

6. छापा हुआ मूलपाठ 1995 का न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल का उन्नत अनुवाद है जो कि हरेक षब्द का अनुवाद है। इसके अनुच्छेद में प्रत्येक आयत पर टिप्पणी की गई है।

तीसरा सिद्धान्त

तीसरा सिद्धान्त यह है कि बाइबल के विभिन्न अनुवादों को पढ़ें ताकी इसके विस्तरित अर्थ को समझा जा सके। साधारण तौर पर यूनानी षब्दों और मुहावरों को कई अर्थों में समझा जा सकता है। ये अनुवाद हमारी सहायता करते हैं कि हम यूनानी हस्त लेखों के उन विभिन्न अर्थों को समझ सकें। ये हमारे सिद्धान्तो को प्रभावित नहीं करते परन्तु हमारी सहायता करते हैं कि हम प्रेरणा पाए हुए वास्तविक लेखक द्वारा लिखे षब्दों का सही अर्थ समझ सकें।

टीका विद्यार्थी की सहायता करता है कि वह अपने अनुवाद की जांच कर सके। यह पूर्ण अनुवाद है एसा नहीं है पर यह जानकारी देने वाला और सोचने के लिए प्रेरणा देने वाला है। बाकी अनुवाद हमारी सहायता करते है ताकी हम संकुचित, हठधर्मी और जातीय विचारधारा के न हो जाऐं। अनुवादक के पास बहुत से प्रकार के अनुवाद के चुनाव होने चाहिए ताकी वह जान सके कि प्राचीन अनुवाद कितने अनेकार्थी हो सकते हैं। यह बहुत ही चौकं ा दने ेवाली बात है कि मसीहियों के बीच कितना थोड़ी सहमति है जो बाइबल को अपने सत्य का स्रोत मानते हैं।

इन सिद्धान्तों ने मेरी सहायता की है कि मैं प्रचीन अनुवादों से संघर्श कर सकूं और अपनी ऐतिहासिक षर्तों पर विजय पा सकूं। मेरी आषा यह है कि यह आपके लिए भी एक आषीश का कारण होगा।

बॉब यूट्ले
ईस्ट टेक्सास बापटिस्ट यूनिवर्सिटी

बाइबल अध्ययन के लिए दिषा निर्देष :
प्रमाणित कर सकने वाले सत्य की स्वयं खोज करना

क्या हम सच जान सकते हैं? यह कहाँ मिलता है? क्या इसे हम तर्कानुसार प्रमाणित कर सकते हैं। क्या कोई अनन्त षक्ति है? क्या ऐसा कोई परम सत्य हैं जो हमारे जीवन और संसार की अगुवाई कर सके? क्या जीवन का कोई अर्थ है? हम क्यों यहाँ पर हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? ये बुद्धिसंम्पन्न लोगों द्वारा घृणा किए गए वो सवाल हैं जिन्होंने षुरूवात से ही बुद्धिमान लोगों को भयभीत किया हुआ है (सभो. 1:13–18; 3:9–11)। मैं अपने जीवन के मध्य अंषों की व्यक्तिगत खोज को याद कर सकता हूँ। अपने ही परिवार के मुख्य सदस्यों की गवाही के कारण मैं युवा अवस्था में ही मसीही विष्वासी बन गया। जब मैं जवान हो गया तो अपने और संसार के बारे में प्रष्न भी बढ़ने लगे। साधारण संस्कृति और धार्मिक अनुश्ठान वह अर्थ नहीं ला सके जो मैंने पढ़े और अनुभव किए थे। यह इस अचेतन और कठोर संसार में मेरे दुविधा, खोज, अभिलाशा और आषाहीनता के अनुभव करने का समय था।

बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि इन सवालों का उत्तर उनके पास है पर खोज और मनन के बाद मैंने पाया कि उनके उत्तर इन बातों पर आधारित थे : 1) व्यक्तिगत तत्वज्ञान, 2) प्राचीन मिथ्या, 3) व्यक्तिगत अनुभव और 4) मनोवैज्ञानिक प्रवृति। मुझे जरूरत थी कुछ प्रमाणों, कुछ सबूतों, कुछ तर्काधार बातों की जिन पर मैं अपना संसारिक दृश्टिकोणों, अंषों का बना मेरा जीवन और मेरे जीने का कारण आधारित कर सकूं।

मैंने ये सब कुछ अपने बाइबल के अध्ययन में पाया। मैं इसकी विष्वासयोग्यता के प्रमाणों का खोजने लगा, जो मुझे इन जगहों पर मिले : 1) पुरातत्व विज्ञान के द्वारा बाइबल विष्वस्त ऐतिहासिकता का प्रमाण, 2) पूराने नियम की भविश्यवाणीयों की पूर्णता, 3) 1600 साल के बाइबल के लेखन काल में भी बाइबल के संदेष में एकता, 4) उन लोगों के व्यक्तिगत जीवन की गवाही जिनका जीवन बाइबल के सम्पर्क में आते ही पूरी तरह से बदल गया। विष्वास और मत विचार का मिश्रण होने के कारण मसीहत में वो काबलियत है कि वह मानव जीवन के पेंचीदा सवालों के जवाब दे सकती है। इसने न केवल प्रमाणिक चौखट प्रदान कर अपितु बाइबलीय विष्वास के प्रायोगिक चरण को भी प्रस्तुत किया जिसने मेरे अन्दर भावनात्मक आनन्द और दृढ़ता उत्पन्न की। मैंने सोचा कि मैंने अपने जीवन के मध्य अंष को पा लिया है–मसीह, जैसा कि पवित्र षास्त्र से समझा जा सकता है। यह एक विचारात्मक अनुभव और भवात्मक छुटकारा है। मैं अब भी उन धक्कों और दर्दों को याद करता हूँ जब एक ही कलीसिया और एक ही विचार रखने वाले विद्यालयों से इस पुस्तक के अलग–अलग अनुवादों की वकालत करते थे। बाइबल की प्रेरणा और विष्वस्तता को साबित करना अन्त नहीं परन्तु केवल षुरूवात है। मैं कैसे बाइबल को आधिकारिक और विष्वस्त समझने वाले लोगों द्वारा बाइबल के कठिन भागों के आपस में टकराने वाले अनुवादों को ग्रहण कर सकता हूँ या उनका तिरस्कार कर सकता हूँ?

यह कार्य मेरे जीवन का लक्ष्य और मेरे विष्वास का तीर्थस्थल बन गया। मैं जानता था कि मसीह पर विष्वास करने के कारण : 1) मेरे जीवन में अगम्य षान्ति और आनन्द था। मेरी संस्कृति के बीच मेरा दिमाग किसी पूर्णता की खोज में था। 2) संसारिक विवादास्पद धर्मों का हठधर्मीपन; और 3) जातीय घमण्ड़। प्राचीन लेख की प्रमाणिक अनुवाद की विधियों की तलाष ने मेरे अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और अनुभव के पक्षपात को समझने में मेरी देखरेख की। अधिकतर मैं अपने ही विचारों को थोपने के लिए बाइबल पढ़ा करता था। मैंने दूसरों पर प्रहार करने के लिए इसका प्रयोग हठधर्म के स्रोत के रूप किया और साथ ही अपनी असुरक्षा और अपर्याप्तता को प्रमाणित किया। इसे समझना मेरे लिए कितना दर्दनाक है।

मैं कभी भी स्थलू नही ं हो सकता परन्तु केवल बाइबल का एक अच्छा पाठक बन सकता हूँ। मैं अपने पक्षपात को पहचान कर और उनके अस्तित्व की मौजूदगी को समझ कर उसे सीमित कर सकता हूँ। मैं उनसे स्वतंत्र नहीं हूँ पर मैने अपनी कमज़ोरी का सामना कर लिया है। अधिकतर एक अनुवादक ही बाइबल का सबसे बुरा षत्रु होता है।

मैं अपनी पूर्वधारणा की सूची जो बाइबल को पढ़ने के समय मेरे मन में थी उसे प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकी आप, पाठक, स्वयं को जांच सकें।

(1) पूर्वधारणा

क) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल एक सच्चे परमेष्वर की स्वयं को प्रकट करने के लिए एक स्वयं प्रकाषन है। इसलिए इसका अनुवाद इसके वास्तविक ईष्वरीय लेखक (पवित्रात्मा) के उद्देष्य के प्रकाष में तथा मानव लेखक की ऐतिहासिक परिस्थिति में होना चाहिए।

ख) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल सामान्य व्यक्ति (सभी मनुश्यों) के लिए लिखी गई है। परमेष्वर ने हमसे स्पश्ट बातें करने के लिए स्वयं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ढ़ाल लिया। परमेष्वर कभी भी सत्य नहीं छिपाते पर चाहते हैं कि हम उसे जानें। इसलिए उसे उसके दिन के प्रकाष में ही अनुवाद करना चाहिए न कि हमारे। बाइबल का हमारे लिए वह अर्थ नहीं होना चाहिए जो उसके सबसे पहले पढ़ने और सुनने वालों के लिए नहीं था। इसे साधारण मानवीय दिमाग द्वारा समझा जा सकता है क्योंकि यह साधारण मनुश्य की भाशा और विधि में लिखी गई है।

ग) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल में एक संदेष और इसका एक उद्देष्य है। यह कभी भी स्वयं का विरोध नहीं करती यद्धपि इसमें कठिन लिखित भाग हैं। इसलिए बाइबल का उत्तम अनुवादक बाइबल स्वयं है।

घ) मैं विष्वास करत ा हूँ कि भविश्यवाणीयों को छोड़ सभी भागों का एक ही अर्थ है जो प्रेरणा पाए हुए और वास्तविक लेखक केउद्देष्य पर आधारित है। हम कभी भी वस्तविक लेखक की सम्पूर्ण मनसा को नहीं जान सकते पर उस ओर जाने के कुछ निर्देष हैं।

1) संदेष को पहुँचाने के लिए किस तरह की लेखन विधि का प्रयोग किया गया है।
2) ऐतिहासिक घटना या विषेश घटना जिसने लेख को जन्म दिया।
3) सम्पूर्ण पुस्तक और लिखित साहित्य भाग का साहित्य सम्बन्धी संदर्भ।
4) मूलपाठ रचनातंत्र जो साहित्य भाग जो सम्पूर्ण संदेष का वर्णन करता है।
5) संदेष पहुँचाने के लिए विषेश व्याकरण का प्रयोग किया गया है।
6) संदेष को प्रस्तुत करने के लिए किन षब्दों का प्रयोग किया गया है।
7) सदृष्य लेख।

इन सभी बातों का अध्ययन करना लेख के अध्ययन करने का साधन है। इससे पहले कि मैं अपनी बाइबल पढ़ने की अच्छी विधि बताऊँ, मैं आज कल प्रयोग में लाई जाने वाली गलत विधियों की चर्चा करना चाहता हूँ जिन्होंने अनुवाद में भिन्नता उत्पन्न कर दी है और इन्हें प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

(2) गलत विधियाँ

1. बाइबल के सम्पूर्ण साहित्य संदर्भ को छोड़ एक वाक्य, वाक्यांष, या षब्द को सत्य वाक्य के रूप में प्रयोग करना जो लेखक और पूरे संदर्भ का उद्देष्य न हो। इसे ''प्रमाणित–मूलपाठ'' कहते हैं।

2. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और काल्पनिक इतिहास जिसे मूलपाठ या तो थोड़ा या बिलकुल भी प्रमाणित नहीं करता।

3. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और उसे सुबह के अख़बार के समान पढ़ना जैसे कि वह प्राथमिक रूप से नए ज़माने के मसीहियों के लिए लिखी गई हो।

4. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और रूपक कथा द्वारा मूलपाठ को तत्वज्ञान और धर्मषिक्षा के रूप में संदेष को प्रकट करना जो पहले पाठक और लेखक के उद्देष्य से बिलकुल मेल न खाता हो।

5. वास्तविक संदेष को छोड़कर अपनी ही धर्मषिक्षा, सिद्धान्त और वर्तमान घटनाओं के बारे में सीखना जो वास्तविक लेखक और दिए गए संदेष से मेल न खाए। यह बात तब होती है जब वक्ता अपने अधिकार को साबित करने के लिए बाइबल पढ़ता है। इसे ''पाठक के प्रतिउत्तर'' के रूप में जाना जाता है (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)।

प्रत्येक मानव रचित लेखों में तीन अंष पाए जाते हैं।

वास्तविक लेखक
का उद्देष्य
लिखित मूलपाठ
वास्तविक प्राप्तकर्ता
रोमियों की पत्री

पीछलि अध्ययन प्रणाली तीन में से एक बात पर केन्द्रीत थी। सही रूप से अतुल्य प्रेरणात्मक बाइबल को प्रमाणित करूँ तो नवीनतम रेखा चित्र अधिक सही है।
पवित्रात्मा
हस्तलेख
वर्गभेद
बाद के विष्वासी
वास्तविक लेखक
का उद्देष्य
लिखित मूलपाठ
वास्तविक प्राप्तकर्ता

सच्चाई में ये तीनों ही अंष अनुवाद प्रणाली में षामिल होना चाहिए। प्रमाणिकता के उद्देष्य से मेरे अनुवाद षुरू के दो अंषों पर केन्द्रीत होते हैं : वास्तविक लेखक और मूलपाठ। मैं उन दुरूपयोगों का विराध कर रहा हूँ जिन्हें मैंने देखा है। 1) मूलपाठ को रूपक कहानियों और आत्मिक बातों में बदलना। 2) पाठक का प्रतिउत्तर (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)। दुरूपयोग किसी भी स्तर पर हो सकता है। हमें हमेषा अपने उद्देष्य, पक्ष, तरीके और व्यवहारिकता को जाँचना चाहिए। इन्हें हम कैसे जाँचें अगर अनुवाद करने की कोई सीमा न हो? वास्तविक लेखक और मूलपाठ का उद्देष्य ही मुझे अनुवाद की सीमा रखने में सहायता करता है। इन गलत अध्ययन विधियों के प्रकाष में अच्छे बाइबल अध्ययन और अनुवाद के कौन से तरीके हो सकते हैं जो प्रमाणिकता और एकजुटता लाते हैं।

(3) अच्छे बाइबल अध्ययन के सम्भव तरीके

यहाँ पर मैं विषेश बाइबल अनुवाद के बारे में चर्चा नहीं कर रहा पर सामान्य अनुवाद सिद्धान्त के बारे में बात कर रहा हूँ जो सभी प्रकार के साहित्य के अनुवाद में सहायता कर सकता है। विभिन्न प्रकार के लेखों का अनुवाद कैसे करना है इसके लिए गॉर्ड़न फी और ड़गलस स्ट्राउट की पुस्तक ''हाऊ टू रीड़ बाईबल फॉर ऑल इट्स वर्थ'' उत्तम है।

मेरा तरीका यह है कि षुरूवात में पवित्रात्मा को कार्य करने दें कि वह साहित्य के चार अध्ययन क्रमों में इसे समझने में आपकी सहायता करे। यह पवित्रात्मा, मूलपाठ और पाठक को प्राथमिक बनाता है न कि अप्रधान। यह पाठक की भी सहायता करता है कि वह पूरी तरह से टीका पर आश्रीत न हो जाए। मैंने एसा कहते हुए सुना है कि ''बाइबल टीका पर रोषनी ड़ालती है।'' इसका अर्थ यह नहीं कि मैं अध्ययन सहायक सामग्री की आलोचना कर रहा हूँ पर मैं यह विनती करना चाहता हूँ कि उनका प्रयोग सही समय पर करें।

हममें अपने अनुवाद को मूलपाठ से प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। पाँच क्षेत्र सीमित प्रमाणिकता प्रदान करते हैं।

1. वास्तविक लेखक की

क) ऐतिहासिक पृश्ठभूमी
ख) साहित्य संदर्भ

2. वास्तविक लेखक का चुनाव

क) व्याकरण रचना
रोमियों की पत्री

ख) समकालीन कार्य प्रयोग
ग) लेखन विधि

3. सही की हमारी पहचान

क) सदृष्य सहित्य

हममें अपने अनुवाद के पीछे के कारण और स्वभाविकता को प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। विष्वास और प्रयोग के लिए हमारे पास बाइबल ही एक मात्र स्रोत है। दुःख की बात है कि मसीह लोग इसकी षिक्षा और प्रमाणिकता का इन्कार करते हैं। यह स्वयं को ही हराने की बात है कि विष्वासी बाइबल को प्रेरणा पाया हुआ कहते हैं पर इसकी षिक्षाओं और उसकी मांग का इन्कार करते हैं।

चार अध्ययन कालचक्र जो कि अनुवाद के कार्य पर प्रकाष ड़ालने के लिए रचे गए हैं।

1. पहला अध्ययन कालचक्र

क) एक ही बार में पुस्तक को पढ़ना। फिर उसे दूसरे अनुवाद में पढ़ना।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) पूरे लेख के केन्द्रीय उद्देष्य की खोज कीजिए। केन्द्रीय विशय को पहचानिए।

ग) साहित्य भाग को अलग कीजिए जैसे– अध्याय, अनुच्छेद, वाक्य जो स्पश्ट रूप से केन्द्रीय उद्देष्य या विशय को प्रकट करता हो।

घ) विषिश्ट साहित्य लेखन प्रणाली को पहचानिए।

– पूराना नियम
(1) इब्रानी वृत्तान्त
(2) इब्रानी काव्य (बुद्धि साहित्य, भजन संहिता)
(3) इब्रानी भविश्यवाणी (गध्य, काव्य)
(4) व्यवस्था नियम

– नया नियम
(1) वृ त्तान्त (सुसमाचार, प्रेरित)
(2) दृश्टान्त (सुसमाचार)
(3) पत्र
(4) भविश्यसूचक साहित्य

2. दूसरा अध्ययन कालचक्र

क) मुख्य षीर्शक या विशय को पहचानने के उद्देष्य से पूरी पुस्तक को फिर से पढ़ें।

ख) मुख्य षीर्शक को लिखिए और उसकी लिखित सामग्री को साधारण वाक्यों में लिखिए।

ग) अपने उद्देष्य वाक्य को जाँचीए और रूपरेखा को बढ़ाइए।

3. तीसरा अध्ययन कालचक्र

क) पूरी पुस्तक को फिर से पढ़िए और उसके ऐतिहासिक पृश्ठाधार और लिखने के पीछे की परिस्थितियों को पहचानने की कोषीष कीजिए।

ख) ऐतिहासिक चीज़ें जो पुस्तक में लिखी गई हैं उन्हें लिखिए।
– लेखक
– तारीख
– प्राप्तकर्ता
– लिखने का कारण
– लिखने के उद्देष्य का सांस्कृतिक पृश्ठाधार।
– ऐतिहासिक लोगों और घटनाओं के बारे में लेख।

ग) जिस पुस्तक का आप अनुवाद करना चाहते हैं उसकी रूपरेखा को अनुच्छेद के रूप मे विस्तरित कीजिए। साहित्य लेख को हमेषा पहचानिए। ये षायद बहुत से अनुच्छेद और अध्याय हो सकता है। यह आपकी सहायता करता है कि आप वास्तविक लेखक के उद्देष्य और लेखन प्रणाली को समझ सकें।

घ) अध्ययन सामग्री की सहायता से ऐतिहासिक पृश्ठाधार को जाँचिए।

4. चौथा अध्ययन कालचक्र

क) विभिन्न अनुवादों में साहित्य भाग को बार – बार पढ़ें।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) साहित्य और व्याकरण की संरचना को पहचानिए।
– दोहराए गए मुहावरे, इफि.1:6, 12, 13
– दोहराए गए व्याकरण संरचना, रोमियों8:31
– सामान्य विचार अवधारणा में विरोध।

ग) निम्नलिखित चीज़ों की सूची बनाईए।
– अर्थपूर्ण बातें
– असाधारण बातें
– महत्वपू र्ण व्याकरण सरं चना
– खास तौर पर कठिन षब्द, वाक्यांष और वाक्य।

घ) सदृष्य लेख की खोज कीजिए
– निम्नलिखित के द्वारा अपने विशय के स्पश्ट षिक्षा देने वाले लेख की खोज कीजिए :
(1) ''यथाक्रम धर्मषास्त्र'' की पुस्तकें
(2) परस्पर सम्बन्ध वाली बाइबल
(3) अनुक्रमणिका
– अपने ही विशय में विरोधाभासी जोड़े को खोज़ें। बहुत से बाइबलीय सत्य द्वंद्वात्मक जोड़े में आते हैं, विभिन्न कलीसियाई जातीय विवाद आधे बाइबलीय परेषानियों के साहित्य को साबित करने के कारण आते हैं। सम्पूर्ण बाइबल प्रेरणा द्वारा रची गई है हमें इसक` पू र्ण संदेष को तलाषना है ताकी अनुवाद में वचनों का तौल बराबर हो।
– एक ही पुस्तक, लेखक और एक ही प्रकार के साहित्य लेख में सदृष्यता खोजिए, बाइबल ही अपनी सबसे अच्छी अनुवादक है क्योंकि इसका एक ही लेखक है, पवित्रात्मा।
ङ) अपनी ऐतिहासिक और घटना क्रम की परख को जाँचने के लिए अध्ययन के लिए सहायक सामग्री को प्रयोग करें।
– अध्ययन सहायक बाइबल
– बाइबल के षब्दकोश, विष्व कोश, गुटिका
– बाइबल की भूमीका
– बाइबल की टीका (अपने अध्ययन के इस बिन्दु पर विष्वासियों के पुर्व और वर्तमान समूह को अनुमति दें कि वह आपके व्यक्तिगत अध्ययन को ठीक कर सकें।)

(4) बाइबलीय अनुवाद का व्यवहारिकरण

इस बिन्दु पर हम व्यवहारिकरण की ओर मुड़ते हैं। आपने साहित्य को इसके वास्तविक पृश्ठाधार में समझने के लिए समय लगाया है अब इसे अपने जीवन और संस्कृति में लागु करने की आवष्यकता है। मैं बाइबल के अधिकार का इस प्रकार वर्णन करता हूँ ''बाइबल के वास्तविक लेखक उनके समय में क्या कहना चाहते थे उसे समझना और उस सत्य को अपने दिनों में लागु करना''।

समय और तर्क के आधार पर वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने के बाद किए गए अनुवाद के बाद उसे व्यवहार में लाना भी जरूरी है। हम बाइबल के भाग को तब तक अपने दिनों में लागु नहीं कर सकते जब तक हम यह नहीं जानतें कि उसके वास्तविक दिनों में उसका क्या अर्थ था। बाइबल के भाग का कभी भी वो अर्थ नहीं निकलना चाहिए जो उसका अर्थ कभी नहीं था।

आपकी विवर्णात्मक रूपरेखा से अनुच्छेद तक का स्तर (तीसरा अध्ययन कालचक्र) आपकी अगुवाई करेगा। व्यवहारिकरण अनुच्छेद स्तर पर होना चाहिए न कि षब्द स्तर पर। षब्द, वाक्यांष और वाक्य का अर्थ केवल संदर्भ में है। अनुवाद प्रक्रिया में प्रेरणा पाया हुआ केवल एक ही व्यक्ति षामिल है और वो है वास्तविक लेखक। हम पवित्रात्मा की ज्योति में केवल उनका अनुसरण करते हैं। यह ज्योति प्रेरणा नहीं है। ''यहोवा यूँ कहते हैं'' कहने के लिए हमे वास्तविक लेखक के उद्देष्य के साथ बने रहना पड़ेगा। व्यवहारिकता का पूरे लेख के सामान्य उद्देष्य, विषेश लेख साहित्य भाग और अनुच्छेद स्तर की विचार उन्नति के साथ सम्बन्ध होना चाहिए।

हमारे प्रतिदिन की घटनाऐं अनुवाद न करें परन्तु बाइबल को बोलने दें। यह हमसे साहित्य में से सिद्धान्त निकालने की माँग करेगा। यह तभी प्रमाणित है जब साहित्य सिद्धान्त का समर्थन करता हो। दुर्भाग्यवष अधिकतर हमारे सिद्धान्त हमारे सिद्धान्त होते हैं न कि साहित्य के सिद्धान्त।

जब हम बाइबल का व्यवहारिकता में लातें हैं तो यह याद रखना बहुत ही आवष्यक है कि भविश्यद्वाणी को छोड़ बाकी सभी भागों का केवल एकमात्र अर्थ होता है। अर्थ इसके वास्तविक लेखक के उद्देष्य से सम्बन्धित है जब उन्होंने उस समय की जरूरत और मुसीबतों के लिए लिखा था। इसके एक ही अर्थ से कई व्यवहारिक बातें निकाली जा सकती हैं। व्यवहारिकता लोगों की आवष्यकता के अनुसार हो सकती है पर वास्तविक लेखक के अर्थ से सम्बन्धित होनी चाहिए।

(5) अनुवाद का आत्मिक भाव

अब तक मैं अनुवाद और व्यवहारिकता के तार्किक और साहित्यीक प्रक्रिया के विशय मे चर्चा कर रहा था। पर अब मैं थोड़े षब्दों में अनुवाद के आत्मिक भाव की चर्चा करना चाहता हूँ। निम्नलिखित जाँच सूची मेरे लिए सहायक सिद्ध हुई :

1. पवित्रात्मा की सहायता पाने के लिए प्रार्थना करो (1कुरि.1:26–2:16)

2. व्यक्तिगत क्षमा के लिए और प्रकट पापों के लिए प्रार्थना करो (1यूह.1:9)

3. परमेष्वर को जानने के लिए अत्यधिक इच्छा के लिए प्रार्थना करो (भ.सं.19:7–14; 42:1...; 119:1...)

4. अगर कोई नया प्रकाष मिला है तो तुरन्त उसे अपने जीवन में लागु करो।

5. दीन और षिक्षा पाने को तैयार रहो।

तर्क प्रक्रिया और पवित्रात्मा की अगुवाई में समान तौल बनाए रखना बहुत कठिन है। निम्नलिखित लेखों ने इसमें मेरी काफी सहायता की है :

क) स्क्रीपचर टवीस्टींग (पृश्ठ 17–18) – जेमस डबल्यू सरी
केवल आत्मिक तौर पर उन्नत ही नहीं पर परमेष्वर के लागों के दिमाग में भी ज्योति आती है। बाइबलिय मसीहत में कोई गुरू स्तर या प्रकाष पाए हुए मात्र लोग नहीं हैं जिनसे सिद्ध अनुवाद मिलता हो। जब पवित्रात्मा बुद्धि, ज्ञान और आत्मा की

परख का वरदान देती है तो वह इन्हीं वरदान पाए हुए मसीहियों को ही वचन के अधिकार पाए हुए मात्र अनुवादक के रूप में नहीं रहने देती। यह परमेष्वर के लोगों पर निर्भर करता है कि वह बाइबल जो की सर्वाधिकारी है से सिखें, जाँचें और परखें और साथ ही उनसे भी जिन्हें विषेश वरदान मिले हैं। परिकल्पना को पूरी पुस्तक के साराषं के तौर पर मैं यूँ कहता हूँ कि ''बाइबल पूरी मानव जाती के लिए परमेष्वर का सत्य प्रकाष है, जिस किसी विशय पर ये बात करती है उन सभी पर इसका सर्वाधिकार है, यह पूरी तरह से रहस्य नहीं है तथा हरेक संस्कृति के सामान्य लोग इसे समझ सकते हैं।''

ख) प्रोटेस्टेन्ट बिबलिकल इन्टरप्रटेषन (पृश्ठ 75) :

केरिगार्ड़ के अनुसार बाइबल का व्याकरण, षब्द–संग्रह, और ऐतिहासिक अध्ययन आवष्यक है परन्तु सबसे पहले सच्चा बाइबल अध्ययन जरूरी है। ''बाइबल को परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने हृदय को मुँह में रखकर पढ़े, पूर्ण तैयारी के साथ, पाने की आषा से, और परमेष्वर से बात करने के उद्देष्य से पढ़े। बाइबल को बिना विचार, असावधानी, पढ़ाई के उद्देष्य, व्यवसायीक तौर पर पढ़ना इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ना नहीं है। जब व्यक्ति इसे प्रेम पत्र के रूप में पढ़ता है तो वह इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ता है।''

ग) एच. एच. रौले की द रैवलेषन ऑफ द बाइबल (पृश्ठ 19) :

''बाइबल को केवल बुद्धिमता से समझना, चाहे वह पूरा ही क्यों न हो, इसके सम्पूर्ण खज़ा नों को नहीं समझ को समा नहीं सकता। यह एसी समझ को तिरस्कार नहीं कर रहा क्योंकि पूर्ण समझ होना जरूरी है। यदि इसे पूरा होना है तो ये हमें बाइबल के आत्मिक खज़ाने के लिए आत्मिक समझ की ओर ले जाने वाला होना चाहिए। इसके लिए बुद्धिमता की जागरूकता से अधिक आत्मिक समझ की जरूरत है। आत्मिक चीज़ो को आत्मिक रूप से ही पहचानना चाहिए, और बाइबल के विद्यार्थी को आत्मिक ग्रहणषील होना चाहिए, परमेष्वर को पाने के लिए खाजे ी होना चाहिए ताकी वह स्वयं को परमेष्वर में लीन कर सके, यदि वह अपनी वैज्ञानिक समझ से ऊपर इस सबसे महान पुस्तक के समृद्ध उत्तराधिकार को पाना चाहता है।''

(5) इस टीका की विधि

अध्ययन सहायक टीका निम्नलिखित तरह से अनुवाद की प्रक्रिया में आपकी सहायता करने के लिए बनाई गई हैः

1. छोटी सी ऐतिहासिक रूपरेखा प्रत्येक पुस्तक की भूमीका बान्धती है। ''अध्ययन का कालचक्र तीन'' पूरा करने के बाद आप इस जानकारी को जाँचीए।

2. संदर्भ पर प्रकाषन प्रत्येक अध्याय की षुरूवात में पाया जाता है। यह आपकी सहायता करेगा ताकी आप साहित्य भाग की बनावट देख सकें।

3. हरेक अध्याय और मुख्य साहित्य भाग की षुरूवात में अनुच्छेद विभाजन और उनका व्याख्यात्मक षीर्शक विभिन्न अनुवादों से दिया गया है :

क) यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती पुनः प्रकाषित (यू बी एस)

ख) न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल, 1995 में पुनः उन्नत (एन ए एस बी)

ग) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी)

□) न्यू रिवाईस्ड़ स्टेन्ड़र्ड़ वरषन (एन आर एस वी)

ङ) टडू ेस ईंग्लीस वरषन (टी इ वी)?

च) यरूषलेम बाइबल (जे बी)

अनुच्छेद विभाजन प्रेरणा पाया हुआ नहीं है। इनका निष्चय संदर्भ से करना चाहिए। अलग अलग प्रकार की अनुवाद प्रणाली और धार्मिक विचार की नवीनतम अनुवादों की आपस में तुलना करने के द्वारा हम वास्तविक लेखक के विचारों के ढ़ाँचे को समझ सकते हैं। हरेक अनुच्छेद का एक मुख्य सच होता है। इसे ''षीर्शक वाक्य'' या ''साहित्य का केन्द्रीय विचार'' कहते हैं। ये एकता पूर्ण विचार ऐतिहासिक, व्याकरात्मक अनुवाद की कुजीं है। अनुच्छेद से कम में किसी को भी प्रचार या षिक्षा नहीं देनी चाहिए। यह भी याद रखें कि हरेक अनुच्छेद अपने आस पास के अनुच्छेदों से जुड़ा होता है। इसी लिए पूरी पुस्तक की अनुच्छेद स्तर की रूपरेखा इतनी महत्वपूर्ण है। हमें वास्तविक लेखक के विशय का अनुसरण करना जरूरी है।

4. बॉब के लेख प्रत्येक आयत का अनुवाद है। ये हम पर दवाब ड़ालता है कि हम वास्तविक लेखक के विचारों का अनुसरण कर सकें। ये लेख विभिन्न क्षेत्रों से जानकारी प्रदान करता है :

1) साहित्य संदर्भ
2) ऐतिहासिक, सांस्कृतिक प्रकाषन
3) व्याकरण की जानकारी
4) षब्दों का अध्ययन
5) सदृष्य साहित्य

5. टीका के किसी – किसी भाग में न्यू अमेरिकन स्टेंड़र्ड़ वरषन की जगह अन्य अनुवादों का प्रयोग किया गया है। क) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी), जिसमें ''टैक्सटस रिसीत्टस'' के साहित्यीक हस्त लेख का अनुसरण किया गया है।

ख) न्यू रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन(एन आर एस वी), जो नेषनल काऊँसिल ऑफ चर्चचिस के रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन का षब्द प्रति षब्द अनुवाद है।

ग) टूड़ेस ईंग्लीस वरषन(टी इ वी), अमेरिकन बाइबल सोसाइटी का षक्तियुक्त समानता अनुवाद है।

घ.) यरूषलेम बाइबल (जे बी), फ्रेन्च कैथोलिक षक्तियुक्त समानता अनुवाद का अंग्रेज़ी अनुवाद।

6. जो लोग यूनानी नहीं पढ़ सकते, अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवादों की तुलना उनकी सहायता कर सकती है कि वे साहित्य की समस्या को पहचान सकें।

क) हस्तलिखित अन्तर
ख) वैकल्पिक षब्दार्थ
ग) व्याकरण तौर पर कठिन साहित्य और ढ़ाँचा
घ) संदिग्ध साहित्य
यूँ तो अंग्रेज़ी अनुवाद इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, पर वे उन क्षेत्रों पर लक्ष्य बनाकर गहरी और ध्यान पूर्वक अध्ययन करने में सहायता करते हैं।

7. हरेक अध्याय के अन्त में चर्चा के लिए सम्बन्धित प्रष्न दिए गए है जो कि अध्याय के मुख्य अनुवाद के विशय को लक्ष्य बनाकर पूछे गए हैं।

प्रारम्भिक भाषण

1. सामान्य तौर पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की परिभाषा

क. ईश्वरत्व के नाम

1. प्रभु (यहोवा/कुरियोस)
2. परमेश्वर (ऐलोहिम/थियोस)
3. मनुष्य का पुत्र
4. परमेश्वर का पुत्र
5. उद्धारकर्ता

ख. मूल पाठों और अनुवादों के नाम

1. मेसोरिटिक मूल पाठ
2. सेप्तति अनुवाद
3. तरगुम अनुवाद
4. लातीनी अनुवाद
5. पेशित्ता अनुवाद
6. मृत्त सागर कुंडल पत्र

ग. शब्दों की सूची (परिशेषिका 1 देखें)

घ. मूल पाठ समालोचना (परिशेषिका 2 देखें)

ङ. युनानी व्याकरण के शब्द जो व्याख्या को प्रभावित करते हैं (परिशेषिका 3 देखें)।

2. पहली षताब्दी के भुमध्य संसार का मूल मानचित्र

क. जल के स्त्रोतों के नाम

1. भूमध्य सागर
2. काला सागर
3. ऐड्रियाटिक सागर
4. ऐजियन सागर
5. नील नदी
6. यरदन नदी

ख. नये नियम में वर्णित देशों के नाम

1. मिस्त्र
2. यहूदीया
3. सामरिया
4. देकापुलिस
11. पंफ्युलिया
12. लिस्या
13. आसिया
14. बिथाइनिया

5. गलील
6. सिरिया
7. फिनिके
8. किलिकिया
9. कप्पादोसिया
10. गलातिया
15. पुंतुस
16. आखिया
17. मकिदुनिया
18. इलिरिकम
19. इटली

ग. नये नियम में वर्णित द्विपों के नाम

1. साइप्रस
2. क्रिते
3. सिलिसी
4. मालटा

घ. प्रमुख नगर

1. सिकंदरिया
2. मेम्फिस
3. यरूशलेम
4. अन्ताकिया
5. तरसुस
6. इफिसुस
7. पिरगमुन
8. कुरिन्थिुस
9. ऐथेंस
10. रोम
11. थिस्सलुनीकिया

मत्ती का परिचय

1. प्राक्कथन

क) धर्म सुधारिकरण (रिफोरमेसन) के समय तक मत्ती रचित सुसाचार को सबसे पहले रचे हुए सुसाचार की पुस्तक समझा जाता था। आज भी रोमन केथौलिक कलीसिया इसे मानती है।

ख) पहली दो षताब्दीयों की कलीसियाओं द्वारा सिखाने के लिए और लिटरजी में सबसे अधिक प्रतिलिपि बनाई जाने वाली, सबसे अधिक उद्धृत की जाने वाली, और सबसे अधिक उपयोग किया गया सुसमाचार है।

ग) विल्यिम बार्क्ले, ''द फस्ट टू गॉस्पलस'' पृश्ठ.19ए के अनुसार, ''जब हम मत्ती की ओर मुढतें हैं, तब हम उस पुस्तक की और मुढतें हैं जिसे हम मसीही विश्वास की सबसे मुख्य एकल दस्तावेज कह सकतें हैं क्योंकि इसमें हमें यीशु मसीह के जीवन और शिक्षाओं की पूर्ण और सबसे अधिक क्रमानुसार घटनाओं को पातें हैं।'' यह इसलिए है क्योंकि इसमें यीशु की शिक्षाओं का विकास विषयानुसार किया गया है। यह नये विश्वासियों को (यहुदी और युनानी) नासरत के यीशु की जीवन और शिक्षाओं के बारे में सिखाने के लिए उपयोग किया जाता था।

घ) यह पुरानी और नयी वाचाओं के बीच और यहुदी और अन्यजाति विश्वासियों के बीच एक पुल का निमार्ण करता है। इसने पुराने नियम को एक पूर्णता के तौर पर उपयोग किया हैं जैसे प्रेरितों के आरम्भिक प्रचार भी कहते हैं। जिसे *करिग्मा* कहते हैं। इसमें पुराने नियम को पचास से भी अधिक बार उद्घृत किया है। और उसकी ओर संकेत और भी अधिक बार किया गया है। यहोवा के लिए उपयोग किये गये अधिकतम शिषर्क और उदाहरणों को यीशु के लिए उपयोग किया गया है।

इसी कारण मत्ती रचित सुसमाचार का उद्देश्य सुसमाचार का प्रचार करना और चेलापन है जो महान आज्ञा के दो पहलु हैं। (28:19–20)

1) ये यहूदियों को परिर्वतित करने में सहायक थे, उन्हें यीशु के जीवन और शिक्षाओं के बारे में सुचित करें।

2) ये विश्वास करने वाले यहुदियों और अन्य जातियों को चेले बनाने में सहायक थे कि एक मसीह होने के कारण वे कैसे जीयें।

2. लेखक

क) हालांकि आरम्भिक युनानी नये नियम की प्रतिलिपियों में 'मत्ती के अनुसार' का नाम पाया जाता है पर तब भी इस पुस्तक का लेखक अनजान है।

ख) प्ररंभिक कलीसिया की सभी परम्पराओं के अनुसार मत्ती (जिसे लेवी के नाम से भी जाना जाता है, मरकुस 2:14, लूका 5:27,29), चुंगी लेने वाला (मत्ती 9:9; 10:3) और यीशु के चेले ने यह सुसमाचार लिखा है।

ग) मत्ती, मरकुस और लूका अद्भुत रीति से एक समान है। (सहदर्शी का अर्थ 'एक साथ देखना')

1) वे पुराने नियम के वचन के अंशों के रूप पर सहमत होते दिखते हैं। जो ना तो मेसोरिटिक मूल पाठ और ना की सेप्तति मूल पाठ में पाये जाते हैं।

2) वे अनेक बार यीशु का वर्णन असमान व्याकरण के निर्माण से करतें है, और साथ ही कुछ कम उपयोग होने वाले युनानी शब्दों से भी।

3) वे अनेक बार एक समान युनानी शब्दों के वाक्य खण्ड़ और वाक्य का भी प्रयोग करतें है।

4) तो हम देख सकते हैं कि इनके बीच मे साहित्यिक लेन देन हुआ है।

घ) मत्ती, मरकुस और लूका के बीच सम्बन्ध के विषय मे अनेक सिद्धान्त विकसित हुए हैं। (इन्हें सहदर्शी सुसमाचार कहतें हैं)

1) गुमनाम कलीसिया कि परम्परा यह है कि मत्ती (लेवी), कर लेने वाला और यीशु का चेला था, जिसने यह सुसमाचार लिखा है। रिफोरमेसन के समय तक प्रेरित मत्ती को गुमनाम रूप से इसका लेखक समझा जाता था। सन् 1776 के करीब ए ई लेसीगं (फिर 1818 मे गिसेलर) ने सहदर्शी सुसमाचार के विकास में एक मौखिक स्तर को सिद्धांतित किया ।

उन्होंने दावा किया कि वे सभी आरम्भिक मौखिक परम्पराओं पर निर्भर थे जिन्हें उन लेखकों ने अपने विषेश चोतागणों के लिए परिर्वतित किया

क) मत्ती : यहुदी

ख) मरकुस : रोमी

ग) लूका : अन्य जाति

2) हर एक सुसमाचार मसीह के अलग भुगोलिक केन्द्र से सम्बन्धित था।

क) मत्ती : अन्ताकिया, सिरिया या यहूदीया

ख) मरकुस : रोम, इटली

ग) लूका : कैसरिया, पलिशितिन

घ) युहन्ना : इफुसुस, आसिया माइनर

3) आरम्भिक 19वीं षताब्दि में जे जे ग्रेसबेक ने यह सिद्धान्त निकाला कि मत्ती और लूका ने यीशु के जीवन की अलग अलग घटनाऐं लिखी हैं और वे बिलकुल एक दुसरे पर निर्भर नहीं हैं। मरकुस ने संक्षिप्त मे अपना सुसमाचार लिखा, ताकि वह इन दोनों के घटनाओं के वर्णन के बीच मध्यस्ता करे।

4) प्रारम्भिक 20वीं षताब्दी में एच. जे. होलस्मेन ने सिद्धान्त निकाला कि मरकुस सुसमाचार को सबसे पहले लिखने वाला व्यक्ति था और मत्ती और लूका ने उसके द्वारा निर्मित सुसमाचार का प्रयोग किया था, साथ ही उन्होंने एक अलग दस्तावेज का प्रयोग किया जिसमें यीशु के कथन पाये जाते थे जिसे क्यू कहा जाता है। (जर्मन क्यूले का अर्थ चोत है) इस सिद्धान्त का नाम 'दो चोत सिद्धान्त' रखा गया (सन् 1832 मे फ्रेडरिक स्लेइरमाश्र के द्वारा प्रस्तावित किया गया था)।

5) कुछ समय बाद बि. एच .सट्रिटर ने रूपांतरित 'दो चोत सिद्धान्त' को चार चोत सिद्धान्त का रूप दिया, जिसमें प्रोटो लुक (प्रारम्भिक लुका) और मरकुस और क्यू चोत शामिल हैं।

6) ऊपर दिये गये सहदर्शी सुसमाचार के निमार्ण के सिद्धान्त केवल परिकल्पनायें हैं। ना ही क्यू चोत या प्रारम्भिक लूका के बारे मे कोइ ऐतिहासिक या वास्तविक हस्तलिपि के प्रमाण हैं। आधुनिक विद्वानों में यह कोई नहीं जानता कि किस प्रकार सुसमाचारों का विकास हुआ या किसनें उन्हें लिखा है (यह पुराने नियम की व्यवस्था और पूर्व नबियों के पुस्तकों के लिए भी सत्य है)। लेकिन, इस बात का ज्ञान ना होना, कलीसिया में इसकी एतिहासिकता और विश्वास के दस्तावेज के प्रेरित होने और विश्वासयोग्य होने को ठेस नहीं पहुँचाता है।

7) इन सुसमाचारों के बीच में वास्तविक समानतायें इनका निमार्ण और शब्द हैं, परन्तु साथ ही अनेक अचंभित करने वाले अन्तर भी हैं। आँखों देखी घटानाओं के गवाहों में समान्य तौर पर अन्तर है। प्रारम्भिक कलीसिया इन तीनों आँखों देखी घटनाओं के गवाहों के अन्तर से चिन्तित नहीं हुई थी।

यह हो सकता है कि विषेश चोतागण, लेखक की लेखन शैली और भिन्न भाषाओं के होने के कारण यह भिन्नता उत्पन हुई हो। इस बात को कहना अवश्य है कि प्रेरित जो लेखक, सम्पादक, और संकलित करने वाले थे, उनके पास यह अधिकार था कि वे यीशु के जीवन की घटनाओं और शिक्षाओं को चुने, क्रमानुसार रखें, और संक्षिप्त में लिखें (देखें, फी और स्ट्राउट के द्वारा लिखी पुस्तक '' हाऊ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ पृश्ठ. 133–148)।

ङ) पापियास, (130 ई0 जो हेरापोलिस के बिशप थे) के प्रारम्भिक कलीसिया की एक परम्परा है जिसे यूसेबियस के हीस्टोरिकल एक्लेसियासटिकस 3:39:16 में लिपिबद्ध किया गया है कि मत्ती ने अपना सुसमाचार अरामिक भाषा में लिखा था। लेकिन आधुनिक विद्वानों द्वारा इस परम्परा को खण्डित किया है। क्योंकि :

1) मत्ती में प्रयोग यूनानी भाषा में कोई भी अरामिक भाषा से अनुवाद के गुण नहीं है।

2) इसमें यूनानी भाशा की शब्द रचना है। (देंखे, 6:16, 21:41; 24:30)

3) अधिकतर पुराने नियम के उद्घृति सेपटुवजिंट भाषा से हैं और मेसोरेटिक हिब्रानी भाषा से नहीं है।

यह सम्भव है कि 10:3 मत्ती के लेखक होने की ओर संकेत करता है। इस वचन में उसके नाम के बाद 'महसूल लेनेवाला' जोड़ गया है। यह स्व–अस्वीकृती की टिप्पणी मरकुस में नहीं पायी जाती। मत्ती भी नये नियम या प्रारम्भिक कलीसिया में अत्यधिक परिचित व्यक्ति ना था । फिर क्यों उसके नाम और इस पहले प्रेरित सूसमसचार को लेकर इतनी परम्पराऐं विकसित हुई हैं?

3. तारीख

क) कई तरीकों से यह सुसमाचार की तारीख सहदर्शी सुसमाचार समस्या के साथ सम्बन्धित है। कौन सा सुसमाचार पहले लिखा गया और किसने किससे उन बातों को लेकर लिखा?

1) यूसेबियस, हीस्टोरिकल एक्लेसियासटिकस 3:39:15 में कहतें है कि मत्ती ने मरकुस के सुसमाचार के ढाँचे का प्रयोग किया है।

2) अगसटीन ने मरकुस को मत्ती का अनुयायी और मत्ती का संक्षिप्त रूप कहा है।

ख) सबसे सही तरीका कुछ संभावित तारीखों की सीमा तय करना होगा।

1) यह 96 या 115 ई0 से पहले लिखा हो सकता है।

क) रोम के क्लेमेंट (96 ई0) ने कुरिंन्थियों के नाम अपनी पत्री में मत्ती के सुसमाचार का वर्णन किया है।

ख) अन्ताकिया के बिशप, इगनेश्यिस (110– 115 ई0) ने स्मुरना के नाम अपनी पत्री 1:1, मे मत्ती 3:15 का वर्णन किया है।

2) और अधिक कठिन प्रश्न यह होगा कि यह कितने पहले लिखी हुई हो सकती है?

क) निश्चियता से इसमें वर्णित घटनाओं के बाद, जो कुछ मध्य 30ई00 के आस पास हो सकती है।

ख) कुछ समय जरूर इसकी रचना, लेखन, और बाँटने में लगा होगा।

ग) अध्याय 24 का 70 ई0 में यरूशलेम के विनाश से क्या सबंध है? मत्ती के कुछ अंश यह बताते हैं कि मन्दिर में बलिदान का कार्य तब भी कार्यरत था (5:23–24; 12:5–7;17:24;27;26:60–68)। इसका यह अर्थ है कि हम 70 ई0 से पहले की तारीख दे सकते हैं।

घ) यदि मत्ती और मरकुस के सुसमाचार पौलुस के समय (48–68 ई) के दौरान लिखी होती तो वह इनका वर्णन क्यों नहीं कर रहा है? यूसेबियस इरेनियस को हीस्टोरिकल एक्लेसियासटिकस 5:8:2 में वर्णन करतें है। यह कहने के लिए कि मत्ती ने अपना सुसमाचार तब लिखा जब पतरस और पौलुस रोम में थे। पतरस और पौलुस की हत्या नीरो के शासन, जो 68 ई0 में समाप्त हो गया, में कर दी गई थी।

ङ) आधुनिक विद्वानों द्वारा सबसे पहली तारीख की संभावना 50 ई0 हो सकती है।

ग) अनेक विद्वान विश्वास करतें हैं कि चारों सुसमाचार पारम्परिक लेखकों से अधिक मसीहत के भुगोलिक केन्द्र से सम्बन्धित है। मत्ती संभावित रूप से सिरिया के अन्ताकिया से लिखि हो सकती है। क्योंकि इसमे यहुदी और अन्यजाति के कलीसिया के मामले हैं जो 60 या 70 ई0 के पहले के हैं।

4. स्त्रोतागण

क) जिस प्रकार मत्ती के लेखक और तारीख अनजान है, इसी प्रकार इसके स्त्रोतागण भी हैं। यह उचित है कि इसे यहुदी और अन्यजाति विश्वासी दोनों से सम्बन्धित करें। पहली ई0 की सिरिया की अन्ताकिया की कलीसिया इस रूपरेखा के अनुरूप है।

ख) यूसेबियस हीस्टोरिकल एक्लेसियासटिकस 6:25:4 में ओरिगन को संकेत करतें हुए कहतें कि यह यहूदी विश्वासियों के लिए लिखा गया था।

5. सुसमाचार के ढाँचे की रूपरेखा :

क) इस सुसमाचार का ढाँचा कैसा है? कोई भी इस मूल प्रेरित लेखक के उद्दश्य को पूर्ण पुस्तक के ढाँचे का अध्यन करके पता लगा सकता है।

ख) विद्वानों ने कई ढाँचों की सलाह दी है।

1) यीशु की भूगोलिक यात्रा :

क) गलील

ख) गलील का उत्तरी भाग

ग) पीरिया और यहूदिया (यरूशलेम को जाते हुए)

2) मत्ती के पाँच षीर्शक वाले अंश बार–बार आने वाले इस वाक्य खण्ड़ से पहचाने जा सकतें हैं, ''जब यीशु यह बातें कह चुका'' (देखें, 7:28; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1)। अनेक विद्वान इन पाँच अंशों को यीशु को नये मुसा के रूप मे वर्णन करने के लिए मत्ती के प्रयास के रूप मे देख सकते हैं। इसमें हर एक अंश की तुलना मुसा की पाँच पुस्तकों से हो सकती है (उत्पती, निर्गमन, गिनती, लेव्यव्यावस्था, व्यवस्थाविवरण)।

क) एक चायास्टीक ढाँचा जो 'वर्णन' और 'भाषण' अंशों के बीच बार बार आता है।

ख) एक धर्मविज्ञानिक या जीवनी की रूपरेखा जो बार बार आने वाले वाक्य खण्ड़, ''उस समय यीशु ने'' (देखें, 4:17; 16:21) में देखी जा सकती है। और इस कारण यह इस पुस्तक को तीन अंशों में बाँट गया है। (देखें 1:1–4:16; 4:17–16:20; और 16:21–28:29)।

ग) मुख्य शब्द ''पूरा हुआ'' का प्रयोग करते हुए मत्ती का पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के अध्यायों पर बल देना (देखें 1:22; 2:15, 17, 23; 4:14; 8:17; 12:17; 13:35; 21:4; 27:9; 27:35)। सभी सुसमाचार एक अद्भुत साहीत्यिक प्रकार हैं। वे जीवनी नहीं हैं और ना ही ऐतिहासिक वर्णन हैं। वे सही चुने हुए धर्मविज्ञान, उच्च साहीत्यिक प्रकार हैं। हर एक सुसमाचार के लेखक ने अपने विषेश चोतागणों को प्रस्तुत करने हेतु यीशु के जीवन की घटनाओं और शिक्षाओं का चुनाव किया है। सभी सुसमाचार, सुसमाचार प्रचार के अंश थे।

6. <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u> :

1. मसीहा, 1:1

2. कुवाँरी, 1:23,25

3. इम्मानुएल, 1:23

4. ज्योतिषी, 2:1

5.नासरी, 2:23

6. मन फिराओ, 3:2

7. पापों को मानना, 3:6

8. फरीसी, 3:7

9. सदूकी, 3:7

10. जूती उठाना, 3:11

11.'यह मेरा प्रिय पुत्र है', 3:17

12.' मन्दिर का कंगूरा' 4:15

13.'व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक', 4:5

14.'पत्नी को तलाक देना', 5:31

15. 'पाँवों की चौकी', 5:35

16. सभा, 6:20

मरकुस का परिचय

1. प्रारम्भिक वाक्य

क) प्राचीन कलीसिया ने मरकुस की प्रतिलिपी बनाना, अध्यन करना, या शिक्षओं के लिए प्रयोग करने हेतु इसको मत्ती और लूका के तुल्य नहीं समझा क्योंकि उन्होंने मरकुस को एक संक्षिप्त सुसमाचार समझा, यह एक ऐसा दृष्टिकोंण है जो आगसटिन रखता था।

ख) युनानी कलीसिया के प्राचिनों या दुसरी षताब्दी के बचाव करने वालों द्वारा भी मरकुस का वर्णन नहीं हुआ है।

ग) बाइबल की व्यवस्था के आधुनिक ऐतिहासिक व्याकरणिक तरीके के विकास के पश्चात मरकुस के सुसमाचार ने नया महत्व धारण कर लिया है। विषेशकर जब हम इसे पहला लिखित सुसमाचार समझते हैं। दोनों मत्ती और लूका यीशु के जीवन और महत्व को प्रदर्शित करने हेतु इसका प्रयोग करते हैं। इसी कारण मरकुस कलीसिया का बुनियादी दस्तावेज बन जाता है, यीशु के जीवन का पहला अधिकारिक वर्णन।

2. साहित्यिक प्रकार :

क) सभी सुसमाचार आधुनिक जीवनी या इतिहास नहीं हैं। वे विभिन्न चोतागणों को यीशु का परिचय कराने हेतु और उन्हें विश्वास में लाने हेतु चुने हुए धर्मविज्ञान लेख हैं। वे सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए यीशु के जीवन की घटनाओं के सुभ संदेश हैं। (देखें, यूह. 20:30, 31)

ख) मरकुसए चार विशेश ऐतिहासिक संधर्भ या धर्मविज्ञान के उद्देश्य से बना है।

1) यीशु की जीवनी और शिक्षाऐं

2) पतरस की जीवनी और सेवकाई

3) प्रारम्भिक कलीसिया की आवश्यकतायें

4) यूहन्ना मरकुस का सुसमाचारी उद्देश्य

ग) सभी सुसमाचार मध्य–पूर्वी और ग्रीको–रोमी साहित्य में विषेश लेख हैं। इन प्रेरित लेखकों का आत्मा की अगुवाई से यीशु की शिक्षाओं और कार्यों में से वे वस्तुऐं चुनने का कार्य था जो उनके चरित्र और उद्देश्यों को दर्शित करती हैं।

उन्होंनें इन शब्दों और कार्यों को विभिन्न तरिकों से जोड़ा। मत्ती के पहाड़ी उपदेश (5–7) और लूका के समतल जगह पर उपदेश की तुलना एक उदाहरण है। यह स्पष्ट हो जाता है कि मत्ती ने यीशु की शिक्षाओं को एक बड़े उपदेश में रखने की कोशिश की। जबकि लूका ने इन्हीं शिक्षाओं को पूरे सुसमाचार में फैलाने की कोशिश की है।

यह न केवल सुसमाचार लेखकों की यीशु की शिक्षाओं को चुनने और सही रखने की क्षमता दर्शाता है परन्तु उनको अपने ही स्वयं के धर्मविज्ञानिक उद्देश्यों के अनुसार परिवर्तित करने को भी दर्शाता है। (देखें, फी और स्ट्राउट के द्वारा लिखी पुस्तक ''हाऊ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ पृश्ठ. 113–134द्ध। जब एक सुसमाचार को पढ़ा जाता है तब हमें यह सवाल उठाना है कि ये लेखक कौन सी धर्मविज्ञानिक बातों को कहने की कोशिश कर रहा है। क्यो यह विशेष घटना, चमत्कार, शिक्षा को यहाँ रखा गया है?

घ) मरकुस की सुसमाचार कोयने यूनानी भाषा का अच्छा उदाहरण है जो भूमध्य संसार के लोगों की दुसरी भाषा थी। मरकुस की मातृभाषा अरामिक थी (जैसे यीशु और सभी पहले षताब्दी के पलिस्तिन के यहूदियों की थी)। सेमिटिक विशेशता मरकुस के सुसमाचार की प्रमुखता है।

3) लेखक

क) इस सुसमाचार को लिखने में यहून्ना मरकुस को पारम्परिक रूप से प्रेरित पतरस के साथ पहचाना जाता है। यह कार्य गुमनाम है (जैसे सभी सुसमाचार)।

ख) पतरस की आँखों देखी गवाही का दूसरा प्रमाण यह है कि मरकुस उन तीन विशेष घटनाओं का वर्णन नहीं करता जिसमें पतरस स्वयं व्यक्तिगत रूप से शामिल नहीं था।

1) उसका पानी पर चलना (देखें, मत्ती 14:28–33)

2) उन बारहों के विश्वास के लिए उसका कैसरिया फिलिप्पी में वक्तागण बनना (देखें, मत्ती 16:13–20)। केवल मरकुस में ही 8:27–30, 'इस पत्थर पर' और 'स्वर्ग की कुजियों' का अध्याय छोड़ दिया गया है।

3) अपने और यीशु के लिए उसका मन्दिर का कर देना। (देखें, मत्ती 17:24–27)। हो सकता है कि पतरस की विनम्रता ने इन घटानाओं को उसे अपने उपदेश मे सम्मलित न करने दिया हो।

ग . प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा

1. पापियास ने, जो हियरापोलिस के बिशप थे (130 ई0) ''इन्टरप्रटेषन ऑफ द लॉर्डस् सेयिन्गास'' लिखा था, जिसका वर्णन यूसेबियस अपने हीस्टोरिकल एक्लेसियासटिकस 3:39:15 में करते हैं। जिसमें वे दावा करतें है कि मरकुस पतरस का अनुवादक था जिसने पतरस की यादों का सही वर्णन किया, पर समयानुसार नहीं। इसी तरह मरकुस ने पतरस के उपदेशों को लिया और अपने अनुसार उसे एक सुसमाचार का रूप दिया। पापियास इन बातों को 'उस बुजुर्ग' से प्राप्ती का दावा करतें है जो प्रेरित यूहन्ना हो सकता है।

2. मार्सियों विरूध मरकुस की भुमिका जो 180 ई0 वीं में लिखी हुई है पतरस को मरकुस सुसमाचार का आँखों देखा गवाह बताती है। वह यह भी बताती है कि मरकुस ने यह सुसमाचार पतरस की मृत्यु के बाद इटली से लिखी (पारम्परागत रूप से रोम से)।

3. 180 ई0 के निकट इरेनियुस, यूहन्ना मरकुस को पतरस की मृत्यु के बाद उसे पतरस की बातों का व्याख्याकार और लेखक बताते हैं।(देखें, कॉन्ट्रा हैरीसिस, 3:1:2)।

4. मुरोटोंरियों के लेख, जिसे रोम से करिब 200 ई0 में लिखा गया था (यह प्रतिलिपी अधुरी है)। ऐसा प्रतित होता है कि यह भी यहून्ना मरकुस को पतरस की उपदेशों का लेखक बताता है।

5. वाल्लर वेसल, द एक्सपोसीटरस बाइबल कॉमेन्ट्री, भाग 8 पृश्ठ 606 में कुछ रूचीकर टीप्पणी करते हैं कि सभी प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा विभिन्न भौगोलिक कलीसिया के केन्द्रों से आती हैं।

क. पापियास– पश्चिमी आसिया से

ख. मार्सियों विरूध का प्राक्कथन और मुर्रोटोरियों के लेख दोनों रोम से

ग. इरेनियूस, देखें एडवान्स हेरी 3:1:1, फ्रांस की लेयोंस से। इरेनियूस की परम्परा को हम तरतुल्यन में भी पातें हैं जो उत्तरी अफरीका से है। सिकंदरिया का क्लेमेंट, मिस्त्र से (देखें, हाइपोथिसिस 6 कलीसिया का इतिहास 2:15:1–2; 3:24:5–8; 6:14:6–7 में यूसेबियूस के द्वारा वर्णित)। यह सभी भिन्न भौगोलिक विभिन्नतायें इसकी विश्वासयोग्ता की ओर संकेत करती हैं क्योंकि ये सभी प्रारम्भिक मसीहत में ग्रहण किये गये थे।

घ. हम यूहन्ना मरकुस के बारे में क्या जानते हैं :

1. इसकी माता यरूशलेम में एक सुपरिचित विश्वासी थी जिनके घर में कलीसिया मिला करती थी (विशेशकर प्रभु भोज की रात्री में, देखें, मरकुस 14:14–15; प्रेरित. 1:13–14;12:12। सम्भवतः से यह वह गुमनाम व्यक्ति है जो गतसमनी से भागा (मरकुस 14:51–52)।

2. इसने अपने चाचा बरनबास और पौलुस के संग अन्ताकिया से यरूशलेम तक यात्रा की थी (कुलु. 4:16)।

3. पहली मिश्नरी यात्रा में वह बरनबास और पौलुस का सहकर्मी था (प्रेरित. 15:37–40), परन्तु वह वापस लौठ गया था (प्रेरित. 13:13)।

4. फिर बरनबास दूसरी मिश्नरी यात्रा में मरकुस को ले जाना चाहता था, लेकिन यह बात बरनबास और पौलुस के बीच एक असहमती का कारण बन जाती है (प्रेरित. 15:37–40)।

5. बाद में वह पौलुस के साथ फिर से मिल जाता है और उसका मित्र और सहकर्मी हो जाता है, कुलु. 4:10; 2 तीमुथि. 4:11; फिलेमोन. 24।

6. वह पतरस का भी सहकर्मी था, 1 पतरस. 5:13।

7. 95 ई0 में रोम से लिखी गई 1 क्लेमेंट की पत्री मरकुस का वर्णन करती है (जैसे सैप्र्डस ऑफ हरमस कहता है)।

8. जसटिन मार्टियर(150 ई0) मरकुस 3:17 का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह पतरस की यादें हैं।

9. सिकंदरिया का क्लेमेंट (195 ई0) दावा करते हैं कि जिन्होंने पतरस को रोम में प्रचार करते सुना था उन्होंने मरकुस को यह बातें लिखने को कहा था।

10. तरतुल्यन (200 ई0) ''मार्सियों विरूध'' लेख 4:5 में कहतें हैं कि मरकुस ने पतरस की बातों का सम्पादन किया।

11. युसेबियूस के अनुसार, कलीसिया का इतिहास 4:25, ऑरिगन (230 ई0) ''मत्ती का टीका''(5वीं षताब्दी पर मरकुस सुसमाचार पर कोई टीका उपलब्ध नहीं थी) में कहते हैं कि मरकुस ने इस सुसमाचार को उस प्रकार ही लिखा जिस प्रकार से पतरस ने उसे समझाया था।

12. युसेबियूस स्वयं कलीसिया का इतिहास 2:15 में मरकुस के सुसमाचार का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मरकुस ने उन लोगों के कहने पर इस सुसमाचार को लिखा जिन्होंने पतरस को प्रचार करते सुना था ताकि यह सभी कलीसियाओं में पढ़ी जाए। युसेबियूस इस परम्परा को सिकंदरिया के लेखों पर आधारित करतें हैं।

ङ. मरकुस का इस सुसमाचार के लेखन में शामिल होना अध्याय 14:51–52 से निश्चित हो जाता है जहां पर एक व्यक्ति तुरन्त यीशु के कैद के बाद गतसमनी से नंगा भाग जाता है। इस प्रकार की असमान्य और अनोपेक्षित बातें मरकुस के व्यक्तिगत अनुभवओं को दिखाता है।

4. <u>तारीख</u>

क. यह सुसमाचार यीशु के जीवन, कार्यों, और शिक्षाओं की आँखों देखी घटनाऐं और उनकी व्याख्या है जिसे पतरस के उपदेशों से लिया गया है। इस प्रकार मार्सियों विरूध लेख का प्राक्कथन और इरेनियूस (जो इसमें पौलुस की मृत्यु के बाद के समय को भी जोडते हैं) कहते हैं कि ये सभी उसकी मृत्यु के बाद लिखी और बाँटी गयी। पतरस और पौलुस दोनों की हत्या रोम में नीरो की शासन (54–68 ई0) में हुई थी। इसकी सही तारीख अनिश्चित है मगर यह बात सत्य है तो मरकुस की तारीख मध्य 60 ई0 के निकट हो सकती है।

ख. ऐसा सम्भव है कि मार्सियों विरूध का प्राक्कथन और इरेनियुस के लेख पतरस की मृत्यु की ओर संकेत न करें, परन्तु रोम से उसके निर्गमन को अवश्य दिखाते हैं। कुछ पारम्परिक प्रमाण (जसटिन मार्टियर और हिप्पोलिटस) भी हैं कि पतरस ने क्लौदियुस की शासन (41–54 ई0) में रोम की यात्रा की थी (यूसेबियूस का कलीसिया का इतिहास, 2:14:6)।

ग. ऐसा दिखाई पड़ता है कि लूका ने प्रेरितों के काम का समापन तब किया जब पौलुस 60 ई0 की शुरूआत में कैद में था। यदि यह बात सत्य है कि लूका ने अपने सुसमाचार लिखने में मरकुस का प्रयोग किया है तो मरकुस का सुसमाचार प्रेरितों के काम से पहले लिखा गया है, कुछ आरम्भिक 60 ई0 से पहले।

घ. मरकुस के लेखन की जानकारी और तारीख किसी भी तौर पर इसकी ऐतिहासिकता, धर्मविज्ञान, सुसमाचार के सत्यों को प्रभावित नहीं करती। इसका मुख्य पहलू यीशु है, न कि लेखक।

ङ. यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि काई भी सुसमाचार (यूहन्ना भी जो 95–96 ई0 के निकट लिखा गया था) यरूशलेम के विनाश की ओर संकेत नहीं करता (देखें, मत्ती 24; मरकुस.13; लूका 21) जो 70 ई0 में रोमन जनरल और बाद के सम्राट तितुस द्वारा किया गया था। मरकुस सम्भवतः से इस घटना से पहले लिखा गया था। साधारण तौर पर हमें यह समझना है कि सहदर्शी सुसमाचारों की लेखन की तारीख अतयनीय है (जिस प्रकार उन सब का एक दूसरे के साथ साहित्यिक सम्बन्ध है)।

5. <u>स्त्रोतागण</u>

क. प्रारम्भिक कलीसिया के अनेक लेखकों द्वारा मरकुस को रोम से जोड़ा गया है :

1. 1 पतरस 5:13

2. मार्सियों विरूध का प्राक्कथन, इटली से

3. इरेनियूस, रोम से, (देखे, एडवान्स हेरी 3:1:2)

4. सिकंदरिया का क्लेमेंट (देखें, कलीसिया का इतिहास, 4:14:6–7; 6:14:5–7)

ख. विषेश तौर पर मरकुस अपने सुसमाचार लिखने के उद्देश्य को नहीं बताता। इस बात के अनेक सिद्धान्त हैं :

1. एक सुसमाचार प्रचार का लेख, 1:1, जो विषेशरूप से रोम को लिखा गया था, 1:15; 10:45

क. आरामी शब्दों का अनुवाद, 3:17; 5:41–7:1,34; 10:46; 14:36; 15:22,34

ख. लातीनी शब्दों का प्रयोग, (स्पेकुलेटर 6:27; सेक्सटेनस 7:4; सेनसस 12:14; क्वाड्रंस 12:14; प्रेटोरियम 15:16; सेनचुरिया, 15:39; फलेगिलारे, 15:42)

ग. यीशु के लिए प्रयोग की गई सामूहिक भाषा

1. पलिश्तीन में रहनेवालों के लिए सामूहिक भाषा का प्रयोग (देखें, 1:5, 28, 33, 39; 2:13; 4:1; 6:33, 39, 41, 55)

2. सभी लोगों के लिए प्रयोग सामूहिक भाषा, 13:10

2. 64 ई0 में रोम में आग लगने के बाद (जिसका दोष नीरो ने मसीहियों पर लगाया था) का सताव, जो अनेक विश्वासीयों की मृत्यु और सताव का कारण बना। मरकुस कई बार सताव की चर्चा करता है (देखें, यीशु का दुःख उठाना, 8:31; 9:39; 10:33–34, 45 और उनके चेलों का दुःख उठाना, 8:34–38; 10:21, 35–44)।

3. विलंभित दूसरा आगमन

4. यीशु के आँखों देखे गवाहों की मृत्यु, विषेशकर प्रेरितों की।

5. पूरी मसीही कलीसियाओं में झूठी शिक्षाओं का उत्पन्न होना।

क. यहूदी कट्टरवादी (गलातियों)

ख. तत्व ज्ञान की बातें, (ग्नोसटिकस, 1 यूहन्ना)

ग. क. और ख. बिन्दुओं का मिलन (कुलुसियों, इफिसियों, 2 पतरस 2)

6. <u>सुसमाचार के ढाँचे की रूपरेखा</u> :

क. मरकुस का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि इस पुस्तक का पूरा 1/3 भाग यीशु के जीवन के अन्तिम सप्ताह की ओर केन्द्रित है। इसमें दुःखभोग सप्ताह पर धर्मविज्ञानिक महत्व स्पष्ट है।

ख. क्योंकि प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा के द्वारा मरकुस को पतरस के उपदेशों से लिखा गया माना जाता है, तो यह स्पष्ट है कि क्यों यीशु के जन्म वर्णन का लेख सम्मलित नहीं हैं। मरकुस अपना सुसमाचार वहां पर प्रारम्भ करता है जहां पर यीशु के साथ पतरस का अनुभव प्रारम्भ होता है, अर्थात, यीशु जब परिपक्व था, और धर्मविज्ञानिक तौर पर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पश्चाताप के प्रचार और मसीहा के कार्य की तैयारी पर विश्वास के संदेश से सम्बन्धित।

पतरस ने उपदेशों में 'मनुष्य का पुत्र' और 'परमेश्वर का पुत्र' का प्रयोग किया होगा। यह सुसमाचार यीशु के व्यक्तित्व के पतरस के धर्मविज्ञान को दर्शाता है। पहले यीशु महान शिक्षक और चंगाई देनेवाले थे, बाद में मसीहा बन जाते हैं। यह मसीहा एक अपेक्षित युद्ध के विजयी जनरल नहीं थे, पर एक दुःख उठाने वाले दास थे।

ग. मरकुस की मूल भौगोलिक रूपरेखा अन्य सहदर्शी सुसमाचार के लेखकों द्वारा उपयोग की गई है (मत्ती और लूका)।

1. गलील की सेवकाई, 1:14–6:13

2. गलील से बाहर की सेवकाई, 6:14–8:30

3. यरूशलेम की ओर यात्रा, 8:31–10:52

4. यरूशलेम में अन्तिम सप्ताह, 11:1–16:8

घ. ऐसा भी संभव है कि मरकुस की रूपरेखा प्रारम्भिक प्रेरितों के प्रचार की मूल रूपरेखा है (देखें, प्रेरित.10:37–43, तुलना करें, सी. एच. डोड़ की न्यू टेस्टामैन्ट स्टडिस, पृश्ठ 1–11)। यदि यह सत्य है तो सभी लिखित सुसमाचार मौखिक परम्परा के समय का अंत हैं (करिग्मा)। यहूदी मत मौखिक शिक्षाओं से लिखित लेखों को दिव्य मानता है।

ड़. मरकुस के सुसमाचार की विषेशता इसकी यीशु के जीवन की घटनाओं के बहुत शीघ्र वर्णन में है। मरकुस यीशु की बड़े–बड़े शिक्षण घटनाओं का वर्णन नहीं करता, पर एक घटना से दूसरे में बढता रहता है (उसके तुरन्त शब्द का प्रयोग)। मरकुस का सुसमाचार यीशु को उनके कार्यों द्वारा दर्शाता है। लेकिन, यह शीर्घ घटनायें भिन्न आँखों देखी जानकारीयाँ हैं (पतरस की)।

7. संक्षेप में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़

1. मन फिराव का बपतिस्मा, 1:14

2. ऊँट के रोम का वस्त्र, 1:6

3. कबूतर के समान, 1:10

4. चालीस दिन, 1:13

5. परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, 1:15

6. आराधनालय, 1:23

7. निन्दा, 2:7

8. शास्त्री, 2:6

9. मशकें, 2:22

10. दृष्टान्त, 4:2

11. वस्त्र, 5:27

12. फरीसियों का खमीर, 8:15

13. हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो, 8:33

14. रूपान्तरण, 9:2

15. नरक (गहेना), 9:47

16. सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर, 11:17

17. दीनार, 12:15

18. फसह का पर्व, 14:1

19. इत्र, 14:3

20. इस कटोरे, 14:36

21. घड़ी आ पहुँची, 14:41

22. तैयारी का दिन, 15:42

23. सताप्ह का पहला दिन, 16:2

8. संक्षेप में पहचानने हेतु व्यक्ति

1.शमोन , 1:16

2. जब्दी, 1:20

3. अशुद्ध आत्मा, 1:23

4. लेवी, 2:14

5. अबियातार, 2:26

6. कनानी, 3:18

7. दृष्टात्माओं के सरदार, 3:22

8. सेना, 5:9

9. हेरोदेस राजा,6:14

10. हेरोदियास, 6:17

11. सुरूफिनीकी, 7:26

12. बरतिमाइ, 7:26

13. कैसर, 12:14

14. उजाडनेवाली घृणित वस्तु, 13:14

15. जिनको उसने चुना है, 13:20

16. झूठे मसीहा, 13:22

17. प्रधान याजक, 14:1

18. अब्बा, 14:36

19. महासभा, 14:55

20. बरअब्बा, 15:7,11

21. शमौन कुरेनी, 15:21

22. सलोमी, 15:40

23. सूबेदार, 15:45

9. मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

1. यहूदिया, 1:5

2. यरूशलेम, 1:5

3. यरदन नदी, 1:5

4. नासरत, 1:9

5. गलील, 1:9

6. कफरनहूम, 1:21

7. इदुमिया, 3:8

8. सूर, 3:8

9. सैदा, 3:8

10. गिरासेनिया, 5:1

11. दिक्कापुलिस, 5:20

12. बैतसैदा, 6:45

13. दलमनूता, 8:10

14. यरीहो, 10:46

15. जैतून पहाड़, 11:1

16. गतसमनी, 14:32

10. <u>चर्चा के प्रश्न</u>

1. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा क्या है?, 1:8

2. नई वाचा की आवश्यकताएं क्या हैं?, 1:15

3. यीशु के सुननेवाले उनके उपदेशों पर चकित क्यों हुए?, 1:22

4. यीशु ने दुष्टात्माओं को बोलने क्यों नहीं दिया?, 1:34

5. यीशु ने जिन्हें चंगाई दी उन्हें दूसरों से बताने के लिए मना क्यों किया?, 1:43

6. अध्याय 2 में यीशु पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप क्यों लगाया गया है?

7. मरकुस 2:17 को अपने शब्दों में समझायें।

8. अनेक बार यीशु सब्त के दिन ही चगांई क्यों देते थे?

9. यीशु दृष्टान्तों में शिक्षा क्यों देते थे?

10. बीज बोनेवाले की दृष्टान्त को अपने शब्दों में समझायें।, 4:3–9

11. यीशु अपने ही नगर में अनेक चमत्कार क्यों नही कर पाते हैं? 6:4–6

12. अध्याय 6 में यीशु पानी पर क्यों चलते हैं?

13. 7:6–7 में यशायाह की भविष्यद्वाणी को समझायें।

14. 7:15 को अपने शब्दों में समझायें।

15. मरकुस यीशु के आरामी शब्दों को उद्धृत क्यों करता है?

16. 8:38 को अपने शब्दों में समझायें।

17. अध्याय 10 में फरीसी यीशु से तलाक के बारे में क्यों पूछते हैं?

18. 10:25 में यीशु की बातों से चेले क्यों चकित हो जाते हैं?, 10:26

19. अध्याय 11 में यीशु गद्‌ही के बच्चे पर क्यों चढ़कर आते हैं?

20. अध्याय 11 में यीशु मन्दिर को शुद्ध क्यों करते हैं?

21. 11:28 का प्रश्न महत्वपूर्ण क्यों है?

22. अध्याय 12 के प्रारम्भ का दृष्टान्त क्यों महत्वपूर्ण है और यह किसकी ओर संकेत करता है?

23. पुराने नियम की सबसे महान आज्ञा क्या है?

24. 13:30 की व्याख्या कठिन क्यों हैं?

25. 15:34 को अपने शब्दों में समझायें।

लूका का परिचय

1. प्राक्कथन

क. लूका सबसे बड़ा सुसमचार है। लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम (यदि हम इब्रानियों को पौलुस का लिखा हुआ न माने) नये नियम में किसी भी लेखक द्वारा लिखा गया सबसे अधिक पन्नों वाला लेख है। लूका एक अन्यजाति था, दूसरी पीढ़ी का मसीही।

ख. यदि हम इब्रानियों के लिखक को न गिनें तो लूका पूरे नये नियम के लिखकों में सबसे उत्तम कोइने युनानी भाषा का प्रयोग करता है। युनानी उसकी मातृभाषा थी। वह उच्च शिक्षित व्यक्ति था, और सम्भवतः वह एक चिकित्सक भी था (कुलु. 4:14)।

ग. लूका उनकी चिंता करता है जिनका कोई विचार भी नहीं करता।

1. स्त्री

2. गरीब, (देखें, लूका का उपदेश, लूका 6:20–23)

3. समाज द्वारा तिरस्कृत लोग, जैसे

क. पापिन स्त्री, 7:36–50

ख. सामरी लोग, 9:51–56; 10:29–37; 17:11–16

ग. कोढ़ी, 17:11–19

घ. कर लेने वाले, 9:1–10

ङ. कुकर्मी, 23:39–43

घ. लूका मरिय्यम की आँखों देखी गवाही और उनकी वंशावली का वर्णन करता है, 3:23–28। लूका का सुसमाचार स्त्री, यहूदी और अन्य जातियों के प्रति यीशु की चिंता को दिखता है।

2. लेखक :

क. प्रारम्भिक कलीसिया की गुमनाम परम्परा

1. इरेनियुस (175–195 ई0, अगेन्सट हेरसीस 3:1:1; 3:14:10) कहते हैं कि लूका ने पौलुस द्वारा प्रचार किये गये सुसमाचार को एक पुस्तक में लिखा।

2. लूका का मार्सियों विरूध प्राक्कथन (175 ई0) बताता है कि लूका ही इस सुसमाचार का लेखक है।

3. तरतुल्यन (150/160 ई0 – 220/240 ई0) – अगेन्सट मार्सियन 5:2, 2; 5, 5, 3 में कहते हैं कि लूका ने पौलुस के सुसमाचार का संक्षेप रूप पेश किया है।

4. मुर्रोटोरियों का लेख (180–200 ई0) लूका को एक लेखक और पौलुस का चिकित्सा सहकर्मी बताती है। यह लेख यह भी कहता है कि उसने घटनाओं का वर्णन सुनकर लिखा है (उसने आँखों देखे गवाहों का सक्षात्कार लिया)।

5. युसेबियूस, कलीसिया का इतिहास, 3.4.2, 6–7, लूका को लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम का लेखक बाताता है।

ख. लूका के लेखन का आन्तरिक प्रमाण

1. यह पुस्तक अन्य पुस्तकों के समान गुमनाम है

2. यदि लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम दो अलग कार्य हैं; जैसे उनके समान्य परिचय से दिखाई देता है, तो प्रेरितों के काम के 'हम' वाले अंश (16:10–17; 20:5–16; 21:1–18; 27:1–28:16) पौलुस के मिश्नरी कार्यों की आँखों देखी गवाही है।

3. लूका का परिचय, 1:1–4, यह बताता है कि लूका ने यीशु के जीवन का ऐतिहासिक लेख लिखने के लिए आँखों देखे गवाहों की छान–बीन की, जो इस बात को बताता है कि लूका दूसरी पीढ़ि का मसीही था। लूका का परिचय प्रेरितों के काम को भी सम्मिलित करता है।

3. <u>लूका का व्यक्तित्व</u>

क. लूका का मार्सियों विरूध प्राक्कथन, 175 ई0

1. वह सिरिया के अन्ताकिया का निवासी था।

2. एक चिकित्सक था।

3. अविवाहित था।

4. अखिया से सुसमाचार लिखा।

5. 84 वर्श की आयु में बोयोतिया में मृत्यु हुई।

ख. कैसारिया का युसेबियूस, 275–339 ई0, कलीसिया का इतिहास, 3.4.2 में :

1. उसका जन्म अन्ताकिया में हुआ था

2. पौलुस का मिश्नरी सहकर्मी था

3. सुसमाचार और प्रेरितों के काम का लेखक

ग. जेरोम, 346–420 ई0, मिगना 26.18 में

1. लूका ने अखिया से सुसमाचार लिखा

2. बायोतिया में मर गया था।

घ. वह उच्चतम् शिक्षा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति था।

1. सही कोइने युनानी भाषा का व्याकरण

2. अधिक शब्द–भण्ड़ार

3. खोज के तरीके

4. वह सम्भवतः से एक चिकित्सक था, कुलु, 4:14, और मरकुस 5:26 में मरकुस की चिकित्सकों के बारे में नकारात्मक टीप्पणी को हम लूका 8:43 में नहीं पाते हैं। लूका ने करिब 300 बार चिकित्सा, चंगाई, बीमारी, आदि से सम्बन्धित शब्दों का उपयोग किया है (देखें, डबल्यू. के. होबार्ट की द मैडिकल लैन्गवेज़ ऑफ लूक या इसे अधिक जानकारी के लिए देखें, ऐ. हार्नाक की लूक द फिज़िसियन)।

ङ. वह एक अन्यजाति था

1. पौलुस कुलु.4:10–11 में अपने सहायकों की सूची में भिन्नता लाते हैं; खतना किए हुए लोग और अन्य सहकर्मी , जैसे इपफ्रास और लूका, देमास।

2. प्रेरित.1:19 में लूका लिखता है,'उनकी भाषा में...', यहाँ पर वह आरामी भाषा की ओर संकेत कर रहा है। इसका यह अर्थ है कि यह उसकी भाषा नहीं है।

3. अपने सुसमाचार में लूका फरीसियों के साथ यहूदी मौखिक व्यवस्था से सम्बन्धित सभी वाद–विवादों को नहीं बताता है।

4. यह बहुत आष्चर्य की बात है कि सुसमाचार को लिखनेवाले सभी लोगों में से सबसे बड़े सुसमाचार को लिखने के लिए, नये नियम में सबसे अधिक लिखने के लिए, एक कम–पहचाने हुए, आँखों देखे गवाह न होते हुए भी (अर्थात, प्रेरित न होते हुए) एक अन्यजाति को चुना गया। परन्तु, यह प्रारम्भिक कलीसिया की गुमनाम परम्परा है, यह कोई मतभेद नहीं हैं।

5. तारीख

क. कोई भी लूका के छान–बीन के मूल विवरण लेख (सम्भवतः से तब लिखा गया जब पौलुस कैसिरिया में कैद में थे, देखें प्रेरित. 23–26 और 24:27) और उसकी अन्तिम रूपरेखा (लूका का सुसमाचार जिस प्रकार हम जानते हैं) और लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम के बाँटे जाने के बीच के सम्बन्ध को नहीं जानता।

ख. 95 ई0 से पहले 1 क्लेमेंट की पत्री में प्रेरितों के काम का वर्णन है :

प्रेरित. 13:22– 1 क्लेमेंट 18:1

प्रेरित. 20:36– 1 क्लेमेंट 2:1

ग. 70 ई0 में रोमी जनरल तितुस के द्वारा यरूशलेम के विनाश से पूर्व

1. इन लोगों की मृत्यु का कोई वर्णन नहीं है :

क. प्रेरित याकूब, 62 ई0

ख. प्रेरित पौलुस, 64–67 ई0

2. प्रेरितों 7 में स्तिफानुस के उपदेश में मन्दिर के विनाश का वर्णन नहीं है। जो कि परमेश्वर के न्याय को दिखा सकता था।

3. प्रेरित. 21 में पौलुस यरूशलेम आते हैं और यदि लूका ने 70 ई0 के बाद लिखा गया होता तो विनाश का वर्णन अवश्य होता।

घ. यदि लूका ने अपने सुसमाचार की रूपरेखा के लिए मरकुस के सुसमाचार का प्रयोग किया होता या यदि लूका ने इसे पलिश्तिन में उसकी छान–बीन के समय लिखा होता, तो इसकी तारीख 50 और 60 ई0 के आस–पास हाता (और प्रेरितों के काम को उसने पौलुस की कैद के दौरान रोम में होते हुए लिखा होता, 62–63 ई0 में)।

5. स्त्रोतागण

क. ''थियुफिलुस के लिए'', लूका 1:1–4; प्रेरित. 1:1, थियुफिलुस के बारे में कुछ विचार

1. वह एक रोमी सरकारी अधिकारी हो सकता है, क्योंकि लूका उसे ''हे श्रीमान'' पुकारता है, (1:3), और वह इसी शीर्षक का प्रयोग फेलिक्स (प्रेरित. 23:26; 24:3) और फेस्तुस (प्रेरित. 26:25) के लिए भी करता है।

2. वह एक धनी संरक्षक हो सकता है (यहूदियों और युनानियों के बीच थियुफिलुस एक समान्य पहला नाम था) जिसने लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम के लेखन, प्रतिलिपि बनाने, और बाँटने के काम के लिए धन दिया था।

3. वह सम्भवतः से मसीहियों के लिए एक गुमनाम हो सकता है, क्योंकि थियुफिलुस का अर्थ, ''परमेश्वर द्वारा प्रेम किया हुआ'' या ''परमेश्वर का प्रेमी है''।

ख. लूका का सुसमाचार अन्यजातियों की ओर केंद्रित है

1. यह यहूदी रीति रिवाजों को समझाता है।

2. यह सुसमाचार सभी के लिए है, 2:10

3. इसमें ऐसी भविष्यद्वाणीयाँ हैं जो ''हर प्राणी'' की ओर संकेत करती हैं, (देखें 3:5–6, जो यशा. 40 की उद्धृति है)

4. इसमें वंशावली आदम से प्रारम्भ होती है (अर्थात, सभी मनुष्य, 3:38)

5. इसमें अन्यजाति के प्रति परमेश्वर के प्रेम का उदाहरण है (13:29 में मसीहा के भोज में आमन्त्रित लोगों की सीमा का लूका विस्तार करता है)

6. पुराने नियम के उदाहरण अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के प्रेम को बताते हैं, 2:32; 4: 25–27

7. लूका की महान आज्ञा यह है कि ''सब जातियों के लिए पाप क्षमा का प्रचार करो'' 24:47।

6. <u>उद्देश्य</u>

क. सभी सुसमाचार कुछ विषेश जन–समूह के लिए सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए लिखे गये थे (यूहन्ना 20:30–31)

1. मत्ती – यहूदियों

2. मरकुस – रोमियों

3. लूका – अन्यजातियों

4. यूहन्ना – अन्यजातियों

लूका विषेश तौर पर 70 लोगों के मिश्न का वर्णन करता है, (10:1–24)। रब्बीयों के अनुसार 70 की संख्या पूरे संसार की भाषाओं को दिखाती है (उत्त. 10)। जब यीशु षुभ–समाचार के 70 प्रचारकों को भेजतें हैं तो यह इस बात को दिखाता है कि सुसमाचार सभी लोगों के लिए है।

ख. दूसरे संभवित उद्देश्य

1. विलम्भित दूसरे आगमन को समझाना

क) मसीहा के शीघ्र आगमन और संसार की अंत के विषेय में लूका 21, मत्ती 21 और मरकुस 13 से भिन्न है।

ख) लूका पूरे संसार को सुसमाचार के सुनाने पर जोर देता है, जिसके पूरा होने में समय है (लूका 24:47)।

ग) लूका के अनुसार परमेश्वर का राज्य अभी और यहाँ पर है (देखें, 10:9,11; 11:20; 17:21)।

2. रोमी सरकारी अधिकारियों को मसीहत के बारे में समझाना

क) परिचय में ''हे श्रीमान'' का प्रयोग

ख) लूका 23 में पिलातुस का 3 बार कहना कि ''मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता हुँ'' (23:4,14–15, 22)।

ग) प्रेरितों के काम में रोमी अधिकारियों को अच्छी रीति से पेश किया गया है और पौलुस के रोमी अधिकारियों से वार्तालाप में उनके प्रति आदर को पाते हैं और वे उनके प्रति सकारात्मक उत्तर देते हैं (26:31–32)।

घ. क्रूसीकरण के दौरान रोमी सरदार का यीशु के प्रति सकारात्मक गवाही देना(23:47)।

ग. लूका के लिखने के उद्देश्य में कुछ अद्भुत धर्मविज्ञानिक बातें हैं (उदाहरण के लिए लूका का उपदेश, लूका 6:20–23)।

1. तिरस्कृत लोग

क. पापिन स्त्री, 7:36–50

ख. सामरी लोग, 9:51–56; 10: 29–37

ग. उड़ाऊ पुत्र, 15:11–32

घ. कर लेने वाले, 19:1–10

ङ. कोढ़ी, 17:11–19

च. कुकर्मी, 23:39–43

2. लूका यरूशलेम के मन्दिर का वर्णन करता है। सुसमाचार का प्रारम्भ यहूदियों और उनके शास्त्रियों के हाता है (अर्थात, यीशु के बारे में पुराने नियम की भविष्यद्वाणिओं को पूर्ण करते हैं) लेकिन वे उनका इन्कार नहीं करते हैं (देखें, 11:14–36) और वह पूरे संसार के उद्धारकर्ता बन जाते हैं (10:1–24)।

7. <u>लूका के सुसमाचार का स्त्रोत</u>

क. मत्ती, मरकुस और लूका (सहदर्शी सुसमाचार) के सम्बन्ध के प्रति अनेक विचार विकसित हैं

1. प्रारम्भिक कलीसिया की एक समान परम्परा यह है कि लूका, अन्यजाति चिकित्सक, ने इस सुसमाचार को लिखा।

2. सन् 1776 के करीब ए. ई. लेसीगं (फिर 1818 मे गिसेलर) ने सहदर्शी सुसमाचार के विकास मे एक मौखिक स्थर को सिद्धांतित किया । उन्होंने दावा किया कि वे सभी आरम्भिक मौखिक परम्परा पर निर्भर थे जिन्हें उन लेखकों ने अपने विषेश द्योतागणों के लिए परिर्वतित किया।

क) मत्ती : यहुदी

ख) मरकुस : रोमी

ग) लुका : अन्यजाति

हर एक सुसमाचार मसीह के हर अलग भौगोलिक केन्द्र से सम्बन्धित था।

क) मत्ती : अन्ताकिया, सिरिया या यहूदिया

ख) मरकुस : रोम, इटली

ग) लुका : कैसरिया, पलिश्तिन

घ) युहन्ना : इफुसुस, आसिया माइनर

3) आरम्भिक 19वीं षताब्दी में जे जे ग्रेसबेक ने यह सिद्धान्त निकाला कि मत्ती और लूका ने यीशु के जीवन की अलग अलग घटनाऐं लिखी हैं और वे बिलकुल एक दुसरे पर निर्भर नहीं है। मरकुस ने संक्षेप में अपना सुसमाचार लिखा, ताकि वह इन दोनों की घटनाओं के वर्णन के बीच मध्यस्तथा करे।

4) प्रारम्भिक 20वीं षताब्दी में एच. जे. होलस्मेन ने सिद्धान्त निकाला कि मरकुस सुसमाचार को सबसे पहला लिखने वाला था और मत्ती और लूका ने सुसमाचार के निमार्ण में मरकुस के सुसमाचार का प्रयोग किया था, साथ ही उन्होंने एक अलग दस्तावेज का प्रयोग किया जिसमे यीशु के कथन पाये जाते थे जिसे क्यू कहा जाता है। (जर्मन क्यूले का अर्थ है स्त्रोत) इस सिद्धान्त का नाम 'दो स्त्रोत सिद्धान्त' रखा गया (सन् 1832 मे फ्रेडरिक स्लेइरमाश्र के द्वारा बेचान किया गया था)।

5) कुछ समय बाद बि. एच. स्ट्रिटर ने रूपांतरित 'दो स्त्रोत सिद्धान्त' को चार स्त्रोत सिद्धान्त का रूप दिया, जिसमें प्रोटो लूक (प्रारम्भिक लूका) और मरकुस और क्यू स्त्रोत शामिल हैं।

6) ऊपर दिये गये सहदर्शी सुसमाचार के निमार्ण के सिद्धान्त केवल परिकल्पनायें हैं। ना ही क्यू स्त्रोत या प्रारम्भिक लूका के बारे मे कोइ ऐतिहासिक या वास्तविक हस्तलिपि के प्रमाण हैं। आधुनिक विद्वानों में यह कोई नहीं जानता कि किस प्रकार सुसमाचारों का विकास हुआ या किसनें उन्हें लिखा है (यह पुराने नियम के व्यवस्था और पूर्व नबियों की पुस्तकों के लिए भी सत्य है) लेकिन, इस बात का ज्ञान ना होना कलीसिया के इनके एतिहासिक और विश्वास के दस्तावेज के प्ररित होने और विश्वासयोग्य होने को ठेस नहीं पहुंचाती है।

7) इन सुसमाचारों के बीच में वास्तविक समानतायें इनका निमार्ण और शब्द हैं, साथ ही अनेक अचम्भित करने वाले अन्तर भी हैं। आँखों देखी घटानाओं के गवाहों में समान्य तौर पर अन्तर है। प्रारम्भिक कलीसिया इन तीनों आँखों देखी घटनाओं के गवाहों के अन्तर से चिन्तित नहीं हुई थी।

यह हो सकता है कि विषेश स्त्रोतागण, लेखक की लेखन शैली और भिन्न भाषाओं के होने के कारण यह भिन्नता उत्पन हुई हो। इस बात को कहना अवश्य है कि प्रेरित जो लेखक, संपादक, और संकलित करने वाले थे, उनके पास यह अधिकार था कि वे यीशु के जीवन की घटनाओं और शिक्षाओं को चुने, क्रमानुसार रखें, और संक्षिप्त में लिखें (देखें, फी और स्ट्राउट के द्वारा लिखी पुस्तक ''हाऊ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ पृश्ठ. 113–148द्ध।

ख. लूका विषेश तौर पर यह दावा करता है कि उसने आँखों देखे गवाहों से यीशु के जीवन के बारे में खोज–बीन की है। कैसारिया में पलिश्तिन सागर के पास पौलुस के कैद मे होने पर इन लोगों से मिलने के लिए लूका को समय और अवसर प्राप्त हुआ। अध्याय 1–2 में वह मरिय्यम की यादों को प्रतिबिम्बित करता है (देखें, सर विल्यम रामसे की वॉज़ क्राईट बॉर्न एट बेतलहम?) जिस प्रकार अध्याय 3 की वंशावली है।

ग. प्रारम्भिक कलीसिया की अनेक परम्परायें यह बताती हैं कि लूका पौलुस के साथ यात्रा करने वाला मिश्नरी सहकर्मी था। इन परम्पराओं में से कुछ यह दावा करते हैं कि लूका का सुसमाचार पौलुस के प्रचार से प्रभावित है। इस बात का इन्कार नहीं किया जा सकता कि लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम और पौलुस के लेखों में सुसमाचार का विश्व मिश्न एक पूर्ण हुई भविष्यद्वाणी है।

8. <u>लूका की विषेषता</u>

क. इसके पहले दो अध्याय केवल लूका के लेख की विषेशता है और षायद मरिय्यम की गवाही से लिए गए हैं, जिस प्रकार 3:23–28 की भविष्यद्वाणी है।

ख. लूका के विषेश चमत्कार

1. नाइन की विधवा के पुत्र को जीवन दान, 7:12–17

2. सब्त के दिन कुबड़ी स्त्री को चंगा करना, 13:10–17

3. सब्त के दिन आराधनालय में एक बीमार व्यक्ति को चंगा करना, 14:1–6

4. कोढ़ के दस रोगियों को चंगा करना, केवल, एक सामरी धन्यवाद के लिए वापस आता है, 17:11–18

ग. लूका के विषेश दृष्टान्त

1) दयालु सामरी, 10:25–37

2) निरन्तर प्रार्थना करने हेतु एक मित्र का दृष्टान्त, 10:25–37

3) धनवान मुर्ख, 12:13–21

4) खोए हुए सिक्के, 15:8–10

5) उडाऊ पुत्र, 15:11–32

6) चतुर भण्ड़ारी, 16:1–8

7) धनी मनुष्य और निर्धन लाजर, 16:19–31

8) अधर्मी न्यायाधीश, 18:1–8

9) फरीसी और चुंगी लेनेवाला, 18:9–14

घ. मत्ती में पाये जानेवाले लूका के दृष्टान्त, लेकिन अलग प्रयोग किए हुए।

1. 12:39–46 / मत्ती 24: 43–44

2. 14:16–24 / मत्ती 22: 2–14

3. 19:11–27 / मत्ती 25: 14–30

ङ. अन्य विषेश घटनायें

1. पहले दो अध्यायों की घटनायें,

2. चुंगी लेनेवाला जक्काई, 19:1–10

3. हेरोदेस के सामने यीशु, 23:8–12

4. इम्माऊस के मार्ग पर चेलो के साथ, 24:13–32

च. लूका में सबसे विषेश तत्व 9:51–18:14 में पाये जाते हैं। यहाँ पर लूका मरकुस पर या 'क्यू' स्रोत पर भी निभर नहीं है (मत्ती द्वारा लिखे गये यीशु के कथन)। कुछ समान्य घटनायें और शिक्षायें को भी अलग रूप दिया गया है। इस अंश का समान्य शीषर्क ''यरूशलेम के मार्ग पर'' है (देखें, 9:51; 13:22,33; 17:11; 18:31; 19:11, 28) जो वास्तविक में क्रूस की ओर उसकी यात्रा है।

9. <u>संक्षेप में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u>

1. बाँझ, 1:7

2. छुटकारा, 1:68

3. उद्धार का सींग, 1:69

4. नाम लिखाई, 2:1

5. जेलोतेस, 6:15

6. परमेश्वर का राज्य, 6:20

7. बाँसुली बजाई, 7:32

8. आराधनालय के सरदार, 8:49

9. मनुष्य के पुत्र के लिए दुःख उठाना अवश्य है, 9:22

10. सामरिया, 10:33

11. तुम पर हाय, 11:42, 43, 44, 47, 52

12. मन फिराओ, 13:3

13. संकेत द्वार, 13:24

14. अपना क्रूस उठाना, 14:27

15. धन, 16:11

16. व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता, 16:16

17. अब्राहम की गोद, 16:22

18. चक्की का पाट, 17:2

19. जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, 21:24

20. लोगों के पुरनियों की महासभा, 22:66

21. स्वर्गलोक, 23:43

10. संक्षेप में पहचानने हेतु व्यक्ति

1. थियुफिलुस, 1:3

2. जकरयाह, 1:12

3. प्रभु का एक स्वर्गदूत, 1:11; 2:9

4. जिब्राईल, 1:26

5. क्विरिनियुस, 2:2

6. हन्नाह, 2:36

7. तिबिरियुस, 3:1

8. चौथाई देश के राजा हेरोदेस, 3:1,19

9. कैफा, 3:2

10. नामान, 4:2

11. दक्षिण की रानी, 11:31

12. जकरयाहय, 19:2

13. लाजर, 16:23

14. जक्कई, 19:2

15. यूसुफ, 23:50

16. क्लियोपास, 24:18

11. मानचित्र पर ध्यान देनेवाले स्थान

1. गलील, 1:26

2. नासरत, 1:4

3. बैतलहम, 2:15

4. इतुरैया, 3:1

5. बैतसैदा, 9:10

6. खुराजीन, 10:13

7. सूर, 10:13

8. कफरनहूम, 10:15

9. सामरिया, 17:11

10. सदोम, 17:29

11. यरीहो, 19:1

12. इम्माऊस, 24:13

13. बैतनिय्याह, 24:50

12. चर्चा के प्रश्न

1. यीशु के जन्म का पहला प्रगटीकरण चरवाहों को करने के पिछे परमेश्वर का क्या कारण है?

2. 2:49 में यीशु के वचन का क्या महत्व है?

3. लूका में वर्णित वंशावली आदम से क्यों शुरू होती है?

4. 6:1–5 में चेले किस प्रकार व्यवस्था का उल्लंघन कर रहे थे? किस व्यवस्था का वे उल्लंघन कर रहे थे?

5. 6:46 में यीशु के शब्दों को समझायें।

6. अध्याय 17:18–23 में यूहन्ना यीशु पर संदेह क्यों कर रहे हैं कि क्या वह वास्तव में ही वायदे के मसीहा हैं?

7. गेरासिन के लोग यीशु को वहाँ से जाने के लिए क्यों कहते हैं?

8. 9:62 के महत्व को अपने शब्दों में बताईए?

9. शैतान स्वर्ग से क्यों गिरा? 10:18

10. यहूदी लोग सामरियों से घृण क्यों करते थे?

11. 12:41–48 में दण्ड़ का या नरक का क्या मापदण्ड़ है?

12. 13:28–30 को अपने शब्दों में समझायें।

13. 15:11–32 में उडाऊ पुत्र के दृष्टान्त का उद्देश्य क्या है?

14. 16:18 को अपने शब्दों में समझायें, परन्तु इस पद की व्याख्या इसके ऐतिहासिक संदर्भ के आधार पर करें।

15. 17:34–35 क्या गुप्त उठा लिए जाने को दिखाता है? क्यों या क्यों नहीं?

16. 20:2 एक महत्वपूर्ण प्रश्न क्यों हैं?

17. 20:10 का दाख की बारी का किसान कौन है?

18. 22:3 के प्रकाश में बताइए कि यहूदी अपने कार्य के लिए जिम्मेदार क्यों है?

19. 23:20 का वर्णन करना लूका के लिए एक महत्वपूर्ण वचन क्यों है?

यूहन्ना का परिचय

1. प्राक्कथन

क. मत्ती और लूका अपने सुसमाचार को यीशु के जन्म से प्रारम्भ करते हैं। मरकुस यीशु के बपतिस्मे और यूहन्ना सृष्टि के प्रारम्भ से पहले से प्रारम्भ करता है।

ख. यूहन्ना पहले अध्याय के पहले वचन में नासरत के यीशु के पूर्ण ईश्वरत्व को बताता है और पूरे सुसमाचार में इस बात पर महत्व देता है। सहदर्शी सुसमाचार इस सत्य के प्रगटीकरण तक इसे गुप्त रखते हैं (जिसे मसीहा का भेद कहा गया है)।

ग. यूहन्ना अपने सुसमाचार का विकास सहदर्शी सुसमाचार के मूल विश्वासों के प्रकाश में करता है। यूहन्ना यीशु के जीवन और शिक्षाओं को जोड़ने और उनकी व्याख्या करने की कोशिश प्रारम्भिक कलीसिया की अवश्यकताओं के प्रकाश में करता है। यूहन्ना अन्तिम प्रेरित गवाह था।

घ. यूहन्ना यीशु मसीह की प्रस्तुतिकरण इन बातों के आधार पर करता है :

1. सात चमत्कार या चिन्ह और उनकी व्याख्या

2. व्यक्तिगत लोगों से 27 साक्षात्कार/वार्तालाप

3. कुछ निर्धारित आराधना और पर्व के दिन

   क. सब्त

   ख. फसह

   ग. तम्बू

   घ. हनूकाह/स्थापन पर्व, 10:22–39

4. ''मैं हुँ,'' कथन

   क. ये दिव्य नाम से सम्बन्धित है, यहोवा

      1. मैं हुँ, 4:26; 8:24; 13:19; 18:5–6

      2. इससे पहले कि अब्रहाम उत्पन हुआ, मैं हुँ, 8:54–59

   ख. विधेय कर्ताकारकों के साथ

      1. जीवन की रोटी मैं हुँ, 6:35, 41, 48, 51

      2. जगत की ज्योति मैं हुँ, 8:12

      3. भेड़ों का द्वार मैं हुँ, 10:7, 9

      4. अच्छा चरवाहा मैं हुँ, 10:11, 41

      5. पुनरूत्थान और जीवन मैं हुँ, 11:25

      6. मार्ग और सत्य और जीवन मैं हुँ, 14:6

      7. सच्ची दाखलता मैं हुँ, 15:1, 15

ङ. यूहन्ना और अन्य सुसमाचारों के बीच भिन्नतायें :

1. हालांकि यह सत्य है कि यूहन्ना का मूल उद्देश्य धर्मविज्ञानिक है पर वह इतिहास और भूगोल का सही प्रयोग और वर्णन करता है। सहदर्शी सुसमाचार और यूहन्ना के बीच का अन्तर गुमनाम है।

क. एक प्रारम्भिक यहूदिया की सेवकाई (प्रारम्भ में मन्दिर का शुद्धिकरण)

ख. यीशु के जीवन का अन्तिम सप्ताह का समयक्रम और तारीख

2. यदि हम कुछ समय यूहन्ना और सहदर्शी सुसमाचारों के बीच की भिन्नाताओं पर चर्चा करने के लिए लें तो यह सहायक होगा। इन भिन्नताओं पर मैं जोर्ज ऐल्ड़न लेड की ए थियोलोजी ऑफ द न्यू टेस्टामैन्ट का वर्णन करना चाहुगॉ :

क. चौथा सुसमाचार सहदर्शी सुसमाचारों से इतना भिन्न है कि हमें यह प्रश्न करने की अवश्यकता है कि क्या यह यीशु की शिक्षाओं का सही वर्णन करता है या क्या मसीही विश्वास ने परम्परा को इतना परिवर्तित कर दिया की इतिहास धर्मविज्ञान की व्याख्या में छिप गया है?'', (पृष्ठ संख्या 215)

ख. सबसे सही समाधान यह कहना है कि यीशु की शिक्षाओं का वर्णन यूहन्ना के षब्दों में हुआ है। यदि यह बात सही है और यदि हम इस निश्कर्श पर पहुँचते हैं कि चौथा सुसमाचार यूहन्ना के षब्दों में वर्णित है, तो हमें यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाना चाहिए कि किस सीमा तक चौथे सुसमाचार का धर्मविज्ञान यीशु के बदले यूहन्ना का है? – किस सीमा तक यूहन्ना के मन में यीशु की शिक्षाऐं बसी हुई थीं कि जो आज हमारे पास स्वयं यीशु की शिक्षाओं के बदले यूहन्ना की व्याख्या है? (पृष्ठ संख्या 215)।

ग. द बैक्ग्राउन्ड़ ऑफ द न्यू टेस्टामैन्ट एण्ड इट्स एसकेटौलोजी में लेड़ (ड़बल्यू. डी. डेविस और ड़ी डूब से संपादित), डबल्यू. एफ. अलब्राईट की रिसेन्ट डिस्कवरीस इन पालिटाइन एण्ड द गॉस्पल ऑफ जॉन से उद्धृत करतें हैं।

सहदर्शी सुसमाचारों और यूहन्ना की शिक्षाओं के बीच कोई मूल भिन्नता नहीं है। उनके बीच की भिन्नता मसीह की शिक्षओं के कुछ पहलूओं पर परम्परा के महत्व देने में है, विषेशकर वे शिक्षायें जो असेनी समाज से अधिक मिलती थीं। ऐसा कहने के लिए कुछ भी नहीं है कि यीशु की शिक्षओं को परिवर्तित या गलत रूप से प्रगट किया गया है। कलीसिया की अवश्यकताओं ने सुसमाचार में शामिल करने हेतु चीजों के चुनाव को प्रभावित किया है। पर यहाँ ये कहने के लिए कोई भी कारण नहीं हैं कि हम यह कल्पना करें कि कलीसिया की आवश्यकताएँ धर्मविाज्ञानिक अविश्कारों या नयेपन की जिम्मेदार हैं।

नये नियम के समालोचक विद्वानों और धर्मविज्ञानिकों को सबसे चकित करनेवाली एक धारणा यह है कि यीशु का मन इतन सीमित था कि सहदर्शी सुसमाचारों और यूहन्ना के बीच कोई भी दिखावटी भिन्नता नहीं थी पर जो भिन्नता पाई जाती है वो प्रारम्भिक मसीही धर्मविज्ञानिकों के बीच की भिन्नता के कारण है। हरेक महान विचारवादी और व्यक्तित्व की उसके भिन्न मित्रों और सुननेवालों द्वारा भिन्न रीति से व्याख्या की जाती है, जो देखी और सुनी हुई चीजों में से जो कुछ उन्हें रूचीकर या उपयोगी लगता है वह उसे चुन लेते हैं (पुष्ठ संख्या, 170–171)।

घ. और फिर जोर्ज एल्डन से :

''उनके बीच की भिन्नता यह नहीं है कि यूहन्ना धर्मविज्ञानिक है अन्य नहीं, पर उनके बीच की भिन्नता यह है कि सभी लेखक भिन्न रीति से धर्मविज्ञानिक हैं। व्याख्या किया गया इतिहास एक परिस्थिति के सही सत्यों को घटनाओं के क्रमकाल से अधिक सही दर्शाता है। यदि यूहन्ना का सुसमाचार एक धर्मविज्ञानिक व्याख्या है, तो यह उन घटनाओं की व्याख्या है जिसमें यूहन्ना को निश्चय है कि वे इतिहास की घटनायें हैं। सहदर्शी सुसमाचारों का उद्देश्य यह नहीं है कि वे यीशु के मूल शब्दों या उनके जीवन की घटनाओं की उद्धृति करें। वे सभी यीशु का चित्रण हैं और उनकी शिक्षाओं का संक्षेप रूप हैं। मत्ती और लूका इस स्वतन्त्रता को महसूस करते हैं कि वे मरकुस की चीजों को फिर से क्रमानुसार रखें, और यीशु के शिक्षाओं को कुछ स्वतन्त्रता से वर्णित करें। यदि यूहन्ना, मत्ती और लूका से अधिक स्वतन्त्रता का प्रयोग करता है, तो यह इसलिए है कि वह यीशु का अधिक प्रभावशाली और सही चित्रण दे'' (पृष्ठ संख्या, 221–222)।

2. <u>लेखक</u>

क. यह सुसमाचार गुमनाम है पर यूहन्ना के लेखन की ओर संकेत करता है।

1. वह एक आँखों देखा गवाह लेखक था, 19:35

2. यह वाक्य खण्ड़, ''वह चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था'' (पॉलीक्रेट्स और इरेनियस दोनों इस वाक्य की पहचान प्रेरित यूहन्ना से करते हैं)

3. यूहन्ना, जब्दी के पुत्र के नाम से विख्यात नहीं है।

ख. इसकी ऐतिहासिक परम्परा सुसमाचार से ही स्पष्ट है, इसलिए लेखक का मुद्दा इसकी व्याख्या में एक महत्वपूर्ण तत्व नहीं है। परन्तु यह निष्चय कि लेखक प्रेरित है, महत्वपूर्ण है। इस सुसमाचार की लेखन और तारीख इसके प्रेरित होने को प्रभावित नहीं करती, परन्तु इसकी व्याख्या को अवश्य प्रभावित करती है।

टीप्पणिकार एक ऐतिहासिक संदर्भ, एक परिस्थिति की तलाश में है जो इस पुस्तक को लिखने का कारण बना। क्या किसी को यूहन्ना के सुसमाचार की ईष्वरवाद की तुलना, 1. यहूदियों के दो समयकाल, 2. खुमरान का धार्मिकता का शिक्षक, 3. जोराष्ट्री धर्म, 4. तत्व–ज्ञान का विचार, या 5. यीशु के विषेश दृष्टातों से करनी चाहिए?

ग. परम्परागत प्रारम्भिक विचार यह है कि प्रेरित यूहन्ना, जब्दी का पुत्र, ही मानवीय आँखों देखा गवाह है। इस तत्य का स्पष्टिकरण अनिवार्य है क्योंकि सुसमाचार के विकास में दूसरी षताब्दी के बाहरी लेखक अन्य वस्तुओं की मिलावट कर रहे थे।

1. सह–विश्वासीयों और इफिसियों के पुरनियों ने इस बूढ़े प्रेरित को लिखने की प्रेरणा दी (यूसेबियूस सिकंदरिया के क्लेमेंट व्यक्त करते हैं)।

2. सह–प्रेरित अन्द्रियास (मुर्रोटोरियों की लेख, रोम से 180–200 ई0)।

घ. कुछ आधुनिक विद्वानों ने सुसमाचार की शैली और विषय वस्तु की अनेक धारणाओं के आधार पर एक और अन्य लेखकों की कल्पना की है। अन्य कई लोग प्रारम्भिक दूसरी षताब्दी की तारीख मानतें है (115 ई0 से पहले)।

1. यूहन्ना के चेलों द्वारा लेखन (यूहन्ना के द्वारा प्रभावित लोग) जिन्होनें उसकी शिक्षाओं को स्मरण रखा (जे. वेइस, बि. लाईट फूट, सी. एच. डोड़, ओ. कुलमेन, आर. ए. कुल पेप्पर, सी. के. बेरिट्ट)

2. एक ''पुरनिए यूहन्ना'' द्वारा लेखन (यूहन्ना प्रेरित की धर्मविज्ञान और शब्दविद्या से प्रभावित आसिया में के प्रारम्भिक अगुवों में से एक)। यह विचार पापियास (70–146 ई0) के लेख से युसेबियूस (280–339 ई0) व्यक्त करते हैं।

ङ. यूहन्ना इस सुसमाचार का स्वयं ही मूल लेखक होने का प्रमाण।

1 आन्तरिक प्रमाण

क. लेखक को यहूदी शिक्षाओं और रीति रिवाजों की जानकारी थी और वह उनके पुराने नियम के दृष्टिकोंण को भी बताता है।

ख. लेखक पलिश्तिन और यरूशलेम की 70 ई0 से पहले की परिस्थिति को जानता था।

ग. लेखक आँखों देखा एक गवाह होने का दावा करता है।

1. 1:14

2. 19:35

3. 21:24

घ. लेखक प्रेरितों के समूह का एक सदस्या था, क्योंकि वह इन वस्तुओं से परिचित था :

1.समय और स्थान की जानकारी (रात की परिक्षा)

2. संख्या की जानकारी (2:6 में पानी के मट्टकों की संख्या और 2:11 की मछिलियों की संख्या)

3. व्यक्तियों की जानकारी

4. घटनाओं की जानकारी और उनके प्रतिकिर्यों की जानकारी

5. लेखक का नाम करण एक ''प्रेमी चेले'' में रूप में है।

क. 13:23, 25

ख. 19:26–27, 34–35

ग. 20:2–5, 8

घ. 21:7, 20–24

6. लेखक पतरस के संग आन्तरिक चक्र का सदस्य दिखाई देता है :

क. 13:24

ख. 20:2

ग. 21:7

7. ''यूहन्ना, जब्दी का पुत्र'' नाम इस सुसमाचार में नहीं है, जो बहुत ही असामान्य बात है क्योंकि वह प्रेरितों के आन्तरिक चक्र का सदस्य था।

2. बाहरी प्रमाण

क. इन लोगों के द्वारा जाना गया सुसमाचार :

1. इरेनियुस (120–202 ई0) जो पॉलीकार्प से जुड़े थे, यूहन्ना प्रेरित को जानते थे (यूसेबियूस की कलीसिया का इतिहास, 5:20, 6–7) कहते हैं, ''प्रभु का चेला यूहन्ना जो उनकी छाती की ओर झुका हुआ था, उसने स्वयं आसिया के इफिसुस से यह सुसमाचार लिखा'' (हायर.3:1:1, युसेबियूस की कलीसिया का इतिहास, 5:8:4)

2. सिकंदरिया का क्लेमेंट (172–217 ई0) – ''यूहन्ना जो अपने मित्रों द्वारा उत्साहित किया गया और दिव्य तौर पर आत्मा के द्वारा अगुवाई किया गया, उसने एक आत्मिक सुसमाचार का निर्माण किया (यूसेबियूस, कलीसिया का इतिहास, 6:14:7)।

3. जेसटिन मार्टियर (110–165 ई0) अपने डॉएलौग विद् ट्रायफो में कहते हैं।

4. तरतुल्यन (145–220 ई0)

ख. यूहन्ना की लेखन का प्रारम्भिक गवाह

1. पॉलीकार्प (70–156 ई0, इरेनियुस द्वारा वर्णित), जो स्मिुरना के बिशप थे (155 ई0)

2. पापियास (70–146 ई0, रोम से मार्सियोनाइट विरूध लेख और युसेबियुस के लेख द्वारा व्यक्त) जो फ्रिगिया में हियरापुलिस के बिशप थे, और जो यूहन्ना प्रेरित का चेला होने का दावा करते हैं)

च. पारम्परागत लेखन पर संदेह करने के कारण

1. ज्ञानवादी विचारों के साथ सुसमाचार का सम्बन्ध

2. 21 अध्याय का स्पष्ट व्याख्यान

3 सहदर्शी सुसमाचार के साथ क्रमकालीन भिन्नतायें

4. यूहन्ना स्वयं को ''प्रेमि चेले'' के रूप में वर्णित नहीं करता

5. यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु सहदर्शी सुसमाचारों से भिन्न शब्दों और प्रकारों का प्रयोग करते हैं।

छ. यदि हम यह सोचें कि इसका लेखक प्रेरित यूहन्ना था, तो उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचें?

1. उसने इफिसुस से लिखा (इरेनियूस, ''इफिसुस से सुसमाचार को लिखा'')

2. उसने तब लिखा जब वह बूढ़ा हो गया था (इरेनियूस कहते हैं कि वह टार्जन, 98–117 ई0, के शासन तक जिन्दा था)।

3. तारीख

क. यदि हम समय काल के अनुसार यह सोचते हैं कि प्रेरित यूहन्ना ही इसका लेखक है तो :

1. 70 ई0 से पहले जब रोमी जनरल तितुस द्वारा यरूशलेम का विनाश हुआ था।

क. यूहन्ना 5:2, ''यरूशलेम के भेड़–फाटक के पास एक कुण्ड़ है जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है, उसके पाँच ओसारे हैं।

ख. प्राचीन शब्द ''चेले'' का बार–बार प्रेरितों के समूह के लिए प्रयोग करना।

ग. मृत सागर कुण्डल पत्र में बाद के धारित तत्व–ज्ञान तत्वों की खोज हुई है जो यह बताते हैं कि वे पहली षताब्दी की धर्मविाज्ञानिक चर्चा के अंश थे।

घ. 70 ई0 में मन्दिर और यरूशलेम नगर के विनाश का वर्णन नहीं है।

ङ. अमेरिका के सुपरिचित पुरातत्व विज्ञानिक डलब्यू. एफ. ऑब्राइट इस सुसमाचार के लिए प्रारम्भिक 70 या 80 ई0 की तारीख देते हैं।

2. पहली षताब्दी के अंत में

क. यूहन्ना का विकसित धर्मविज्ञान

ख. यरूशलेम के विनाश का वर्णन नहीं है क्योंकि वह कुछ बीस साल पहले हुआ था।

ग. यूहन्ना का तत्व–ज्ञान, रीति रिवाज़ों के वाक्य खण्ड़ और वाक्य पर महत्व देना।

घ. कलीसिया की प्रारम्भिक परम्परा

1. इरेनियूस

2. यूसेबियूस

ख. यदि हम 'पुरनिए यूहन्ना' का विचार करें तो तारीख मध्य–दूसरी षताब्दी हो सकती है। यह विचार ड़ियोनिसियूस का यूहन्ना की लेखन के इन्कार करने से प्रारम्भ हुआ (साहित्यिक कारणों से)। यूसेबियूस ने, जिसने धर्मविज्ञानिक कारणों से प्रकाशितवाक्य के यूहन्ना के लेखन का इन्कार किया, ऐसा महसूस किया कि उसने एक अन्य 'यूहन्ना' को सही समय और सही स्थान पर पापियास की व्यक्त विचार में पाया (कलीसिया का इतिहास, 3:39:5,6), जो दो यूहन्नाओं की सूची देती है, 1. प्रेरित और 2. प्राचीन ।

4. स्त्रोतागण

क. मूल तौर पर यह सुसमाचार आसिया के रोमी प्रान्तों की कलीसियाओं के लिए लिखा गया था, विषेशकर इफिसुस को।

ख. इसमें यीशु के जीवन और व्यक्तित्व की घटनाओं की सरलता और गहराई के कारण यह युनानी अन्यजातियों और ज्ञानवादी समूहों के लिए एक प्रिय सुसमाचार बन गया था।

उद्देश्य

क. यह सुसमाचार स्वंय् अपने सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य को बताता है, 20:30–31

1. यहूदी पाठकों के लिए

2. अन्यजाति पाठकों के लिए

3. तत्व–ज्ञान पाठकों के लिए

ख. इसमें झूठी शिक्षओं से बचाव की वस्तुयें हैं

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के अनुयाइयों के विरूध

2. आरम्भिक झूठे तत्व–ज्ञानवादी शिक्षाओं के विरूध (विशेश तौर पर इसका प्राक्कथन); इन समूहों को नये नियम की अन्य पुस्तकों में भी देखा जा सकता है।

क. इफिसियों

ख. कुलुसियों

ग. पासवानी पत्रियाँ (1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस, तितुस)

ङ. 1 यूहन्ना (1यूहन्ना सम्भवतः से यूहन्ना के सुसमाचार की एक सह–पत्री थी)

ग. ऐसा संभव है कि 20:31 का उद्देश्य कथन धीरजता और सुसमाचार प्रचार के विचारों को उत्साहित करता देख पड़ता हो क्योंकि यहाँ पर उद्धार के वर्णन के लिए बार–बार वर्तमान काल का प्रयोग किया गया है। इस तरीके से यूहन्ना, याकूब के समान, आसिया में कुछ समूहों द्वारा पौलुस के धर्मविज्ञान को अधिक महत्व देने को संतुलित कर रहा है (2 पतरस 3:15–16)। यह आष्चर्य की बात है कि प्रारम्भिक कलीसिया यूहन्ना की पहचान इफिसुस के साथ करती है, पौलुस की नहीं (देखे, एफ. एफ. ब्रूस की पीटर, स्टीफन, जेम्स एण्ड जॉन : स्टडिस इन नॉन–पॉलाइन क्रिस्टियानिटी, पृश्ठ 120–121)

घ. अन्तिम कथन, अध्याय 21, प्रारम्भिक कलीसिया के प्रश्नों का उत्तर देता दिखाई देता है।

1. सहदर्शी सुसमाचारों में न पाये जाने वाली घटनाओं को यूहन्ना सम्मिलित करता है। परन्तु, वह यहूदिया की सेवकाई पर अधिक ध्यान देता है, विषेश तौर पर यरूशलेम की।

2. परिशेषिका, अध्याय 21, में पाये जानेवाले दो प्रश्न :

क. पतरस की पुनःस्थापना

ख. यूहन्ना की दीर्घायु

ग. यीशु का विलम्भित आगमन

ङ. कुछ लोग यूहन्ना को रीति–रिवाजों के विरोध में देखते हैं क्योंकि अध्याय 3 (बपतिस्मा का) और अध्याय 6 (प्रभु भोज) में सिद्ध प्रसंगिकरण के मौके होने के बाद भी उसने आदि नियमों को अनदेखा (परम्परागत रीति–रिवाजों) कर दिया और उनका वर्णन नहीं किया।

6. कुछ विषयों पर आधारित रूपरेखा

क. एक दार्षनिक/धर्मविज्ञानिक की भूमिका (1:1–18) और एक व्यावहारिक उपसंहार (अध्याय 21)

ख. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के दौरान सात चमत्कारी चिन्ह (अध्याय 2–12) और उनकी व्याख्या।

1. गलील के काना में पानी को दाखरस में बदलना, 2:1–11

2. कफरनहूम में राज कर्मचारी के पुत्र को चंगा करना, 4:46–54

3. यरूशलेम के बैतसदा में रोगी को चंगा करना, 5:1–18

4. गलील में पाँच हजार को खिलाना, 6:1–5

5. गलील की झील पर चलना, 6:16–21

6. यरूशलेम में एक जन्म से अन्धे को दृष्टिदान, 9:1–41

7. बैतनी के लाजर का जिलाया जाना, 11:1–57

ग. व्यक्तिगत लोगों के साथ साक्षातकार और चर्चा

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, 1:19–34; 3:22–36

2. चेले

क. अंद्रियास और पतरस, 1:35–42

ख. फिलिप्पुस और नतनएल, 1:43–51

3. नीकुदेमुस, 3:1–21

4. सामरी स्त्री, 4:1–45

5. यरूशलेम के यहूदी, 5:10–47

6. गलील में भीड़, 6:22–66

7. पतरस और चेले, 6:67–71

8. यीशु के भाई, 7:1–13

9. यरूशलेम में यहुदी, 7:14–8:59; 10:1–42

10. ऊपरी कोठरी में चेले, 13:1–17:26

11. यहूदियों के द्वारा पकड़वाया जाना, 18:1–27

12. रोमियों के द्वारा परिक्षा, 18:28–19:26

13. पुनरूत्थान के बाद के वार्तालाप, 20:11–29

क. मरिय्यम के साथ

ख. दस प्रेरितों के साथ

ग. थोमा के साथ

14. पतरस के साथ उपसंहार, 21:1–25

15. 7:53–8:11, पापिन स्त्री की कहानी यूहन्ना सुसमाचार का मूल अंश नहीं है।

घ. कुछ आराधना और पर्व के दिन

1. सब्त, 5:9; 7:22; 9:14;19:31

2. फसह, 2:13; 6:4; 11:55, 18:28

3. तम्बू का पर्व, अध्याय 8–9

4. स्थापन पर्व, 10:22

ङ. ''मैं हुँ'' कथन के प्रयोग

1. ''मैं हुँ'', 4:26; 6:20; 8:24, 28, 54–59; 13:19; 18:5–6, 8

2. जीवन की रोटी मैं हुँ, 6:35, 41, 48, 51

3. जगत की ज्योति मैं हुँ, 8:12; 9:5

4. भेड़ों का द्वार मैं हुँ, 10:7, 9

5. अच्छा चरवाहा मैं हुँ, 10:11, 41

6. पुनरूत्थान और जीवन मैं हुँ, 11:25

7. मार्ग और सत्य और जीवन मैं हुँ, 14:6

8. सच्ची दाखलता मैं हुँ, 15:1, 15

8. <u>संक्षेप में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1. वचन, 1:1

2. विश्वास, 1:7

3. जगत उसके द्वारा उत्पन हुआ, 1:10

4. वचन देहधारी हुआ, 1:4

5. सत्य, 1:17

6. भविष्यद्वक्ता, 1:21

7. परमेश्वर का मेम्ना, 1:29

8. कबूतर के समान, 1:32

9. रब्बी, 1:38

10. सच सच, 1:51

11. परमेश्वर के स्वर्गदूतों को नीचे उतरतें और ऊपर जाते, 1:51

12. छः मटके, 2:6

13. यहूदियों का सरदार, 3:1

14. नये सिरे से जन्म, 3:3

15. मनुष्य का पुत्र भी ऊँचा उठाया जायगा, 3:14; 12:34

16. अनन्त जीवन, 3:16

17. जीवन की रोटी मैं हुँ, 6:35, 48

18. झोपडियों का पर्व, 7:2

19. तुझ में दुष्टात्मा है, 7:20; 8:48; 10:20

20. तितर–बितर होकर रहना, 7:35

21. यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था, 7:39

22. पहले इसके कि अब्राहम उत्पन हुआ मैं हुँ, 8:58

23. आराधनालय से निकाला जाए, 9:22

24. भेड़ों का फाटक, 10:7

25. स्थापन पर्व, 10:22

26. निन्दा, 10:36

27. गदहे का एक बच्चा मिला, तो वह उस पर बैठ गया, 12:14

28. वह समय, 12:23

29. शैतान उसमें समा गया, 13:27

30. एक नई आज्ञा, 13:34

31. रहने के स्थान, 14:2

32. मुझ में बने रहो, 15:4

33. अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, 17:1

34. एकमात्र सच्चे परमेश्वर, 17:3

35. जगत की उत्पति से पहले, 17:24

36. कोड़े लगवाए, 19:1

37. गब्बता, 19:13

38. गुलगुता, 19:17

39. पिलातुस से बिनती की कि उनकी टाँगें तोड दी जाएँ, 19:31

40. यहदियों की तैयारी के दिन, 19:42

8. <u>संक्षेप में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1. यूहन्ना, 1:6

2. परमेश्वर का पुत्र, 1:34

3. मसीहा, 1:41

4. कैफा, 1:42

5. नीकुदेमुस, 3:1

6. भविष्यद्वक्ता, 7:40

7. लाजर, 11:2

8. दिद्मुस, 11:16

9. यहूदा इस्करियोती, 13:2

10. सहायक, 14:26

11. मलखुस, 18:10

12. हन्ना, 18:24

13. क्लोपास की पत्नी मरिय्यम, 19:25

9. मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

1. गलील, 1:43,

2. नासरत, 1:45

3. काना, 2:1

4. कफरनहूम, 2:12

5. शालेम के निकट ऐनोन, 3:23

6. सामरिया, 4:4

7. तिबिरियास, 6:1

8. बैतलहम, 7:42

9. बैतनिय्याह, 11:1

10. किद्रोन, 18:1

11. तिबिरियास झील, 21:1

10. चर्चा के प्रश्न

1. यूहन्ना 1:1 क्यों महत्वपूर्ण है?

2. यूहन्ना का बपतिस्मा असामान्य क्यों है?

3. फिर से जन्म लेने का क्या अर्थ है?

4. 3:35 में 'विश्वास करना' और 'आज्ञा मानना' कैसे सम्बन्धित हैं?

5. 4:25 का क्या अर्थ है?

6. यूहन्ना 5:4 कोष्टक में क्यों है?

7. क्या 9:2 का अर्थ यीशु का संसार में जन्म लेना है?

8. 9:41 की कठोरता को समझाएं।

9. 10:34–35 को अपने शब्दों में समझाएं।

10. अध्याय 13 में यीशु चेलों के पाँव क्यों धोते हैं? अध्याय 13–17 की पृष्ठभूमि क्या है?

11. यूहन्ना 14:6 का क्या महत्व है?

12. यूहन्ना 14:23 का क्या महत्व है?

13. यूहन्ना 15:16 को समझायें।

14. यूह.17 को यीशु की महायाजकीय प्रार्थना कहा गया है। वह तीन विभिन्न प्रकार के लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं। उनके नाम बताईए।

15. यूह.18:33–38 में यीशु और पिलातुस के बीच की अदला–बदली को समझाईए।

16. चेलों ने पवित्र आत्मा को 20:22 में पाया या प्रेरित.1 के पिन्ताकुस्त में।

17. यूह.20:31 क्यों महत्वपूर्ण है?

प्रेरितों के काम का परिचय

1. प्राक्कथन

क. प्रेरितों के काम यीशु के जीवन और उन सत्यों की व्याख्या और प्रसंगीकरण के बीच एक अटूट सम्बन्ध स्थापित करता है जो नये नियम की प्ररितों के पत्रियों में है।

ख. प्रारम्भिक कलीसिया ने नये नियम के लेखों को दो संग्रहों में विकसित करने और बाँटने का काम किया : 1)सुसमाचार और 2) प्रेरित (अर्थात, पौलुस की पत्रियाँ)। परन्तु दूसरी षताब्दी की प्रारम्भिक ख्रीष्ट विद्या की झूठी शिक्षाओं के कारण प्रेरितों के काम की पुस्तक का महत्व स्पष्ट हुआ। प्रेरितों के काम प्रेरितों के प्रचार की वस्तु और उद्देश्य को दशार्ता है, साथ ही सुसमाचार के अद्भुत परिणामों का भी वर्णन करता है।

ग. पुरातत्व विज्ञान की आधुनिक खोज के द्वारा प्रेरितों की ऐतिहासिक यर्थाथता का स्पष्टिकरण और पुष्ठिकरण हुआ है। विशेशकर रोमी सरकारी अधिकारियों के शीर्षकों और नामों के सम्बन्ध में (एक्स स्ट्राटीगाई, 16:20, 22, 35, 36, 38, मन्दिर के सरदारों के लिए भी प्रयोग हुआ है लूका. 22:4, 52; प्रेरित.4:1; 5:24–26; पोलीटार्कस 17:6, 8, और प्राटो, प्रेरित.28:7, देखें, ए. एन. शेरविन–वाईट की रोमन सोसाईटी एण्ड रोमन लॉ इन द न्यू टेस्टामेन्ट)। लूका प्रारम्भिक कलीसिया में तनावों का वर्णन करता है, पौलुस और बरनबास का वाद–विवाद भी (देखे, प्रेरित.15:39)। यह एक सही, संतुलित, छान–बीन है, ऐतिहासिक और धर्मविज्ञानिक लेख है।

घ. प्राचीन युनानी प्रतिलिपियों में इस पुस्तक का शीर्षक कुछ भिन्न है

1. हस्तलिपि 'आलेफ' (अर्थात, सिनाईटिकस), तरतुल्यन, दिदमुस, युसेबियुस की लेख में ''प्रेरितों'' है (ए एस वी, एन आई वी अनुवाद)

2. हस्तलिपि 'बीटा' (अर्थात, वेटिकेनस), 'डी' (अर्थात, बेजी) और 'आलेफ' के अंश में, इरेनियूस, तरतुल्यन, सिप्रियन, ऐथेशियुस की लेख में, ''प्ररितों के काम'' है। (के जे वी, आर एस वी, एन इ बी अनुवाद)

3. हस्तलिपि 'ए^{2}' (सिकंदरियानुस के पहले जाँच करनेवाले), 'इ', 'जी' क्रिसोस्टम के लेख में ''पवित्र प्रेरितों के काम'' है।

यह संभव है कि युनानी शब्द, *प्रासिक्स, प्रासिस* (अर्थात, कार्य, तरीके, व्यवहार, क्रियाँए, अभ्यास) प्राचीन भूमध्य का एक साहित्य प्रकार है, जो सुप्रसिद्ध या प्रभावशाली लोगों के जीवन या कार्यों को दशार्ता है (अर्थात, यूहन्ना, पतरस, स्तिफानुस, फिलिप्पुस, पौलुस)। इस पुस्तक का कोई मूल शीर्षक न था (जैसे लूका का सुसमाचार है)

ङ. प्रेरितों के काम की दो भिन्न मूल पाठ की परम्परा है। संक्षेप रूप का नाम एलक्यजांड्रियन था (एम एस एस पी^{45}, पी^{74}, आलेफ, ए, बी, सी)। प्रतिलिपियों के पाश्चाती समूह (पी^{29}, पी^{38}, पी^{48}, डी) और अधिक जानकारीयों को रखते हैं। यह अनिश्चित है कि यह जानकारी लेखक के द्वारा दी गई है या बाद के शास्त्रियों के द्वारा इसे प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा के आधार पर जोडा गया है। कई मूल पाठ के विद्वान मानतें है कि पाश्चाती हस्तलिपियों में बाद के लेख जोड़े गए हैं क्योंकि वे 1) असामान्य या कठिन मूल पाठों को असान करने की या सही करने की कोशिश करते है। 2) ये अधिक जानकारियों को जोडते हैं। 3) यीशु को मसीह बताने के लिए अधिक वाक्य खण्डों को जोडते हैं। 4) पहली तीन षताब्दियों के मसीही लेखकों के द्वारा व्यक्त नहीं किया गया है (देखें, एफ. एफ. ब्रूस की एक्ट्स : ग्रीक टैक्ट, पृश्ठ 69–80) अधिक जानकारी पाने हेतु देखें, ब्रूस एम. मेत्सगर की ए टैक्टुअल कॉमेन्ट्री ऑन द ग्रीक न्यू टेस्टामेन्ट, युनाइटेड बाइबल सोसाईटी, पृश्ठ 259–272)।

2. लेखक

क. पुस्तक का लेखक गुमनाम है पर लूका को अधिक सहमति मिलती है।

1. अद्भुत और अनोखे, 'हम वाले अंश', 16:10–17 (फिलिप्पुस से दूसरी मिश्नरी यात्रा); 20:5–15; 21:1–18 (तीसरी मिश्नरी यात्रा का समापन) और लूका को पूरी तरह से इसका लेखक बताते हैं।

2. यदि हम लूका 1:1–4 की तुलना प्रेरित.1:1–2 से करें तो तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम के बीच का सम्बन्ध स्पष्ट होता है।

3. कुलु.4:10–14; फिलेमोन 24, और 2तीमुथियुस 4:11 में एक अन्यजाति चिकित्सक का वर्णन लूका को सहमति देता है, जो नये नियम का एकल अन्यजाति लेखक था।

4. प्रारम्भिक कलीसिया की गुमनाम गवाही :

क. मुर्रोटोरियों के लेख (180–200 ई0 रोम से, बताते हैं कि ''लूका चिकित्सक द्वारा यह सुसमाचार लिखा गया है'')

ख. इरेनियुस का लेख (130–200 ई0)

ग. सिकंदरिया के क्लेमेंट का लेख (156–215 ई0)

घ. तरतुल्यन का लेख (160–200 ई0)

ङ. ऑरिगन का लेख (185–245 ई0)

5. शैली और शब्द–भण्डार के आन्तरिक प्रमाण (विषेशकर चिकित्सा से सम्बन्धित शब्द) लूका के लेखक होने की ओर संकेत करते हैं (सर विल्यम रामसे और ए. हारनाक)।

ख. लूका के बारे में हमारे पास तीन स्त्रातों से जानकारी है।

1. नये नियम के तीन अध्याय (कुलु.4:10–14; फिलेमोन 24; 2तीमुथि.4:11) और प्रेरितों के काम।

2. दूसरी षताब्दी के मार्सियों विरूध लेख की लूका की भूमिका (160–180 ई0)।

3. प्रारम्भिक कलीसिया के इतिहासकार युसेबियूस, कलीसिया के इतिहास 3:4 में कहतें हैं कि, ''लूका, जिसका जन्म अन्ताकिया में हुआ था, और जो पेशे से एक चिकित्सक था, प्रमुखता से पौलुस के साथ रहा, और बहुत कम अन्य प्रेरितों के साथ रहा, उसने हमारे लिए आत्मा की चगांई के उदाहरणों को दो प्रेरितीय पुस्तकों में छोड दिया है जिसे उसने उन लोगों से प्राप्त किया था।''

4. यह बातें लूका का पूर्ण चित्रण हैं :

क. वह एक अन्यजाति था (कुलु.4:12–14 में उसकी पहचान इपफ्रास और दिमस के संग हुई है, यहूदी सहायकों के साथ नहीं)।

ख. या तो वह सिरिया के अन्ताकिया से है (मार्सियों विरूध लूका की भूमिका) या मकिदूनिया की फिलिप्पुस से (सर विल्यम रामसे, प्रेरित.16:19)

ग. वह एक चिकित्सक था, कुलु.4:14 या कम से कम वह एक उच्च शिक्षित मनुष्य था)

घ. वो मध्य–युवा काल में विश्वासी बना; अन्ताकिया में कलीसिया के शुरू होने के बाद (मार्सियों विरूध लेख की भूमिका)

ङ. पौलुस का सह–यात्री (प्रेरितों के काम के 'हम' अंश)

च. तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम का लेखक (समान परिचय और समान शैली और शब्द भण्ड़ार)

छ. बोईतिया में 84 की आयु में मृत्यु।

ग. लूका का लेखक होने के विरूध चुनौतियाँ :

1. ऐथेंस नगर में पौलुस प्रचार के लिए और मंच की स्थापना करने के लिए समान युनानी तत्व–ज्ञान शब्दों और मतों का प्रयोग करता है (प्रेरित.17), लेकिन रोमियों 1 और 2 में पौलुस किसी भी आन्तरिक भावना को व्यर्थ मानता है (अर्थात, स्वभाव, आन्तरिक नैतिक गवाही)।

2. प्रेरितों में पौलुस के प्रचार और टिप्पणियाँ उसे एक यहूदी–मसीही का चित्रण देती हैं जो मूसा को गम्भिरता से लेता है, परन्तु पौलुस की पत्रियाँ व्यवस्था को एक समस्या और चले जानेवाली वस्तु बताती है।

3. प्रेरितों में हम पौलुस के प्रचार में अन्तिम समय के बारे में कोई वर्णन नहीं पाते हैं जो उसके प्रारम्भिक पुस्तकों में हैं (1 और 2 थिस्सलुनीकियों)

4. इसके शब्दों की, शैली की, और महत्वपूर्ण वस्तुओं की भिन्नता रूचीकर है, पर यह निर्णायक नहीं है। यदि इसी मापदण्ड़ का प्रयोग हम सुसमाचार में करें, तो सहदर्शी सुसमाचारों के यीशु यूहन्ना के यीशु से भिन्न वार्तालाप करते हैं। पर केवल कुछ ही विद्वान यह इस बात का इन्कार करते हैं कि दोनों यीशु के जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं।

घ. प्रेरितों के लेखन की चर्चा करते समय यह अनिवार्य है कि हम लूका के स्त्रोतों की भी चर्चा करें क्योकि अनेक विद्वान (सी. सी. टोरी) विश्वास करते हैं कि लूका ने पहले 15 अध्यायों के लिए आरामी दस्तावेजों (या मौखिक परम्परा) का प्रयोग किया है। यदि यह सत्य है, तो लूका इन लेखों का सम्पादक है, लेखक नहीं। पौलुस के बाद के प्रचार का भी लूका केवल (उसके शब्दों का) संक्षेप रूप देता है, मौखिक वर्णन नहीं करता। लूका के स्त्रोत को प्रयोग करने का प्रश्न, लूका का लेखक होने के प्रश्न के समान ही एक गम्भिर विषय है।

3. <u>तारीख</u>

क. प्रेरितों के लेखन के समय के प्रति अनेक चर्चा और असहमतीयाँ हैं। पर ये घटनायें केवल 30–65 ई0 का समयकाल में घटी हैं (60 ई0 के मध्य में पौलुस रोम की कैद से अजाद हुआ, और फिर कैदी बना लिया गया और नीरो के शासन में, सम्भवतः से, 65 ई0 में मार डाला गया था)।

ख. यदि इस पुस्तक को हम रोमी सरकार से बचाव के उद्देष्य से लिखा हुआ समझें तो तारीख यह हो सकती है। 1) 64 ई0 से पहले (रोम में नीरो द्वारा मसीहियों के सताव के प्रारम्भ का समय) या, 2) 66–73 ई0 की यहूदी विद्रोह से सम्बन्धित।

ग. यदि हम क्रमानुसार प्रेरितों के काम की तुलना लूका के सुसमाचार से करें, तो सुसमाचार की लिखने की तारीख प्रेरितों के लिखने की तारीख को प्रभावित करती है। क्योंकि 70 ई0 में तितुस द्वारा यरूशलेम के विनाश की भविश्यद्वाणी हुई है, पर वर्णन नहीं हुआ है, तो यह 70 ई0 से पहले की तारीख की मांग करती है। यदि ऐसा है तो प्रेरितों को क्रमानुसार लिखे जाने की तारीख 80 ई0 है।

घ. यदि कोई इसके यकायद अंत से चिन्तित है (अर्थाथ, पौलुस का रोम में कैद में होते हुए, एफ. एफ. ब्रूस), तो पौलुस की पहली रोमी कैद की अंत की तारीख हो सकती है (58–63 ई0)।

ङ. प्रेरितों के काम में वर्णित कुछ ऐतिहासिक तारीखें जो ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित हैं।

1. सम्राट क्लौदियुस के शासन में भिषण अकाल, प्रेरितों.11:28, 44–48 ई0

2. हेरोदेस की मृत्यु, 12:20–23, 44 ई0, वंसत काल

3. हाकिम सिरगियुस का शासन, 13:7, 53 ई0 में नियुक्ति

4. क्लौदियुस के द्वारा यहूदियों का निकाला जाना, 18:2, 49 ई0?

5. गल्लियों का शासन, 18:12,51 ई0 या 52 ई0?

6. फिलिक्स का शासन, 23:26; 24:27, 52–56 ई0?

7. फेस्टस का फिलिक्य का स्थान लेना, 24:27, 57–60 ई0?

8. यहूदियों के रोमी अधिकारी

   क. शासक

   – पिलातुस पोंटियुस, 26–36 ई0

   – मार्सिलुस, 36–37 ई0

   – मारूलुस, 37–41 ई0

ख. 41 ई0 में रोमी प्रशासन ने अध्यक्ष पद को अनुभाविक नमुने में बदल दिया। रोम के सम्राट क्लौदियुस ने हेरोदेस की नियुक्ति 41 ई0 में की।

ग. हेरोदेस की मृत्यु के बाद, 44 ई0, अध्यक्ष पद को पुर्नस्थापित किया गया जो कि 66 ई0 तक रहा।

– अनटोनियुस फिलिक्य

– पॉर्सियस फेस्टस

6. <u>उद्देश्य और रूपरेखा</u>

क. प्रेरितों की पुस्तक का एक उद्देश्य यीशु के अनुयाइयों की, यहूदी जड़ से संसारिक सेवकाई तक और ऊपरी कोठरी से कैसर के महल तक, तेज बढोतरी का वर्णन करना था।

1) यह भौगोलिक साँचे प्रेरित.1:8 का अनुकरण है; जो प्ररितों की महान आज्ञा है, (मत्ती 28:18:20)।

2) इस भौगोलिक विस्तार का वर्णन अनेक तरीकों से हुआ है :

क) मुख्य नगरों और राष्ट्रीय सीमाओं के प्रयोग से।

प्रेरितों की पुस्तक में 32 देशों, 54 नगरों और 9 भुमध्य द्विपों का वर्णन है। तीन मुख्य नगर यरूशलेम, अन्ताकिया और रोम हैं, प्रेरित.9:15।

ख) मुख्य व्यक्तियों के प्रयोग से प्रेरितों की पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है : पतरस और पौलुस की सेवकाइयों में। प्रेरितों में 95 से अधिक लोगों का वर्णन है, परन्तु कुछ मुख्य लोग हैं: पतरस, स्तिफनुस, फिलिप्पुस, बरनबास, याकूब और पौलुस।

ग) प्रेरितों में दो या तीन साहित्यिक प्रकार निरन्तर आते हैं जो इसकी रूपरेखा पर लेखक की कोशिशों को दिखाती हैं।

1. <u>संक्षेप कथन</u>	2. <u>बढोतरी के कथन प्रयोग</u>	3. <u>संख्या का</u>
1:1–6:7, यरूशलेम से	2:47	2:41
6:8–9:31, पलिश्तिन से	5:14	4:4
9:32–12:24, अन्ताकिया को	6:7	5:14
12:25–15:5, आसिया को	9:31	6:7
16:6– 19:20, युनान को	12:24	9:31
19:21–28:31, रोम को	16:5	1:21,24
	19:20	12:24
		14:1
		19:20

ख. प्रेरितों के काम यीशु की मृत्यु से सम्बन्धित गलत धारणाओं के विरोध में लेख है (विश्वासघात के कारण)। इस कारण लूका अन्यजातियों (थियुफिलुस, सम्भवतः से एक रोमी अधिकारी) को लिख रहा है। वह इन वस्तुओं का प्रयोग करता हैं, 1) पतरस, स्तिफनुस, और पौलुस के प्रचार का, ताकि यहूदियों के षड़यंत्र को दर्शा सके और 2) मसीहत के प्रति रोमी सरकारी अधिकारियों की सकारात्मक दृश्टिकोंण को दिखा सके। रोमियों को यीशु के अनुयाइयों से भय खाने की अवश्यकता नहीं थी।

1. <u>मसीही अगुवों के भाषण</u> :

क) पतरस, 2:14–40; 3:12–26; 4:8–12; 10:34–43

ख) स्तिफनुस, 7:1–53

ग) पौलुस, 13:10–42; 17:22–31; 20:17–25; 21:40–22:21; 23:1–6; 24:10–21; 26:1–29

2. रोमी अधिकारियों से सम्बन्धित :

क) पिलातुस, लूका 23:13–25

ख) सिरगियुस, प्रेरित.13:7, 12

ग) फिलिप्पी का मुख्य हाकिम, प्रेरित.16:35–40

घ) गल्लियो, प्रेरित.18:12–17

ङ) इफिसुस की रंगशाला, प्रेरित.19:33–41, (विषेश 31)

च) क्लौदियुस लुसियास, 23:26

छ) फेलिक्स, प्रेरित.24

ज) फेस्तुस, प्रेरित.25

झ) अग्रिप्पा द्वितीय, प्रेरित. 26, (विषेश 32)

ञ) पुबलियुस, प्रेरित.28:7–10

2. जब हम पतरस के प्रचारों की तुलना पौलुस के प्रचारों से करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि पौलुस नई वस्तुओं की बातें नहीं कर रहा है, पर प्रेरितीय सुसमाचार के सत्यों का विश्वासयोग्य प्रचारक है।

ग. लूका ने न केवल रोमी सरकार के सामने मसीहत का बचाव किया (देखें, जॉन डबल्यू. मौक की पॉल ऑन ट्राय्ल : द बुक ऑफ एक्टस एज़ ए डिफेन्स ऑफ क्रिस्टियानिटी) परन्तु उसने अन्यजाति कलीसिया के सामने पौलुस का भी बचाव किया। पौलुस पर यहूदी समूहों (गलातियों के यहूदी कट्टरवादी; 2 कुरि.10:3 के झूठे प्रेरित) और युनानी समूहों (कुलुसियों और इफिसियों के तत्व–ज्ञानवादी) के द्वारा निरन्तर प्रहार किया जा रहा था। पौलुस की साधारणता को लूका उसकी यात्राओं और प्रचारों में उसके हृदय और धर्मविज्ञान को दर्शाकर प्रगट करता है।

घ. हालांकि प्रेरितों का लक्ष्य एक सैद्धान्तिक पुस्तक का लक्ष्य नहीं था, पर यह हमारे लिए प्रारम्भिक प्रेरितों के प्रचार के तत्वों का वर्णन करती है जिसे सी. एच. डोड़ करिग्मा कहतें हैं (अर्थात्, यीशु के बारे में आवश्यक सत्य)। जिन वस्तुओं को उन्होंने सुसमाचार का अवश्यक तत्व समझा उन वस्तुओं को देखेने यह हमारी सहायता करती है, विषेशकर वह बातें जो यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान से सम्बन्धित हैं।

<u>विषेश विषयः प्रारम्भिक कलीसिया की ''करिग्मा''</u>

क. पुराने नियम में परमेश्वर के द्वारा दिये गये वायदों की पूर्णता यीशु मसीह की आगमन से हुई है। प्रेरित. 2:30; 3:19, 24; 10:43; 26:6–7, 22; रोम.1:2–4; 1 तीमुथि.3:16; इब्रा.1:1–2; 1पतरस 1:10–12; 2पतरस 1:18–19

ख. परमेश्वर के द्वारा यीशु का मसीहा के रूप में अभिशेक हुआ, प्रेरित.10:38

ग. यीशु ने बपतिस्मे के बाद गलील में अपनी सेवकाई प्रारम्भ की, प्रेरित.10:37

घ. उनकी सेवकाई का प्रदर्शन भले कार्यों, परमेश्वर के सामर्थ्य और अद्भुत कामों के द्वारा हुआ, मरकुस 10:45; प्रेरित.2:22; 10:38

ङ. मसीहा का क्रूसीकरण परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार हुआ, मरकुस 10:45; यूह.3:16; प्रेरित.2:23; 3:13–15, 18; 4:11; 10:39; 26:23; रोम.8:34; 1कुरि. 1:17–18; 15:3; गला.1:4; इब्रा.1:3; 1पतरस 1:2; 3:18, 21

च. वह मृत्यु में से जी उठे और चेलों को दिखाई दिए, प्रेरित. 2:24, 31–32; 3:15, 26; 10:40–41; 17:31; 26:23; रोम.8:34; 10:9; 1कुरि.15:4–7, 12; 1थिस्स.1:10; 1तीमुथ.3:16; 1पतरस 1:2; 3:18, 21

छ. परमेश्वर के द्वारा यीशु को पुनरूत्थित किया गया और उन्हें एक नया नाम दिया गया – 'प्रभु', प्रेरित.2:25–29, 33–36;

3:13; 10:36; रोम.8:34;10:9; 1तीमुथि. 3:16; इब्रा.1:3; 1पतरस 3:22।

ज. परमेश्वर ने एक नये समुदाय के निमार्ण हेतु पवित्र आत्मा दी, प्रेरित.1:8; 2:14–18; 38–39; 10:44–47; 1पतरस 1:12

झ. वह फिर से न्याय करने के लिए और सब वस्तुओं की पुनःस्थापना के लिए आयेंगे, प्रेरित.3:20–21; 10:42; 17:31; 1कुरि. 15:20–28; 1थिस्स.1:10

ञ. जो भी सुसमाचार सुनते और उस पर विष्वास करते हैं उन्हें पश्चाताप और बपतिस्मा लेना है, प्रेरित.2:21, 38; 3:19; 10:43, 47–48; 17:30; 26:20; रोम.1:17; 10:9; 1पतरस 3:21

ये बातें प्रारम्भिक कलीसिया के प्रचार की मुख्य पहलू थीं, हालांकि नये नियम के विभिन्न लेखक कुछ बातों को छोड़ देते हैं या अन्य कुछ बातों को अपने प्रचारों में अधिक महत्व देतें हैं। मरकुस का पूर्ण सुसमाचार पतरस की करिग्मा का पूर्ण अनुकरण करता है। पारम्परिक तौर पर यह माना जाता है कि मरकुस ने रोम में पतरस के द्वारा किए गए प्रचार को एक सुसमाचार का रूप दिया। मत्ती और लूका दोनों मरकुस की मूल रूपरेखा का अनुकरण करते हैं।

ङ. फ्रंक स्टॉग अपनी टीका, द बुक ऑफ एक्टस्, द अर्ली स्ट्रगल फॉर एन अनहिन्डर्ड गॉस्पल में दावा करते हैं कि इसका मूल उददेश्य यीशु के बारे में संदेश को कट्टर राष्ट्रवादी यहूदीमत से सभी मनुष्यों के लिए एक ब्रहमाण्ड़ संदेश तक ले जाना था। स्टॉग की टीका प्रेरितों के काम को लिखने में लूका के उद्देश्य की ओर केन्द्रित है। भिन्न सिद्धान्तों के संक्षेप रूप और विषलेशण को पृष्ठ संख्या 1–18 में देख सकते हैं। स्टॉग प्रेरित.28:31 में ''बिना रोक–टोक'' के शब्दों पर ध्यान देते हैं, जो एक पुस्तक के समापन का असमान्य तरीका है, कि यह बिना रोक–टोक के मसीहत के विस्तार पर लूका के महत्व देने को समझने की कुँजी है।

च. हालांकि प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा का वर्णन 50 से अधिक बार हुआ है, इसका नाम ''पवित्र आत्मा के काम'' नहीं है। केवल 11 अध्याय में ही आत्मा का वर्णन नहीं हुआ है। उनका वर्णन प्रेरितों के पहले आधे भाग में ही हुआ है, जहां पर लूका कुछ अन्य स्त्रोतों को व्यक्त करता है (सम्भवतः जो आरामी भाषा में लिखे गए हैं)। जिस प्रकार सुसमाचार यीशु के लिए हैं उसी प्रकार प्रेरितों के काम आत्मा के लिए नहीं है। यह आत्मा के स्थान का इन्कार करना नहीं है, पर हमें मूल रूप में केवल प्रेरितों के काम से आत्मा के धर्मविज्ञान को बनाने की परिक्षा से बचाने के लिए है।

छ. प्रेरितों के काम का निर्माण सिद्धान्त पढ़ाने के लिए नहीं हुआ है (देखें, फी और स्टूवर्ट की हाउ टू रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ पृश्ठ 94–112)। इसका एक उदाहरण यह होगा कि हम प्ररितों से एक धर्मान्तरण के धर्मविज्ञान का निर्माण करें जो अवश्य ही असफल होगा। प्रेरितों के काम में धर्मान्तरण का क्रम और तत्व भिन्न हैं, तब किस प्रकार का ढाँचा सही होगा? सैद्धान्तिक सहायता के लिए हमें पत्रियों की ओर देखना है। लेकिन यह रूचीकर बात है कि कुछ विद्वानों ने (जैसे हंस कोंजेलमेन) लूका की पहली षताब्दी की जल्द होनेवाली अन्तिम समय की घटनाओं को साधन बनाकर दूसरे आगमान के प्रति एक धीरजपूर्ण सेवा की ओर नई दिशा प्रदान की है। राज्य अभी और यहाँ पर है, वह समार्थ्य से जीवनों को परिवर्तित कर रहा है। इस कार्य में अभी कार्यरत कलीसिया इसका केन्द्र बन जाती है, इसमें अन्तिम समय की आशा केन्द्र नहीं है।

ज. प्रेरितों के काम का दूसरा सम्भावित उद्देश्य रोमियों 9–11 के समान है। यहूदियों ने एक यहूदी मसीहा और कलीसिया में अन्यजातिय लोगों का इन्कार क्यों किया? प्रेरितों के काम में कई स्थानों पर सुसमाचार के ब्रहमाण्ड के स्वभाव को स्पष्ट दिखाया गया है। यीशु उन्हें सारे जगत में भेजतें हैं (1:8)। यहूदी उनका तिस्कार करते हैं, पर अन्यजाति उन्हें प्रतिउत्तर देते हैं। उनका संदेश रोम तक पहुँचता है। यह संभव है कि लूका का उद्देश्य इस बात को दिखाना है कि यहूदी मसीहत अर्थात पतरस का संदेष, और अन्यजाति मसीहत अर्थात पौलुस का संदेष एक साथ जी और बढ़ सकते हैं। वे एक–दूसरे के प्रतियोगी नहीं हैं, पर ब्रहमाण्ड में सुसमाचार प्रचार के कार्य में एकजुट हैं।

झ. जहाँ तक उद्देश्य की बात है मैं एफ. एफ. ब्रूस से सहमत हुँ (न्यू इन्टरनेस्नल कॉमेन्ट्री पृश्ठ 18) क्योंकि लूका और प्रेरितों के काम मूल रूप से एक ही कार्य है और लूका की भूमिका प्रेरितों की भी भूमिका है। हालांकि, लूका एक आँखों देखा गवाह न था, पर उसने ध्यानपूर्ण उन घटनाओं की छान–बीन की और अपनी ऐतिहासिक, साहित्यिक, धर्मविज्ञानिक समझ से उनका सही वर्णन किया।

लूका अपने सुसमाचार और प्रेरितों के काम दोनों में यीशु और कलीसिया की ऐतिहासिक वास्तविक्ता और धर्मविज्ञानिक विश्वासयोग्ता को दिखाना चाहता है। ऐसा हो सकता है कि प्रेरितों के काम का केन्द्र ध्यान पूर्णता का विषय हो (अर्थात,

बिना रोक–टोक के)। इस विचार को कई भिन्न शब्दों और वाक्य–खण्डों से विकसित किया गया है (देखे, वाल्टर एल. लिफिल्ड़ की इन्टरप्रेटिगं द बुक ऑफ एक्टस् पृश्ठ 23.24)। सुसमाचार एक अनुबोध, एक योजना, या कोई नई वस्तु नहीं हैं। यह परमेश्वर की पूर्व निर्धारित योजना है (देखें, प्रेरित.2:23; 3:18; 4:28; 13:29)।

5. साहित्यिक प्रकार

क. नये नियम के लिए प्रेरितों के काम वैसा ही है जैसे कि पुराने नियम के लिए यहोशु की पुस्तक, 2 राजाओं की पुस्तकें : अर्थात एक ऐतिहासिक वर्णन। बाइबल का ऐतिहासिक वर्णन सच्च है, परन्तु इसका केन्द्र, समय विद्या या घटनाओं के थाकाऊ वर्णन में नहीं है। यह कुछ ऐसी घटनाओं का चुनाव करती है जो इस प्रगट करती हैं कि परमेश्वर कौन हैं, हम कौन हैं, परमेश्वर से हमरा मेल कैसे हुआ, और परमेश्वर की मेरे जीवन के प्रति क्या चाहत है।

ख. बाइबल में वर्णित लेखों की समस्या यह है कि लेखक लेखों में यह नहीं बताता कि, 1) उसका उद्देश्य क्या है, 2) प्रमुख सत्य क्या है, और 3) कैसे हम वर्णित लेखों की व्याख्या करें। एक पाठक को निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करना आवष्यक है :

1. इस घटना का वर्णन क्यों हुआ है?

2. यह घटना इससे पहले के बाइबल के अंश से कैसे सम्बन्धित है?

3. मुख्य धर्मविज्ञानिक सत्य क्या है?

4. इसके ऐतिहासिक संदर्भ का क्या महत्व है? (कौन सी घटनायें आगे पीछे आती हैं? क्या इस विषय की चर्चा कहीं और हुई है?)

5. इसका साहित्यिक संदर्भ कितना बडा है? (कई बार बड़े वर्णित अंश एक ही धर्मविज्ञानिक विषय या उद्देश्य में आते हैं।)

ग. केवल ऐतिहासिक वर्णन को ही सिद्धान्त का स्त्रोत नहीं होना है। कई बार ऐसी वस्तुऐं वर्णित होती हैं जो लेखक के उद्देश्य से व्यावहारिक तौर पर सम्बन्धित होती हैं। ऐतिहासिक वर्णित लेख ऐसे सत्यों को बताते हैं जो बाइबल के अन्य स्थानों में वर्णित होते हैं। केवल इसलिए कि कुछ वस्तुओं का वर्णन हुआ है, इसका यह अर्थ नहीं है कि वे सभी समयकाल के विश्वासीयों के लिए परमेश्वर की योजना है (उदा. आत्म–हत्या, बहुपत्नीवाद, पवित्र युद्ध, साँपों को छुना)।

घ. ऐतिहासिक वर्णित लेखों की व्याख्या की सही चर्चा के लिए देखे, गोर्डन फी और डोगलास स्टुवर्ट की हाउ टू रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ 78–93, 94–112

6. टीकायें और सहायता

क. जॉन स्टर्लिंग की एन एट्लस ऑफ द एक्टस्

ख. ए स्टडी गाइड कॉमेन्ट्री, एक्टस् कुर्टिस वोगहन द्वारा (संक्षेप परन्तु उत्तम)

ग. ई. एम. ब्लाइक्लोक की द एक्टस् ऑफ द अपोस्टलस्, टीन्डेल कॉमेन्ट्री सीरीज़ (ग्रिको–रोमन दुनिया की एक अच्छी ऐतिहासिक संक्षेप वर्णन, और पलिश्तिन के भितर और बाहर का यहूदी मत)

घ. एफ.एफ. ब्रूस की कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ एक्टस्, न्यू इन्टरनेषनल कॉमेन्ट्री सीरीज़ (यह मेरे प्रिय टीकाकारों में से एक है)

ङ. ड़. फ्रंक स्टग की टीका, द बुक ऑफ एक्टस्, द अर्ली स्ट्रगल फॉर एन अनहिन्डर्ड गॉस्पल

च. ए टॉन्सलेटर्स हैण्डबुक ऑफ द एक्टस् ऑफ द अपोस्टलस् न्यूमेन और निड़ा, (यू.बि.एस) के द्वारा

छ. फी और स्टूवर्ट की हाउ टू रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ

ज. एन इन्ट्रोडक्षन टू द न्यू टेस्टामेन्ट, कार्सन, मू, और मोरिस के द्वारा

7. ऊपर लिखित टीकाओं से मूल रूपरेखायें

क. कुर्टिस वोगहन की टीका और न्यू इन्टरनेषनल स्टडी बाइबलस् आऊटलाईन प्रेरित.1:8 पर आधारित है।

ख. ई. एम. ब्लाइक्लोक की द एक्टस् ऑफ द अपोस्टलस्, टीन्डेल कॉमेन्ट्री सीरीज़ एक अच्छी विवरणिय रूपरेखा देती है।

ग. एफ.एफ. ब्रूस की कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ द एक्टस्, न्यू इन्टरनेषनल कॉमेन्ट्री सीरीज़ प्रेरितों के संक्षेप कथनों पर आधारित है (5.क; 2.ग. में मेरे लेखों की तुलना करें)

8. संक्षेप में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य–खण्ड़

1. बहुत से पक्के प्रमाण, 1:3

2. चालीस दिन, 1:3

3. परमेश्वर का राज्य, 1:3

4. बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया, 1:9

5. एक सब्त के दिन की दूरी पर, 1:12

6. लहू का खेत, 1:19

7. चिड़ियाँ, 1:26

8. पिन्तेकुस्त, 2:1

9. पवित्र आत्मा से भर गए, 2:4

10. अन्य–अन्य भाषा बोलने लगे, 2:4

11. यहूदी मत धारण करनेवाले, 2:10; 13:43

12. परमेश्वर की ठहराई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार, 2:33

13. अधोलोक, 2:31

14. परमेश्वर के दाहिने हाथ, 2:33

15. मन फिराओ, 2:38; 3:19

16. रोटी तोड़ने, 2:42, 46

17. प्रार्थना के समय, 3:1

18. भीख माँगे, 3:2

19. उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, 3:11; 5:12

20. पवित्र और धर्मी, 3:14

21. विश्रान्ति के दिन, 3:19

22. अनपढ़ और साधारण, 4:13

23. वह सो गया, 7:60

24. इस पंथ, 9:2

25. अपने ऊपर हाथ, 9:12, 8:17

26. पलटन का सूबेदार, 10:1

27. मसीही, 11:26

28. भावी कहनेवाली, 16:16

29. अपने सब लोगों समेत, 16:33

30. इपिकूरी, 17:18

31. स्तोईकी, 17:18

32. अरियुपगुस, 17:22

33. यहूदी जो झाड़ा–फूँकी करते थे, 19:13

34. जादू करनेवालों में से...पोथियाँ, 19:19

35. अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर, 19:24

9. संक्षेप में पहचानने हेतु व्यक्ति

1. थियुफिलुस, 1:1

2. कई स्त्रियाँ, 1:14

3. मत्तियाह, 1:23

4. सदूकी, 4:1; 5:17

5. हन्ना, 4:6

6. कैफा, 4:6

7. लोगों के सरदार और पुरनिये, 4:18

8. हनन्याह, 5:1; 9:10

9. सफीरा, 5:1

10. गमलीएल, 5:34

11. स्तिफनुस, 6:5

12. शाऊल, 7:58; 8:1; 9:1

13. फिलिप्पुस, 8:5

14. दोरकास, 9:36

15. कुरनेलियुस, 10:1

16. अगबुस, 11:28;21:10

17. यूतुखुस, 20:9

10. <u>मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान</u>

1. यरूशलेम, 1:8

2. यहूदिया,1:8

3. सामरिया, 1:8

4. पारथी, 2:9

5. कप्पदूकिया, 2:9

6. पुन्तुस, 2:9

7. आसिया, 2:9

8. फ्रूगिया, 2:10

9. पंफूलिया, 2:10

10. मिस्त्र, 2:10

11. लीबिया, 2:10

12. कुरेन, 2:10

13. क्रेते, 2:11

14. नासरत, 2:22

15. सिकंदरिया, 6:9

16. किलिकिया, 6:9

17. दमिश्क, 9:2

18. कैसिरिया, 10:1

19. याफा, 9:36

20. फीनीके, 11:19

21. साइप्रस, 11:20

22. तरसुस, 11:25

23. सैदा, 12:2

24. फिलिप्पी, 16:12[अ]

25. बिरीया, 17:10

26. ऐथेंस, 17:16

27. कुरिन्थुस, 18:1

11. चर्चा के प्रश्न

1. 1:16 किस प्रकार प्रेरितों की समझ की कमी को दिखाता है?

2. 1:8 मत्ती 18:19–20 से कैसे सम्बन्धित है?

3. एक प्रेरित की क्या विषेशताऐं हैं?, 1:22

4. 'आँधी' और 'आग' आत्मा से क्यों सम्बन्धित है?, 2:2–3

5. 2:8 के चमत्कार को समझायें।

6. पतरस कहता है कि योएल की भविश्यद्वाणी पुरी हुई। तो आप 2:17 और 19–20 को कैसे समझा सकते हैं?

7. यीशु को 'प्रभु' और 'मसीहा' होने का क्या धर्मविज्ञानिक महत्व है?, 2:36

8. साम्यवाद के लिए 2:44 का क्या बाइबल आदेश है?, 4:34–35

9. 3:18 के प्रसंगीकरण को समझायें।

10. 4:11 में पुराना नियम किस प्रकार यीशु पर सही ठहरता है?

11. प्रेरितों के काम में क्या आत्मा से भरना हमेशा गवाह बनने से सम्बन्धित है?

12. प्रेरित.6 में 'उन सात' की विषेशतायें बताईए। क्या वे सेवक थे?

13. शाऊल मसीहियों से घ्रिणा क्यों करता था?

14. क्या 8:15–16 आधुनिक विश्वासियों के उद्धार की घटनाओं के क्रम को बताते हैं?

15. 10:44–48 में अन्य भाषाओं का क्या उद्देश्य है?

16. पौलुस स्थानिय यहूदी आराधनालयों में पहले प्रचार क्यों करता था?, 13:5

17. लुस्त्रा में ऐसा क्या हुआ जिससे पौलुस और बरनबास ने अपने वस्त्र फाड़ लिए?, 14:8–18

18. प्रेरित.15 में यरूशलेम की महासभा का क्या महत्व है?

19. पौलुस और बरनबास के बिच विवाद क्यों हुआ? याफा, 9:36

20. आत्मा ने पौलुस को आसिया जाने से क्यों रोका?, 16:16

21. 16:35–40 में नगर से हाकिम क्यों भय खा जाता है?

22. प्रिसकिल्ला और अक्विला ने अपुल्लोस की सहायता कैसे की? 18:24

23. 20:21 एक महत्वपूर्ण वचन क्यों है?

24. 21:9 से क्या सीख प्राप्त होती है?

25. प्रेरित.21 में पौलुस को यरूशलेम में क्यों कैद किया गया?

26. 23:6–7 को अपने शब्दों में समझायें।

रोमियों का परिचय

1. प्राक्कथन

क. रोमियों की पत्री प्रेरित पौलुस की सबसे क्रमानुसार और तर्किय सैद्धान्तिक पुस्तक है। यह रोम की परिस्थिति से प्रभावित थी, इसलिए, यह एक ''सामयिक'' दस्तावेज है। कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने पौलुस को यह पत्री लिखने पर मजबूर कर दिया। लेकिन, यह पौलुस के लेखों का सबसे निष्पक्ष लेख है, इसमें समस्या के साथ पौलसु का पेश आना सुसमाचार का स्पष्ट प्रदर्शन और प्रतिदिन के जीवन के लिए इसके महत्व को भी दिखाता है।

ख. रोमियों में पौलुस के सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण ने सभी युग में कलीसिया के जीवन को प्रभावित किया है।

1. सन् 386 ई0 में रोम.13:13–14 का अध्यन कर अगस्टिन का मन परिवर्तन हुआ।

2. सन् 1513 में जब मार्टिन लूथर ने भजन.31:1 की तुलना रोम.1:17 से की तो इसने उनके उद्धार की समझ को भी बदल दिया (इब्रा.2:4)।

3. सन् 1738 में रोमियों के परिचय पर लूथर के प्रचार को सुनकर जॉन वेसली का मन परिवर्तित हुआ।

ग. रोमियों की पत्री को समझना मसीहत को समझना है। यह पत्री यीशु के जीवन और शिक्षाओं को, सभी युग की कलीसिया के लिए, ठोस सत्य का रूप प्रदान करती है।

2. लेखक

निश्चिय ही इसका लेखक पौलुस है। पद 1:1 में हम उसी के प्रकार के नमस्कार को पाते हैं। समान्य तौर पर यह समझा जाता है कि पौलुस के ''शरीर में का एक काँटा'' उसकी आँखों की धुँधली दृष्टि थी। इसलिए उसने यह पत्री अपने आप नहीं लिखी, पर एक शास्त्री की सहायता ली जिसका नाम तिरतियुस था (16:22)।

3. तारीख

रामियों की लिखने की तारीख सम्भवतः 56–58 ई0 है। यह पत्री नये नियम की पुस्तकों कुछ ऐसी पुस्तकों में से है जिनकी तारीख सही बतायी जा सकती है। इस बात को हम तब कह सकते हैं जब हम प्रेरित.20:2 की तुलना रोम.15:17 से करते हैं। रोमियों की पत्री को पौलुस ने कुरिन्थुस से अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के अंत में यरूशलेम की ओर निकलने से पहले लिखा था।

4. स्त्रोतागण

यह पत्री अपनी स्त्रोतागणों के स्थान को रोम बताती है। हम नहीं जानते कि रोम की कलीसिया की स्थापना किसने की।

क. ये कुछ ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्होनें पिन्तेकुस्त के दिन में यरूशलेम की ओर यात्रा की और वहाँ से मन फिराकर अपने घर वापस आए कलीसिया प्रारम्भ करने के लिए निकल गये। (प्रेरित.2:10)

ख. ये वे चेले हो सकते हैं जो स्तिफनुस की मृत्यु के बाद यरूशलेम के सताव से बचकर भागे, प्रेरित.8:4

ग. ये पौलुस की मिश्नरी यात्रा से परिवर्तित हुए लोग हो सकते हैं, जिन्होंने रोम की ओर यात्रा की। पौलुस उस कलीसिया में कभी नहीं गया था, पर उसकी यह इच्छा थी, प्रेरित.19:21। यहाँ पर उसके कई मित्रगण थे (देखे, रोम.16)।

परिणाम स्वरूप उसकी योजना थी कि वह अपनी यरूशलेम की यात्रा के बाद उस ''चँदे'' को सौंपकर रोम होते हुए स्पेन जाएगा (रोम. 15:28)। पौलुस को ऐसा महसूस हुआ कि पूर्वी भूमध्य में उसकी सेवकाई समाप्त हो गयी है। वह नये क्षेत्र की खोज में था (16:20–23)। युनान में पौलुस से इस पत्री को रोम तक पहुँचाने वाली फीबे प्रतीत होती है, जो एक सेविका थी, जो उस दिशा की ओर यात्रा कर रही थी (देखें, रोम.16:1)। एक यहूदी तम्बू बनानेवाले के द्वारा पहली षताब्दी में कुरिन्थुस की गलीयों से लिखी गयी यह पत्री इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं?

मार्टिन लूथर ने इसे, ''नये नियम की सबसे मुख्य पुस्तक और सबसे शुद्ध सुसमाचार कहा है। इस पुस्तक का मूल्य इस सत्य में पाया जाता है कि यह एक मन परिवर्तित रब्बी, तरतसुस के शाऊल, द्वारा सुसमाचार की एक गहरी व्याख्या है, जिसे अन्यजाति के लिए प्रेरित होने के लिए बुलाया गया था। पौलुस की कई पत्रियाँ स्थानिय परिस्थिति से रंगित हैं, पर रोमियों

की पत्री नहीं। यह एक प्रेरित के जीवनपूर्ण विश्वास का क्रमानुसार प्रस्तुतिकरण है। क्या आप यह जानते हैं कि सह–मसीहियों के विश्वास के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले कई तक्निकी शब्दों (जैसे, धर्मी ठहराना, अभ्यारोपन, लेपालकपन, और शुद्धिकरण) को हम रोमियों से पाते हैं?

प्रार्थना करें कि परमेश्वर इस अद्‌भुत पत्री को आपके लिए खोल दे जैसे कि हम एक साथ अपने जीवनों के लिए उसकी इच्छा को तलाशते हैं।

5. उद्‌देश्य

क. स्पेन की मिश्नरी यात्रा के लिए सहायता की विनती। पौलुस ने महसूस किया की पूर्वी भूमध्य में उसका कार्य समाप्त हो गया है (देखे, 16:20–23)।

ख. रोम की कलीसिया में यहूदी विश्वसीयों और अन्यजाति विश्वासीयों के बीच की समस्या को सुलझाना। यह सम्भवतः ही सभी यहूदियों को रोम से निकाले जाने के बाद उनके पुनः लौटने का परिणाम था। इस समय तक यहूदी मसीही अगुवों के स्थान अन्यजातिय मसीही अगुवे ग्रहण कर चुके थे।

ग. रोम की कलीसिया को अपना परिचय देने के लिए। इन लोगों के द्वारा पौलुस का भारी विरोध हो रहा था, 1) यरूशलेम में भक्त मन परिवर्तित लोगों के द्वारा (प्रेरित.15 की यरूशलेम सभा), 2) भक्तिहीन यहूदियों द्वारा (गलातियों के यहूदी कट्‌टरवादी और 2कुरिन्थुयों 3:10–13), और 3) अन्यजातियों द्वारा (कुलुसियों; इफिसियों) जो सुसमाचार में अपने फालतू सिद्धान्तों या तत्व–ज्ञान की मिलावट करना चाहते थे।

घ. पौलुस पर एक खतरनाक नई वस्तुओं के अविश्कार का आरोप लगाया गया था कि वह यीशु की शिक्षाओं में अधाँधुंध मिलावट कर रहा है। रोमियों की पुस्तक उसके अपनी बचाव का क्रमानुसार तरीका था इस बात को दिखाने के लिए कि उसका सुसमाचार किस प्रकार सत्य है उसने पुराने नियम और यीशु की शिक्षाओं (सुसमाचार) का प्रयोग किया।

6. संक्षेप रूपरेखा

क. परिचय, 1:1–17

1. नमस्कार, 1:1–7

   क. लेखक, 1:5

   ख. लक्ष्य, 6–7^{अ}

   ग. प्रणाम, 7^{आ}

2. प्रसंग, 1:8–15

3. शीर्षक, 1:16–17

ख. दिव्य धार्मिकता की मांग, 1:18–3:20

1. अन्यजाति संसार का कम होना, 1:18–32

2. यहूदियों का पाखण्ड़ और अन्यजातियों की नैतिकता, 2:1–16

3. यहूदियों का न्याय, 2:17–3:8

4. सारे संसार को दण्ड़, 3:9–20

ग. दिव्य धार्मिकता क्या है?, 3:21–8:39

1. विश्वास द्वारा धार्मिकता, 3:21–31

2. धार्मिकता का आधार : परमेश्वर की प्रतिज्ञा, 4:1–25

क. अब्राहम से सही सम्बन्ध, 4:1–5

ख. दाऊद, 4:6–8

ग. खतने से अब्राहम का सम्बन्ध, 4:9–12

घ. अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा, 4:13–25

3. धार्मिकता की प्राप्ती, 5:1–21

क. अनुग्रहित प्रेम और अतुल्य आनन्द, 5:1–5

ख. परमेश्वर का अनोखा प्रेम, 5:6–11

ग. आदम का अपराध, परमेश्वर का छुटकारा, 5:12–21

4. पवित्रता की व्यावहारिक पहलू, 6:1–7:25

क. पाप से मुक्ति, 6:1–14

1. एक काल्पनिक विरोध, 6:1–2

2. बपतिस्मा का अर्थ, 6:3–14

ख. शैतान का दास या परमेश्वर का दास : आपका चुनाव, 6:15–23

ग. व्यवस्था के साथ मनुष्य का विवाह, 7:1–6

घ. व्यवस्था अच्छी है पर पाप अच्छाई को रोकता है, 7:7–14

5. धार्मिकता का परिणाम, 8:1–39

क. आत्मा के द्वारा जीवन, 8:1–39

ख. सृष्टि का छुटकारा, 8:18–25

ग. आत्मा की निरन्तर सहायता, 8:26–30

घ. सत्य की विजय, 8:31–39

घ. इतिहास में परमेश्वर का उद्देश्य, 9:1–11:32

1. इस्राएल का चुनाव, 9:1–33

क. विश्वास की सही सन्तान, 9:1–33

ख. परमेश्वर का राज्य, 9:14–26

ग. परमेश्वर की जगत की योजना में अन्यजाति शामिल, 9:27–33

2. इस्राएल का उद्धार, 10:1–21

क. परमेश्वर की धार्मिकता बनाम मनुष्य की धार्मिकता, 10:1–11

ख. परमेश्वर की दया सुनानेवालों की मांग करती है, संसार के मिश्न की बुलाहट है, 10:14–18

ग. मसीह पर इस्राएल का निरन्तर अविश्वास, 10:19–21

3. इस्राएल की असफलता, 11:1–36

क. बचे हुए यहूदी, 11:1–10

ख. यहूदी जलन, 11:11–24

ग. इस्राएल का अल्पकालीन अंधापन, 11:25–32

घ. पौलुस की स्तुति पुकार, 11:33–36

ङ. धार्मिकता का व्यावहारिक महत्व, 12:1–15:13

1. पवित्रता के लिए बुलाहट, 12:1–2

2. वरदानों का प्रयोग, 12:3–8

3. विश्वासियों का अन्य विश्वासीयों से सम्बन्ध,12:3–8

4. राज्य के प्रति कर्तव्य, 13:1–7

5. एक दूसरे के प्रति कर्तव्य, 13:8–10

6. प्रभु के साथ हमारा सम्बन्ध,13:11–14

7. सह–भाईयों के प्रति कर्तव्य, 14:1–12

8. दूसरों पर हमारा प्रभाव, 14:13–23

9. मसीही समाज से सम्बन्ध, 15:1–13

च. अन्तिम कथन, 15:14–33

1. पौलुस की व्यक्तिगत योजनायें, 15:14–29

2. प्रार्थना के निवेदन, 15:30–33

छ. व्यक्तिगत अभिवादन, 16: 1–27

1. अभिवादन, 16:1–24

2. अन्तिम कथन, 16:25–27

7. <u>संक्षेप में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य–खण्ड</u>

1. प्रेरित, 1:1

2. शरीर के भाव से तो दाऊद का वंश, 1:3

3. पवित्र, 1:7

4. धार्मिकता, 1:17

5. परमेश्वर का क्रोध, 1:18

6. मन फिराव, 2:4

7. परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, 2:11

8. खतना, 2:25

9. परमेश्वर का वचन, 3:2

10. धर्मी ठहराना, 3:4

11. प्रायश्चित, 3:25

12. हम क्लेशों में भी घमण्ड़ करें, 5:3

13. उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, 5:9

14. धर्मरूपी वरदान, 5:17

15. जो मर गया, वह पाप से छुटकर धर्मी ठहरा, 6:7

16. पवित्रता, 6:19

17. परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, 8:9

18. अब्बा, 8:15

19. धीरज, 8:25

20. पहले से जान लिया, 8:29

21. पहले से ठहराया भी है, 8:29

22. महिमा, 8:30

23. परमेश्वर की दाहिनी ओर, 8:34

24. प्रधानताँए...सामर्थ्य, 8:38

25. लेपालकपन, 9:4

26. वाचाँए, 9:4

27. ठोकर खाने की चट्टान, 9:33

28. अंगीकार, 10:9

29. विश्वास करें, 10:4,11

30. स्वाभाविक डालियाँ, 11:21

31. भेद, 11:25

32. आमिन,11:36

33. पहुनाई, 12:13

34. श्राप, 12:14

35. शासकीय अधिाकरियों के अधीन रहें, 13:1

36. त्याग कर...बाँध ले, 13:12

37. विश्वास में निर्बल, 14:1

38. हम बलवानों, 15:1

8. संक्षेप में पहचानने हेतु व्यक्ति

1. अब्राहम, 4:1

2. पुरखे, 9:5

3. एसाव, 9:13

4. बाअल, 11:4

5. फीबे, 16:1

6. प्रिस्का और अक्विला, 16:3

7. युनियास, 16:7

8. तिरतियुस, 16:22

9. मानचित्र पर ध्यान देनेवाले हेतु स्थान

1. रोम, 1:7

2. किंखिया, 16:1

10. चर्चा के प्रश्न

1. 1:16 पौलुस का प्रमुख विषेश क्यों है?

2. किन दो मार्गों से सभी मनुष्य परमेश्वर को जानते हैं?, अध्याय 1–2

3. 1:26–27, वर्तमान की समलेंगिकता के विषय को कैसे सम्बोधित करता है?

4. 2:6 गलातियों 6:7 से कैसे सम्बन्धित हैं?

5. अध्याय 3 में पद 9–18 पुराने नियम के वचनों को व्यक्त करते हैं, वे सभी किस धर्मविज्ञानिक सत्य कि ओर संकेत करते हैं?

6. 4:6 महत्वपूर्ण क्यों हैं?

7. 4:15 को अपने शब्दों में समझायें।

8. क्या 5:8 परमेश्वर के बारे में कुछ कहता है?

9. 5:18 और 19 किस प्रकार समानान्तर है?

10. 6:11 के व्यवाहारिक महत्व को समझायें।

11. रोम.6:23 को संक्षेप सुसमाचार कहा गया है, क्यों?

12. 'आत्मा की नई रीति' और 'लेख की पुरानी रीति' के बीच भिन्नता को समझायें।

13. अध्याय 7 किसकी चर्चा कर रहा है?

14. 7:7–12 पुराने नियम के उद्देश्य के बारे में क्या बताता है?

15. क्या 7:19 आपके जीवन से सम्बन्धित है?

16. 8:22 को अपने शब्दों में समझायें।

17. क्या 8:26–27 अन्य भाषाओं के बारे में है?

18. 8:28, 8:29 से कैसे सम्बन्धित है?

19. अध्याय 9–11 के साहित्यिक अंश का विषय क्या है?

20. 10:4 को अपने शब्दों में समझायें।

21. 11:7 को अपने शब्दों में समझायें।

22. 11:26 को अपने शब्दों में समझायें।

23. अध्याय 2 में बताए गए आत्मिक वरदान क्या अभी भी कार्यरत हैं और क्या वे आज के संदर्भ में सही है?

24. 12:20 को अपने शब्दों में समझायें।

25. 14:14 को अपने शब्दों में समझायें।

26. 14:23 को अपने शब्दों में समझायें।

1 कुरिन्थियों का परिचय (एक तंग कलीसिया को व्यावहारिक उपदेश)

1) 1 कुरिन्थियों की विषेशताएँ

क) पौलुस के अन्य लेखों में से इस पत्री की सबसे अधिक और सबसे पहले उद्घृती की गई है। जो इसके महत्व और लाभ को दिखाता है।

ख) मुर्रौटोरियों के लेख में, जिसमें रोम की कई पुस्तकों की अधिकारिक सुची है (180–200 ई0), पौलुस के लेखों में इसका सबसे पहला स्थान है, यह भी इसके महत्व को बताता है।

ग) पौलुस अपने व्यावहारिक पत्र में अपने व्यक्तिगत मत और प्रभु के मत के बीच एक भिन्नता को लाता है। पर यह एक विषय पर यीशु की शिक्षाओं के प्रति उसकी समझ पर आधारित है। उसका विश्वास था कि उसका मत भी आत्मा द्वारा प्रेरित है और आधिकार रखता है। (देखें, 7:25)

घ) पौलुस का सहायक सिद्धान्त विश्वासियों की स्वतंत्रता और उनकी अपनी जिम्मेदारी की व्यवस्था पर आधारित नहीं है पर प्रेम पर आधारित है।

ङ) यह पत्री (दुसरी कुरन्थियों के साथ) हमें नये नियम की कलीसिया के ढाँचे, तरीके, और संदेश पर ज्ञान देती है। पर यह भी ध्यान देना आवष्यक है कि यह कलीसिया एक तंग और असामान्य कलीसिया थी।

2) कुरिन्थुस नगर

क) युनान के सबसे किनारे वाले दक्षिण बिन्दु की ओर शीतकाल का जहाजों का मार्ग (अर्थात, केप मालिया) बहुत खतरनाक था। इस कारण सबसे छोटा ज़मीनी मार्ग ही लाभदायक था। कुरिन्थुस और सरोनिक की खाड़ी के बीच इस्थमुस से चार मील की दूरी पर स्थित कुरिन्थुस का भौगोलिक स्थान इसे एक मुख्य व्यापारिक (जहाज और व्यापार के केन्द्र जो मिट्टी के बर्तन के विभिन्न प्रकार और पीतल के विषेश प्रकार में निपुण थे) और सैनिक केन्द्र था। पौलुस के समय में यही ऐसा स्थान था जहाँ पूर्व और पश्चिम का मिलन होता था।

ख) कुरिन्थुस युनानी–रोमी संसार का एक मुख्य सास्कृतिक केन्द्र भी था, क्योंकि यहाँ पर सालाना दो बार इस्थमियों खेल का आयोजन होता था, जो 581 ई.पू. में शुरू हुआ था (पोसेदोन के मन्दिर पर)। केवल एथेंस के ऑलंम्पिक खेल, हर चार साल में, इनके आकार और महत्व के साथ तुलना कर सकते थे (थुसिदिद्स, इतिहास 1.13.5)।

ग) 146 ई.पू. में कुरिन्थुस नगर रोम के विरूध एक विद्रोह में शामिल था और उसे रोमी जनरल लूसियस द्वारा समाप्त कर दिया गया और उसकी जनसंख्या तितर बितर हो गई। पर इसके आर्थिक और सैनिक महत्व के कारण 46 या 48 ई.पू. में जुलियस कैसर द्वारा इसकी पुनः स्थापना हुई। यह एक रोमी कालोनी बन गया जहाँ पर रोमी सैनिक कार्य निवृित होते थे। यह कलाकारी और संस्कृति में रोम के समान था और 27 ई0 में रोमी प्रांत अखाया का शासकिय केन्द्र बन गया। 15 ई0 में राजकिय प्रान्त बन गया।

घ) पुराने कुरिन्थुस का एक्रोपोलिस, जो जमीन से 1880 फीट की ऊचाँई पर स्थित, एफ्रोडाइट मन्दिर का स्थान था। इस मन्दिर में 1000 वेशयाओं के झुड़े थे (स्ट्रैबो, जिओग्राफी 8.6.20–22)। एक 'कुरिन्थि' कहलाने का अर्थ अनैतिक और भ्रश्ट जीवन है (कुरिन्थियाजस्थाइ, अरिस्तोफिनस द्वारा कहलाया गया था)। यह मन्दिर, कइ नगरों जैसे, पौलुस के आने से 150 साल पहले एक भूकम्प में नाश हो गया था, जैसा फिर 77 ई0 में हुआ था। यह निशचित नहीं है कि पौलुस के समय में लेंगिक रीतियाँ पाई जाती थीं या नहीं। जब से रोमियों ने, 146 ई.पू. में इसका विनाश कर सारे नागरिकों को बन्दी बना लिया तब से इस नगर के यूनानी रंग को रोमी कलोनी स्तर ने छीन लिया (पाउसानियास 2.3.7)।

3) लेखक

क) इसी शहर में प्रेरित पौलुस अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा में आया था, इसका वर्णन प्रेरित.18:1–21 में है। एक दर्शन के द्वारा प्रभु ने पौलुस को यह दिखाया कि अनेक विश्वास करेगें और उसकी सेवा के विरूध कोई भी विरोध सफल न होगा (देखें, प्रेरित.18:9–10)।

ख) पौलुस की मिश्नरी योजना यह थी कि वह अपने समय के मुख्य स्थानों में एक कलीसिया का निमार्ण करें, उन्होंने यह सिखाया कि यात्रा करने वाले परिवर्तित यात्री, व्यापारी, और जहाज के चालक जहाँ पर भी जाएं वहाँ पर सुसमाचार का प्रचार करें। यह स्थानिय कलीसिया की जिम्मेदारी थी कि वे अपने स्थान पर सुसमाचार प्रचार करें और शिश्यत्व की जिम्मेदारी लें।

ग) पौलुस आक्विला और प्रिसकिला से मिलता है, और विश्वासी तम्बू बनाने वालों और चमड़ें के करिगरों से भी मिलता है। उन्हें क्लौदियुस, जो यहूदी रीति रिवाजों के विरूध था, के नियम (ओरोसियस्, इतिहास. 7:6:15–16) द्वारा 46 ई0 में रोम से बाहर निकाल दिया गया था (देखें, प्रेरित.18:2)। पौलुस अकेले ही कुरिन्थुस आया था। सिलास और तिमोथियुस दोनों मक्किदुनिया में कार्यरत थे (देखें, प्रेरित.18:5)। वह बहुत निरूत्साहित था (देखें, प्रेरित.18:9–19; 1कुरि.2:3)। पर तब भी वह धिरज के साथ कुरिन्थुस में 18 महीने रहा (देखें, प्रेरित.18:11)।

घ) इस पुस्तक का लेखक पौलुस है इसके बारे में रोम के क्लेमेंट बताते है, जिसने कुरिन्थुस को 95 या 96 ई0 में एक पत्र लिखा (देखें, 1 क्लेमेंट 37:5; 47:1–3; 49:5)। इस पुस्तक पर पौलुस के लेखक होने पर आधुनिक विद्वानों ने भी कभी संदेह नहीं किया।

4) <u>तारीख</u>

क) कुरिन्थुस में पौलुस के जाने के बारे में सम्राट क्लौदियुस द्वारा डेलफी लेख में दावा किया गया है, जो गल्लियो के शासन के प्रारम्भ की तारीख जुलाई 51 ई0 से 52 ई00 बताता है (देखें, प्रेरित.18:1–17), जो पौलुस के आने की तारीख को 49–50 ई0 के आस–पास बताता है।

ख) तो पौलुस की पत्र लिखने की तारीख कुछ मध्य 50 ई0 के निकट होगी। उसने यह पत्र इफुसुस से लिखा जहाँ पर उसने दो साल (देखें, प्रेरित.19:10) से तीन साल (देखें, प्रेरित.20:34) के बीच सेवा की।

ग) एफ एफ ब्रूस और मॉरी हेरिस द्वारा पौलुस के लेखों की समय विद्याः

पुस्तक	तरीख	लिखने का स्थान	प्रेरितों से सम्बन्ध
1) गलतियों	48	सिरिया का अन्ताकिया	14:28; 15:2
2)1 थिस्स	50	कुरिन्थुस	18:5
3) 2 थिस्स	50	कुरिन्थुस	
4) 1 कुरि	55	इफिसुस	19:20
5) 2 कुरि	56 या 57	मकिदुनिया	20:2
6) रोम	57	कुरिन्थुस	20:3
7–10) बन्दिगृह की पत्रियाँ			
कुलुस्सियों	60 ई0 के प्रारम्भ में	रोम	
इफिसियों	60ई0 के प्रारम्भ में	रोम	
फिलेमोन	60 ई0 के अन्त में	रोम	
फिलिप्पियों	62–63 ई0 के अन्त में	रोम	
11–13) चौथी मिश्नरी यात्रा			
1 तीमुथियुस	63 या बाद	मकिदुनिया	
तितुस	63 या बाद	इफिसुस?	
2 तीमुथियुस	64 (68 ई0 से पहले)	रोम	

5) पत्र के स्त्रोतागण

क) इस पत्र के स्त्रोतागण एक भरी हुई कलीसिया थी जो ज्यादातर अन्यजाति थे। कुरिन्थुस की कलीसिया जातिय तौर पर और सांस्कृतिक तौर पर मिश्रित थी। हम प्राचीन वस्तुओं की जानकारी और वचन से यह जान सकते हैं कि कुरिन्थुस में एक यहूदी आराधनालय था।

ख) रोमी सैनिक अपने 20 साल की सैन्य सेवा के समापन के बाद वहाँ पर बस जाते थे। कुरिन्थुस एक स्वतन्त्र शहर, एक रोमी कलोनी और रोमी प्रान्त अखाया की राजधानी भी था।

ग) यह पत्र अनेक समूहों के बारे मे बताता है : 1) यूनानी ज्ञानी जो अपनी दर्शनशास्त्र परम्पराओं पर गर्व करते थे और वे मसीही बातों को इन पुरानी रीतियों और ज्ञानवादी परम्पराओं से जोड़ना चाहते थे; 2) रोमी शासक और समाज के उच्च लोग; 3) एक आकस्मिक विश्वासी यहूदी जो अधिकतर परमेश्वर के भय मानने वाले, आराधनालय में आने वाले अन्यजातियों से बने थे; 4) अधिक संख्या के परिवर्तित सेवक।

6) पत्री का उद्देश्य

क) पौलुस को निम्नलिखित स्त्रोतों से कुरिन्थुस में उत्पन समस्या का पता चला :

1) खलोए के घर के लागों से, 1:1

2) कलीसिया से एक पत्र जिसमें अनेक सवाल थे, 7:1, 25; 8:1; 12:1; 16:1, 12

3) कलीसिया के अन्य लोगों से

4) स्तिफनुस और फूरतूनातुस और अखइकुस के वहाँ जाने से, 16:17। यह संभव है कि वो पत्र (दूसरा वाला) इन लोगों (चौथा वाला) द्वारा पौलुस के पास लाया गया।

यह रूचीकर बात है कि एम. जे. हेरिस ने इस पत्री की रूपरेखा कुरिन्थियों की कलीसिया के बारे में पौलुस को प्राप्त जानकारी के आधार पर की है।

1) खलोए के घर के लागों से प्राप्त जानकारी से, इस कारण पौलुस ने अध्याय 1–4 लिखा।

2) कलीसिया के प्रतिनिधियों (स्तिफनुस और फूरतूनातुस और अखइकुस) के द्वारा मिली जानकारी के कारण अध्याय 5–6 लिखे गए।

3) कलीसिया द्वारा लिखे गए सवालों के कारण अध्याय 7–16 लिखे गए।

ख) कलीसिया विभिन्न अगुवों, जैसे पौलुस, अपोलुस, पतरस और एक सम्भवतः मसीह समूह (देखें, 1:12) को प्राथमिकता देने के कारण विभाजित हो गई। कलीसिया न केवल अलग अगुवों से, पर अनेक नैतिक मुद्दों और आत्मिक वरदानों के उपयोग से भी विभाजित हो गई थी। इस विवाद का मुख्य मुद्दा पौलुस का अधिकार था।

7) कुरिन्थियों की कलीसिया के साथ पौलुस का सम्बन्ध – एक काल्पनिक विचार

क) कुरिन्थियों की कलीसिया को पौलुस ने कितने पत्र लिखे?

1) केवल दो, 1 और 2 कुरिन्थियों

2) तीन, पर एक पत्र खो गया था।

3) चार, पर दो पत्र खो गए थे।

4) कुछ आधुनिक विद्वान दो खोए पत्रों के अंश को 2 कुरिन्थियों में पाते है।

4.1) पहले पत्र (1 कुरि.5:9) (2 कुरि.6:14–17:1) में।

4.2) बाद के पत्र (2 कुरि. 2:3–4,9; 7:8–12) (2 कुरि. 10–13) में।

5) पाँच, 2 कुरि.10–13 पाँचवे पत्र के रूप में, जिसे षायद तितुस से मिले विरण के बाद लिखा गया होगा।

ख) तीसरा विचार सही प्रतित होता है।

1) पहला पत्र, खोया हुआ (1 कुरि. 5:9)

2) 1 कुरिन्थियों

3) बाद का पत्र, खोया हुआ (सम्भवतः वह पत्र जिसका अंश 2 कुरि.2:1–11; 7:8–12 में पाते हैं।)

4) 2 कुरिन्थियों

ग) एक काल्पनिक निमार्ण

तरीख	यात्रा	पत्र
50–52 ई0, पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा	अपनी दुसरी यात्रा में पौलुस कुरिन्थुस में 18 महीने रहा (देखें, प्रेरित.18:1–11)	1 कुरि.5:9–11 कलीसिया में अनैतिकता के बारे में एक पत्र को दशार्ता है। यह पत्र तब तक अनजान है जब तक : 1) जैसा कुछ कहते हैं कि 2 कुरि.6:14–7:1 इसका भाग है या 2) 2 कुरि.2:3, 4, 9 पत्र का पहला अंश है और 2 कुरि. को दिखाता है।
52 ई0 गल्लियो 52 ई0 से शासक था (देखें, प्रेरित. 18:12–17)	पौलुस दो स्त्रोतों से इफिसुस में कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्या के बारे में सुनता है से : 1) खलोए के लोगों से, (1 कुरि.1:11 और 2) स्तिफनुस और फूरतूनातुस और अखइकुस, 1 कुरि.16:17। वे कुरिन्थियों की कलीसिया से एक पत्र लाए जिसमें कई सवाल थे।	पौलुस 1 कुरिन्थियों लिखकर इन सवालों का जवाब देता है (देखें, 1 कुरि.7:1, 25; 8:1; 12:1; 16:1, 2)। तिमुथियुस (देखें, 1 कुरि.4:17) इफिसुस (देखें, 1 कुरि.16:8) से प्रतिउत्तर ले कर कुरिन्थुस जाता है। तिमुथियुस समस्या का हल नहीं कर पाता।
56 ई0 (वसंत)	पौलुस कुरिन्थुस के लिए दर्दपूर्ण अचानक यात्रा करता है (इसका वर्णन प्रेरितों में नहीं है, देखें, 2 कुरि.2:1) यह यात्रा सफल नहीं होती, पर वह फिर से आना चहता है।	पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया को कठोर पत्र लिखता है (देखें, 2 कुरि.2:3–4, 9; 7:8–12) जिसे तितुस लेकर जाता है (देखें, 2 कुरि.2:13; 7:13–15) यह पत्र तब तक अनजान है जब तक : 1) इसका भाग कुरिन्थियों की पत्री में नहीं मिलता जैसा कुछ कहते हैं कि 2 कुरि. 10–13 में इसका भाग है
56 ई0 शीतकाल या 57 ई0 शीतकाल	पौलुस त्रोआस में तितुस से मिलने की काशिश करता है पर तितुस नहीं आता, इसलिए पौलुस मकिदुनिया जाता है (देखें, 2 कुरि.2:13; 7:5, 13) सम्भवतः फिलिप्पी जाता है। (देखें, एम एस एस बी सी, के, एल, पी)	वह तितुस से मिलता है और सुनता है कि कलीसिया ने अगुवेपन को स्वीकारा है और फिर वह 2 कुरिन्थियों को धन्यवाद देते हुए लिखता है (देखें, 2 कुरि. 7:11–16) यह पत्र भी तितुस लेकर जाता है।
57–58 शीतकाल	पौलुस की कुरिन्थुस की आखरी यात्रा को हम प्रेरित.20:2–3 में पाते हैं। हालांकि यहाँ पर कुरिन्थुस का नाम नहीं है पर एसा माना जाता है कि पौलुस कुरिन्थुस गया था। क्योंकि वो वहाँ पर शीतकाल में जाता था।	अध्याय 1–9 और 10–13 के बीच में स्वर के परिवर्तन को देखते हुए विद्वान (एफ. एफ ब्रूस) यह मानते हैं कि अध्याय 1–9 लिखने के बाद पौलुस को कोई बुरी खबर मिली (सम्भवतः पुराने विरोधी फिर से षामिल हो गए या फिर नये विरोधी कलीसिया में जुड़ गए)

8) समापन

1) 1 कुरिन्थियों में हम पौलुस, एक पास्वान, को कलीसिय की समस्या के साथ उलझते देख सकते हैं। इस पत्री और गलतियों में हम उसे संसारिक सत्य को भिन्न मार्गों में लगाते हुए देख सकते हैं, जो कलीसिया की आवश्यकताओं पर निर्भर हैं : गलतियों की कलीसिया के लिए स्वतंत्रता और कुरिन्थियों की कलीसिया के लिए सीमा।

2) यह पुस्तक या तो एक क्रमानुसार 'सांस्कृतिक डइनोसोरस् है या सैद्धान्तिक सत्यों का धन है' जिसे एक विषेश ऐतिहासिक या सांस्कृतिक संदर्भ में लगाया गया है। हमें ध्यान देना है कि कहीं हम सत्य और सत्य की महत्वपुर्णता को मिला न दें। इस अतिआवश्यक बाइबल के विश्लेषण की जानकारी के लिए देखें, गॉर्ड़न ड़ि फी और ड़ग्लस् स्टूअर्ट की हाउ टू रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ 65–76।

3) यह पुस्तक आपको आपकी आत्मिक सीमा के बल तक ले जाएगी ताकि आप बाइबल का सही अनुवाद कर सकें। यह आपको आपके धर्मविज्ञान के पहलुओं पर सोचने को मजबूर कर देगी। यह हमारे दिन के लिए परमेश्वर की इच्छा के द्वार को खोलेगी, व्यावहारिक बात करें तो जैसा कि बाइबल के कुछ दुसरे भाग करते हैं।

9) 1 कुरिन्थियों की संक्षिप्त रूपरेखा

क) परिचय, 1:1–9

1) नमस्कार, 1:1–3

2) धन्यवाद, 1:4–9

ख) कुरिन्थुस की समस्या, 1:10–6:20

1) मसीही अगुवापन के उद्देश्यों और उपदेशों के कारण कलीसिया में विभाजन (अथार्थ, पौलुस, अपोलुस, पतरस), 1:10–4:12

2) आष्चर्य चकित कर देने वाली अनैतिकता, 5:1–13

3) मसीहियों में मुकदमे–बाज़ी, 6:1–11

4) मसीही स्वतंत्रता जिम्मेदारी के साथ, 6:12–20

ग) कुरिन्थुस से एक पत्री जिसमें कठोर प्रशन हैं, 7:1–16:4

1) मानव का सहवास स्वभाव, 7:1–40,

2) मुर्तियों की संस्कृति और मसीही स्वंतत्रा के साथ सम्बन्ध, 8:1:11:1

3) मसीही आराधना और आत्मिकता, 11:2–14:40

4) यरूशलेम की कलीसिया के लिए चन्दा, 16:1–4

घ) अन्तिम वचन

1) पौलुस की यात्रा की योजना, 16:5–12

2) अन्तिम वचन और नमस्कार, 16:13–24

10) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और व्यक्ति

1) पवित्र, 1:2

2) सनातन से, 2:7, 8

3) परमेश्वर की गुप्त बातें, 2:10

4) परमेश्वर की रचना, 3:9

5) परमेश्वर का मन्दिर, 3:16,17

6) परमेश्वर के भेद, 4:1

7) ऐसे मनुष्य को शैतान को सौंप दो, 5:5

8) स्वर्गदुतों का न्याय करेंगें, 6:3

9) तुम में से कितने ऐसे थे, 6:11

10) कुवाँरियों के विषय में, 7:25

11) मैं आप ही किसी रीति मे निकम्मा ठहरूँ, 9:27

12) दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं, 10:20

13) प्रभु के कटोरे में से पी सकते हो, 10:21

14) स्वर्गदुतों के कारण, 11:10

15) मैं यह सुनता हुँ कि तुम मे फूट होती है, 11:18

16) यीशु स्त्रापित है, 12:3

17) आत्माओं की परख, 12:10

18) झनझनाती हुई झांझ, 13:1

20 जब सर्वसिद्ध आयेगा, 13:10

21) दर्पण में धुँधला देखते हैं, 13:12

22) अन्त होगा, 15:24

23) चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए किया जाता है, 16:1

11) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) सोस्थिनेस, 1:1

2) खलोए के घराने के लोग, 1:11

3) अपुल्लोस, 1:12

4) कैफा, 1:12

5) क्रिस्पुस और गयुस, 1:14

6) इस संसार के हाकिम, 2:6,8

7) शारीरिक मनुष्य, 2:14

8) आत्मिक लोग, 3:1

9) कैफा, 15:5

10) बारहों, 15:5

11) याकूब, 15:7

12) मानचित्र पर पहचानने हेतु स्थान

1) कुरिन्थुस, 1:2

2) गलातिया की कलीसियाओं, 16:1

3) यरूशलेम, 16:3

4) मकिदुनिया, 16:5

5) इफिसुस, 16:8

6) अखया, 16:15

7) आसिया, 16:19

13) चर्चा के प्रशन

1) यहुदियों ने यीशु को मसीहा स्वीकार क्यों नहीं किया?

2) युनानियों ने यीशु का तिरसकार क्यों किया?

3) 1:18–25 और 2:1 में पौलुस ने दशर्नशास्त्र के बारे में इतने नकारत्मक वचन क्यों कहे?

4) 1:26–31 के महत्व को बताएं।

5) 3:10:15 किसको दशार्ता है?

6) 5:1–8 में पौलुस कलीसिया का खण्ड़न क्यों करता है?

7) 6:1–11 क्या मसीहियों को न्यायालय से अलग करता है?

8) क्या अध्याय 7 में पौलुस अविवाहित रहने को परमेश्वर की इच्छा बताता है?

9) क्या अध्याय 7:12–13 का अर्थ यह है कि विश्वासी अविश्वासीयों से विवाह कर सकते हैं?

10) अध्याय 8 कैसे अध्याय 14 के समान है?

11) पौलुय कुरिन्थुस की कलीसिया से चन्दा क्यों नहीं लेता? (9:3–18)

12) 9:19:23 के महत्व को समझाएं।

13) 10:13 को अपने शब्दों मे समझाएं।

14) 10:13 विश्वासियों के लिए इतना अच्छा वचन क्यों है?

15) 10:23 के आत्मिक सिद्धान्त को अपने शब्दों में बताएं।

16) 11:15 क्या 14:34 के विरोध में है?

17) क्या 11:30 का अर्थ यह है कि कुछ विश्वासियों की प्रभु भाज को लेने से मृत्यु हो गई?

18) 11:34 में पौलुस के वचन की परिस्थिति बताएं।

19) 11:7 के आत्मिक सिद्धान्त का क्या महत्व है?

20) आत्मिक वरदान शारीरिक वरदान से कैसे सम्बन्धित है? विश्वासी कब आत्मिक वरदानों पाते हैं?

21) 12:29–30 इस प्रशन का उत्तर कैसे देता है कि 'क्या सभी विश्वासियों को अन्य भाषाओं में बाते करना चाहिए'? (14:5)

22) 13:8 में क्या जाती रहेगी और क्या नहीं टलेगी?

23) किस प्रकार अध्याय 14 सार्वजनिक आराधना में अन्य भाषाओं के प्रयोग पर रोक लगाता है?

24) अध्याय 14 में किन तीन समूहों को पौलुस सार्वजनिक आराधना में सीमित करता है?

25) 15:1–4 में सुसमाचार के बिन्दुओं को बताएं।

26) यीशु के जीवन में 15:6 कब घटित होता है?

27) 15:22 रोम.5:12–21 के समान कैसे है?

2 कुरिन्थियों का परिचय

1) प्राक्कथन

क) पौलुस की अन्य पत्रियों से अधिक यह पुस्तक हमें अन्यजातियों के प्रति उसके ह्रदय के बारे में बताती है। यह उसकी वास्तविक आत्मकथा है।

ख) पौलुस के समान ही, यह पुस्तक भी अद्भुत मिलन है आत्मिक ऊच्चाइयों और निचाइयों का, क्रोध और आनन्द की भावनाओं के स्वतन्त्र बहाव का।

ग) यह पुस्तक वास्तव में एक पत्री है और एक पत्री के समान वार्तालाप का केवल आधा ही अंश है। पहले के कई तर्क अंश और परिस्थितियाँ खो गई हैं। यह इस सत्य का अच्छा उदाहरण है कि नये नियम की पत्रियाँ मूल रूप से कुछ विषेश आवश्यकतों के प्रतिउत्तर में लिखी गई थीं और ये धर्मविज्ञानिक बातें नहीं हैं।

घ) यह पुस्तक विद्वानों और प्रचारों मे अनदेखी हो गई है। यह बहुत ही दुःख की बात है क्योंकि यह पुस्तक पौलुस के कुछ अद्भुत रूपकों की स्त्रोत है। यह पौलुस की मसीही दुःख भोग पर परिभाषित चर्चा है।

ङ) पासवानों के लिए स्थानिय कलीसिया की समस्याओं से पेश आने में यह अति सहायक है। पौलुस व्यक्तिगत सताव और गलत समझे जाने के बारे में हम सभी को एक अच्छा उदाहरण देता है।

2) एतिहासिक संदर्भ

क) लेखक

1) बाइबल की सभी पुस्तकों के परम्परागत लेखक के मत के आधुनिक खण्डन के बीच में भी इसके लेखक पर कोइ संदेह नही है।

2) इसकी आत्मकथा और इसके कुछ वाक्य–खण्डों को समझना इतना कठिन है कि पौलुस के वजाए इस पुस्तक का कोई और लेखक हो यह असम्भव है। इसकी कठिनाई इसके खरेपन को बताती है।

3) 1:1 और 10:1 में पौलुस को लेखक बताया गया है। मेरे विचार से यह लेखक कौन है इस सवाल का उत्तर देता है।

ख) तारीख

1) 2 कुरिन्थियों की पुस्तक की तारीख पूरी तरह 1 कुरिन्थियों और प्रेरितों के काम से सम्बन्धित है।

2) प्रेरित.18:1–18 और 20:2–3 पौलुस के कुरिन्थुस में होने को बताते हैं, पर वहाँ पर एक और अवर्णित यात्रा दिखाई पडती है। (2 कुरि.2:1, तीसरी यात्रा का वर्णन 12:14 और 13:1–2 में है।)

3) मुख्य सवाल पौलुस की यात्रा और उसके कुरिन्थुस को पत्र लिखने के समय से सम्बन्धित है।

4) कुरिन्थुस की घटनाओं की तारीख के प्रति समस्या यह है कि हमारे पास प्रेरित.18:1–18 और 20:2–3 के बीच कोइ बाहरी प्रमाण या जानकारी नहीं है, केवल कुरिन्थियों की पत्री के आन्तरिक प्रमाण ही हैं।

5) कुरिन्थियों की कलीसिया के साथ पौलुस के सम्बन्ध – एक काल्पनिक विचार

तरीख	यात्रा	पत्र
50–52 ई0, पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा	अपनी दुसरी यात्रा में पौलुस कुरिन्थुस में 18 महीने रहा (देखें, प्रेरित.18:1–11)	1 कुरि.5:9–11 कलीसिया में अनैतिकता के बारे में एक पत्र को दशार्ता है। यह पत्र तब तक अनजान है जब तक : 1) जैसा कुछ कहते हैं कि 2 कुरि.6:14–7:1 इसका भाग है या 2) 2 कुरि.2:3, 4, 9 पत्र का पहला अंश है और 2 कुरि. को दिखाता है।

52 ई0 गल्लियो 52 ई0 से शासक था (देखें, प्रेरित. 18:12–17)	पौलुस दो स्त्रोतों से इफिसुस में कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्या के बारे में सुनता है से : 1) खलोए के लोगों से, (1 कुरि.1:11 और 2) स्तिफनुस और फूरतूनातुस और अखइकुस, 1 कुरि.16:17। वे कुरिन्थियों की कलीसिया से एक पत्र लाए जिसमें कई सवाल थे।	पौलुस 1 कुरिन्थियों लिखकर इन सवालों का जवाब देता है (देखें, 1 कुरि.7:1, 25; 8:1; 12:1; 16:1, 2)। तिमुथियुस (देखें, 1 कुरि.4:17) इफिसुस (देखें, 1 कुरि.16:8) से प्रतिउत्तर ले कर कुरिन्थुस जाता है। तिमुथियुस समस्या का हल नहीं कर पाता।
56 ई0 (वसंत)	पौलुस कुरिन्थुस के लिए दर्दपूर्ण अचानक यात्रा करता है (इसका वर्णन प्रेरितों में नहीं है, देखें, 2 कुरि.2:1) यह यात्रा सफल नहीं होती, पर वह फिर से आना चहता है।	पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया को कठोर पत्र लिखता है (देखें, 2 कुरि.2:3–4, 9; 7:8–12) जिसे तितुस लेकर जाता है (देखें, 2 कुरि.2:13; 7:13–15) यह पत्र तब तक अनजान है जब तक : 1) इसका भाग कुरिन्थियों की पत्री में नहीं मिलता जैसा कुछ कहते हैं कि 2 कुरि. 10–13 में इसका भाग है
56 ई0 शीतकाल या 57 ई0 शीतकाल	पौलुस त्रोआस में तितुस से मिलने की काशिश करता है पर तितुस नहीं आता, इसलिए पौलुस मकिदुनिया जाता है (देखें, 2 कुरि.2:13; 7:5, 13) सम्भवतः फिलिप्पी जाता है। (देखें, एम एस एस बी सी, के, एल, पी)	वह तितुस से मिलता है और सुनता है कि कलीसिया ने अगुवेपन को स्वीकारा है और फिर वह 2 कुरिन्थियों को धन्यवाद देते हुए लिखता है (देखें, 2 कुरि. 7:11–16) यह पत्र भी तितुस लेकर जाता है।
57–58 शीतकाल	पौलुस की कुरिन्थुस की आखरी यात्रा को हम प्रेरित.20:2–3 में पाते हैं। हालांकि यहाँ पर कुरिन्थुस का नाम नहीं है पर एसा माना जाता है कि पौलुस कुरिन्थुस गया था। क्योंकि वो वहाँ पर शीतकाल में जाता था।	अध्याय 1–9 और 10–13 के बीच में स्वर के परिवर्तन को देखते हुए विद्वान (एफ. एफ ब्रूस) यह मानते हैं कि अध्याय 1–9 लिखने के बाद पौलुस को कोई बुरी खबर मिली (सम्भवतः पुराने विरोधी फिर से षामिल हो गए या फिर नये विरोधी कलीसिया में जुड़ गए)
62–68 ई0	यदि पासवानी पत्र चौथी मिश्नारी यात्रा के आधे वर्णन हैं तो पहली या दूसरी यात्रा की संभावना हो सकती है।	

ग) कुरिन्थियों की कलीसिया को पौलुस ने कितने पत्र लिखे?

1) केवल दो, 1 और 2 कुरिन्थियों

2) तीन, पर एक पत्र खो गई है।

3) चार, पर दो पत्रीयाँ खो गई है।

4) कुछ आधुनिक विद्वान दो खोई पत्रियों के अंश 2 कुरिन्थियों में पाते हैं।

4.1) पहला पत्र (1 कुरि. 5:9) (2 कुरि. 6:14–17:1) में।

4.2) बाद का पत्र (2 कुरि. 2:3–4,9; 7:8–12) (2 कुरि. 10–13) में।

5) पाँच, 2 कुरि.10–13 पाँचवे पत्र के रूप में, जिसे षायद तितुस से मिले विरण के बाद लिखा गया होगा।

ख) तीसरा विचार सही प्रतित होता है।

1) पहला पत्र, खोया हुआ (1 कुरि. 5:9)

2) 1 कुरिन्थियों

3) बाद का पत्र, खोया हुआ (सम्भवतः वह पत्र जिसका अंश 2 कुरि.2:1–11; 7:8–12 में पाते हैं।)

4) 2 कुरिन्थियों

3) बाद का पत्र, खोया हुआ (सम्भवतः वह पत्र जिसका अंश 2 कुरि.2:1–11; 7:8–12 में पाते हैं।)

4) 2 कुरिन्थियों

घ) <u>कुरिन्थुस में पौलुस के विरोधी</u>

1) शुरूआत में समस्या कुरिन्थियों के विश्वासियों के साथ मालूम होती है। उनकी अनैतिक अन्यजातिय और यूनानी दशार्नशास्त्रीय पृष्टभुमि इसका स्त्रोत दिखाई पड़ता है।

2) पलिश्तिन से समस्या को उत्पन करने वाले यहूदी लोग पौलुस के अन्य विरोधी थे। ये गलतियों के यहूदी कट्टवादी और कुलुसियों के यहूदी या यूनानी काननवादी से अलग थे (देखें, 2 कुरि.10–13)।

ङ) <u>2 कूरिन्थियों को लिखने का कारण और उद्देश्य</u>

1) तीन उद्देश्य हैं

1.1) पौलुस के अगुवापन के प्रति कलीसिया के सकारात्मक प्रतिउत्तर के लिए कलीसिया को धन्यवाद देना (देखें, 7:11–16)।

1.2) पौलुस की तिसरी यात्रा के लिए कलीसिया का तैयार होना (देखें, 10:1–11) (उसकि तीसरी यात्रा सम्भवतः दर्दपूण और असफल थी।)

1.3) यहूदी झूठे शिक्षकों का खण्ड़न करना जिहोंने पौलुस की निम्नलिखित बातों का तिरस्कार किया था :

क) व्यक्तिव

ख) उद्देश्यों

ग) अधिकार

घ) सुसमाचार

च) <u>संक्षिप्त रूपरेखा</u>

1) इन कारणों के कारण इस पुस्तक की रूपरेखा देना कठिन है :

1.1) मिजाज़ का बदलते रहना

1.2) बहुत सारे विषय

1.3) बहुत से निक्षेप वाक्यों का होना

1.4) स्थानिय परिस्थिति के बारे में हमारी सीमित जानकारी।

2) परन्तु इसमें तीन मुख्य विभाजन अवश्य हैं।

2.1) पौलुस तितुस के संदेश का प्रतिउत्तर देता है और अपनी यात्रा की योजनाओं की चर्चा करता है, अध्याय 1–7 (यहाँ पर एक मुख्य निक्षेप वाक्य है जो पौलुस की प्रेरितीय सेवकाइ पर चर्चा है, 2:14–7:1 या 7:4)

2.2) यरूशलेम की कलीसिया के लिए चन्दे के लिए पौलुस का कालीसिया को उत्साहित करना, अध्याय 8–9 ।

2.3) पौलुस का अपने प्रेरितीय अधिकार का बचाव करना, अध्याय 10–13।

3) मैं 2 कुरिन्थियों की एकता से सहमत हूँ

3.1) यूनानी हस्तलिपियों में कोइ भी अनेकता का प्रमाण नहीं है।

3.2) साहित्यिक अंशों में कोई भी भिन्नता नहीं है।

3.3) कोई भी हस्तलिपि ऐसी नहीं है जिसमें पूरे अध्याय ना हों।

4) हालांकि 96 ई0 में रोम के क्लेमेंट को इस पत्री की जानकारी न थी, पर 105 ई0 में पॉलिकार्प इसका वर्णन करते हैं।

5) यह पुस्तक एक अंश के रूप में समझने योग्य है। ऐसे कुछ विषय दिखाई देते हैं जो इसकी एकता को बताते है, जैसे 'दुःख भोगना'।

6) इसके आन्तरिक प्रमाण 2 कुरिन्थियों का अलग–अलग अंश होने को रोकते है।

3) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु वाक्य और वाक्य खण्ड़</u>

1) अनुग्रह और शान्ति, 1:2

2) हमारे प्रभु यीशु के दिनों में, 1:14

3) छाप, 1:22

4) जय के उत्तसव, 2:14

5) सुगन्ध, 2:14

6) परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, 2:17

7) सिफारिश की पत्रियाँ, 3:1

8) प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, 3:18

9) बाहरी मनुष्यत्व, 4:16

10) भीतरी मनुष्यत्व, 4:16

11) पृथ्वी पर का डेरा, 5:1

12) बयाने की आत्मा, 5:5

13) नई सृष्टि, 5:17

14) मेल–मिलाप कर लिया, 5:17

15) हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, 10:4

16) ज्योर्तिमय स्वर्गदूत, 11:14

17) तीसरा स्वर्ग, 12:2

18) स्वर्ग लोक, 12:4

19) पवित्र चुम्बन, 13:12

4) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) इस संसार के ईश्वर, 4:4

2) बलियाल, 6:15

3) तितुस, 7:6

5) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

1) अखया, 1:1

2) आसिया, 1:8

3) मकिदुनिया, 1:16

4) यहूदिया, 1:16

5) कुरिन्थुस, 1:23

6) त्रोआस, 2:12

7) दमिश्क, 11:32

6) चर्चा के लिए प्रशन

1) 1:20 का धर्मविज्ञानिक महत्व क्या है?

2) 3:6 को अपने शब्दो मे समझाएं।

3) अध्याय 3 में 'परदा' शब्द किन दो अर्थों में प्रयोग हुआ है? (4:3)

4) 4:7–11; 6:4–10; 11:23–28 में पौलुस की पीड़ाओं की सूची बनाएं।

5) क्या विश्वासी मसीह के न्याय सिंहासंन के सामने प्रकट होगें? यदि हाँ, तो क्यों?

6) 5:14–15 के आत्मिक सिद्धान्त को अपने शब्दों में बताएं।

7) 5:21 कौन से सिद्धान्त को बता रहा है?

8) अध्याय 8–9 में देने के सिद्धान्तों की सूची बनाएं।

9) 10:10 में पौलुस के विरोधी किस प्रकार उसका वर्णन करते हैं?

10) 11:4 में पौलुस किसका वर्णन कर रहा है?

11) 11:21–30 में पौलुस की दूसरों से अपनी तुलना की सुची बनाएं।

12) पौलुस के शरीर का काटाँ क्या था? (12:7)

गलातियों की परिचय

1) प्राक्कथन

क) गलातियों की पुस्तक विश्वास के माध्यम से अनुग्रह ही के द्वारा उद्धार के नए और स्वतंत्र सत्य का सबसे स्पष्ट वर्णन है। यह कई बार 'मसीही स्वतंत्रता का मापदण्ड' कहलाई गई है।

ख) इस पत्री ने प्रोटस्टंट रिर्फोमेश्न की आग को दुगुना कर दिया था।

1) मार्टिन लूथर ने कहा, 'गलातियों, यह छोटी पुस्तक मेरी पत्री है; मैने इससे रिश्ता जोड़ा है; यह मेरी पत्नी है'।

2) गलातियों पर किए गए एक प्रचार से जॉन वेसली ने अनन्त शान्ति प्राप्त की थी।

3) अपनी स्टडी गाइड कॉमेन्ट्री, पृश्ठ 11में कुर्टिस वोगन लिखते हैं, ''कुछ ही पुस्तकों ने मनुष्य के मन को प्रभावित किया है, मनुष्य के इतिहास के मार्ग को नया रूप दिया है, या आधुनिक जीवन की गहरी आवश्यकताओं की निरन्तर चर्चा की है।''

ग) यह सैद्धान्तिय केन्द्रित पत्री, सम्भावतः पौलुस की पहली रचना थी (रोमियों की पत्री की और यहूदी धर्म की व्यवस्था पर ज़ोर देने के अलावा विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराये जाने के सिद्धान्त के विकास की भी पूर्व रचना थी) :

1) व्यावस्था और अनुग्रह दोनों में उद्धार पाया नहीं जा सकता।

2) व्यावस्था या अनुग्रह में ही उद्धार को पाया जा सकता है।

3) सही परिवर्तन मसीह के पीछे चलने से आता है।

4) मसीही कानूनवाद से दूर रहें।

घ) इस मौलिक स्वतन्त्र उद्धार, विश्वास के द्वारा और अनुग्रह के द्वारा उद्धार, की आवष्यकता हमारे स्व–केन्द्रित, कार्य–केन्द्रित धार्मिक विवेक में निरन्तर बारीक खींचाव के कारण है। इस युग में परमेश्वर के आरम्भ करने वाले, स्वयं को दे देनी वाले, अशर्तिय प्रेम के सधारण सत्य को मानुष्य के पश्चाताप और न्रम विश्वास से चुनोति प्राप्त होती है। ऐसा नहीं है कि झूठे शिक्षक मानव के छुटकारे में मसीह के केन्द्र स्थान का तिरस्कार रहे थे, पर वे इसमें और कुछ जोड़ रहे थे।

2) लेखक

पौलुस का इस पत्री के लेखक होने पर कभी भी संदेह नहीं किया गया, क्योंकि यह पौलुस के पत्रियों की मुख्य अंश है। गलातियों आत्मकथा और व्यक्तिगत है। यह अधिक भावनात्मक है और साथ ही तर्कपूर्ण भी।

3) तारीख और स्त्रोतागण

क) पृष्ठभूमि की चीजों के दो पहलूओं को हमें एक साथ लेना है क्योंकि स्त्रोतगणों की पहचान के दो विरोधी सिद्धान्त इस पत्री की तारीख को प्रभावित करते हैं। दोनों सिद्धान्तों का तर्क भारी है और दोनों ही के प्रमाण सीमित हैं।

ख) दो सिद्धान्त इस प्रकार हैं :

1) पारम्परिक विचार जो 18 वीं षताब्दी तक गुमनाम थे।

1.1) इसे ''उत्तरी गलातियों का सिद्धान्त'' कहा गया है।

1.2) यह ये वयक्त करता है कि 'गलातिया' तुर्की का उत्तरी केन्द्र समतल भूमि की जातिय गलातियों को दशार्ति है (देखें 1 पत.1:1)। ये जातिय गलाती लोग केलतोइ थे (यूनानी 'केलतोइ' या लटिनि 'गाल') जिन्होंने तीसरी षताब्दी ई. पू. में इस जगह पर आक्रमण किया। उन्हें 'गलो ग्रिसयों कहा गया ताकि उनके यूरोपीय भाइ उन्हें पहचान सकें। परगामुम के राजा अतालुस के द्वारा 230 ई. पू में उन्हें पराजित किया गया । उनका भौगोलिक प्रभाव उत्तरी केन्द्र, आसिया माइनर या आधुनिक तुर्की तक सीमित था।

1.3) यदि हम इस जातिय समूह के मानें तो, तारीख कुछ मध्य 50 ई0 होगी, पौलुस की दुसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान उसके साथ यात्रा करने वाले सिलास और तिमोथियुस होगें।

1.4) कुछ लोग गल.4:13 में पौलुस की बिमारी को मलेरिया बताते हैं। वे ऐसा दावा करते हैं कि पौलुस इस दलदलीय, मलेरिया प्राभावित, तटिय क्षेत्र से दूर उत्तर की ओर गया होगा।

2) दुसरे सिद्धान्त को अपनाने वाले सर विलियम एम. रामसे है, सेन्ट पॉल द ट्रेवलर एण्ड रोमन सीटीज़न, न्यू योर्क : जी. पी. पटनमस् सन्ज़, 1896।

2.1) जिस प्रकार पारम्परिक सिद्धान्त 'गलतिया' को एक जातिय समूह बताते हैं, यह सिद्धान्त उसे शासकिय बताता है। ऐसा लगता है कि पौलुस अनेक बार अपने रोमी प्रान्तिय नाम का प्रयोग करता था। (देखें, 1 कुरि.16:19; 2कुरि. 1:1;8:1)। रोमी प्रान्त गलातिया जातिय क्षेत्र में 'गलातिया' से अधिक क्षेत्र को शामिल करती था। ये जातिय केलति प्रारम्भ से ही रोम की सहायता करते थे और उन्हें अधिक स्थानिय शासन और विस्तृत क्षेत्र उपलध था। यदि यह अधिक क्षेत्र वाला स्थान 'गलतिया' होगा तो यह संभव है कि पौलुस की अन्ताकिया के दक्षिणी शहर पिसिदिया, लुस्त्रा, दिरबे, और इकुनियुम की पहली मिश्नरी यात्रा, प्रेरित.13–14 में वर्णित, इन कलीसियों का क्षेत्र है।

2.2) यदि कोई इस 'दक्षिणी सिद्धान्त' विचार को माने तो तारीख प्रेरितों 15 की यरूशलेम सभा के निकट, परन्तु पहले होगी, जो गलतियों की पुस्तक की समस्या के समान समस्या को ही संभोदित करती है। यह सभा 48–49 ई0 में हुई और यह पत्री भी उसी समय लिखी गई थी। यदि यह सत्य है तो नये नियम में गलातियों की पत्री पौलुस की सबसे पहली पत्री होगी।

2.3) दक्षिणी सिद्धान्त के लिए कुछ प्रमाण :

क) पौलुस के साथ यात्रा करने वालों के नामों का काई वर्णन नहीं है पर बरनाबस का वर्णन तीन बार हुआ है (देखें, 2:1, 9, 13)। यह पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा के साथ सही प्रतित है।

ख) ऐसा वर्णन हुआ है कि तितुस का खतना नहीं किया गया था (2:1–5)। यह प्रेरितों 15 के यरूशलेम के पहले के समय के साथ सही प्रतित होता है।

ग) पतरस का वर्णन (2:11–14) और अन्यजातियों के साथ संगति की समस्या यरूशलेम की सभा के पहले ही सही प्रतित होता है।

घ) जब चन्दे को यरूशलेम ले जाया गया था तब पौलुस के अनेक सहकर्मियों के नामों की सूची थी जो विभिन्न स्थानों से थे (प्रेरित. 20:4)। पर उत्तरी गलातिया से काई भी नाम नहीं था, हालांकि हम यह जानते हैं कि इन जातिय कलीसियों ने सेवा में भाग लिया था (देखें, 1 कुरि. 16:1)।

3) इन सिद्धान्तों पर विभिन्न विवादों की विस्तृत चर्चा के लिए एक तकनीकी टीका का प्रयोग करें। इन दोनों सिद्धान्तों के अच्छे प्रमाण हैं पर इस समय के इस बिन्दु पर काई सहमति नहीं है, लेकिन 'दक्षिणी सिद्धान्त' सही जान पडता है।

ग) गलातियों का प्ररितों के साथ सम्बन्ध :

1) पौलुस की यरूशलेम की पाँच यात्राएं हैं जो प्रेरितों में लूका के द्वारा वर्णित हैं।

1.1) प्रेरित.9:26–30, उसके परिवर्तन के बाद

1.2) प्रेरित.11:30; 12:25, अन्यजातिय कलीसिया से चन्दा लाना

1.3) प्रेरित.15:1–30, यरूशलेम की सभा

1.4) प्रेरित.18:22, संक्षिप्त यात्रा

1.5) प्रेरित.21:15 से आगे, अन्यजाति में सवकाई के कार्य को दूसरा समझाना

2) गलातियों में यरूशलेम की दो यात्राओं का वर्णन

2.1) 1:18, तीन साल बाद

2.2) 2:1, 14 साल बाद

3) यह अधिक संभव दिखता है कि प्रेरित.9:26 गला.1:18 से सम्बन्धित है। प्रेरित.11:30 और 15:1 से, गला. 2:1 में लिखे गये अवर्णित सभाओं का संदर्भ है।

4) प्रेरित.15 और गला.2 की घटानाओं के बीच कुछ भिन्नताएं हैं, पर ये इन कारणों से हैं :

4.1) भिन्न दृष्टिकोण

4.2) लूका और पौलुस के भिन्न उद्देश्य

4.3) यह तथ्य कि गला.2 प्रेरित.15 में वर्णित घटनाओं के पहले घटी होगी।

4) <u>पत्र का उद्देश्य</u>

क) पौलुस झूठे शिक्षकों के संदेश की तीन मुख्य बातों को संभोदित करता है। इन झूठे शिक्षकों को यहूदिवादी का नाम दिया गया है, क्योंकि वे विश्वास करते थे कि हर किसी को मसीही बनने से पहले यहूदी बनना होगा (देखें 6:12)। पौलुस को चिन्ता इन यहूदिवादियों के आरोपों से थी :

1) पौलुस अन्य बारहों के समान सच्चा प्रेरित नहीं था (प्रेरित.1:21–22); इसलिए वह उनके अधिकार पर निर्भर था या यरूशलेम की कलीसिया के अधिकार पर निर्भर था।

2) पौलुस का संदेश उनसे भिन्न था, और इसलिए झूठा था। यह सिधे तौर पर 'व्यावस्था से हट कर विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराने' के विचार से सम्बन्धित था। यरूशलेम के प्रेरित अपने व्यक्तिगत जीवन में अभी भी बहुत हद तक यहूदी ही थे।

3) इन कलीसियाओं के साथ किसी तरीके से स्वतंत्रता का तत्व जुडा हुआ था (5:18–16:8)। इसको सही तौर पर कैसे समझना है यह एक विवाद का विषय है। कुछ लोगों ने पौलुस की पत्रियों में दो केन्द्रित समूहों को देखा है; यहुदिवादी और ज्ञानवादी (देखें, 4:8–11)। पर इन वचनों को अन्यजातिय रीति–रिवाजों से जोड़ना सही दिखाई पडता है। यहूदी लोग अन्यजातियों की जीवन शौली को लेकर चिन्तित थे। किस प्रकार पौलुस का मुफ्त अनुग्रह अन्यजातियों की मुर्ति पूजा और स्वतंत्रता से सम्बन्धित हो सकता है?

ख) सैद्धान्तिक तौर पर यह पत्री पौलुस की रोमियों की पत्री के समान है। ये दो पुस्तकें पौलुस के मुख्य सिद्धान्तों को भिन्न संदर्भों में पुनः दोहराकर और विकसित कर सम्मिलित किए हुए हैं।

5) <u>संक्षिप्त रूपरेखा</u> :

1) प्रारम्भिक वाक्य, 1:1–10

1.1) पुस्तक का एक समान परिचय

1.2) पुस्तक को लिखने का संदर्भ

2) पौलुस के प्रेरितीय अधिकार का बचाव, 1:11–2:14

3) पौलुस के सुसमाचार के सैद्धान्तिक सत्यों का बचाव, 2:15–4:20

4) पौलुस के सुसमाचार के व्यावहारिक महत्वों का बचाव, 551–6:10

5) व्यक्तिगत सारांष और अन्तिम वचन, 6:11–18

6) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) वर्तमान बुरा संसार, 1:4

2) और ही प्रकार के सुसमाचार, 1:6

3) यहूदी मत, 1:13

4) बापदादों की परम्पराओं, 1:14

5) कदापि नहीं, 2:17

6) हे निबुर्द्धि गलातियों, 3:1, 3

7) मोह लिया है, 3:1

8) व्यर्थ ही उठाया, 3:4; 4:11

9) शाप के अधीन, 3:10

10) उसके वंश, 3:16

11) स्वर्गदूतों के द्वारा एक माध्यस्थ के हाथ ठहराई गई, 3:19

12) व्यावस्था की अधिनता में हमारी रखवाली हाती थी, 3:23

13) संसार की आदि शिक्षा, 4:3, 9

14) अब्बा, 4:6

15) शरीर की निर्बलता, 4:13

16) दासी से...स्वतन्त्र स्त्री से, 4:23

17) दृष्टान्त, 4:24

18) आत्मा के अनुसार, 5:16

19) आत्मा का फल, 5:22

20) बड़े–बड़े अक्षरों में, 6:11

21) यीशु के दागों को, 6:17

7) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) स्वर्ग से कोई दूत, 1:8

2) कैफा, 1:18

3) बरनबास, 2:1

4) तितुस, 2:2

5) जो बड़े समझे जाते थे, 2:2, 6

6) झूठे भाइयों, 2:4

7) खम्भे समझे जाते थे, 2:9

8) खतना किए हुए लोग, 2:12

9) संरक्षकों और प्रबन्धकों, 4:2

10) हाजिरा, 4:25

8) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

1) गलातिया की कलीसियाएं, 1:2

2) अरब, 1:17

3) दमिश्क, 1:17

4) सीरिया, 1:21

5) किलिकिया, 1:21

6) अन्ताकिया, 2:11

9) चर्चा के प्रशन

1) 1:11 को अपने शब्दों मे समझाएं।

2) परमेश्वर की कलीसिया को पौलुस ने कब सताया?(1:13)

3) क्यों कुछ लोग तितुस का खतना करवाना चाहते थे?(7:3)

4) 2:6 को अपने शब्दों मे समझाएं।

5) गला.2:16 पूरी पुस्तक का मुख्य विषय हो सकता है, क्यों?

6) 2:20 को अपने शब्दों मे समझाएं।

7) 3:3 में पौलुस के प्रश्न का उत्तर आप किस प्रकार देगें?

8) गला.3:6–8 में उत्पत्ति 15:6, 8 को उद्घृति करने के पिछे पौलुस के महत्व को समझाएं।

9) किस प्रकार यीशु शापित हुआ? (3:13)

10) 3:19 के प्रकाश में पुराने नियम का क्या उद्देश्य है?

11) 3:22 एक अच्छा संक्षिप्त वाक्य क्यों है?

12) 3:28 इतना महत्वपुर्ण सत्य क्यों है?

13) 4:13 में वर्णित पौलुस की शारीरिक निबर्लता क्या है?

14) मसीहत का उद्देश्य क्या है? (4:19)

15) 5:3 में पौलुस का धर्मविज्ञानिक बिन्दु क्या है?

16) 5:9 के नितिवचन को समझाएं।

17) 5:4 में 'अनुग्रह से गिरने' का क्या अर्थ है?

18) 5:13 रोमियों 14:1–15:13 से कैसे सम्बन्धित है।

19) 5:23 को अपने शब्दों में समझाएं।

20) विश्वासीयों को पाप करने वाले अन्य विश्वासियों के साथ कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए? (6:1–5)

21) 6:7 में वर्णित आत्मिक सिद्धान्त क्या है?

22) 6:10 विश्वासी समूह के बाहर के लोगों से कैसे सम्बन्धित है?

इफिसियों की पत्री का परिचय

1) प्राक्कथन वाक्य

क) इस पुस्तक की सच्चाई ने अनेक सन्तों के जीवनों को प्रभावित किया है।

1) शमुएल कॉलरिज ने इसे 'मनुष्य की दिव्य रचना' कहा है।

2) जॉन केलविन ने इसे बाइबल की पुस्तकों में सबसे पसन्दिता पुस्तक कहा है।

3) जॉन नोक्स् ने इफिसियों पर केलविन के प्रचार को अपने मृत्यु के दौरान पढ़ने को कहा।

ख) इस पुस्तक को पौलुस के धर्मविज्ञान के 'मुकुट के हीरे' या 'बहुमूल्य पत्थर' के समान देखा गया है। पौलुस के कई महान विषयों को अद्‌भुत रीति से संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया गया है।

ग) जैसे परमेश्वर ने नवीनिकरण के लिए रोमियों का प्रयोग किया, उसी प्रकार वह विभाजित मसीही राज्य को एक करने के लिए इसका प्रयोग करेंगें। मसीह में विश्वासियों की एकता और समानता उनकी विभिन्नताओं से कई ऊपर है।

2) लेखक

क) पौलुस

1) 1:1,3:1 में स्पष्ट रूप से इसका वर्णन है।

2) कैद के प्रति संकेत (संभवतः रोम में) 3:1; 4:1; 6:20 में

3) गुमनाम कलीसिया की परम्परा

3.1) 95 ई0 में रोम के क्लेमेंट ने 4:4–6 का वर्णन करते हुए एक पत्री लिखी।

3.2) इग्नेसियस (30–107 ई0) 1:9; 2:19; 3:4–9 का वर्णन करते है।

3.3) पोलिकार्प (65–155 ई0), प्रेरित यूहन्ना का चेला, स्मुरना के बिशप पौलुस के लेखक होने का दावा करते हैं।

3.4) इरेनियस (130–200 ई0) पौलुस के लेखक होने का दावा करते हैं।

3.5) सिकंनदरिया के क्लेमेंट (150–210 ई0) पौलुस के लेखक होने का दावा करते हैं।

4) इसकी सूची इनमें पाई जाती है :

4.1) मार्सियों (जो 140 ई0 में रोम आया) के द्वारा ग्रहण की गई पुस्तकों की सूची में।

4.2) मुरोटोरियों के लेखों में, रोम से अधिकार प्राप्त पुस्तकों की सूची और उसे पौलुस की लेखों में रखा गया।

5) कुलुसियों और इफिसियों के अन्तिम वाक्यों में पुरे 29 शब्द हैं जो यूनानी में भी इतने ही है (कुलुसियों में दो शब्द अधिक हैं)।

ख) दूसरा लेखक

1) ईरासीमुस सबसे पहले इन कारणों के आधार पर पौलुस के लेखक होने पर संदेह कर रहा था :

1.1) शैली – बड़े–बड़े वाक्य जो पौलुस के अन्य लेखों से भिन्न है।

1.2) कोई व्यक्तिगत नमस्कार नहीं

1.3) कुछ विषेश शब्दावली

2) 18वीं षताब्दी के आलोचक विद्वान पौलुस के लेखक होने का इन्कार कर रहे थे।

2.1) अनेक वचन दूसरी षताब्दी के विश्वासियों के से लग रहे थे, 2:20; 3:5

2.2) कुछ धर्मविज्ञानिक शब्द अलग परिभाषा से प्रयोग किए गए थे। (उदा. भेद)

2.3) बाँटने हेतु पत्री के विषेश प्रकार

3) ईरासिमुस के विचारों का प्रतिउत्तर

3.1) इसकी शैली भिन्न है क्योंकि इफिसियों को लिखने के लिए पौलुस के पास बन्दीगृह में अधिक समय था।

3.2) व्यक्तिगत नमस्कार का ना होना इस बात को दिखाता है कि यह एक बाँटने हेतु पत्र था जिसे उस क्षेत्र की कई कलीसियाओं में भेजा जाना था। प्रकाश.2–3 में इफिसुस और लीकुस नदी घाटी के रोमी पत्र भेजने के मार्ग को हम देख सकते हैं। पौलुस ने दो पत्रियों को कुछ विषेश तीन कलीसियाओं के समूह को लिखा था जिनमें अनेक व्यक्तिगत नमस्कार हैं।

3.3) इफिसियों में कुछ विषेश शब्दों की संख्या रोमियों के विषेश शब्दों (हेपेक्स लिगोमिना) की संख्या के बराबर है। इसका उद्देश्य, विषय, स्त्रोतागण और कारण नये शब्दों के प्रयोग को समझाना है।

4) 1 कुरि.12:28 में पौलुस 'प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं' के बारे मे बात करता है जो 2:20 और 3:5 के समान है। कोई भी 1 कुरिन्थियों के पौलुस के लेखक होने से इन्कार नहीं करता।

3) <u>कुलुसियों और इफिसियों के बीच साहित्यिक सम्बन्ध</u>

क) <u>इन दो कैद में लिखी पत्रियों के बीच ऐतिहासिक सम्बन्ध इस रूपरेखा का अनुकरण करते हैं।</u>

1) इपफ्रास (कुलु.1:7; 4:12; फिलेमोन.23) पौलुस की इफिसुस की सेवकाई (प्रेरित. 19) के दौरान परिवर्तित हुआ।

1.1) वह अपने इस नये विश्वास को अपने गृह क्षेत्र लीकुस नदी घाटी में ले गया।

1.2) इसने तीन कलीसियाएं शुरू की – हियरापुलिस, लौदिकिया और कुलुसिया

1.3) इपफ्रास पौलुस से सलाह माँगता है कि इन झूठे शिक्षकों के संसारिक विचारों के मिलावट का किस प्रकार विरोध करें। पौलुस रोम में बन्दिगृह में था प्रारम्भिक 60 ई0)।

2) झूठे शिक्षक सुसमाचार में यूनानी विचारों को मिलाने लगे।

2.1) आत्मा और देह दोनों अनन्तकाल के हैं।

2.2) आत्मा (परमेश्वर) अच्छा है।

2.3) देह (सृष्टि) बुरी है।

2.4) उच्च अच्छे परमेश्वर और निम्न देवताओं, जिहोंने संसारिक वस्तुएं बनाई है, के बीच कई अनेक एयोंस् (स्वर्गदूत के स्तर) का अस्तित्व है।

2.5) रहस्यमय शब्दों के ज्ञान के आधार पर उद्धार निर्भर था, जो लोगों को ऐयोंस् के बीच विकसित होने में सहायता करता है।

ख) <u>पौलुस की दो पत्रियों के बीच का साहित्यिक सम्बन्ध</u> :

1) पौलुस ने इन कलीसियाओं में, जहाँ पर वह व्यक्तिगत तौर पर नहीं गया था, पाई जाने वाली झूठी शिक्षाओं के बारे में सुना था।

2) पौलुस ने संक्षिप्त में झूठे शिक्षओं पर केन्द्रित भावनात्मक वचनों वाला एक कठोर पत्र लिखा। इसका केन्द्रिय विषय यीशु की संसारिक प्रभुत्व थी। यह कुलुसियों के लिए पौलुस के पत्र के रूप में जाना जाता है।

3) कुलुसियों को लिखने के बाद, बन्दिगृह में समय होने के कारण, उसने इन विषयों का और भी विकास किया। इफिसियों बड़े वाक्यों और विकसित धर्मविज्ञान के विषयों से पहचाना जाता है। (1:3–14, 15–23; 2:1–10, 14–18, 19–22; 3:1–12, 14–19; 4:11–16; 6:13–20)। यह कुलुसियों को आरम्भ बिन्दु के रूप मे लेता है और इसके धर्मविज्ञानिक महत्वों को निकालता है। इसका केन्द्रिय विषय मसीह में सब वस्तुओं की एकता है जो प्रारम्भिक ज्ञानवादी विचार के विरोध में है।

ग) <u>सम्बन्धित साहित्यि और धर्मविज्ञानिक ढाँचा</u>

1) मूल ढाँचे की समानता

1.1) दोनों का आरम्भ एक समान है।

1.2) दोनों में सैद्धान्तिक इकाईयाँ हैं जो मसीह से सम्बन्धित हैं।

1.3) इनमें व्यावहारिक इकाईयाँ हैं जो मसीही जीवन शैली को समान्य अंशों, शब्दों और वाक्य खण्ड़ों से बताती हैं।

1.4) इनमें अन्तिम वचन एक समान हैं जो यूनानी भाषा मे 29 शब्द हैं, केवल कुलुसियों में दो शब्दों को जोडा गया है।

2) शब्दों और वाक्य खण्डों की समानता

इफि.1:1[ग] और कुलु.1:2[क]	'विश्वासी'
इफि. 1:4 और कुलु. 1:22	'पवित्र और निर्दोष'
इफि. 1:7 और कुलु. 1:14	'छुटकारा... क्षमा'
इफि. 1:10 और कुलु. 1:20	'जो कुछ स्वर्ग...पृथ्वी..'
इफि. 1:15 और कुलु. 1:3–4	'तुम्हारा प्रेम जो सभ पवित्र लोगो से है'
इफि. 1:18 और कुलु. 1:27	'महिमा का धन'
इफि. 2:1 और कुलु. 1:13	'मरे हुए थे'
इफि. 2:16 और कुलु. 1:20	'क्रुस...मिलाया'
इफि. 3:2 और कुलु. 1:25	'तुम्हारे लिए मुझे दिया गया है'
इफि. 3:3 और कुलु. 1:26,27	'भेद'
इफि. 4:3 और कुलु. 3:14	'एकता'
इफि. 4:15 और कुलु. 2:19	'चलते हुए...सिर'
इफि. 4:24 और कुलु. 3:10,12,14	'पहिन लो'
इफि. 4:31 और कुलु. 3:8	'प्रकोप, क्रोध, और कलह, निन्दा'
इफि. 5:3 और कुलु. 3:5	'अशुद्ध काम या लोभ'
इफि. 5:5 और कुलु. 3:5	'मूर्तिपूजक (लोभी)'
इफि. 5:6 और कुलु. 3:6	'परमेश्वर का क्रोध'
इफि. 5:16 और कुलु. 4:5	'अवसर को बहुमूल्य समझो'

3) एक समान वाक्य खण्ड़ और वाक्य

इफि.1:1[अ] और कुलु.1:1[अ]

इफि.1:1[ब] और कुलु.1:2[अ]

इफि.1:2[अ] और कुलु.1:2[ब]

इफि.1:13 और कुलु.1:5

इफि.2:1 और कुलु.2:13

इफि.2:5[ब] और कुलु.2:13[ग]

इफि.4:1[ब] और कुलु.1:10[अ]

इफि.6:21–22 और कुलु. 4:7–8 (29 एक–एक शब्द एक ही समान, केवल 'काइ सिनडुलोस' कुलु. में अलग है)।

4) <u>वाक्य खण्ड़ और वाक्य की समानताएं</u>

इफि. 1:21 और कुलु. 1:16

इफि. 2:1 और कुलु. 1:13

इफि. 2:16 और कुलु. 1:20

इफि. 3:7[अ] और कुलु. 1:23[घ], 25[अ]

इफि. 3:8 और कुलु. 1:27

इफि. 4:2 और कुलु. 3:12

इफि. 4:29 और कुलु. 3:8;4:6

इफि. 4:32[ब] और कुलु. 3:13[ब]

इफि. 5:15 और कुलु. 4:5

इफि. 5:19–20 और कुलु. 3:16

5) <u>धर्मविज्ञानिक तौर पर समान्य विचार</u>

इफि. 1:3 और कुलु. 1:3 धन्यवाद की प्रार्थना

इफि. 2:1,12 और कुलु. 1:21 परमेश्वर से अलगाव

इफि. 2:15 और कुलु. 2:14 व्यावस्था का बैर

इफि. 4:1 और कुलु. 1:10 योग्य चाल

इफि. 4:15 और कुलु. 2:19 उसमें जो सिर है, अर्थाथ मसीह में बढते चलो

इफि. 4:19 और कुलु. 3:5 गन्दे काम लालसा से किया करें

इफि. 4:22,31 और कुलु. 3:8 उतार डालो

इफि. 4:32 और कुलु. 3:12–13 एक दूसरे पर कृपालु और करूणामय हो

इफि. 5:4 और कुलु. 3:8 मसीहों की बातचीत

इफि. 5:18 और कुलु. 3:16 आत्मा से परिपूर्ण होना – मसीह का वचन

इफि. 5:20 और कुलु. 3:17 सब बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद

इफि. 5:22 और कुलु. 3:18 पत्नियों अपने–अपने पति के अधिन रहो

इफि. 5:25 और कुलु. 3:19 पतियों अपनी–अपनी पत्नियों से प्रेम रखो

इफि. 6:1 और कुलु. 3:20 बालकों अपने माता–पिता के आज्ञाकारी बनो

इफि. 6:4 और कुलु. 3:21 बच्चेवालों अपने बच्चों को रिस ना दिलाओ

इफि. 6:5 और कुलु. 3:22 दासो अपने स्वामी की आज्ञा मानो

इफि. 6:9 और कुलु. 4:1 स्वामियों तुम्हारा भी स्वामी है जो स्वर्ग में है

इफि. 6:18 और कुलु. 4:2–4 प्रार्थना के लिए पौलुस की विनती

6) कुलुसियों और इफिसियों दानों में प्रयोग किए गए शब्द जो अन्य पौलुस के लेखों में नहीं हैं।

1) पूर्णता

इफि. 1:23 'उसी की परिपूर्णता जो सब में सब कुछ पूर्ण करता हैं।'

इफि. 3:19 'परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।'

इफि. 4:13 'मसीह के पूरे डील डौल तक बढ जाएँ'

कुलु. 1:19 'कि उसमे सारी परिपूर्णता वास करे'

कुलु. 2:9 'उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'

2) मसीह कलीसिया के सिर के रूप में – इफि. 4:15,5:23 और कुलु. 1:18; 2:19

3) अलग होना – इफि. 2:12;4:18 और कुलु.1:21

4) अवसर का सही उपयोग – इफि. 5:16 और कुलु. 4:5

5) झड पकडना – इफि. 3:17 और कुलु.2:7

6) सत्य का वचन, सुसमाचार – इफि. 1:13 और कुलु. 1:5

7) सह लेना – इफि. 4:2 और कुलु. 3:13

8) असमान्य वाक्य खण्ड़ और शब्द(साथ मिलकर, प्रभाव) – इफि. 4:16 और कुलु 2:19

घ) संक्षेप रूप

1) कुलुसियों के एक तीहाई शब्द इफिसियों में हैं। ऐसा अनुमान है कि इफिसियों के 155 में से 75 वचन की समानताएँ कुलुसियों में है। दोनों पत्र पौलुस के बन्दिगृह से लिखे जाने का दावा करते हैं।

2) दोनों पौलुस के मित्र तिकिकुस के द्वारा ले जाए गए।

3) दोनों को एक ही क्षेत्र में भेजा गया था (आसिया माइनर)।

4) दोनों समान्य ख्रीस्ट विद्या विषय की चर्चा करते हैं।

5) दोनों मसीह को कलीसिया का सिर कहते हैं।

6) दोनों सही मसीही जीवन जीने पर जोर देते हैं।

ङ) विभिन्नताओं के मुख्य बिन्दु

1) कुलुसियों में कलीसिया हमेशा स्थानिय थी, पर इफिसियों सारे जगत की कलीसिया के लिए है। यह इफिसियों की पत्री के बाँटने वाले स्वभाव से हो सकता है।

2) झूठी शिक्षा, जो कुलुसियों की कलीसिया की एक मुख्य पहचान थी उसका इफिसियों की पत्री में कोई वर्णन नही है। पर, दोनों पत्रियाँ ज्ञानवादि जैसे शब्दों का प्रयोग करती है (बुद्धि, ज्ञान, परिपूर्णता, भेद, हाकिमों और सेनाओं, सौंप देना आदि)।

3) दूसरा आगमन कुलुस्सियों में अति शिाघ्र है पर इफिसियों में विलंभित है। कलीसिया एक गिरे हुए संसार में काम करने के लिए बुलाई गई है (2:7; 3:21; 4:13)।

4) पौलुस के पहचाने हुए अनेक शब्दों को भिन्न तरीके से प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण 'भेद' शब्द है। कुलुसियों में यह भेद मसीह है (कुलु. 1:26–27; 2:2; 4:3) पर इफिसियों में यह परमेश्वर की प्रारम्भ से छुपाई गई, पर अब प्रकट की गई अन्य जातियों और यहूदियों की एकता की याजना है (1:9,5:32)।

5) इफिसियों में अनेक पुराने नियम के वचनों का वर्णन है (1:22–भजन.8; 2:17–यशा.57:19; 2:20–भजन.118:22; 4:26–भजन.4:4; 5:15–यशा.26:19, 51:17, 52:1, 60:1; 5:3–उत्पत्ति.3:24; 6:2, 3–निर्ग.20:12; 6:14–यशा. 11:5, 59:17; 6:15: यशा.52:7) पर कुलुसियों में केवल एक या दो ही है (2:3–यशा.11:2; 2:22–यशा.29:13)।

च) हालांकि ये शब्द, वाक्य–खण्ड और बहुत बार रूपरेखा में भी समान है पर इनमें विषेश सत्य भी पाये जाते हैं।

1) त्रीएक अनुग्रह की आशीष – इफि.1:3–14

2) अनुग्रह का अंश – इफि.2:1–10

3) यहूदियों और अन्य जातियों का एक शरीर होना – इफि.2:11–3:13

4) मसीह के शरीर में एकता और वरदान – इफि.4:1–16

5) 'मसीह और कलीसिया', 'पति और पत्नि' के अनुकरण के ढँग है – इफि.5:22–33

6) आत्मिक मलयुद्ध का अंश – इफि.6:10–18

7) ख्रीष्ट विद्या का अंश – कुलु.2:16–23

8) मानविय धार्मिक रीति और नियम – कुलु. 2:16–23

9) कुलुसियों में मसीह के संसारिक महत्व के विषय के विरूध और इफिसियों में मसीह में सभी वस्तुओं की एकता का विषय।

छ) अन्तिम में, यह सही मालूम हाता है कि (ए. टि. रोबर्टसन और एफ. एफ. ब्रूस का इस बात का दावा करने के लिए अनुकरण करें) पौलुस ने ही इन दोनों पत्रियों को कम समय के अंतराल में कुलुसियों के विचार को एक कोने के पत्थर के रूप में विकसित कर लिखा है।

4) <u>तारीख</u>

क) इस पत्री की तारीख पौलुस की इफिसुस, फिलिप्पी, कैसिरिया, या रोम की किसी एक कैद से सम्बन्धित है। प्रेरितों के तथ्यों से रोमी कैद सही प्रतित होती है।

ख) यदि रोम को सही मान लें तो यह प्रशन उठता है कि किस समय? प्रारम्भिक 60 ई0 के दौरान पौलुस कैद में था, जिसका वर्णन प्रेरितों में है, परन्तु उसे रीहा कर दिया गया था और उसने पासवानी पत्रियाँ लिखीं (1 और 2 तिमुथियुस और तितुस) और उसे फिर से कैद किया गया और 9 जून 68 ई0 से पहले मार डाला गया, जो निरो की आत्मा हत्या का समय था।

ग) उच्च शिक्षित लोग इफिसियों की लिखने की तारीख प्रारम्भिक 60 ई0 में रोम की पौलुस की पहली कैद को मानते हैं।

घ) तिकिकुस, उनेसिमुस के संग, कुलुसियों, इफिसियों और फिलेमोन की पत्रियों को आसिया माइना को ले गया होगा।

ङ) एफ. एफ. ब्रूस और मुर्रे हेरिस की मानें तो पौलुस की पत्रियों का समयकाल सम्भवतः निम्नलिखित हो सकता है :

पुस्तक	तरीख	लिखने का स्थान	प्रेरितों के काम से सम्बन्ध
गलतियों	48 (दक्षिणि सिद्धान्त)	सिरिया का अन्ताकिया	14:28; 15:2
1 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	18:5
2 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	
1 कुरि.	55	इफिसुस	19:20
2 कुरि.	56 या 57	मकिदुनिया	20:2
रोमियों	57	कुरिन्थुस	20:3
कुलुसियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
इफिसियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	28:30–31
फिलेमोन	60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
फिलिप्पियों	62–63 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
1तीमुथियुस	63 या बाद	मकिदुनिया	
तितुस	63 या बाद	इफिसुस?	
2तीमुथियुस	64 ई0 (68 से पहले)	रोम	

5) स्रोतागण

क) अनेक हस्थलिपियाँ (चेस्टर बिटी पेपाइरि, पी[46]; सिनाइटिकस अल्फा, वेटिकेनस बी; ओरिगन की यूनानी प्रतिलिपि और तरतुल्यन की यूनानी प्रतिलिपि) 1:1 में 'इफिसुस में' को आयत नहीं रखती। आर एस वी और विल्यम के अनुवाद भी इस वाक्यांष को षामिल नहीं करते।

ख) पहले पद का यूनानी व्याकरण किसी एक स्थान के नाम को सम्मिलित कर सकता है। एक बाँटने वाला पत्र होने के कारण सम्भवतः कलीसिया के नाम को छोड़ दिया गया होगा ताकि जब कलीसियाओं में इसे पढ़ा जाए तो उस कलीसिया का नाम का जोड़ा जा सके। सम्भवतः कुलु.4:15–16 में लिखा गया वाक्यांष, 'लौदिकियों से जो पत्र', इसको समझा सकता है जो सम्भवतः इफिसियों की पुस्तक थी (मार्सियन इफिसियों को 'लौदिकियों के नाम पत्र' कहता है)।

ग) इफिसियों का पत्र मूल रूप से अन्यजातियों के लिए लिखा गया था, 2:1; 4:17, जिनसे पौलुस व्यक्तिगत तौर पर नहीं मिल पाया था, 1:15; 3:2। लीकुस नदी घाटी की कलीसियाओं को पौलुस ने नहीं पर इपफ्रास ने शुरू किया था (कुलु. 1:7; 4:12; फिले. 23)।

6) उद्देश्य

क) पुस्तक का शिषर्क 1:10 और 4:1–10 में पाया जाता है। इफिसियों और कुलुसियों की रूपरेखा एक समान है। कुलुसियों को आसिया माइनर की लीकुस नदी घाटी में प्रारम्भिक ज्ञानवाद की झूठी शिक्षाओं के विरूध लिखा गया था। इफिसियों को उन झूठी शिक्षाओं के विरूध कलीसिया को तैयार करने के लिए एक बाँटने वाले पत्र के रूप में लिखा गया था। कुलुसियों एक कठोर पत्री है परन्तु इफिसियों उन सत्यों का बड़े वाक्यों में विचारशील प्रस्तुतिकरण है (1:3–14, 15–23; 2:1–9; 3:17, आदि)।

7) संक्षिप्त रूपरेखा

क) इस पुस्तक को स्वभाविक तौर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है (जैसे कि पौलुस के अन्य लेख)

1) मसीह में एकता, अध्याय 1–3 (धर्मविज्ञान)

2) कलीसिया में एकता, अध्याय 4–6 (व्यावहारिकता)

ख) विषय रूपरेखा :

1) पौलुस का पारम्परिक आरम्भ, 1:1–2

2) मसीह में सभी की एकता के लिए पिता की योजना, 1:3–3:21

2.1) पौलुस द्वारा पिता परमेष्वर की स्तुति, 1:3–14

क) आदि काल से पिता के प्रेम के लिए

ख) सही समय में अपने पुत्र में पिता के प्रेम के लिए

ग) समय के बीच में भी आत्मा के द्वारा पिता के निरन्तर प्रेम के लिए

2.2) कलीसियाओं के लिए पिता से पौलुस की प्रार्थना, 1:15–23

क) मसीह में पिता के प्रकाशन को समझने के लिए

ख) विश्वासीयों में पिता का सामर्थ्य बहुतायत से कार्य करने के लिए

ग) पिता का मसीह को सभी वस्तुओं से ऊँचा ऊठाने के लिए

2.3) सारी मानवता के लिए पिता की योजना की पौलुस की समझ, 2:1–3:13

क) पापी मानवजाति की आवश्यकताएं

ख) पिता का अनुग्रहित प्रबन्ध

ग) आवश्यक वाचा के प्रति मानवजाति का प्रतिउत्तर

घ) पिता की पूर्ण प्रकट योजना

2.4) विश्वासियों के लिए पौलुस की पिता से प्राथना, 3:14–21

क) आन्तरिक बल प्राप्त करने के लिए

ख) अनुभव और प्रेम के साथ सुसमाचार को पूर्णता से समझने के लिए (केवल औपचारिक सत्यों में ही नहीं)

ग) परमेश्वर की परिपूर्णता से भर जाएं

घ) यह सब उन परमेश्वर से है जो सब कुछ कर सकते हैं।

3) अपने लोगों की एकता के लिए पिता की इच्छा, 4:1–20

3.1) त्रीएक परमेश्वर की एकता अपने संतानों की एकता के द्वारा प्रतिबिम्बित होती है, 4:1–16

क) एकता समानता नहीं है पर जीवन शैली का प्रेम है।

ख) ईश्वरत्व एक त्रीएक एकता है।

ग) आत्मिक वरदान शारीरिक भलाई के लिए हैं, व्यक्तिगत सम्मान के लिए नहीं।

घ) एकता सेवा की मांग करती है।

ङ) गीराया गया स्वर्गदूत (षैतान) एकता के विरूध में है।

च) एकता मसीह में है।

3.2) मसीही एकता और अन्यजातियों के स्व–केन्द्रि होने के बीच की तुलना, 4:17–5:14

क) पुराने जीवन के कार्य को उतार डालो

ख) मसीह के समानता को पहनलो

3.3) एकता को स्थापित करने और बनाये रखने के माध्यम, 5:15–6:9

क) हर समय आत्मा से परिपूर्ण रहो

ख) आत्मा से भरे जीवन का वर्णन

1) पाँच क्रियाएँ, 19–21 वचन

2) तीन गृह उदाहरण

– पति और पत्नि

– माता–पिता और बच्चे

– स्वामी और दास

3.4) मसीह समान एकता के लिए संघर्ष

क) आत्मिक मलयुद्ध

ख) परमेश्वर के हाथियार

ग) प्रार्थना का सामर्थ्य

4) अन्तिम वचन, 6:21–24

8) <u>झूठे शिक्षकों (ज्ञानवादि) की दाशर्निक और धर्मविज्ञानिक पृष्ठभूमि</u>

क) पहली और दूसरी षताब्दियों का ज्ञानवादी विश्वास

1) आत्मा (परमेश्वर) और वस्तु (शारीरिक वस्तुओं) के बीच एक अनन्तकाल की विवाद

2) आत्मा अच्छा है पर देह बुरी है।

3) उच्च पवित्र परमेश्वर और निम्न देवताओं, जिन्होंने बुरी वस्तुओं का निमार्ण किया, के बीच अनेक स्वर्गदूतों के स्थर हैं।

4) उद्धार का मार्ग

क) रहस्यमय शब्दों का ज्ञान जिससे स्वर्गदूतों के माध्यम से होकर पृथ्वी से स्वर्ग जाया जा सकता हैं।

ख) सभी मनुष्यों में एक दिव्य प्रकाश है हालांकि सभी मनुष्य उद्धार के ज्ञान को समझ नहीं पाते हैं।

ग) ज्ञान केवल उच्च समूह को एक विषेश प्रकाशन से प्राप्त हुआ।

5) नैतिकता

क) आत्मिक जीवन से पूरी तरह से भिन्न (स्वतंत्रतावादी, एंटिनोमियंस्)

ख) उद्धार के लिए अनिवार्य (कानूनवादी)

ख) ऐतिहासिक, बाइबलिय मसीहत से विरोधाभास

1) मसीह के मनुष्यत्व और ईश्वरत्व को अलग करना (ज्ञानवादियों ने कहा कि वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मानव नहीं हो सकता)।

2) उसकी दर्दनाक मृत्यु को उद्धार का मार्ग होने से इनकार करना।

3) मुफ्त दिव्य अनुग्रह के बदले मानव ज्ञान को रखना।

9) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) पवित्र लोग,1:1

2) प्रभु, 1:2

3) स्वर्गिय स्थान, 1:3

4) जगत की उत्पति से पहले, 1:4

5) निर्दोष, 1:4

6) पहले से ठहराया, 1:5

7) छुटकारा, 1:7

8) भेद, 1:9

9) समयों के पूरे होने, 1:10

10) छाप, 1:13

11) बयान, 1:14

12) महिमा, 1:17

13) उसके दाहिनी ओर बैठाए गए हैं, 1:20

14) उसी की परिपूर्णता जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है, 1:23

15) इस संसार की रीति, 2:2

16) परमेश्वर का दान, 2:8

17) संगी स्वदेशी, 2:19

18) कोने का पत्थर, 2:20

19) साहस और भोरेसे के साथ, 3:12

20) मनुष्य की ठग विद्या, 4:14

21) भ्रम की युक्तियों और उपदेशों, 4:14

22) प्रेम में चलो, 5:2

23) सुखदायक सुगंध, 5:2

24) मसीह और परमेश्वर के राज्य, 5:5

25) एक दूसरे के अधिन रहो, 5:21

26) परमेश्वर के सारे हाथियार, 6:11

27) कमर कसकर, 6:14

28) आत्मा की तलवार, 6:17

10) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) ज्ञानवादी

2) आकाश के अधिकार के हाकिम, 2:2

3) अन्यजाति

4) प्रेरित, 4:11

5) भविष्यद्वक्ता, 4:11

6) सुसमाचार सुनाने वाले, 4:11

7) सिर, 4:15

8) शैतान, 4:17

9) आज्ञा ना माननेवालों, 5:6

10) ज्योति की संतान, 5:8

11) अंधकार के हाकिमों से, 6:12

12) तुखिकुस, 6:21

11) मानचित्र के स्थान

कोई नहीं

12) चर्चा के प्रशन

1) 1:3–14 का मूल विषय क्या है?

2) 1:3–14 में यह वाक्य खण्ड़ 'महिमा की स्तुति हो' का तीन बार प्रयोग क्यों हुआ है?

3) इस पुस्तक में पौलुस अनेक बार 'ज्ञान और समझ' की बातों के बारे में क्यों कहता है?

4) 1:19 किसको दिखाता है?

5) यहूदी दो लोकों के बारे में बताएं।

6) 2:1–3 के विषय को संक्षेप में बताएं।

7) 2:4–6 के विषय को संक्षेप में बताएं।

8) 2:14 की ऐतिहासिक बतों को समझाएं।

9) पौलुस 3:3 में किस प्रकाशन की बात कर रहा है?

10) पौलुस अपने आप को 'सब पवित्र लोगों में सबसे छोटा' क्यों बताता है?

11) 4:4–6 में 'एक' शब्द का प्रयोग बार–बार क्यों किया गया है?

12) 4:7 में मसीह का वरदान क्या है?

13) पुराने नियम में इफि.4:8 का वर्णन कहाँ पर है?

14) 4:12 इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

15) 5:5 में क्या बचाए जानें वालों को सीमित किया गया है?

16) दाखरस से मतवाला होना आत्मा से परिपूर्नन होने से कैसे सम्बन्धित है? (5:18)

17) कलीसिया के लिए मसीह का प्रेम और बलिदान मसीही घराने से कैसे सम्बन्धित है? (5:25–33)

18) 'आदर' और 'आज्ञा मानना' एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित है?

19) 6:18 आज के समय में क्यों जरूरी है?

फिलिप्पियों का परिचय

1) प्रारम्भिक वाक्य

क) यह पौलुस की प्रभावशाली पत्रियों में से एक है। इस कलीसिया में पौलुस को अपने प्रेरितीय अधिकार का दावा करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनके प्रति उसका प्रेम स्पष्ट है। उसने उनको अपने लिए पैसे भेजने के लिए भी इज़ाजत दी, जो बहुत ही असामान्य बात है।

ख) पौलुस कैद में था परन्तु फिर भी वह आनन्द के लिए 16 से अधिक बार शब्दों (संज्ञा और क्रिया) का प्रयोग करता है। उसकी शान्ति और आशा परिस्थितियों पर निर्भर नहीं थी।

ग) कलीसिया में झूठी शिक्षाओं के कुछ तत्व थे (देखें, 3:2, 18–19)। यह झूठे शिक्षक गलातियों की कलीसिया के झूठे शिक्षक के समान ही थे, जिन्हें यहूदिवादी कहा गया था। उन्होंने यह कहा कि मसीही बनने से पहले एक व्यक्ति को यहूदी बनना होगा।

घ) यह पत्री प्रारम्भिक कलीसिया का एक मसीह भजन, सिद्धान्त, या सैद्धान्तिक कविता है (देखें, 2:6–11)। पूरे नये नियम में यह एक उच्चकोटी की मसीही विद्या का अंश है (देखें, यूह.1:1–14; कुलु.1:13–20; इब्रा.1:2–3) पौलुस इसका इस्तेमाल सभी विश्वासियों द्वारा अनुकरण के लिए करता है (देखें 2:1–5) सैद्धान्तिक तौर पर नहीं।

ङ) 104 वचनों की पुस्तक में यीशु का नाम और षीर्शक 51 बार आता है। यह स्पष्ट है कि पौलुस का हृदय, मन और धर्मविज्ञान का केन्द्र कौन है।

2) फिलिप्पी और मकिदुनिया

क) फिलिप्पी का शहर

1) 356 ई. पू. में मकिदुनिया फिलीप द्वितिय, सिकंदर महान के पिता, के द्वारा ले लिया गया और बढ़ा दिया गया था। उस मूल थ्रेसियों के गाँव का नाम क्रेनिडिस (वसंत) रखा गया। यह नगर अपने सोने धातु की उपलब्धि के कारण जाना जाता था।

2) 168 ई. पू. में पिडना के युद्ध में यह क्षेत्र एक रोमी प्रान्त बन गया और फिर मकिदुनिया के चार षहरों में से एक होग गया।

3) 42 ई.पू में ब्रुस्टस और केसियस (स्वतत्रंवादी) ने ऐंटनी और ऑक्टेवियन (शासक) पर फिलिप्पी के निकट, रोम में सरकारी नविनिकरण को लेकर युद्ध किया। उस युद्ध के बाद ऐंटनी ने अपने द्वारा विजयी किए गए शासकों को वहीं पर बसा दिया।

4) 31 ई. पू में ऐक्टियम के युद्ध के बाद, जिसमें ऑक्टेवियन ने ऐंटिनी को हरा दिया, ऐंटिनी के सहायकों को रोम से बाहर निकाल दिया।

5) 31 ई. पू में फिलिप्पी एक रोमी कलोनी बन गया (देखें, प्रेरित.16:12)। नगर के लोगों को रोमी नागरिक घोषित कर दिया गया। लतीनी भाषा बोली गई और यह नगर एक छोटे रोम जैसा हो गया। यह इग्नेशियन मार्ग पर स्थित था, जो मुख्य पूर्व से पश्चिम जाने वाला रोमी मार्ग था। रोमी नागरिकों के रूप में ये विषेश सुविधाएं उन्हें प्राप्त थी :

– न तो मतदान कर और न ही जमीन के कर

– अपनी सम्पत्ति को बेचने और खरिदने का अधिकार

– रोमी नियम की सारी सुरक्षा और अधिकार

– विषेश स्थानिय सरकारी नेता (प्रेक्टरस् और लिक्टरस)

ख) फिलिप्पी में सुसमाचार का आना

1) पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा में वह उत्तर की ओर उत्तरी–मध्य आसिया (आधुनिक तुर्की, बाइबल का बेथिनिया) को जाना चाहता था। पर उसने अपने एक दर्शन में देखा की एक मकिदुनिया का व्यक्ति उसे सहायता के लिए पुकार रहा है (देखें, प्रेरित.16:6–10)। इस दर्शन से आत्मा ने पौलुस को युरोप की ओर भेजा।

2) पौलुस अपने सहायकों के द्वारा वहाँ पर गया।

2.1) <u>सिलास या सिलवानुस</u>

क) सिलास यरूशलेम की कलीसिया का एक अगुवा था और एक भविष्यद्वक्ता था जिसने पौलुस के मिश्नरी सहकर्मी के रूप में बरनबास का स्थान लिया (देखें, प्रेरित.15:15, 22, 32, 36–41)।

ख) सिलास और पौलुस दोनों फिलिप्पी में कैद थे (प्रेरित.16:16–26)

ग) पौलुस हमेशा उसे सिलवानुस बुलाता था (2 कुरि.1:19; 1 थिस्स.1:11; 2 थिस्स.1:1)।

घ) यह संभव है कि बाद में सिलास पतरस का सहकर्मी बन गया हो, जैसे यूहन्ना मरकुस (देखें, 1पत. 5:12)।

2.2) <u>तीमुथियुस</u>

क) वह पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा से मन फिरा हुआ व्यक्ति था (देखें, प्रेरित. 16:1–2; 2 तीमु.1:5;3:15);

ख) उाकी नानी और माता यहूदी थीं पर उसके पिता यूनानी थे। (देखें, प्रेरित. 16:1; 2 तीमु.1:5);

ग) क्योंकि वह अपने भाइयों द्वारा अच्छी गवाही प्राप्त किया हुआ था (देखें, प्रेरित.16:2) और पौलुस ने उसमें सेवकाइ के वरदान भी देखे (देखें, 1 तिमु.4:14; 2 तिमु.1:6), उसने उसे अपने सहायक के रूप में यूहन्ना मरकुस के स्थान में रखा (देखें प्रेरित.13:13);

घ) पौलुस ने तिमुथियुस का खतना करवाया ताकि वह यहुदियों द्वारा ग्रहण किया जाए (देखें, प्रेरित.16:3)

ङ) तिमुथियुस पौलुस का विश्वासयोग्य प्रेरितीय प्रतिनिधी बन गया (देखें, फिलि.2:19–22; 1 कुरि.4:17; 3:2, 6; 2कुरि.1:1, 19)।

2.3) <u>लूका</u>

क) यह गुमनाम है पर सम्भवतः लूका के सुसमाचार और प्रेरितों का लेखक है।

ख) वह एक अन्यजातिय चिकित्सक भी था (देखें, कुलु.4:14)। कुछ लोग 'चिकित्सक' के शब्द को 'उच्च शिक्षित' मानते हैं। यह सत्य है कि वह वैद्य के अलावा अनेक तकनीकी क्षेत्रों मे शिक्षित था जैसे, जहाज चलाना। परन्तु यीशु ने 'चिकित्सक' के लिए यही यूनानी शब्द प्रयोग किया है (देखें, मत्ती 9:12: मर.2:17; 5:26; लूका 4:23; 5:31)

ग) पौलुस का सहकर्मी यात्री (देखें, प्रेरित.16:10–17; 20:5–15; 21:1–18; 27:1–28; 16; कुलु.4:14; 2 तिमु.4:11; फिले. 24)

घ) यह रूचिकर बात है कि 'हम' वाले अंश फिलिप्पी में ही शुरू और समाप्त होते हैं। पॉल, द अपोस्टल ऑफ द हार्ट सैट फ्री, पृश्ठ 219 में एफ. एफ ब्रूस व्यक्त करते हैं कि लूका फिलिप्पी में रहा ताकि वह नये विश्वासियों की सहायता करे और यरूशलेम की कलीसिया के लिए अन्यजातियों से चन्दो इकट्टा करे।

ङ) लूका, एक तरीके से पौलुस का व्यक्तिगत चिकित्सक हो सकता है। उसके मन फिराव (प्रेरित.9:3, 9), सेवकाई (2 कुरि. 4:7–12; 6:4–10; 11:23–29) और विषेश निर्बलता (2 कुरि. 12:1–10) में सहायक।

3) पौलुस अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान फिर फिलिप्पी पहुचँता है (देखें, प्रेरित.20:1–3, 6)। वह सिलास और तिमुथियुस को पहले भेजता है (देखें, प्रेरित.19:19–24; फिलि.2:19–24)।

ग) फिलिप्पी एक रोमी कलोनी के रूप में (देखें,प्रेरित.16:12)

1) पौलुस अपने शब्द विद्या में इस नगर को एक रोमी कलोनी का दर्जा देता है।

क) राजभवन की सारी पलटन, 1:13

ख) स्वदेश, 3:20 (देखें, प्रेरित.16:22–34, 35–40)

ग) कैसर के घराने, 4:22

2) यह नगर सेवानिवृत और निकाले गए रोमी सैनिकों से भरा था। कई तरह से यह एक छोटा रोम था। रोम के मन्दिरों को फिलिप्पी के सड़कों पर देखा जा सकता था (प्रेरित.26:21)।

3) पौलुस (प्रेरित.22:25; 26:32) और सिलास (प्रेरित.16:37) दोनों ही रोमी नागरिक थे जिसके कारण उन्हें समान्य अधिकार और समाजिक स्तर प्राप्त था।

घ) मकिदुनिया का प्रान्त

1) स्त्रियों को मकिदुनिया में रोमी सम्राज्य की किसी भी दूसरी जगह से अधिक समाजिक स्वतंत्रता और आर्थिक मौके प्राप्त थे।

2) यह इन बातों से स्पष्ट है :

क) फिलिप्पी के बाहर नदी तट पर अनेक स्त्रियों का आराधना करना (देखें, प्रेरित.16:13)

ख) व्यपारी महिला लुदिया (प्रेरित. 16:14);

ग) सुसमाचार में अनेक महिला सहकर्मी (देखें,4:2–3);

घ) थिस्सलुनिके में अनेक महिला अगुवे (मकिदुनिया में भी) (देखें, प्रेरित.17:4)

3) <u>लेखक</u>

क) इस उच्च व्यक्तिगत पत्री को हमेशा पौलुस के संग जोड़ा गया है। पहली व्यक्तिवाचक संज्ञा 'मैं' और 'मेरा' का 51 बार प्रयोग हुआ है।

ख) प्रारम्भिक लेखकों द्वारा इसका वर्णन किया गया है (वर्णन की पूरी सुची के लिए देखें, क्रीगल द्वारा प्रकाशित एच. सी. जी मूल की स्टडिस् इन फिलिपीयन्स, पृश्ठ 20–21)

1) 95 ई0 में रोम के क्लेमेंट ने 1 क्लेमेंट में, कुरिन्थियों को लिखा था।

2) 110 ई0 में इग्नेसियस ने इग्नेसियस की पत्रियों में लिखा था।

3) 110 ई0 में पॉलिकार्प, यूहन्ना प्रेरित के सहकर्मी, ने फिलिप्पियों की पत्री में लिखा था।

4) 170 ई0 में फिलिप्पियों पौलुस की पत्री की चर्चा मार्सियों (झूठे शिक्षक मार्सियन के अनुयायी) की भूमिका में है।

5) 180 ई0 में इरेनियस

6) 190 ई0 में सिकंदरिया के क्लेमेंट

7) 210 ई0 में कार्थेज के तरतुल्यन

ग) 1:1 में हालांकि पौलुस के साथ तिमुथियुस का वर्णन है, पर वह सहकर्मी था सहलेखक नहीं (हालांकि उसने समय–समय पर पौलुस के लिए एक शास्त्री का काम किया होगा)।

4) <u>तारीख</u>

क) पौलुस के कैद के स्थान पर तारीख की निश्चितता निर्भर है (देखें,2 कुरि. 11:23)।

1) फिलिप्पी, प्रेरित.16:23–40

2) इफिसुस, 1 कुरि.15:32; 2 कुरि.1:8

3) यरूशलेम/कैसिरिया, प्रेरित.21:32–33, (30 विषेश)

4) रोम, प्रेरित.28:30 (फिलिप्पियों का मार्सियों की भूमिका में वर्णन)

ख) अनेक विद्वान विश्वास करते हैं कि पौलुस के लेखक होने के लिए रोमी कैद सही प्रतित होता है और प्रेरितों के काम भी इस बात को प्रगट करता है। यदि ऐसा है तो प्राम्भिक 60 ई0 का समय सही है।

ग) यह पुस्तक पौलुस की बन्दिगृह की पत्रियों में से एक मानी जाती है (कुलुसियों, इफिसियों, फिलेमोन, और फिलिप्पियों)। आन्तरिक प्रमाणों से ऐसा प्रतित होता कि कुलुसियों, इफिसियों, और फिलेमोन को पौलुस ने रोमी कैद के प्रारम्भ में लिखा था होगा और तिखुकुस द्वारा आसिया माइनर ले जाया गया होगा (कुलु.4:7; इफि.6:21)। फिलिप्पियों की भाशा अलग ही है। पौलुस को लगा कि वह कैद से छुट जायेगा (1:17–26) और उनसे फिर मिल पायेगा (2:24)।

यह ढाँचा इन चिजों के लिए समयकाल प्रस्तुत करता है : राजभवन के सैनिकों पर पौलुस के प्रभाव के लिए (1:13; प्रेरित. 28:16) और दासों (4:22); और फिलिप्पी की कलीसिया और पौलुस तथा संदेश ले जानेवालों के बीच अनेक यात्राएं।

5) <u>पत्री का उद्देश्य</u>

क) इस प्रेमी कलीसिया को पौलुस का धन्यवाद पहुँचाना, जिसने उसकी अनेक बार आर्थिक सहायता की थी जिसके लिए उसने अपने सहायक इपफ्रुदीतुस को भेजा था (देखें, 1:3–11; 2:19–30; 4:10–20)। यह पत्री इपफ्रुदीतुस के जल्दी घर पहुँचने को समझाने के लिए लिखी गई भी हो सकती है जब पौलुस कैद में था।

ख) अपनी परिस्थिति को लेकर फिलिप्पियों को उत्साहित करना। पौलुस के कैद हाने पर भी सुसमाचार फैल रहा था, पौलुस कैद था, पर सुसमाचार नहीं।

ग) झूठी शिक्षाओं के विरूध फिलिप्पियों को उत्साहित करना, जो गलातियों की यहूदिवादी षिक्षा के समान थीं। इन झूठे शिक्षकों ने प्रचार किया कि एक व्यक्ति को मसीह बनने से पहले यहूदी बनना होगा। (प्रेरित.15)

परन्तु 3:19 में बताए गए पापों की सुची यहूदियों से अधिक यूनानी झूठे शिक्षकों से ज्यादा मेल खाती है इसलिए इनकी पहचान कठिन है। यह संभव है कि कुछ विश्वासी अपनी अन्यजातिय जीवनशैली की ओर लौट गए थे।

घ) फिलिप्पियों के विश्वासियों को आन्तरिक एवम् बाहरी सतावों के बीच भी खुश रहने के लिए उत्साहित करना। पौलुस का आनन्द मसीह पर निर्भर था न कि बाहरी परिस्थितियों पर।

समस्याओं के बीच में आनन्द यह स्टोकिय विचार नहीं है पर यह एक मसीही का संसारिक दृष्टिकोंण है और एक निरन्तर संघर्ष भी है। पौलुस ने मसीही जीवन के संघर्ष को दिखाने के लिए जीवन के अनेक क्षेत्र से रूपकों का प्रयोग किया।

1) धावक, 3:12 ,14; 4:3

2) सैनिक, 1:7, 12, 15, 16, 17, 20, 28, 30

3) व्यापारिक, 3:7, 8; 4:15, 17, 18

6) <u>संदर्भ की रूपरेखा</u>

क) फिलिप्पियों की रूपरेखा देना कठिन है क्योंकि यह अधिक व्यक्तिगत और अनोपचारिक है। पौलुस मसीह में मित्रों और सहकर्मीयों से बात कर रहा था। इससे पहल कि उसका मन उसके विचारों को पहचाने उसका ह्रदय बह रहा था।

अद्भुत तरिकों से यह पुस्तक अन्यजातियों के लिए महान पौलुस प्रेरित के ह्रदय को दिखाती है। हर परिस्थितियों और सभी परिस्थितियों में पौलुस मसीह में और सुसमाचार की सेवा में आनन्द महसूस करता था।

ख) साहित्यिक अंश

1) पौलुस का परिचय, 1:1–2

1.1) नमस्कार

क) पौलुस से (और तिमुथियुस), 1:1

ख) फिलिप्पियों के पवित्र लोगों के लिए (अगुवे और सेवक भी), 1:1

ग) पौलुस की शैली की प्रार्थना, 1:2

1.2) प्रार्थना, 1:3–11

क) प्रारम्भ से सुसमाचार में सहभागी, 1:5

ख) पौलुस की सेवकाई के सहायक, 1:7

ग) पौलुस की विनती

1) अनन्त प्रेम के लिए, 1:9

2) अनन्त ज्ञान के लिए, 1:9

3) सब प्रकार के विवेक, 1:9

4) सच्चे बने रहें, 1:10

2) फिलिप्पियों द्वारा पौलुस की चिंता करने के कारण पौलुस को उनकी चिंता, 1:12–26

2.1) परमेश्वर ने कैद के समय का प्रयोग किया की वह सुसमाचार को पहुँचाए :

क) राजभवन की पलटन, 1:13

ख) कैसर के घराने के अन्य लोग, 1:13

ग) प्रभु में जो भाई हैं, 1:14–18

2.2) पौलुस का छुटकारे का साहस, क्योंकि

क) उनकी विनती, 1:19

ख) पवित्र आत्मा, 1:19

2.3) पौलुस का साहस छुटकारे में या साहस में छुटकारा, 1:20–26

3) पौलुस का उत्साह, 1:27–2:18

3.1) सताव के मध्य में भी मसीही समान एकता की बुलाहट, 1:27–30

3.2) मसीह के समान स्वयं का इनकार करके जीयो, 2:1–4

3.3) मसीह हमारा उदाहरण, 2:5–11

3.4) मसीह के प्रकाश के उदाहरण में शान्ति और एकता में जीयो, 2:12–18

4) फिलिप्पी से सम्बन्धित पौलुस की योजना, 2:19–30

4.1) तिमुथियुस को भेजना, 2:19–24

4.2) इपफ्रुदितुस को उनके पास भेजना, 2:25–30

5) झूठे शिक्षकों के विरूध दृढ खड़े रहो, 1:27; 4:1

5.1) कुत्तों से सावधान, झूठे षिक्षक खतनावाले यहूदिवादी (प्रेरित.15, गलातियों), 3:1–4

5.2) पौलुस की यहूदी सम्मपति,

क) झूठे शिक्षकों के प्रकाश में, 3:5–6

ख) मसीह के प्रकाश में, 3:7–16

5.3) उनके लिए पौलुस का दुःख, 3:17–21

6) पौलुस अपने निर्देशों को फिर दोहराता है,

6.1) एकता, 4:1–3

6.2) मसीह के समान चरित्र, 4:4–9

7) फिलिप्पियों की सहायता के लिए धन्यवाद को दोहराना

7.1) उनके अभी के उपहारों के लिए, 4:10–14

7.2) उनके पिछले उपहारों के लिए, 4:15–20 (1:5)

8) विषेश पौलुस के तरीके का अन्त, 4:21–23

7) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) मेरी कैद में, 1:7,13

2) प्रीति, 1:8

3) मसीह के दिन, 1:10

4) धार्मिकता के फल, 1:11

5) राजभवन की पलटन, 1:13

6) उसके लिए दुःख भी उठाओ, 1:29

7) अपने आप को शून्य कर दिया, 2:7

8) मनुष्य की समानता में, 2:7

9) अंगीकार, 2:11

10) न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ है, 2:16

11) मुझे तुम्हारे विश्वास रूपी बलिदान और सेवा के लिए लहू भी बहाना पड़े, 2:17

12) कुत्तों से चौकस रहो, 3:2

13) इब्रानियों का इब्रानी, 3:5

14) मसीह के क्रूस के बैरी, 3:18

15) हमारा स्वदेश स्वर्ग है, 3:20

16) जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखें हुए हैं, 4:3

8) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) अध्यक्ष, 1:1

2) सेवक, 1:1

3) तिमुथियुस, 2:19

4) इपफ्रुदितुस, 2:25

5) काट कूट करने वाले, 3:2

6) सुन्तुखे, 4:2

9) मानचित्र के स्थान,

1) फिलिप्पी, 1:1

2) मकिदुनिया, 4:15

3) थिस्सलुनीकिया, 4:16

10) चर्चा के प्रश्न

1) 1:6 किस सिद्धान्त पर जोर देता है?

2) 1:16 से पौलुस का तात्पर्य क्या है?

3) वाक्यांष 'यीशु मसीह की आत्मा' का क्या अर्थ है?

4) 1:21 को अपने शब्दों में समझाएं।

5) 2:6 यीशु के 'पूर्व अस्तित्व' और 'ईश्वरत्व' से कैसे सम्बन्धित हैं?

6) यीशु क्रूस पर क्यों मरे? (2:8)

7) 'जो स्वर्ग, और पृथ्वी के ऊपर, और पृथ्वी के नीचे है' किसको दर्शाता है?

8) 'डरते और काँपते हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाओ' का क्या अर्थ है? (2:12)

9) 2:4–6 में पौलुस की यहूदी विषेशताओं की सूची दें।

10) 3:9 का क्या महत्व है?

11) फिलि.4:5 में 'प्रभु निकट है' वाक्यांष है, तो वह क्यों नहीं आए?

कुलुस्सियों का परिचय

1) प्राक्कथन

क) कुलुस्से में झूठी शिक्षा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद; उनके कारण पौलुस ने यह समार्थ्यपूर्ण पत्र लिखा। याद रखें कि पुस्तक को समझने के लिए हमें उसके ऐतिहासिक संदर्भ से जुड़ना होगा। पौलुस की पत्रियों को 'परिस्थिति दस्तावेज' कहा जाता है, क्योंकि वह संसारिक सुसमाचार के सत्य से स्थानिय समस्याओं को सम्बोधित करता था। कुलुस्से की झूठी शिक्षा एक असामान्य तौर पर यूनानी दर्शनशास्त्र (ज्ञानवाद) और यहूदीमत का मेल था।

ख) आने वाले यीशु की संसारिक प्रभुता या श्रेष्ठता इसका केन्द्रिय विषय है (1:15–17)। इस पुस्तक की ख्रीष्ट विद्या का कोई तुल्य नहीं है। कुलुस्सियों इफिसियों की मूल रूपरेखा बनती है। पौलुस जानता था कि यह झूठी शिक्षा आसिया माइनर में फैल जाएगी। कुलुस्सियों झूठी शिक्षा का विरोध करती है जबकि इफिसियों इसके मुख्य विषय को विकसित करती है ताकि दूसरी कलीसियाओं को इसके विरूध तैयार किया जाए। कुलुस्सियों में महत्व ख्रीष्ट विद्या पर दिया है जबकि इफिसियों में महत्व मसीह में सारी वस्तुओं की एकता पर है, जो सब के प्रभु हैं।

ग) पौलुस कानूनवाद, यहूदी और यूनानी दोनों, का कठोर विरोध करता है (2:6–23)।

2) यह नगर

क) मौलिक तौर पर कुलुस्से नगर पिरगमुन और फ्रिगिया राज्य का भाग था। 133 ई0 में इसे रोम के सिनेट को दे दिया गया था।

ख) पौलुस के समय से पहले कुलुस्से एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था (देखें, हेरोदितुस का इतिहास, 7:30 और जेनोफोन अनाबासिस, 1:2:6)।

1) जिस घाटी में कुलुस्से स्थित था वह प्राचीन भुमध्य संसार का सबसे बडा ऊन का उत्पादक था, विषेश काली ऊन, और बैंगनी और कैसरी रंग में डाई की गई ऊन। ज्वालामुखी की मिट्टी अच्छी खाद बनती थी और खड़िया मिट्टी का पानी डाई करने के लिए बहुत सहायक था (स्ट्राबो, 13:4:14)।

2) ज्वालामुखी के कारण (स्ट्राबो 12:8:6) यह नगर इतिहास में अनेक बार नाश हो चुका है; आखरी बार 60 ई0 (टेसिटस) या 64 ई0 (यूसेबियुस) के समय में हुआ था।

ग) कुलुस्से लीकुस नदी पर स्थित था, जो मियानडर नदी की सहायक नदी थी जो इफिसुस से होकर 100 मील नीचे की ओर निकलती थी। इस एक घाटी में हियरापुलिस (6 मील की दूरी पर) और लौदीकिया (10 मील की दूरी पर) स्थित था (देखें, 1:2; 2:1; 4:13, 15–16)। रोमियों का अपना मुख्य पूर्व पश्चिमी मार्ग बनाने के बाद, इग्नेसिया से होते हुए, जो कुलुस्से से दूर था, वह फिर कुछ भी ना रह गया (स्ट्राबो)। यह पलिष्तिन में यरदन को पार करने वाले श्रेत्र पर स्थित पेट्रा के साथ है।

घ) यह नगर अधिकतर अन्यजातियों से बना था (फ्रिजिया और यूनान वासी), पर वहाँ पर यहूदी भी थे। जोशिफस बताते हैं कि ऐंथियोकस तीसरे (223–187 ई.पु) ने 2000 यहूदियों को कुलुस्से में पुनःस्थापित किया। कुछ ऐसे प्रमाण हैं जो बताते हैं कि 76 ई0 तक उस प्रान्त में 11,000 यहूदी पुरूष थे जिसकी राजधानी कुलुस्से थी।

3) लेखक

क) इस पत्री को भेजने वाले दो लोग है पौलुस और तिमुथियुस (देखें, कुलु.1:1)। परन्तु मुख्य लेखक पौलुस है; तिमुथियुस पौलुस का सहकर्मी और शास्त्री (अमान्युिनसस) के रूप में अपना नमस्कार भेज रहा है।

ख) प्राचीन लेख गुमनाम है कि पौलुस प्रेरित ही लेखक है।

1) मार्सियन (जो 140 ई0 में रोम आया था), पुराने नियम के विरूध का झुठा शिक्षक, ने अपनी पौलुस की पत्रियों में इसे शामिल किया है।

2) मुर्रोटोर्रियों के केनन (200 ई0 के निकट रोम से अधिकार प्राप्त पुस्तकों की सूची) में इसे पौलुस की पत्रियों की सूची में शामिल किया गया है।

3) अनेक प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे इससे उद्घृत करतें है और पौलुस को लेखक के रूप में पहचानते हैं।

क) इरेनियस (177–190 ई0 में लिखा)

ख) सिकंदरिया के क्लेमेंट (160–216 के बीच जीये)

4) कुलुसियों और इफिसियों के बीच साहित्यिक सम्बन्ध

क) इन दो बन्धिगृह की पत्रियों के बीच ऐतिहासिक सम्बन्ध इस रूपरेख का अनुकरण करते हैं।

1) इपफ्रास (कुलु.1:7; 4:12; फिलेमोन. 23) पौलुस की इफिसुस की सेवकाई (प्रेरित.19) के दौरान परिवर्तित हुआ।

1.1) वह अपने इस नये विश्वास को अपने गृह क्षेत्र लीकुस नदी घाटी ले गया।

1.2) इसने तीन कलीसिएँ शुरू की – हियरापुलिस, लौदिकिया और कुलुस्सियों

1.3) इपफ्रास पौलुस से सलाह माँगता है कि इन झूठे शिक्षकों के संसारिक विचारों के मिलावट का किस प्रकार विरोध करे। पौलुस रोम के बन्दिगृह में था प्रारम्भिक 60 ई0)।

2) झूठे शिक्षक सुसमाचार को यूनानी विचारों से मिलाने लगे।

2.1) आत्मा और देह दोनों अनन्तकाल के हैं।

2.2) आत्मा (परमेश्वर) अच्छा है।

2.3) देह (सृष्टि) बुरी है।

2.4) उच्च अच्छे परमेश्वर और निम्न देवताओं, जिहोंने संसारिक वस्तुएँ बनाई है, के बीच कई अनेक एयोंस् (स्वर्गदूत के स्थर) का अस्तिव है।

2.5) रहस्यमय शब्दों के ज्ञान के आधार पर उद्धार निर्भर था, जो लोगों को ऐयोंस् के समान विकसित होने में सहायता करते हैं।

ख) पौलुस की दो पत्रियों के बीच की साहित्यिक सम्बन्ध :

1) पौलुस ने इन कलीसियाओं में, जहाँ पर वह व्यक्तिगत तौर पर नहीं गया था, पाई जाने वाली झूठी शिक्षाओं के बारे में सुना था।

2) पौलुस ने संक्षिप्त में झूठे शिक्षओं पर केन्द्रित भावनात्मक वचनों वाला एक कठोर पत्र लिखा। इसका केन्द्रिय विषय यीशु की संसारिक प्रभुत्व थी। यह कुलुसियों के लिए पौलुस के पत्र के रूप में जाना जाता है।

3) कुलुसियों को लिखने के बाद, बन्दिगृह में समय होने के कारण, उसने इन विषयों का और भी विकास किया। इफिसियों बड़े वाक्यों और विकसित धर्मविज्ञान के विषयों से पहचाना जाता है। (1:3–14, 15–23; 2:1–10, 14–18, 19–22; 3:1–12, 14–19; 4:11–16; 6:13–20)। यह कुलुसियों को आरम्भ बिन्दु के रूप मे लेता है और इसके धर्मविज्ञानिक महत्वों को निकालता है। इसका केन्द्रिय विषय मसीह में सब वस्तुओं की एकता है जो प्रारम्भिक ज्ञानवादी विचार के विरोध में है।

ग) सम्बन्धित साहित्यि और धर्मविज्ञानिक ढाँचा

1) मूल ढाँचे की समानता

1.1) दोनों का आरम्भ एक समान है।

1.2) दोनों में सैद्धान्तिक इकाईयाँ हैं जो मसीह से सम्बन्धित हैं।

1.3) इनमें व्यावहारिक इकाईयाँ हैं जो मसीही जीवन शैली को समान्य अंशों, शब्दों और वाक्य खण्ड़ों से बताती हैं।

1.4) इनमें अन्तिम वचन एक समान हैं जो यूनानी भाषा मे 29 शब्द हैं, केवल कुलुसियों में दो शब्दों को जोडा गया है।

2) शब्दों और वाक्य खण्डों की समानता

इफि.1:1[ग] और कुलु.1:2[क]	'विश्वासी'
इफि. 1:4 और कुलु. 1:22	'पवित्र और निर्दोष'
इफि. 1:7 और कुलु. 1:14	'छुटकारा... क्षमा'
इफि. 1:10 और कुलु. 1:20	'जो कुछ स्वर्ग...पृथ्वी..'
इफि. 1:15 और कुलु. 1:3–4	'तुम्हारा प्रेम जो सभ पवित्र लोगो से है'
इफि. 1:18 और कुलु. 1:27	'महिमा का धन'
इफि. 2:1 और कुलु. 1:13	'मरे हुए थे'
इफि. 2:16 और कुलु. 1:20	'क्रुस...मिलाया'
इफि. 3:2 और कुलु. 1:25	'तुम्हारे लिए मुझे दिया गया है'
इफि. 3:3 और कुलु. 1:26,27	'भेद'
इफि. 4:3 और कुलु. 3:14	'एकता'
इफि. 4:15 और कुलु. 2:19	'चलते हुए...सिर'
इफि. 4:24 और कुलु. 3:10,12,14	'पहिन लो'
इफि. 4:31 और कुलु. 3:8	'प्रकोप, क्रोध, और कलह, निन्दा'
इफि. 5:3 और कुलु. 3:5	'अशुद्ध काम या लोभ'
इफि. 5:5 और कुलु. 3:5	'मूर्तिपूजक (लोभी)'
इफि. 5:6 और कुलु. 3:6	'परमेश्वर का क्रोध'
इफि. 5:16 और कुलु. 4:5	'अवसर को बहुमूल्य समझो'

3) एक समान वाक्य खण्ड़ और वाक्य

इफि.1:1[अ] और कुलु.1:1[अ]

इफि.1:1[ब] और कुलु.1:2[अ]

इफि.1:2[अ] और कुलु.1:2[ब]

इफि.1:13 और कुलु.1:5

इफि.2:1 और कुलु.2:13

इफि.2:5[ब] और कुलु.2:13[ग]

इफि.4:1[ब] और कुलु.1:10[अ]

इफि.6:21–22 और कुलु. 4:7–8 (29 एक–एक शब्द एक ही समान, केवल 'काइ सिनडुलोस' कुलु. में अलग है)।

4) <u>वाक्य खण्ड़ और वाक्य की समानताएं</u>

इफि. 1:21 और कुलु. 1:16

इफि. 2:1 और कुलु. 1:13

इफि. 2:16 और कुलु. 1:20

इफि. 3:7[अ] और कुलु. 1:23[घ], 25[अ]

इफि. 3:8 और कुलु. 1:27

इफि. 4:2 और कुलु. 3:12

इफि. 4:29 और कुलु. 3:8;4:6

इफि. 4:32[ब] और कुलु. 3:13[ब]

इफि. 5:15 और कुलु. 4:5

इफि. 5:19–20 और कुलु. 3:16

5) <u>धर्मविज्ञानिक तौर पर समान्य विचार</u>

इफि. 1:3 और कुलु. 1:3 धन्यवाद की प्रार्थना

इफि. 2:1,12 और कुलु. 1:21 परमेश्वर से अलगाव

इफि. 2:15 और कुलु. 2:14 व्यावस्था का बैर

इफि. 4:1 और कुलु. 1:10 योग्य चाल

इफि. 4:15 और कुलु. 2:19 उसमें जो सिर है, अर्थाथ मसीह में बढते चलो

इफि. 4:19 और कुलु. 3:5 गन्दे काम लालसा से किया करें

इफि. 4:22,31 और कुलु. 3:8 उतार डालो

इफि. 4:32 और कुलु. 3:12–13 एक दूसरे पर कृपालु और करूणामय हो

इफि. 5:4 और कुलु. 3:8 मसीहों की बातचीत

इफि. 5:18 और कुलु. 3:16 आत्मा से परिपूर्ण होना – मसीह का वचन

इफि. 5:20 और कुलु. 3:17 सब बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद

इफि. 5:22 और कुलु. 3:18 पत्नियों अपने–अपने पति के अधिन रहो

इफि. 5:25 और कुलु. 3:19 पतियों अपनी–अपनी पत्नियों से प्रेम रखो

इफि. 6:1 और कुलु. 3:20 बालकों अपने माता–पिता के आज्ञाकारी बनो

इफि. 6:4 और कुलु. 3:21 बच्चेवालों अपने बच्चों को रिस ना दिलाओ

इफि. 6:5 और कुलु. 3:22 दासो अपने स्वामी की आज्ञा मानो

इफि. 6:9 और कुलु. 4:1 स्वामियों तुम्हारा भी स्वामी है जो स्वर्ग में है

इफि. 6:18 और कुलु. 4:2–4 प्रार्थना के लिए पौलुस की विनती

6) <u>कुलुसियों और इफिसियों दानों में प्रयोग किए गए शब्द जो अन्य पौलुस के लेखों में नहीं हैं।</u>

1) पूर्णता

इफि. 1:23 'उसी की परिपूर्णता जो सब में सब कुछ पूर्ण करता हैं।'

इफि. 3:19 'परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।'

इफि. 4:13 'मसीह के पूरे डील डौल तक बढ जाएँ'

कुलु. 1:19 'कि उसमे सारी परिपूर्णता वास करे'

कुलु. 2:9 'उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'

2) मसीह कलीसिया के सिर के रूप में – इफि. 4:15,5:23 और कुलु. 1:18; 2:19

3) अलग होना – इफि. 2:12;4:18 और कुलु.1:21

4) अवसर का सही उपयोग – इफि. 5:16 और कुलु. 4:5

5) झड पकडना – इफि. 3:17 और कुलु.2:7

6) सत्य का वचन, सुसमाचार – इफि. 1:13 और कुलु. 1:5

7) सह लेना – इफि. 4:2 और कुलु. 3:13

8) असमान्य वाक्य खण्ड़ और शब्द(साथ मिलकर, प्रभाव) – इफि. 4:16 और कुलु 2:19

घ) <u>संक्षेप रूप</u>

1) कुलुसियों के एक तीहाई शब्द इफिसियों में हैं। ऐसा अनुमान है कि इफिसियों के 155 में से 75 वचन की समानताएँ कुलुसियों में है। दोनों पत्र पौलुस के बन्दिगृह से लिखे जाने का दावा करते हैं।

2) दोनों पौलुस के मित्र तिकिकुस के द्वारा ले जाए गए।

3) दोनों को एक ही क्षेत्र में भेजा गया था (आसिया माइनर)।

4) दोनों समान्य ख्रीस्ट विद्या विषय की चर्चा करते हैं।

5) दोनों मसीह को कलीसिया का सिर कहते हैं।

6) दोनों सही मसीही जीवन जीने पर जोर देते हैं।

ङ) <u>विभिन्नताओं के मुख्य बिन्दु</u>

1) कुलुसियों में कलीसिया हमेशा स्थानिय थी, पर इफिसियों सारे जगत की कलीसिया के लिए है। यह इफिसियों की पत्री के बाँटने वाले स्वभाव से हो सकता है।

2) झूठी शिक्षा, जो कुलुसियों की कलीसिया की एक मुख्य पहचान थी उसका इफिसियों की पत्री में कोई वर्णन नही है। पर, दोनों पत्रियाँ ज्ञानवादि जैसे शब्दों का प्रयोग करती है (बुद्धि, ज्ञान, परिपूर्णता, भेद, हाकिमों और सेनाओं, सौंप देना आदि)।

3) दूसरा आगमन कुलुस्सियों में अति शिाघ्र है पर इफिसियों में विलंभित है। कलीसिया एक गिरे हुए संसार में काम करने के लिए बुलाई गई है (2:7; 3:21; 4:13)।

4) पौलुस के पहचाने हुए अनेक शब्दों को भिन्न तरीके से प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण 'भेद' शब्द है। कुलुसियों में यह भेद मसीह है (कुलु. 1:26–27; 2:2; 4:3) पर इफिसियों में यह परमेश्वर की प्रारम्भ से छुपाई गई, पर अब प्रकट की गई अन्य जातियों और यहूदियों की एकता की याजना है (1:9;5:32)।

5) इफिसियों में अनेक पुराने नियम के वचनों का वर्णन है (1:22–भजन.8; 2:17–यशा.57:19; 2:20–भजन.118:22; 4:26–भजन.4:4; 5:15–यशा.26:19, 51:17, 52:1, 60:1; 5:3–उत्पत्ति.3:24; 6:2, 3–निर्ग.20:12; 6:14–यशा. 11:5, 59:17; 6:15: यशा.52:7) पर कुलुसियों में केवल एक या दो ही है (2:3–यशा.11:2; 2:22–यशा.29:13)।

च) हालांकि ये शब्द, वाक्य–खण्ड और बहुत बार रूपरेखा में भी समान है पर इनमें विषेश सत्य भी पाये जाते हैं।

1) त्रीएक अनुग्रह की आशीष – इफि.1:3–14

2) अनुग्रह का अंश – इफि.2:1–10

3) यहूदियों और अन्य जातियों का एक शरीर होना – इफि.2:11–3:13

4) मसीह के शरीर में एकता और वरदान – इफि.4:1–16

5) 'मसीह और कलीसिया', 'पति और पत्नि' के अनुकरण के ढँग है – इफि.5:22–33

6) आत्मिक मलयुद्ध का अंश – इफि.6:10–18

7) ख्रीष्ट विद्या का अंश – कुलु.2:16–23

8) मानविय धार्मिक रीति और नियम – कुलु. 2:16–23

9) कुलुसियों में मसीह के संसारिक महत्व के विषय के विरूध और इफिसियों में मसीह में सभी वस्तुओं की एकता का विषय।

छ) अन्तिम में, यह सही मालूम हाता है कि (ए. टि. रोबर्टसन और एफ. एफ. ब्रूस का इस बात का दावा करने के लिए अनुकरण करें) पौलुस ने ही इन दोनों पत्रियों को कम समय के अंतराल में कुलुसियों के विचार को एक कोने के पत्थर के रूप में विकसित कर लिखा है।

4) तारीख

क) इस पत्री की तारीख पौलुस की इफिसुस, फिलिप्पी, कैसिरिया, या रोम की किसी एक कैद से सम्बन्धित है। प्रेरितों के तथ्यों से रोमी कैद सही प्रतित होती है।

ख) यदि रोम को सही मान लें तो यह प्रशन उठता है कि किस समय? प्रारम्भिक 60 ई0 के दौरान पौलुस कैद में था, जिसका वर्णन प्रेरितों में है, परन्तु उसे रीहा कर दिया गया था और उसने पासवानी पत्रियाँ लिखीं (1 और 2 तिमुथियुस और तितुस) और उसे फिर से कैद किया गया और 9 जून 68 ई0 से पहले मार डाला गया, जो निरो की आत्मा हत्या का समय था।

ग) उच्च शिक्षित लोग इफिसियों की लिखने की तारीख प्रारम्भिक 60 ई0 में रोम की पौलुस की पहली कैद को मानते हैं।

घ) तिकिकुस, उनेसिमुस के संग, कुलुसियों, इफिसियों और फिलेमोन की पत्रियों को आसिया माइना को ले गया होगा।

ङ) एफ. एफ. ब्रूस और मुर्रे हेरिस की मानें तो पौलुस की पत्रियों का समयकाल सम्भवतः निम्नलिखित हो सकता है :

पुस्तक	तारीख	लिखने का स्थान	प्रेरितों के काम से सम्बन्ध
गलतियों	48 (दक्षिणि सिद्धान्त)	सिरिया का अन्ताकिया	14:28; 15:2
1 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	18:5
2 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	
1 कुरि.	55	इफिसुस	19:20
2 कुरि.	56 या 57	मकिदुनिया	20:2
रोमियों	57	कुरिन्थुस	20:3
कुलुसियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	श्रोम	
इफिसियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	श्रोम	28:30–31
फिलेमोन	60 ई0 (बन्दिगृह)	श्रोम	
फिलिप्पियों	62–63 ई0 (बन्दिगृह)	श्रोम	
1तीमुथियुस	63 या बाद	मकिदुनिया	
तितुस	63 या बाद	इफिसुस?	

2तीमुथियुस	64 ई0 (68 से पहले)	श्रोम	

5) <u>स्त्रोतागण और परिस्थिति</u>

क) इस कलीसिया की शुरूआत इपाफ्रुस के द्वारा की गइ थी (देखें, 1:7, 8; 2:1; 4:12–13) जो पौलुस के द्वारा सम्भवतः इफिसुस में परिवर्तित हुआ (कुलु.1:7–8 और देखें, 2:1)। यह अधिकतर अन्यजातियों से बनी थी (1:21; 3:7)। इपाफ्रुस कैद में पौलुस के पास झूठे शिक्षकों के बारे में बताने आया था जो मसीहत के साथ यूनानी दशार्नशास्त्र को भी सिखा रहे थे जिसे ज्ञानवाद कहा जाता है (2:8) और यहूदी व्यावस्था का पालन करना भी सिखा रहे थे (देखें, यहूदी तत्व 2:11, 16, 17; 3:11; स्वर्गदूतों की आराधना और अविवाहित रहना 2:20–23)। कुलुस्से में एक यहूदी समुदाय था जो यूनानी संस्कृति को अपना चूका था। समस्या का मुख्य कारण यीशु का व्यक्तित्व और कार्य था। ज्ञानवादियों ने यह इनकार किया कि यीशु पूर्ण मनुष्य है परन्तु उन्होंने यह दावा किया कि वह पूर्ण दिव्य था क्योंकि वे वस्तु और आत्मा के बीच अनन्त विवाद पर विश्वास करते थे। वे उनके ईश्वरत्व का दावा करते थे पर उनके मनुष्यत्व का नहीं। वे उनके पूर्व अस्तित्व की मध्यस्ता को भी नकारते थे। उनके अनुसार उच्च भले परमेश्वर और मानवता के बीच कई स्वर्गदूतों के स्थर थे। हालांकि यीशु सबसे ऊँचा था पर देवताओं में से एक था। वे अपने ज्ञान को अलग ही मानते थे (देखें, 3:11, 14, 16, 17) और एक विषेश रहस्य ज्ञान का यीशु के बलिदान और उनके मुफ्त क्षमा को पाने के लिए मनुष्य के पश्चातापी विश्वास को परमेश्वर की ओर के मार्ग के ऊपर महत्व देते थे (2:15,18,19)।

ख) इस धर्मविज्ञानिक, दार्शनिक वातावरण के कारण कुलुस्सियों की पुस्तक इन बातों पर महत्व देती है।

1) मसीह के व्यक्तित्व की विषेशता और उद्धार के लिए उसका पूर्ण कार्य।

2) यीशु नासरी का संसारिक आधिकार, राज्य और महत्व – उनका जन्म, उनकी शिक्षा, उनका जीवन, उनकी मृत्यु, उनका पुनरूत्थान, और स्वर्गारोहण, वही सभी के प्रभु हैं!

<u>7) उद्देश्य</u>

पौलुस का उद्देश्य कुलुस्सियों की कलीसिया में सिखाई जा रही झूठी शिक्षा का खण्ड़न करना था। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए उसने मसीह को परमेश्वर के स्वरूप की ओर उठाया (1:15), सृष्टिकर्ता (1:18), वही सब वस्तुओं में स्थिर हैं (1:17), कलीसिया का सिर (1:18), मरे हुओं मे से जी उठनेवालों में पहिलौठा (1:18), उनमें सारी पूर्णता वास करती है (1:19), मेल–मिलाप करवाने वाले (1:20–22)। इस तरह मसीह सब कुछ हैं। विश्वासियों को 'मसीह की भरपूरता' प्राप्त हुई है (2:10)। कुलुस्सियों में व्याप्त झूठी शिक्षा आत्मिक उद्धार दिलाने के लिए काफी नहीं थी। वह एक खाली और भरमाने वाला दशर्नशास्त्र है (2:8), शारीरिक लालसाओं को रोकने में असमर्थ है (2:23)।

कुलुस्सियों में बार–बार आने वाला विषय मसीह की पर्याप्तता है जिसका विरोध मानव ने खाली दशर्नशास्त्र से किया। यह पर्याप्तता यीशु की संसारिक प्रभुता में व्यक्त की गई है। वही प्रभु हैं, सृष्टिकर्ता हैं, सारी देखी और अनदेखी वस्तुओं में श्रेष्ठ हैं (1:15–18)।

8) <u>रूपरेखा</u>

क) पारम्परिक पौलुस के प्रारम्भिक वचन

1) भेजनेवाले के साथ पहचान, 1:1

2) स्त्रोतागणों के साथ पहचान, 1:2[अ]

3) नमस्कार, 1:2[ब]

ख) मसीह की श्रेष्ठता (1–10 का षीर्शक एन के जे वी अनुच्छेद रूपरेखा से लिया गया है)

1) मसीह में विश्वास, 1:3–8

2) मसीह का पूर्व अस्तिव, 1:9–18

3) मसीह में मेलमिलाप, 1:19–23

4) मसीह के लिए बलिदानपूर्ण सेवा, 1:24–29

5) दशर्नशास्त्र नहीं, पर मसीह, 2:1–10

6) व्यावस्थावाद नहीं पर मसीह, 2:11–23

7) शारीरिक लालसा नहीं, पर मसीह, 3:1–11

8) मसीह को धारण कर लो, 3:12–17

9) मसीह आपके परिवार को प्रभावित करें, 3:19–4:1

10) मसीह आपके व्यावहारिक जीवन को प्रभावित करें, 4:2–6

ग) पौलुस का भेजा हुआ दास, 4:7–9

घ) पौलुस के मित्र अपने प्रणाम को भेजते हैं, 4:15–17

ङ) पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ अन्तिम नमस्कार, 4:18

9) ज्ञानवाद

क) इस झूठी शिक्षा की हमारी अधिकतर जानकारी दूसरी षताब्दी के ज्ञानवादी लेखों से आती है। परन्तु, इसके आरम्भिक विचार पहली षताब्दी में ही उपस्थित थे मृत सागर कुण्ड़ल।

ख) कुलुस्से पर समस्या मसीहत, आरम्भिक ज्ञानवाद, और व्यावस्थावादी यहूदी मत का मिलन था।

ग) दूसरी षताब्दी के वेलनटीनियों और सेरीनथियों के कुछ लिखित सिद्धान्त :

1) वस्तु और आत्मा अनन्तकाल के हैं (द्विवाद)। वस्तु बुरी और आत्मा अच्छी है। परमेश्वर जो अच्छे हैं वह सीधे तौर पर बुरी वस्तुओं को बनाने में शामिल नहीं हो सकते हैं।

2) परमेश्वर और वस्तु के बीच में अनेक उनसे निकले हुए दिव्य प्राणी हैं (ऐंयोंस या स्वर्गदूतों के स्तर)। इनमें सबसे आखरी या निम्न पुराने नियम के यहोवा हैं जिन्होंने ब्रांहमाण्ड़ (*कोसमोस*) का निमार्ण किया था।

3) यीशु भी यहोवा जैसे एक दिव्य प्राणी थे पर यहोवा से स्थर में ऊँचे थे, सच्चे परमेश्वर के निकट थे। कुछ ने उन्हें सबसे ऊँचा स्तर दिया पर फिर भी परमेश्वर से नीचा समझा और इस संसार में आए हुए ईश्वर न समझा (यूह.1:14)। क्योंकि देह बुरी है इसलिए यीशु का षरीर मानव शरीर नहीं हो सकता और फिर भी वह षरीर दिव्य नहीं हो सकता। वह केवल मानव जैसे दिखे पर वास्तविक में आत्मा थे (1यहू.1:1–3;4:1–6)।

4) उद्धार यीशु पर विश्वास और रहस्य ज्ञान से होता है जो केवल विषेश लोगों को ही प्राप्त होता है। रहस्य ज्ञान की आवश्यकता थी कि स्वर्गीय स्तर से हो निकलें। परमेश्वर तक पहुँचने के लिए यहूदी व्यावस्थावाद की भी जरूरत है।

घ) ज्ञानवादी झूठे शिक्षक दो विरोधाभास वाली नैतिक चीजों का दावा करते थे।

1) कुछ लोगों के लिए जीवनशैली और उद्धार बिलकुल सम्बन्धित नहीं थे। उनके लिए उद्धार और आत्मिकता स्वर्गदूतों के स्तर में और रहस्य ज्ञान में सम्मिलित थे।

2) कुछ अन्य लोगों के लिए जीवनशैली उद्धार के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। इस पुस्तक में झूठे शिक्षक सच्ची आत्मिकता के प्रमाण के लिए अविवाहित जीवन को महत्व देते थे (देखें, 2:16–23)।

3) अधिक जानकारी के लिए देखें, हेन्स जोनस द्वारा लिखित आरै बैकोन प्रैस द्वारा प्रकाषित, द नॉस्टिक रीलीजन।

10) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़

1) उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुई है, 1:5

2) उस सुसमाचार, 1:5

3) अन्धकार के वश में, 1:13

4) छुटकारा, 1:14

5) अदृश्य परमेश्वर, 1:15

6) उसमें सारी परिपूर्णता वास करे, 1:19

7) उस के क्रुस वर बहाए लहु के द्वारा मेलमिलाप, 1:20

8) मसीह की देह के लिए...पूरी करता हुँ, 1:20

9) मनुष्यों की परम्पराओं, 2:8

10) संसार की आदि शिक्षा, 2:8, 20

11) बपतिस्मा में गाड़े गए, 2:12

12) अपने अपराधों में मुर्दे थे, 2:13

13) विधियों का लेख मिटा डाला, 2:14

14) तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा है, 3:3

15) जंगली, 3:11

16) वह पत्र जो लौदिकिया से आये, 4:16

11) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) इपफ्रास, 1:7; 4:12

2) सारी सृष्टि में पहिलौठा, 1:15

3) सिंहासन, प्रभुताएँ, प्रधानताएँ, अधिकार, 1:16

4) मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा, 1:18

5) स्कूती, 3:11

6) तुखिकुस, 4:7

7) उनेसिमुस, 4:9

8) मरकुस, 4:10

9) लूका, 4:14

10) देमास, 4:14

12) <u>मानचित्र के स्थान,</u>

1) कुलुस्से, 1:2

2) लौदिकिया, 2:1

3) हियरापुलिस, 4:13

13) <u>चर्चा के प्रश्न</u>

1) पौलुस ज्ञान और समझ के बारे में इतनी बात क्यों करता है? (1:9)

2) 1:23 की चेतावनी का क्या महत्व है?

3) परमेश्वर का पीढ़ियों से गुप्त रहा भेद क्या है? (1:27)

4) क्या पौलुस उस कलीसिया के लोगों को नहीं जानता था? (2:1)

5) कोई तत्वज्ञान से लूट कैसे सकता है? (2:8)

6) 2:9 कौन से सिद्धान्त को महत्व देता है?

7) 2:15 के रोम के ऐतिहासिक संदर्भ को समझाएं?

8) 2:16–17 किसकी ओर संकेत करता है?

9) 2:14–13 किस प्रकार व्यवस्थावाद को सम्बोधित करता है?

10) 3:5 के पाप मुर्तिपूजा के बराबर क्यों है?

11) कुलु.3:11 गला.3:28 से कैसे सम्बन्धित है?

12) 3:16 इफि.5:18 से कैसे सम्बन्धित है?

13) 3:23 का आत्मिक सिद्धान्त क्या है?

14) 4:6 को अपने शब्दों में समझाएं।

15) पौलुस अपनी पत्रियों का अन्तिम वचन अपने आप क्यों लिखता है? (4:18)

थिस्सलुनीकियों के नाम पत्रियों का परिचय

1) प्राक्कथन

क) संक्षिप्तरूप

1) थिस्सलुनीकियों की पत्रियाँ एक मिश्नरी और पासवान के रूपों की पौलुस की अच्छी जानकारी देती हैं। हम उसे थोड़े ही समय में एक कलीसिया का निमार्ण करते हुए देखते हैं और उसकी बढ़ोतरी, विकास और सेवा के लिए निरन्तर प्रार्थना करते और चिन्तित होते हुए देखते हैं।

2) हम उसे विश्वासयोग्य सुसमाचार का प्रचार करते हुए, परिवर्तित लोगों की चिन्ता करते, डाँटते, प्रशंसा करते, सलाह देते, उत्साहित करते, सिखाते, प्रेम करते, और अपने आप को भी देते हुए पाते हैं। वह उनके प्रगती से बहुत आनन्दित था, पर उनके परिपक्व होने की गती से दुःखी था।

3) इन पत्रियों में हम एक जलन रखने वाले, मसीह के प्रेमी दास और एक छोटी, जलन रखने वाली, पर बढ़ती हुई नई कलीसिया से मिलते हैं। दोनों विश्वासयोग्य थे, दोनों परमेश्वर के द्वारा उपयोग किये गए, और दोनों ने मसीह समान एक दूसरे की सेवा की जो परमेश्वर के लोगों के बीच बहुत कम पाया जाता है।

ख) थिस्सलुनीके का नगर

1) थिस्सलुनीके का संक्षिप्तइतिहास

1.1) थिस्सलुनीके का नगर थरमिक खाड़ी के ऊपर स्थित था। थिस्सलुनीके मुख्य रोमी मार्ग, 'वया इग्नासिया' (जातियों का मार्ग), जो रोम से पूर्व की ओर निकलता है पर एक तटिय नगर था। एक समुन्द्री बन्दरगाह था जो एक भरपूर पानी वाले तटिय क्षेत्र के निकट था। इन तीनों बातों ने थिस्सलुनीके को मकिदुनिया में सबसे बड़ा और सबसे मुख्य आर्थिक और राजनैतिक केन्द्र बना दिया था।

1.2) थिस्सलुनीके का मूल नाम 'थरमा' था, यह नाम इस क्षेत्र में गर्म पानी के स्त्रोत के कारण पड़ा था। एक प्रारम्भिक इतिहासकार, प्लीनी बुजुर्ग, थरमा और थिस्सलुनीके के अस्तिव को एक साथ बताते हैं। यदि ऐसा है तो थिस्सलुनीके थरमा के चारों ओर था और उससे जुडा था (लीयोंन मोरिस, द फस्ट एण्ड सेकेण्ड एपीस्टलस् टू द थेसलोनियनस्, ग्रैण्ड रैपीड़स्: डवलयू एम एर्डमन्स पबलिषिंग कम्पनी, 1991, पृश्ठ 11)। पर कइ इतिहासकार विश्वास करते हैं कि केसानदर ने, जो सिकंदर महान का एक जनरल था, 315 ई. पु. में थरमा का पुनः नाम मकिदुनिया के फिलिप्प की पुत्री और सिकन्दन की आधी बहिन और पत्नि पर रखा (स्ट्रबो सतवां लेख 21)। मसीहत के फैलाव की प्रारम्भिक षताब्दियों में इसके मसीही चरित्र के कारण थिस्सलुनीके को कभी 'कट्टवादी नगर' के उपनाम से भी जाना जाता था (देखें, ड़ीन फरार की द लाइफ एण्ड वर्क ऑफ सेन्ट पॉल, न्यू योर्कः केस्सेल एण्ड कम्पनी लीमीटिड़, 1904, पृश्ठ 364)। आज के समय में थिस्सलुनीके को सलोनीका के नाम से जाना जाता हैं और अब भी यह यूनान क एक मुख्य नगर है।

1.3) थिस्सलुनीके कुरिन्थिुस के समान एक सर्वदेशीय राजधानी था, जहाँ पर पूरे संसार से लोग रहते थे।

1) उत्तर से जर्मन के जंगली लोग वहाँ पर रहते थे जो अपने अन्यजातिय धर्म और संस्कुति को लेकर आते थे।

2) वहाँ पर यूनानी भी रहते थे, जो दक्षिण में आखिया से और ऐजिन सागर से आते थे जो अपने साथ अपने तत्वज्ञान और दशर्नशास्त्र को लाते थे।

3) पश्चिम से रोमी लोग भी रहते थे। वे अधिकतर सेवानिवृत रोमी सैनिक थे और वे अपने साथ अपनी इच्छा, धन और राजनैतिक अधिकार भी लाते थे।

4) अन्तिम में पूर्व से कई यहूदी भी आते थे; इस कारण एक तीहाई जनसंख्या इनकी थी। वे अपने साथ अपनी नैतिक एक–ईश्वरवादी विश्वास और राष्ट्र पूर्नधारणाओं को लाते थे।

1.4) 200,000 की जनसंख्या के साथ थिस्सलुनीके सही में एक सर्वदेशीय नगर था। गर्म पानी के स्त्रोतों के कारण यह एक आश्रय और स्वास्थ केन्द्र भी था। इसके बन्दरगाह, उपजाऊ जमीन और इग्नेसियन मार्ग के निकट होने के कारण यह एक व्यापारिक केन्द्र भी था।

1.5) एक राजधानी और बड़ा नगर होने के कारण, थिस्सलुनीके मकिदुनिया की केन्द्रिय राजनैतिक का मुख्य कार्यालय भी था। एक रोमी प्रान्त की राजधानी और कई रोमी नागरिकों (अधिकत्तर सेवानिवृत रोमी सैनिक) का घर होने कारण, यह एक स्वतंत्र नगर बन गया। थिस्सलुनीके को कोई कर नहीं देना पडता था और रोमी नियम से शासन किया जाता था क्योंकि थिस्सलुनीके के अधिकत्तर निवासी रोमी नागरिक थे। इसलिए थिस्सलुनीके के शासकों को 'पोलीतार्कस' कहा जाता था। यह शिषर्क किसी भी सहित्य में नहीं पाया जाता पर यह थिस्सलुनीके के एक विजय द्वार, जिसे 'वरदार' द्वार के नाम से जाना जाता है, पर गोदा गया है (फरार, पृश्ठ 371)।

2) घटनाएँ जो थिस्सलुनीके में पौलुस के आने का कारण बनीं।

2.1) अनेक घटनाओं के कारण पौलुस थिस्सलुनीके आया, कई संसारिक कारणों के पीछे परमेश्वर की सीधी और स्पष्ट बुलाहट है। पौलुस की मूल रूप से युरोपी महाद्विप में आने की कोई योजना नहीं थी। उसकी दूसरी मिश्नरी यात्रा करने की इच्छा का कारण उसकी अपनी पहली यात्रा के दौरान आसिया माइनर में स्थापित की गई कलीसियों से फिर मिलना और फिर पूर्व की ओर जाना था। परन्तु जब यह क्षण आने लगा तो परमेश्वर ने उसके लिए द्वार बंद कर दिया। इसके परिणामस्वरूप पौलुस को मकिदुनिया का दर्शन प्राप्त हुआ (देखें, प्रेरित.16:6–10)। इसके कारण दो घटनाएं घटीं; पहली, युरोपीय महाद्विप का सुसमाचारिकरण और दूसरी, पौलुस ने मकिदुनिया की परिस्थितियों के कारण यह पत्री लिखनी शुरू की (देखें, थोमस कारटर की लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ पॉल, नाषवीलः कॉकेसबरी प्रैस, 1921, पृश्ठ 112)।

2.1) इस आत्मिक अगुवाई के बाद, जिन परिस्थितियों के कारण पौलुस थिस्सलुनीके आया;

1) पौलुस फिलिप्पी गया, एक छोटा नगर जहाँ पर कोई यहूदी आराधनालय नहीं था। वहाँ पर उसका कार्य एक भावी बोलने वाली दासी लड़की के मालिकों और नगर की सभा के द्वारा रोक दिया गया था। पौलुस की पीटाई और निन्दा की गई पर इनके मध्य में भी एक कलीसिया की स्थापना हुई। विरोध और शारीरिक दण्ड के कारण पौलुस को अपनी अपेक्षा से पहले नगर को छोड़ना पडा।

2) वहाँ से वह कहाँ जाता? वह एंफिपोलुस और आपोलुनिया को गया जहाँ पर भी आराधनालय नहीं था।

3) वह उस क्षेत्र के सबसे बड़े शहर थिस्सलुनीके में आया जहाँ पर एक आराधनालय था। पौलुस का तरीका यह था कि वह पहले स्थानिय यहूदियों के पास जाता था। वह यह इस कारण करता था :

क) उनके पुराने नियम के ज्ञान के कारण

ख) आराधनालय में पढ़ाने और सिखाने के अवसर दिये जाने के कारण

ग) चुने हुए लोग होने के कारण, परमेश्वर की वाचा के लोग (देखें, मत्ती.10:6; 15:24; रोम. 1:16–17; 9–11)

घ) यीशु ने पहले अपने आप को उनके लिए दिया, फिर संसार के लिए – इस कारण पौलुस मसीह के उदाहरण का पीछा करता था।

3) पौलुस के सहकर्मी

3.1) थिस्सलुनीके में पौलुस के साथ सिलास और तिमुथियुस थे। फिलिप्पी में पौलुस के साथ लूका था पर वह वहाँ पर ही रूक गया। यह हम प्रेरित.16 और 17 के 'हम' और 'वे' अंशों से जान सकते हैं। लूका फिलिप्पी में 'हम' शब्द का प्रयोग करता है परन्तु थिस्सलुनीके की ओर जाते समय 'हम' शब्द का प्रयोग नहीं करता।

3.2) बरनबास और यूहन्ना मरकुस के साईप्रस जाने के बाद अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के लिए पौलुस सिलास या सिलवानुस को चुनता है :

1) बाइबल में पहली बार उसका वर्णन प्रेरित.15:22 में पाया जाता है जहाँ पर वह यरूशलेम कलीसिया के भाइयों में से मुख्य कहा गया है।

2) वह एक भविष्यद्वक्ता भी था (प्रेरित.15:32)।

3) वह पौलुस के समान एक रोमी नागरिक था (प्रेरित.16:37)।

4) उसे और यहुदा बरसब्बा को यरूशलेम कलीसिया से वहाँ की स्थिति को देखने के लिए आन्ताकिया भेजा गया (प्रेरित. 15:22, 30–35)।

5) 2कुरि.1:19 में पौलुस उसकी सराहना करता है और उसका वर्णन कई पत्रियों में करता है।

6) कई समय बाद वह 1 पतरस लिखने में पतरस के साथ पहचाना जाता है (1 पत. 5:12)।

7) पौलुस और पतरस दोनों उसे सिलवानुस बुलाते हैं, पर लूका उसे सिलास कहता है।

3.3) तिमुथियुस भी पौलुस का साथी और सहकर्मी था :

1) पौलुस उससे लुस्त्रा में मिला जहाँ पर वह पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा के दौरान परिवर्तित हुआ।

2) तिमुथियुस आधा यूनानी और आधा यहूदी था क्योंकि उसका पिता यूनानी और माता यहूदी थी। पौलुस तिमुथियुस को अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार सुनाने के कार्य में इस्तामाल करना चाहता था।

3) पौलुस उसका खतना करता है ताकि वह यहूदियों के संग काम कर सके।

4) पौलुस 2 कुरि., कुलु., 1 और 2 थिस्सलुनीकयों और फिलेमोन के नमस्कार में उसका वर्णन करता है।

5) पौलुस उसे 'विश्वास में सच्चा पुत्र' कहता है (1तिमु.1:2, 2तिमु.1:2; तितुस.1:4)।

6) अपनी सारी पत्रियों में पौलुस के वर्णन से यह मालूम होता है कि तिमुथियुस जवान और डरपोक था। पर पौलुस उस पर अधिक विश्वास और भरोसा रखता है (प्रेरित.19:27; 1कुरि.4:17; फिलि.2:19)।

3.4) यह केवल पौलुस के सहकर्मियों के भाग में सही है कि उन व्यक्तियों का वर्णन हुआ जो थिस्सलुनीके आये और पौलुस के साथ उसके अन्य मिश्नों में सहभागी हुए। वे हैं अरिस्तर्खुस (प्रेरित.19:29; 20:4; 27:2) और सिकुन्दुस (प्रेरित.20:4)। और देमास भी थिस्सलुनीके से हो सकता है (फिले.24;2तिमु. 4:10)।

4) नगर में पौलुस की सेवकाई

4.1) थिस्सलुनीके में पौलुस की सेवकाई उसका समान्य तरिका था कि वह पहले यहूदियों के पास जाता और फिर अन्यजातियों की ओर चलता था। पौलुस ने आराधनालय में तीन सब्त के दीनों में प्रचार किया। उसका संदेश था 'यीशु ही मसीहा है'। उसने पुराने नियम के वचनों का प्रयोग कर बताया कि आने वाले मसीहा को एक पीड़ित मसीहा होना था (देखें, उत्पत्ति.3:15; यशा.53) और वह राजनैतिक और थोड़े समय का मसीह न था। पौलुस पुनरूत्थान पर और सभी लोगों के उद्धार पर भी ज़ोर देता है। यीशु को पुराने नियम के उसी मसीहा के रूप में प्रस्तुत किया गया जो सभी लोगों का उद्धार कर सकता है।

4.2) इस संदेश का प्रतिउत्तर यह था कि कुछ यहूदी, अनेक भक्त अन्यजाति, और अनेक मुख्य महिलाओं ने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया। इन समूहों पर अध्यन करना पौलुस की इस कलीसिया की पत्री को समझने में अति सहायक है।

4.3) कलीसिया के अधिकत्तर सदस्य अन्यजातिय थे, यह दोनों पत्रियों में पुराने नियम के वर्णन के न होने से स्पष्ट है। अन्यजातियों ने कई कारणों से शीघ्र ही यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया :

1) उनके पारम्परिक धर्म सार्मथ्यहीन अंधविश्वास थे। थिस्सलुनीके ओलंपिस पर्वत के कदमों पर था और सभी जानते थे कि उनकी ऊचाँइयाँ खाली थीं।

2) सुसमाचार सबके लिए और मुफ्त था।

3) मसीहत में कोई यहूदी कट्टर राष्ट्रवाद नहीं था। यहूदी धर्म ने अपने एक–ईश्वरवाद और उच्च नैतिकता के कारण अनेक लोगों को आकर्शित किया था पर उसने अपने कठोर रीति–रिवाजों (जैसे खतना) और आन्तरिक जातिय और राष्ट्रिय पुर्नधारणाओं के कारण अनेक लोगों को स्वयं से दूर भी किया।

4.4) अनेक 'मुख्य महिलाओं' ने मसीहत को ग्रहण किया, क्योंकि इन्हें धार्मिक चुनाव करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। कई अन्य यूनानी रोमी संसार से मकिदुनिया और आसिया माइनर में स्त्रियाँ अधिक स्वतंत्र थीं (सर विल्यम रामसे, सेन्ट पॉल द ट्रेवलर एण्ड रोमन सीटिज़न, न्यू योर्कः जी पी पटनमस् एण्ड सन्स्, 1896, पृश्ठ 227)। गरीब स्तर की महिलायें, हालांकि स्वतंत्र थी, पर फिर भी अधंविश्वास और बहु–ईश्वरवाद के अधिन थी (रामसे, पृश्ठ 229)।

4.5) थिस्सलुनीके में पौलुस के रूकने के समय को लेकल कई लोग स्पश्ट नहीं है और उलझन में हैं।

1) प्रेरित.17:2 में थिस्सलुनीके में तीन सब्तों में आराधनालस में पौलुस को विवाद करते पाते हैं।

2) 1 थिस्स.2:7–11 में पौलुस अपना व्यवसायक काम करता है। यह तम्बू बनाने का काम था या किसी ओर के अनुसार चमड़े का काम है।

3) फिलि.4:16 अधिक समय को दिखता है जब पौलुस थिस्स्लुनीके की कलीसिया से दो बार आर्थिक सहायता पाता है। इन दो नगरों की बीच की दूरी 100 मील थी। कुछ अन्य कहते हैं कि पौलुस दो या तीन महीने रूका और वे तीन सब्त उसके यहूदियों की सेवकाई को दिखाती है(शेपार्ड़,165 पन्ना)।

4) प्रेरित.17:4 और 1 थिस्स. 1:9 और 2:4 में विभिन्न घटनाएँ यह विचार बताती हैं कि इन घटनओं में मुख्य विभिन्नता अन्यजातियों द्वारा मुर्तियों का तिरस्कार करना है। प्रेरितों में अन्यजाति यहूदी मत को मानने वाले थे और वे पहले से मुर्तियों से मुढ़ चुके थे। यह संदर्भ बताता है कि पौलुस को यहूदियों से अन्यजातियों के बीच अधिक सेवकाई का मौका मिला।

5) जब कभी सेवकाई का कोई बड़ा मौका मिला तो यह तो अनिश्चित बात थी क्योंकि पौलुस हमेशा पहले यहूदियों के पास ही जाता था। जब वे संदेश का इनकार कर देते थे तब वह अन्यजातियों के पास जाता था। जब वे अधिक संख्या में सुसमाचार का प्रतिउत्तर देते थे तब यहूदी जल उठते थे और नगर के बीच दंगा–फसाद शुरू करते थे।

4.6) इस दंगे के कारण पौलुस यासोन के घर को छोड़ देता है और तिमुथियुस और सिलास के साथ छिप जाता है या वे वहाँ नहीं थे जब भीड़ यासोन के घर उन्हें ढूंढ़ने आयी। नगर के हाकिमों ने यासोन से मुचलका लिया ताकी नगर में शान्ति बनाई जा सके। इस घटना के कारण पौलुस को नगर को छोड़कर बिरीया जाना पड़ा। परन्तु तब भी कलीसिया इन सतावों के बीच भी मसीह की गवाह बनती रही।

2) <u>लेखक</u>

क) <u>1 थिस्सलुनीकियों:</u>

केवल आधुनिक अलोचकों ने पौलुस के लेखक होने और 1 थिस्सलुनीकियों की सच्चाई पर संदेह किया; पर कई विद्वान उनके अन्तिम निश्कर्श से संतुष्ट नहीं हैं। 1 थिस्सलुनीकियों को मार्सियों की अधिकारी पुस्तकों की सूची (140ई0) और मुर्रोटोरियों के लेख (200ई0) में शामिल किया गया है। इन दोनों नये नियम की अधिकार प्राप्त पुस्तकों की सूची रोम में पढ़ी जाती थी। इरेनियस नेकुछ 180 ई0 में थिस्सलुनीकियों के नाम का वर्णन किया।

ख) <u>2 थिस्सलुनीकियों:</u>

1) 2 थिस्सलुनीकीयों की पुस्तक को हमेशा पौलुस द्वारा लिखित नहीं माना जाता है इसके अनेक कारण हैं :

क) शब्दभण्डार एक समस्या है। इस पत्री में अनेक ऐसे शब्द हैं जो अन्य पौलुस की पत्रियों में नहीं पाए जाते।

ख) 'शैली बिलकुल दूसरे प्रकार की है और कुछ समय तो गम्भिर रूप से औपचारिक है' (हेर्ड, पृश्ठ 186)।

ग) दोनों पत्रियों की अन्तिम दिनों की विद्या एक साथ नहीं है।

घ) 2 थिस्सलुनीकियों में केवल पाप के पुत्र के बारे में लिखा हैं जो पूरे नये नियम में अनोखी है, इसलिए कुछ लोग कहते कि पौलुस लेखक नहीं हो सकता।

2) 2 थिस्स. की वास्तविकता अनेक प्रमाणों पर अधारित है।

क) पॉलीकार्प, इग्नेसियस और जेसटिन ने इसे पहचाना था।

ख) मुर्रोटोरीयों के लेख में शामिल है।

ग) इरेनियस ने नाम से इसका वर्णन किया।

घ) इसके शब्दभण्डार, शैली और धर्मविज्ञान 1थिस्स. के समान पौलुस के हैं।

ग) दोनों की तुलना :

1) दोनों पत्रियाँ

एक समान हैं, केवल विचारों में ही नहीं पर वास्तविक शब्दभण्डार में भी। यदि प्रारम्भिक और अन्तिम भाषा की शैली को अलग कर दें, तो तब भी एक तीहाई भागों में समानता है।

2) 2 थिस्स. का सुर पहली पत्री से अलग है, यह अधिक ठंड़ा और अधिक औपचारिक है। पर यदि हम पहली पत्री के लिखने की भावनात्मक परिस्थिति को और दूसरी पत्री की विकसित समस्या को भी लें तो यह सधारणता से समझा जा सकता है।

घ) पत्रियों का क्रम

1) एक ओर रूचिकर धारणा एफ. ड़ल्यू. मेंसंन द्वारा जोहेनस वेइस के लेखों के प्रयोग से प्रस्तुत की गई है। वे यह दावा करते हैं कि पुस्तकों का क्रम उलटा है। इसके कारण :

क) 2 थिस्स. में ऊँचे स्तर के सताव और परिक्षायें जो 1 थिस्स. में समापत हो चुकि थीं।

ख) 2 थिस्स. में आन्तिरिक समस्याओं को एक नए विकास के समान दिखाया है जिसको लेखक ने अभी ही जाना; पर 1 थिस्स. में वहाँ की परिस्थिति से सभी परिचित थे।

ग) यह कथन कि थिस्सलुनीकियों को समयों और कालों के विषय में लिखे जाने का प्रयोजन नहीं है (1 थिस्स.5:1) बहुत चकित कर देने वाला सुनाई पडता है यदि वे 2 थिस्स.2 से पहले ही परिचित होते;

घ) 1 थिस्स.4:9, 13; 5:1 में शब्दमाला '...के विषय में...' 1 कुरि.7:1, 25; 8:1; 12:1; 16:1, 12 के समान दिखता है जहाँ पर लेखक स्वयं को प्राप्त एक पत्र के सवालों का प्रतिउत्तर दे रहा है। मेंसंन सोचते हैं कि ये प्रतिउत्तर 2 थिस्स. में उठाए गए कुछ प्रश्नों से है।

2) अनेक प्रमाण इन दावों का उत्तर दे सकते हैं।

क) पौलुस के ध्यान को खींचने वाली समस्याएं 1थिस्स. से 2 थिस्स तक और गहरी होती चली गई होंगी।

ख) 2 थिस्स. में यह परिच्छेद पौलुस द्वारा एक पत्र को दिखाता है (2:2, 15; 3:17) और यदि हम इसे 1 थिस्स. की धारणा न दें, तो हमारे पास एक खोए हुए पत्र की समस्या पैदा हो जाती है।

ग) पहली पत्री की अधिक अंश बननेवाली कई व्यक्तिगत स्मृतियाँ दूसरी में नहीं है, यदि यह पत्री पहले से क्रमानुसार लिखी गई हो तो यह स्वभाविक है ।

घ) यदि इनका क्रम उलटा होता तो इस परिस्थिति के लिए पत्रियों के सुर पूरी तरह से भिन्न होते।

3) <u>पत्रियों की तारीख</u>

क) पौलुस की पत्रियों की तारीखों में थिस्सलुनीकियों की पत्रियों की तारीख सबसे निश्चित है। इस बात का लिखित वर्णिन है कि जब पौलुस कुरिन्थुस में था तब वह कैद किया गया और गल्लियो के सामने पेश किया गया जो आखिया का शासक था। डेल्फी में प्राप्त एक षिलालेख में गल्लियो द्वारा सम्राट क्लौदियुस को पुछे गये प्रश्न का उत्तर है। यह सम्राट के न्यायालय अधिकार की बारहवीं साल की तारीख और सम्राट के रूप में उनके शासन का सत्ताईसवें साल के बाद का है। यह बारहवाँ साल 25 जनवरी 52 ई0 से 24 जनवरी 53 ई0 तक था। जबकि छब्बीसवें शासन काल की सालगीराह की तारीख की जानकारी नहीं है, सत्ताईसवें शासन का साल 1 अगस्त 52 ई0 से पहले था। क्लौदियुस का निर्णय गल्लियो को 52 ई0 के आधे से पहले ही प्राप्त हो गया होगा। अब शासक लोग समान्य तौर पर गर्मियों में कार्य भार ले लेते थे और एक साल

तक रहते थे। तो यह प्रतित होता है कि गल्लियो ने अपना कार्य भार 51 ई0 के गर्मियों के आरम्भ किया होगा (मोरिस, पृश्ठ 15)।

ख) शासकों के शासन के समयों की जानकारी थिस्सलुनीकियों की पत्रियों की तारीख की समस्यों को नहीं सुलझाती। पौलुस कुरिन्थुस में 18 महीनें था (प्रेरित.18:11) पर कब वह गल्लियो के सामने पेश हुआ यह नहीं मालूम है। कई टीकाकार 1 और 2 थिस्स. की तारीख 50–51 ई0 बताते हैं।

4) <u>थिस्सलुनीकियों की पत्रियों से सम्बन्धित घटनाएं</u>

क) पौलुस की थिस्सलुनीकियों की पत्रियों को लिखने से सम्बन्धित घटनाएं अधिक जटिल और कठीन हैं। कुछ संदर्भों पर ध्यान दें विषेश कर जो शारीरिक और भावनात्मक संदर्भों से जुड़े हैं। पौलुस को थिस्सलुनीकियों में नए विश्वासयों को छोड़ कर जाना पड़ा क्योंकि यहुदीयों ने नगर के अंधविश्वसियों, बहुधर्मियों को यासोन के घर पर पौलुस और उसके सहकर्मियों की खोज में दंगा–फसाद करने को उकसाया था। हाकिमों की सुनवाई के बाद, यासोन और अन्य मसीहियों से शान्ति के लिए मुचलका लेना पड़ा। जब पौलुस को यह जानकारी मिली तो वह जान गया कि उसे इस जवान और अपरिपक्व कलीसिया को छोड़ना होगा। इसलिए वह तिमुथियुस और सिलास के संग बिरीया गया। तिमुथियुस शायद पहले से ही रूक गया था (प्रेरित. 17:10) फिर सिलास के जुड़ा ताकि वे ऐंथस को जायें (प्रेरित.17:15)। पहले के कठोर यहूदी विरोध के बीच में बिरीया में यहूदियों का पहला स्वागत पौलुस के लिए आशीषमय था। यहूदी थिस्सलुनीके से बिरीया आकर समस्या खड़ी करने लगे। इस कारण पौलुस को फिर वहाँ से भी जाना पड़ा।

ख) इस बार पौलुस ऐथंस में गया जहाँ पर उसे बहुत ठंडा स्वागत प्राप्त हुआ। वहाँ के शैक्षिक विद्वानों का वह नवीन नेता बन गया। मकिदुनिया में उसे सताव और विरोध का अनुभव हुआ। उसे मारा गया, नग्न कर दिया गया, और रात ही को नगर से निकाल दिया गया। विद्वानों ने उसका मज़ाक उड़ाया, और अन्यजाति और उसके कई देशवासी उससे घृणा करने लगे (2कुरि.4:7–11; 6:4–10; 11:23–29)।

ग) पौलुस को थिस्सलुनीके की इस भोरोसेपूर्ण कलीसिया को गंभीर समय में छोड़ना पड़ा। वे विश्वास में अपरिपक्व थे और सताव और विरोध का सामना कर रहे थे। पौलुस इस मानसिक सताव का सामना और नहीं कर पा रहा था। उन जवान विष्वासियों की चिन्ता करते हुए, कहीं बिरीया और ऐथंस के बीच पौलुस तिमुथियुस और सिलास को मकिदुनिया की कलीसियों के पास वापस भेजता है। तिमुथियुस थिस्सलुनीके जाता है। अनेक सोचते हैं कि वह वहाँ पर 6 महीने या एक साल तक सेवा करता है। कलीसिया को अवष्य ही किसी सिखाने वाले, सांत्वना देने वाले और उत्साहित करने वाले की अवश्यकता थी। तिमुथियुस स्वयं एक नया विश्वासी था। वह पौलुस की पहले मिश्नरी यात्रा के दौरान परिवर्तित हुआ था। पर केवल वही पौलुस के पास था क्योंकि पौलुस अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के लिए लुस्त्रा चला गया था। इसलिए वह सेवकाई के लिए नया था। पर पौलुस का उस पर अधिक विश्वास करता था। पौलुस के अधिकारी प्रतिनिधित्व के रूप में यह तिमुथियुस का पहला कार्य था।

घ) पौलुस ऐथंस में अकेले सेवकाई करता है और वह मकिदुनिया में सुसमाचार के प्रति कम प्रतिउत्तर को लेकर और वहाँ के नये मसीहियों के लिए अपनी चिन्ता के कारण बहुत निराश हो जाता था। वह विषेशकर थिस्सलुनीके की कलीसिया को लेकर चिन्तित था। क्या ऐसे कम समय में और कठोर परिस्थिति में एक कलीसिया की स्थापना की जा सकती है और तब भी क्या वह इन सब को सह सकती है? (कारटर, पृश्ठ 115)। इस बारे में 6 महीनों से उसे तिमुथियुस और सिलास से कोई खबर प्राप्त नहीं थी (6 महीनों से एक साल तक, हालांकि कुछ केवल एक या दो महीने कहते हैं)। (फरार, पृश्ठ 369)। इसी भावनात्मक परिस्थिति में हम पौलुस को कुरिन्थुस आते हुए पाते है।

घ) <u>कुरिन्थुस में दो चीज़ें पौलुस को उत्साहित करती हैं</u> :

1) वह दर्शन जिसमें परमेश्वर ने कुरिन्थिुस में कई लोगों को रखा है जो सुसमाचार का प्रतिउत्तर देगें (प्रेरित.18:9–10)।

2) तिमुथियुस और सिलास आते हैं और अच्छी खबर लाते हैं (प्रेरित.18:5)। थिस्सलुनीके से तिमुथियुस का संदेश ही था जिसने पौलुस इस पत्री लिखने लिए उत्साहित किया। पौलुस कलीसिया के सैद्धान्तिक और व्याहारिक मुद्दों के प्रष्नों का उत्तर दे रहा था।

ड़) 2 थिस्सलुनीकियों का लिखना 1 थिस्सलुनीकियों के लिखे जाने के काफी समय के बाद नहीं था क्योंकि यह पत्र वह नहीं कर सका जो पौलुस चाहता था। और उसे अन्य समस्याओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त होने लगी। अनेक विद्वान विश्वास करते हैं कि 2 थिस्सलुनीकियों को 1 थिस्सलुनीकियों के 6 महीनों बाद लिखा गया।

5) पत्रियों का उद्देश्य

क) थिस्सलुनीकियों की पत्रियों के तीन उद्देश्य हैं :

1) सताव के मध्य में भी थिस्सलुनीकियों की कलीसिया की विश्वायोग्यता और मसीही समानता के लिए पौलुस का आनन्द और परमेश्वर को धन्यवाद देना।

2) उसके विरूध उठाये गये सवालों, उसके उद्दश्यों और चरित्र की आलोचना का प्रतिउत्तर देना।

3) प्रभु के पुनः आगमन की चर्चा करना। पौलुस के प्रचार के इन अन्तिम दिनों की बातों ने थिस्सलुनीके के मसीहियों के मन में दो प्रष्नों खड़े कर दिए :

क) प्रभु के आगमन से पहले मरे हुए विष्वासियों का क्या होगा?

ख) सभा में उन विष्वासियों का क्या होगा जिन्होंने काम करना बन्द कर दिया था और जो प्रभु के पुनः आगमन के इंतजार में बैठे थे (बार्क्ले, पृश्ठ 21–22)।

ख) अभी बताई गई कई बातों को इस तत्य से समझाया जा सकता है कि यह एक जवान और जलन रखने वाली कलीसिया थी। पर इन परिस्थितियों के कारण, वे सिद्ध तौर पर प्रशिक्षित और अनुशासित नहीं हो सके। यह समस्यायें इस स्वाभाव की एक कलीसिया से अपेक्षित बातों को दिखाते हैंः नये विश्वासी, कमज़ोर, कमज़ोर हृदय वाले, व्यर्थ बैठे हुए, दर्शन रखने वाले, और उलझन में रहने वाले।

ग) 2 थिस्सलुनीकियों की परिस्थिति यह थी कि, 'यह उसी बिमारी की दूसरी दवा है, इस बात को ध्यान रखते हुए कि पहली दवा के कुछ कठोर लक्षण अभी भी नहीं गए है' (वाकर, पृश्ठ 2968)।

6) इसमें प्रयोग की गई पुस्तकों की सूची :

बारक्ले, विलियम. द लैटर्स एण्ड द रेवलेषन. द न्यू टेस्टामेन्ट. 2 वॉलयूम. न्यू यॉर्कः कॉलिन्स, 1969.

कार्सटर थॉमस. लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ पॉल. नाषवीलेः कोक्सबरी प्रैस, 1921.

फारार, डीन. द लाइफ एण्ड वर्क ऑफ सेन्ट पॉल. न्यू यॉर्कः कैस्सल एण्ड कम्पनी लीमीटेड, 1904.

हर्ड, रीचर्ड. एन इन्ट्रोडक्सन टू द न्यू टेस्टामेन्ट. न्यू यॉर्कः हार्पर एण्ड रॉ पबलिसर्स, 1950.

मेटज़गर, ब्रूस मेंनींग. द न्यू टेस्टामेन्टः इट्स बैकग्राउण्ड, ग्रोथ, एण्ड कन्टेन्ट. नाषवीलेः एबीगंडोन प्रैस, 1965.

मानसन, टी. डवल्यू. स्टडीस् इन द गॉसपल एण्ड एपीस्टलस्. फिलेदलफीयाः वैस्टमीनीस्टर, 1962.

मॉरीस, लीओन. द फस्ट एण्ड द सेकेण्ड एपीस्टलस् टू द थेसलोनियन्स. ग्रेण्ड रैपीड्सः एर्डमनस्, 1991.

रामसे, डवल्यू. एम. सेन्ट पॉल द ट्रैवलर एण्ड रोमन सीटीज़न. न्यू यॉर्कः जी. पी. पटनमस् सन्स्, 1896.

सैपर्ड, जे. डवल्यू. द लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ पॉल. ग्रेण्ड रैपीड्सः डवल्यूएम. बी. एर्मनस पबलीषीगं कम्पनी, 1950.

वॉकर, आर. एच. द इन्टरनेष्नल स्टेण्र्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया. वॉलयूम 5. नो डेट.

7) विषयों की रूपरेखा

क) नमस्कार, 1:1

ख) धन्यवाद की प्रर्थाना, 1:2–4

ग) स्मृतियाँ, 1:5–2:16

1) मूल प्रचार के प्रति थिस्सलुनीकियों का प्रतिउत्तर, 1:5–10

2) थिस्सलुनीके में सुसमाचार का प्रचार, 2:1–16

क) दल के उद्देश्यों की शुद्धता, 2:1–6[अ]

ख) दल के अनुशासन का इनकार, 2:6[ब]–9

ग) दल का व्यवहार योग्य नहीं, 2:10–12

घ) दल का परमेश्वर के वचन का संदेश, 2:13

ङ) सताव, 2:14–16

घ) पौलुस का थिस्सलुनीकियों से सम्बन्ध, 2:17–3:13

1) वापस आने की उसकी इच्छा, 2:17, 18

2) थिस्सलुनीकियों में पौलुस का आनन्द, 2:19, 20

3) तिमुथियुस का मिशन, 3:1–5

4) तिमुथियुस से प्राप्त खबर, 3:6–8

5) पौलुस की संतुष्टि, 3:9,10

6) पौलुस की प्रर्थाना, 3:11–13

ङ) मसीही जीवन के लिए निर्देश, 4:1–12

1) साधारण, 4:1,2

2) सहवास में शुद्धता, 4:3–8

3) भाइचारे का प्रेम, 4:9, 10

4) अपने जीने के लिए कमाना, 4:11, 12

च) दूसरे आगमन से सम्बन्धित समस्यायें, 4:13–5:11

1) दूसरे आगमन से पहले मरे हुए विश्वासी, 4:13–18

2) दूसरे आगमन का समय, 5:1–3

3) दिन की सन्तान, 5:4–11

छ) समान्य निर्देश, 5:12–22

द) अन्तिम वचन, 5:23–28

सूचनाः यह पुस्तक पौलुस की अन्य पत्रियों के समान साफ तौर पर सैद्धान्तिक और व्यावहारिक अंशों में नहीं बँटती हैं। यदि साधारण रूपरेखा का अनुकरण करें तो पौलुस की 4:17–18 में दूसरे आगमन की चर्चा व्यवाहारिक है, सैद्धान्तिक नहीं। दूसरा आगमन निश्चित करने के लिए ही सिद्धान्त नहीं है, पर उसके किसी भी क्षण आने की तैयारी में जीवन को जीना है।

8) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) तुम हमारी सी चाल चलो, 1:6

2) जीवते और सच्चे परमेश्वर, 1:9

3) आने वाला प्रकोप, 1:10

4) जिस तरह माता अपने बालकों का पालन पोषण करती है, 2:7

5) सब मनुष्यों का विरोध, 2:15

6) शैतान हमें रोके रहा है, 2:18

7) तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें, 3:10

8) पवित्र बनो, 4:3

9) सोते हैं, 4:13

10) सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे, 4:15

11) परमेश्वर की तुरही, 4:16

12) बादलों, 4:17

13) हम सदा प्रभु के साथ रहेगें, 4:17

14) सोते न रहो, 5:6, 7

15) सावधान रहें, 5:8

16) विश्वास और प्रेम की झिलम, 5:8

17) उद्धार की आशा का टोप, 5:8

18) पवित्र चुम्बन, 5:16

19) धीरज, 2 थिस्स. 1:4

20) अनन्त विनाश, 1:9

21) धर्म का त्याग, 2 थिस्स.2:3

22) प्रभु यीशु अपनी मुहँ की फूकँ से मार डलेगा, 2 थिस्स.2:8

9) <u>संक्षिप्त पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) सिलवानुस, 2 थिस्स.1:1

2) प्रधान दूत, 1 थिस्स.4:16

3) जब लोग कहते होगें, 1 थिस्स.5:3

4) पाप का पुरूष, 2 थिस्स.2:3

5) एक रोकनेवाला, 2 थिस्स.2:7

6) अनुचित चाल चलता है, 2 थिस्स.3:6

10) <u>मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान</u>

1) थिस्सलुनीके, 1:1

2) मकिदुनिया, 1:8

3) अखया, 1:8

4) फिलिप्पी, 2:2

5) यहूदिया, 2:14

6) ऐथंस, 3:1

11) <u>चर्चा के प्रष्न</u>

1) 2:3 और 5 में पौलुस अपने प्रचार का पाँच तरीकों में वर्णन करता है वह क्या हैं?

2) पौलुस अपने प्रचार की गई कलीसियों में से आर्थिक सहायता क्यों नहीं लेता? (2:9)

3) 4:11 किस प्रकार पौलुस के इस पत्र के लिखने के ऐतिहासिक संदर्भ से जुड़ा है? (2 थिस्स.3:6–12 भी)

4) 4:17 उठा लिये जाने से कैसे सम्बन्धित है?

5) 5:1 किसको दिखा रहा है?

6) पौलुस एक विश्वासी को एक सैनिक के समान क्यों कहता है? (5:18)

7) 5:12–13 कैसे आज के सेवकों से सम्बन्धित है?

8) 5:14–22 में विश्वासियों को करने को कही गई चीज़ों का वर्णन करें।

9) 5:23 के आधारित पर क्या मनुष्य जाति तीन आन्तरिक भाग हैं?

10) 2 थिस्स.1 का केन्द्रिय विषय क्या है? और 1 थिस्स.1 के विषय से कैसे भिन्न है?

11) क्या 2 थिस्स.2:4 यहूदी मन्दिर के पुनः निमार्ण की मांग करता है?

12) 2 थिस्स.2:11 मानव स्वेच्छा और जिम्मेदारी से कैसे सम्बन्धित है?

13) 2 थिस्स.2:13–15 पहले से ही ठहराये जाने को और स्वेच्छा को कैसे संतुलित करता है?

पासवानी पत्रियों का परिचय (1 और 2 तीमुथियुस और तितुस)

1) प्राक्कथन

क) 1 तीमुथियुस, तितुस और 2 तीमुथियुस में भौगोलिक स्थानों का वर्णन प्रेरितों या पौलुस की पत्रियों की समय विद्या में नहीं आता है।

1) इफिसुस की यात्रा (1 तीमु.1:3)

2) त्रोआस की यात्रा (2 तीमु. 4:13)

3) मीलेतुस की यात्रा (2 तीमु. 4:20)

4) क्रेते का मिशन (तितु. 1:5)

5) स्पेन का मिशन (रोम के क्लेमेंट से, 95 ई0, और मुर्रोटोरियों की अधिकारी प्राप्त पुस्तुकों की सूची से, 180–200 ई0)

इसलिए मैं यह सोचता हुँ कि पौलुस कैद से छोड़ दिया गया था (प्रारम्भिक से मध्य 60 ई0, जो 1क्लेमेंट 5 में वर्णित है 95 ई0 के निकट लिखा गया था) और चौथी मिशनरी यात्रा पर गया और फिर कैद कर लिया गया और 68 ई0 (निरो की मृत्यु) से पहले मार डला गया।

ख) इन पत्रियों का उद्देश्य समान्य तौर पर शासनिक (कलीसिया की संस्था) समझा जाता था, परन्तु 1 और 2 तिमुथियुस, तितुस की अपनी टीका, द न्यू इन्टेरनेषनल बाइबल कॉमेन्ट्री में गॉडन फी ने मुझे निश्चित किया है कि इस पत्री का संदर्भ इफिसियों की कलीसिया में और क्रेते के द्विप में झूठे शिक्षकों का आना था।

ग) कुछ तरीके से पासवानी पत्रियाँ इसीनों के समान मेन्यूल ऑफ डीसीप्लीन, एक शासकीय ढ़ाँचे के निमार्ण को दिखाता है। इस प्रकार की वस्तुओं की अवश्यकता प्रारम्भिक और धोखा देने वाले प्रचारकों की शिक्षाओं और प्रकार से बचाव के लिए थी।

ङ) यह संभव है कि लूका और प्रेरितों में लूका के शब्दकोश और पौलुस की पत्रियों के बीच की समानतायें इसलिए हैं क्योंकि पौलुस ने उसका प्रयोग एक शास्त्री के रूप में किया था (देखें, सी. एफ. सी. मूल की द प्रोबलम ऑफ द पास्ट्रल एपीस्टलस्: ए रिप्राइसल) । इसका दावा एस. जी. विलसन भी लूक एण्ड द पास्ट्रल एपीस्टलस् में करतें हैं कि यह तीनों पुस्तकें लूका द्वारा एक और तीसरा कार्य लिखने की कोशिष है ताकि रोम के बाहर सुसमाचार के विकास को दिखा सके।

च) क्यों इन पुस्तकों को एक साथ रखा गया है? यह संभव है कि वे अलग–अलग समयों, स्थानों, और मुद्दों को दिखातें है। वास्तव में केवल 1तिमुथियुस और तितुस ही कलीसिया संस्था से सम्बन्धित है। यह वास्तव में 1) उनका शब्दकोश, 2) झूठे शिक्षक जो इस पुस्तक को कम ठहराते हैं; और 3) यह तथ्य की वे प्रेरितों की समय विद्या में नहीं आतें है (यदि एक साथ लिया जाएं तो)।

2) लेखक

क) यह पत्रियाँ स्वयं् पौलुस प्रेरित से अपने दो प्रेरितीय प्रतिनिधियों तिमुथियुस और तितुस के लिए होने का दावा करती हैं।

ख) पौलुस के लेखक होने के मुद्दे पर संदेह 19वीं और 20वीं षताब्दियों में शुरू हुआ था।

पौलुस के लेखक होने का इनकार करना इन बातों पर आधारित है :

1) एक विकसित कलीसिया संस्था (अगुवा होने के गुण)।

2) एक विकसित ज्ञानवाद (दूसरी षताब्दी के दस्तावेज़ में)

3) एक विकसित धर्मविज्ञान (सैद्धान्तिक वाक्य) शब्दकोश और शैली में भिन्नता (इसके एक तीहाई शब्द पौलुस के अन्य लेखों में नहीं पाये जाते)।

ग) इन भिन्नताओं को इनसे समझाया जा सकता है :

1) यह तत्य की सम्भवतः लूका का एक शास्त्री के रूप में प्रयोग करते हुए यह पौलुस का अन्तिम लेख है।

2) शब्दकोश और शैली परिस्थितियों पर निर्भर हैं।

3) ज्ञानवादी विचार पहले षताब्दी की यहूदी विचारों का एक विकसित रूप है (मृत सागर कुण्डल पत्र)।

4) पौलुस अधिक शब्दकोशों के साथ एक बुद्धिमान धर्मविज्ञानी और रचनात्मक लेखक था।

घ) इस प्रकार की एक ऐतिहासिक दोहराई हुई घटना को लेकर विकसित समझ है।

1) एक पेशे से मसीही शास्त्री का पौलुस द्वारा प्रयोग (यहाँ पर लूका)

2) एक सह–लेखक का पौलुस द्वारा प्रयोग (अथार्थ उसके मिशन दल का साथी, 1तीमु.1:5)

3) साहित्यिक या भजनों के वर्णनों का पौलुस द्वारा प्रयोग, अपने लेखों को भी शामिल करते हुए। (इसका अच्छा संक्षिप्तरूप डीक्सनरी ऑफ पॉल एण्ड हीस लैटर्स, एडीटीड़ बाय हाऊथ्रोन एण्ड मार्टीन, पबलिषड़ बाय आइ वी पी, पृश्ठ 664 में प्राप्त हो सकता है।

ऐसी धारणायें कि पौलुस ने कुछ अन्य स्त्रोतों का भी प्रयोग किया यह हेपेक्स लेगोमिना की संख्या (नये नियम में केवल एक बार प्रयोग किये गये शब्द), अपौलिन मुहावरों, और विशेश पौलुस द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों को भी स्पष्ट करता है। कुछ धारणायें इस प्रकार हैं :

क) अन्तिम वचन (1 तीमु.1:17; 6:15–17)

ख) दुर्गुणों की सूची (1 तीमु.1:9–10)

ग) पत्नियों का सही व्यवहार (1तीमु.2:9–3:1[अ])

घ) सेवकों के विशेश गुण (1तीमु.3:1[ब]–13)

ड़) भजनों का अंगीकार (1 तीमु.2:5–6; 3:16; 2 तीमु.1:9–10; तितु.3:3–7)

4) भजन (1तीमु.6:11–12, 15–16; 2 तीमु.2:11–13; तितुस.2:11–14)

क) पुराने नियम के मिद्रास (1 तीमु.1:9–10; 2:9–3:1[अ]; 5:17–18; 2 तीमु.2:11–13; तितुस.3:3–8)

ख) सूत्र

1) 'यह बात सच है' (1 तीमु.1:15; 2:9–3:1[अ]; 2 तीमु.2:11–13; तितुस.3:3–8)

2) 'यह जानकर' (1तीमु.1:9–10; 2तीमु.3:1–5)

3) 'इन बातों की' (1तीमु.4:6,11; 2तीमु.2:14; तितुस 1:15–16; 2:1)

5) एक यूनानी कवि से उद्घृति (तितुस 1:12; एपिमेनिदुस या युरिपिडस)

ङ) यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि एक काल्पनिक दूसरी षताब्दी का 'पौलुसवादी' बिलकुल सही बातों का वर्णन करे जैसे लोगों के नाम (अथार्थः हुमिनयुस, 1 तीमु.1:20; 2 तीमु.2:17; सिकंदर, 1 तीमु.1:20; जेनास, तितुस 3:13) और घटनाएं (मीलेतुस का त्रुफिमुस में बिमार होना, 2 तीमु.4:20; विधवाओं के काम, 1तीमु.5:9) जो अन्य पौलुस के लेखों में कहीं भी वर्णित नहीं है। तो यह बातें एक झूठे लेखक को कैसे दिखा सकती हैं?

नये नियम से सम्बन्धित झूठे नामों के लिए देखें कारसन, मू, और मोरिस के द्वारा, एन इट्रोडक्सन टू द न्यू टेस्टामेन्ट, पृश्ठ 367–371.

3) <u>तारीख</u>

क) यदि यह सत्य है कि पौलुस कैद से रिहा कर दिया गया था (प्रेरितों के पुस्तक के अन्त के बाद, सम्भवतः 59–61 ई0 के निकट), तो उसके कैद के बाद की कार्यों की कोई परम्परा है (अथार्थ : स्पेन में प्रचार का, रोम.15:24, 28)।

1) पासवानी पत्रियाँ (2 तिमु.4:10)

2) 1 क्लेमेंट 5

क) पौलुस ने पूर्व और पश्चिम में प्रचार किया (अथार्थ : स्पेन)

ख) वह हाकिमों के द्वारा मारा गया (अथार्थ : तिगेलिनुस और सबिनुस, जो निरो के शासन के अन्तिम साल में कार्यरत थे, 68 ई0)।

3) मुर्रौटौरियों लेखों का परिचय (रोम से अधिकार प्राप्त पुस्तकें 180–200 ई0 के निकट)

4) युसेबियस की हीसटोरीकल एक्लेसीआसटीसीज़म 2:22:1–8 में, कि पौलुस रोमी कैद से रिहा कर दिया गया था।

ख) ऐसा दिखता है कि 1 तिमुथियुस और तितुस पौलुस के पुनः कैद के कुछ समय पहले ही लिखे गये थे। 2 तिमुथियुस पौलुस का अन्तिम लेख और कैद में अलविदा है।

4) <u>स्त्रोतागण</u>

क) पासवानी पत्रियाँ नाम ड़ी. एन. बेरडोटस् की 1703 ई0 की टीका से आता है, उनके अद्भुत चरित्र और विषयों के कारण, पर तिमुथियुस और तितुस एक पासवान की पत्रियाँ नहीं है, परन्तु प्रेरितिय प्रतिनिधित्व हैं।

ख) इन पत्रियों को कलीसियाओं को लिखा गया था, पर पौलुस के सहकर्मियों, तिमुथियुस और तितुस को पत्रियों के साहित्यिक प्रकार में। पौलुस सभा को ऐसे संभोधित करता है जैसे वह अपने अगुवों के दल को संभोधित कर रहा हो। पौलुस के अनेक स्त्रोतागण होने का प्रमाण :

1) औपचारिक परिचय अपने प्रेरितपन का वर्णन करते हुए।

2) तीनों पत्रियों की अन्त में बहुवचन 'तुम' का प्रयोग।

3) अपनी बुलाहट के प्रति पौलुस का बचाव (1 तिमु.2:7)

4) तिमुथियुस को पौलुस का उन बातों को लिखना जो उसे पौलुस के साथ रहने के द्वारा पहले से ही मालूम होंगी। (1 तिमु.3:15)

5) <u>परिस्थिति/उद्देश्य</u>

क) पुराना नियम विश्वास के समुदाय के संगठन के लिए विषेश निर्देश देता है। नया नियम एक संगठन या कलीसिया के कार्य के प्रति कोई विषेश निर्देश नहीं देता है। पासवानी पत्रियाँ (1 तिमुथियुस, 2 तिमुथियुस और तितुस) इन निर्देशों के निकट हैं।

ख) कलीसिया के साधारण संगठन के साथ ही दूसरा कारण था वहाँ पर विकसित होने वाली झूठी शिक्षाओं का विरोध करना (1 तिमु.1:3)। यह विषेश झूठी शिक्षा यहुदी और ज्ञानवाद विचारों का मेल हो सकता है (इफि. और कुलु. के समान)। सम्भवतः वहाँ पर दो भिन्न समुह थे।

ग) 1 तीमुथियुस को लिखा गया :

1) तीमुथियुस से इफिसुस में ही रहने की विनती करना (1 तिमु.1:3)

2) झूठे शिक्षकों का विरोध करना

3) अगुवाईपन का संगठन करना (1तिमु.3)

घ) तितुस का भी क्रेटे में ऐसे ही झूठे शिक्षाओं का विरोध करने का ऐसा ही कार्य था।

ङ) 2 तिमुथियुस – पौलुस को कैद से रिहा होने की कम आशा थी (4:6–8; 16–18)

च) इन पत्रियों में अच्छी शिक्षाओं का एहसास है (अथार्थ : सही सिद्धान्त; 1 तिमु.1:10; 4:6; 6:3; 2तिमु.1:13; 4:3; तितुस 1:9; 2:1) या 'विश्वास में सिद्ध होना' (तितुस 1:13; 2:2)। परमेश्वर ने इन अच्छी शिक्षाओं को पौलुस को सौंपा था (1 तिमु. 1:11); पौलुस ने इसे तिमुथियुस को सौंपा था (1 तिमु.6:20) तिमुथियुस को इसे विश्वासयोग्य व्यक्तियों को सौंपना था (2 तिमु. 2:2)।

यह कलीसिया में बहुवाद और विनाश करने वाली झूठी शिक्षाओं के प्रारम्भिक विकास को भी दिखाता है।

6) <u>झूठे शिक्षक</u>

क) पहली षताब्दी की सही जानकारी न होने के कारण झूठे शिक्षकों की चर्चा करना कठिन है। पौलुस उन लोगों को लिख रहा है जो इन्हें सही से जानते थे। इसलिए वह पूरे तौर पर उनके धर्मविज्ञान को नहीं बताता है परन्तु उनकी जीवन शैली और उद्देश्यों का खण्ड़न करता है (जैसे यहूदा करता है)

ख) मुख्य व्याक्यों का मुद्दा इससे सम्बन्धित है कि क्या वे :

1) यहूदी थे

2) यूनानी थे

3) दोनों

ग) झूठे शिक्षक यहूदी और युनानी तत्वों का मिलन दिखते हैं। पर ये दो भिन्न धर्मीक मत कैसे मिल गये।

1) यहूदी मत हमेशा कुछ द्वि तत्वों को संमलित करती है (देखें, मृत सागर कुण्डल पत्र)

2) केवल दूसरी षताब्दी का ज्ञानवाद ही इन निकट पूर्वी तत्वज्ञान और घर्मविज्ञान को विकसित करता था।

3) तितर–बितर हुए लोगों का यहूदी मत अधुनिक विद्वानों के पहले कल्पना से अधिक पुरोहित थे।

4) कुलुस्सियों की पुस्तक में पहली षताब्दी का यहूदी–ज्ञानवादी झूठी शिक्षा इससे पहले का उदाहरण है।

घ) पौलुस के बताये गए कुछ तत्व ये हैं :

1) यहूदी तत्व

क) झूठी शिक्षा

1) व्यावस्था के शिक्षक (1 तिमु.1:7)

2) खतना वाले (तितुस 1:10)

ख) झूठे शिक्षकों ने यहूदी कल्पित कथा के प्रति चेतावनी दी थी (1 तिमु.3:9; तितुस 1:14)।

ग) झूठे शिक्षक भोजन की व्यवस्था के प्रति चिन्तित थे (1 तिमु.4:1–5)

घ) झूठे शिक्षक वंशावली को लेकर चिन्तित थे (1तिमु.1:4; 4:7; 2तिमु. 4:4; तितुस 1:14–15; 3:9)।

2) ज्ञानवादी तत्व :

क) अविवाहित

1) विवाह से दूर रहना (1 तिमु.2:15; 4:3)

2) कुछ प्रकार के भोजन से दूर रहना (1 तिमु.4:4)

ख) लेंगिक शोशण (1 तिमु.4:3; 2 तिमु.3:6–7; तितुस 1:10,15)

ग) ज्ञान को महत्व देना (1 तिमु.4:1–3; 6:20)

7) <u>नियमीकरण</u>

क) पौलुस की पत्रियों को एक लेखन कार्य में सम्मिलित कर रखा था जिसे 'वह प्रेरित' कहा गया था और फिर सारी कलीसियों मे बाँटी गई थी। केवल एक ही युनानी हस्थलिपि में 1 और 2 तिमुथयुस और तितुस (2 थिस्सलुनीकियों और फिलेमोन भी) नहीं हैं वो 200 ई0 से हैं जिसे 'पी[46]' कहा गया है (छेसटेर बियाटी पेपाइरी से)। पर यह भी अनुमान लगाना है क्योंकि इस हस्थलिपि में अनेक अन्तिम पन्ने को खोए हुए हैं। अन्य सभी युनानी हस्थलिपियों में पासवानी पत्रियाँ पाई जाती हैं।

ख) यहाँ पर पासवानी पत्रियों का वर्णन करते हए कुछ प्राचीन स्त्रोतों की सूची है।

1) प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे

क) काल्पनिक बरनबास (70– 130 ई0), 2 तिमुथियुस और तितुस

ख) रोम के क्लेमेंट (95–97 ई0) 1 और 2 तिमुथियुस का संकेत करते हैं, और तितुस 3:1 का भी वर्णन करते हैं।

ग) पॉलीकार्प (110–150 ई0), 1 और 2 तिमुथियुस और तितुस का संकेत करते हैं।

घ) हरमस (115– 140 ई0), 1 और 2 तिमुथियुस

ङ) इरेनियुस (130–202 ई0), 1 और 2 तिमुथियुस और तितुस का वर्णन करते हैं।

च) डयोग्निटस (150 ई0) तितुस

छ) तरतुल्यन (150–220 ई0), 1 और 2 तिमुथियुस और तितुस

द) ऑरिगन (185– 254 ई0), 1 और 2 तिमुथियुस और तितुस

2) पासवानी पत्रियों को सम्मिलित करती अधिकार प्राप्त पुस्तकें

क) मुर्रौटोंरियों का लेख (रोम सें करीब 200 ई0)

ख) बोरोकोकियो (206 ई0)

ग) प्रेरितों की सूची (300 ई0)

घ) छेलतेंहाम की सूची (360 ई0)

ङ) अथनेसियस की पत्री (367 ई0)

3) <u>प्रतिलिपियाँ जो पासवानी पत्रियों को सम्मिलित करती हैं।</u>

क) पुरानी लातीनी (150–170ई0)

ख) पुरानी सिरियाई (200 ई0)

ग) प्रारम्भिक कलीसिया की सभायें जो पासवानी पत्रियों के प्रेरित होने का दावा करती हैं।

घ) निसिया (325––340 ई0)

ङ) हिप्पो (393 ई0)

च) कार्थेजेड़ (397 और 419 ई0)

ग) रोमी सम्राज्य के प्रारम्भिक मसीहियों के बीच एक सहमती की प्रकिया थी जो एक केनन में विकसित हो गई। यह सहमती बाहरी और आन्तरिक समाजिक तनावों के कारण प्रभावित हुई। केनन में सम्मिलित होने के लिए कुछ आवश्यकतायें थीं :

1) एक प्रेरित से सम्बन्धित

2) एक संदेश जो दूसरे प्रेरितिय लेखों से सहमत हो।

3) इन लेखों को पढ़े हुए लोगों का परिवर्तित जीवन।

4) प्रारम्भिक कलीसियाओं के बीच की ग्रहण की गई लेखों की सूची में एक बढ़ती सहमती।

घ) केनन की आवश्यकता इसलिए पड़ी :

1) विलम्बित दूसरा आगमन

2) कलीसियाओं और प्रेरितों के बीच भौगोलिक दूरी

3) प्रेरितों की मृत्यु

4) झूठे शिक्षकों का उठना

क) यहूदी मत से

ख) युनानी तत्वज्ञान से

ग) अन्य ग्रीको–रोमी रहस्यमय धर्मों से

सुसमाचार के विभिन्न संस्कृतियों में पहुँचने के कारण ऐसा हुआ ।

ङ) केननीकरण का मुद्दा ऐतिहासिक तौर पर लेखक से सम्बन्धित था। पासवानी पत्रियों को प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा पौलुस के लेखों के रूप में ग्रहण किया गया था। मेरी स्वयं की केनन के प्रति पूर्व धारणा आत्मा का शामिल होना है, न केवल शास्त्रों के लेखन में, पर उनके एकत्रित करने में और संरक्षण में भी। पौलुस के लेखक होने का प्रष्न (जो मैं कल्पना करता हुँ) प्रेरित होने में और केननीकरण को प्रभावित नहीं करता।

8) <u>1 तीमुथियुस – संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u>

1) विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, 1:2

2) निन्दा करने वाला, 1:13

3) आमीन, 1:17

4) बिचवई, 2:5

5) छुटकारे के दाम में दे दिया, 2:6

6) पवित्र हाथों को उठा कर, 2:8

7) निर्दोष, 3:2

8) पियक्कड़, 3:8

9) विश्वास के भेद, 3:9

10) दुष्टात्मा की शिक्षाओं, 4:1

11) विवेक जलते हुए लोहे से दागा गया हो, 4:2

12) बूढियों की कहानियों से, 4:7

13) हाथ रखते समय, 4:14; 5:22

14) प्राचीनों, 4:14

15) उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं, आदर कर, 5:3

16) पहले विश्वास, 5:12

17) दो गुने आदर के योग्य हैं, 5:17

18) सन्तोष, 6:6

19) अगम्य ज्योति, 6:16

9) 1 तीमुथियुस – संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) पिता, 1:2

2) व्यवस्थापक, 1:7

3) सनातन राजा, 1:17

4) हुमिनयुस और सिकंदर, 1:20

5) अध्यक्षक, 3:2

6) सेवकों,3:8

7) स्त्रियों, 3:11

8) प्राचीन, 5:17

9) पुन्तियुस पिलातुस, 6:13

10) 1 तीमुथियुस – मानचित्र पर ध्यान देनेवाले स्थान

1) मकिदुनिया, 1:3

2) इफिसुस, 1:3

11) 1 तीमुथियुस – चर्चा के प्रष्न

1) 1:3–4 में वर्णित झूठे शिक्षकों को अपने शब्दों में बतायें।

2) क्या 1:9–11 दस आज्ञाओं को प्रतिबिम्बित करता है? यदि हाँ तो क्या भिन्नातायें हैं?

3) पौलुस पापियों में से अपने आप को सबसे बड़ा क्यों मानता था? (1:15)

4) 1:18 तीमुथियुस के जीवन की कौन सी घटना की ओर संकेत करता है?

5) पौलुस ने किसी को शैतान के हाथों में सौंप दिया है, का क्या अर्थ है? (1:20)

6) 2:4 क्यों एक महत्वपूर्ण वचन है?

7) 2:9 को पहली षताब्दी की संस्कृति के प्रकाश में समझाएं।

8) 2:12 आज के समय में कैसे लागू हो सकता है?

9) 2:15 को अपने शब्दों में समझाएं।

10) एक अध्यक्ष की विषेशताएं बताएं। (3:1–7)

11) 3:16 एक प्राचीन भजन की उद्घृति क्यों माना जाता है?

12) झूठे शिक्षक विवाह को क्यों रोकते थे। (4:3)

13) 4:4 रोमी.14 से कैसे सम्बन्धित है?

14) 4:10 को अपने शब्दों में समझाएं।

15) 4:14 कौन सी घटना की ओर संकेत कर रहा है?

16) 5:19 कैसे पुराने नियम को प्रतिबिम्बित करता है?

17) 5:23 कौन सी सांस्कृतिक समस्या की ओर संकेत कर रहा है?

18) 6:10 को अपने शब्दों में समझाएं।

19) 6:15 में यीशु के लिए षीर्शक कहाँ से आया है?

12) <u>2 तीमुथियुस – संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u>

1) परमेश्वर के उस वरदान को प्रज्वलित कर दे, 1:6

2) धरोहर की रखवाली कर, 1:14

3) सड़े घाव, 2:17

4) यह छाप, 2:19

5) बरतन, 2:20

6) स्वामी, 2:21

7) समय और असमय, 4:2

8) कथा–कहानियाँ, 4:4

9) पुस्तकें...चर्मपत्रों, 4:13

10) सिंह के मुँह, 4:17

13) <u>2 तीमुथियुस – संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) अपने बापदादों, 1:3

2) लोइस, 1:5

3) यूनीके, 1:5

4) उनेसिफुरुस, 1:16

5) हुमिनयुस, 2:17

6) फिलेतुस, 2:17

7) यन्नेस और यम्ब्रस, 3:8, 9

8) सुसमाचार प्रचारक, 4:5

9) देमास, 4:10

10) लूका, 4:11

11) मरकुस, 4:11

12) तुखिकुस, 4:12

13) सिकंदर, 4:14

14) <u>2 तीमुथियुस – मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान</u>

1) आसिया, 1:15

2) रोम, 1:17

3) इफिसुस, 1:18; 4:12

4) अन्ताकिया, 3:11

5) इकुनियुम, 3:11

6) लुस्त्रा, 3:11

7) थिस्सलुनीके, 4:10

8) गलातिया,4:10

9)दलमतिया,4:10

10) त्रोआस, 4:13

11) कुरिन्थुस, 4:20

12) मीलेतुस, 4:20

15) <u>2 तीमुथियुस – चर्चा के प्रष्न</u>

1) पौलुस कहाँ कैद था?

2) 1:12 को अपने शब्दों में समझाएं।

3) 1:9 तितुस 3:5[अ] के समान कैसे है?

4) उनेसिफुरुस ने पौलुस के लिए कैद में क्या किया? (1:16–18)

5) 2 तीमु.2:2 एक मुख्य प्रष्न है, क्यों?

6) 2:11 एक प्रचीन भजन की उद्घृति क्यों समझा जाता है?

7) 2:15 किस की ओर संकेत कर रहा है?

8) क्या 2:25 बताता है कि परमेश्वर पापों कि क्षमा देता है? यदि हाँ तो इसका क्या महत्व है?

9) विश्वासियों को विरोधियों की सहायता कैसे करनी चाहिए सूची दें। (2:24–25)

10) 3:6–7 कौन और किस बात की चर्चा कर रहा है?

11) 3:16 एक महत्वपूर्ण प्रष्न क्यों है?

12) पौलुस त्रुफिमुस को चंगा क्यों नहीं कर पा रहा था?

तितुस का परिचय

1) संक्षिप्त पृष्टभूमि

क) तितुस पौलुस की पत्रियों के अंश का एक भाग है जिसे 'पासवानी पत्रियाँ' कहते हैं। यह इसलिए है क्योंकि 1 तिमुथियुस, तितुस और 2 तिमुथियुस पौलुस के अपने सहकर्मियों को दिए गए उपदेशों से सम्बन्धित है; 1) किस प्रकार झूठे शिक्षकों से पेश आयें, 2) स्थानिय कलीसियाओं में किस प्रकार अगुवाईपन को स्थापित करें, 3) किस प्रकार भय भक्ति को बढ़ायें। इन पुस्तकों का एक काल्पनिक समयानुसार क्रम यह हो सकता है; 1 तिमुथियुस और/या तितुस बाद में 2 तिमुथियुस। तितुस 1 तिमुथियुस के समान के विषयों की चर्चा करता है। तितुस पहले लिखा गया हो सकता है क्योंकि इसका परिचय रोमियों के समान बड़ा और धर्मवैज्ञानिकीय है।

ख) पौलुस और इन सहकर्मियों की भौगोलिक गतिविधि प्रेरितों में पौलुस की गतिविधि से मेल नहीं खाती। इसलिए कई ऐसा विचार करते हैं कि यह प्रमाण है कि पौलुस कैद से छुट गया था और उसने चौथी मिशनरी यात्रा की होगी।

ग) इस चौथी मिशनरी यात्रा की तारीख कुछ 60 से 68 ई0 के बीच होगी क्योंकि पौलुस निरो के शासन में मार डाला गया था और निरो 68 ई0 में मर गया था।

2) तितुस, व्यक्ति

क) तितुस पौलुस के सबसे विश्वासयोग्य सहकर्मियों में से एक था। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि पौलुस ने उसे कुरिन्थुस और क्रेते जैसे समस्या ग्रसित क्षेत्र भेजा।

ख) वह पूर्ण तौर से अन्यजाति था (तिमुथियुस केवल आधा यूनानी था), जो पौलुस के प्रचार के द्वारा परिवर्तित हुआ। पौलुस ने उसका खतना करने से इनकार कर दिया था। (देखें, गला.2)

ग) पौलुस की पत्रियों में उसका अनेक बार वर्णन है (2कुरि.2:13; 7:6–15; 8:6–24; 12:18; गला.2:1–3; 2तिमु.4:10) और ये बहुत आष्चर्य की बात है कि प्रेरितों में लूका द्वारा इसका वर्णन नहीं है। कुछ टीकायें यह विचार करती हैं कि :

1) वह लूका का रिश्तेदार होगा (सम्भवतः भाई) और उसके नाम को सम्मिलित करना लूका के लिए सांस्कृतिक के तौर पर सही नहीं था।

2) तितुस पौलुस के जीवन और सेवकाई का लूका की जानकारी का मुख्य स्त्रोत था और इसलिए, लूका के समान, उसका नाम नहीं है।

घ) वह पौलुस और बरनबास के साथ सबसे मुख्य यरूशलेम सभा में था, जो प्रेरितों 15 में है।

ङ) यह पुस्तक तितुस को क्रेते में कार्य के लिए पौलुस का निर्देश है। तितुस पौलुस के अधिकारी के रूप में कार्य कर रहा था।

च) तितुस के बारे में नये नियम में यह जानकारी है कि वह कार्य के लिए दलमतिया भेजा गया था (2 तिमु.4:10)।

3) झूठे शिक्षक

क) वहाँ पर अवश्य एक झूठे शिक्षकों का समूह था जो क्रेते में पौलुस के सुसमाचार का विरोध कर रहा था।

1) उनकी गलती सभी विश्वासियों से अपेक्षित भय भक्ति के जीवन से सम्बन्धित थी।

2) भक्ति के जीवन के बारे में संकेत : 1:1, 16; 2:7, 14; 3:1, 8, 14

3) संक्षिप्तचरित्र के गुण : 2:11–14; 3:4–7

ख) इस झूठी शिक्षा में अवश्य कुछ यहूदी तत्व हैं (देखें, 1:10, 14; 3:8–9)। ये झूठे शिक्षक यहूदी व्यवस्थावाद और युनानी तत्वज्ञान का मिलन हैं। वे कुलुस्सियों और इफिसियों में सम्बोधित किये गये झूठे शिक्षकों के समान हैं। पासवानी पत्रियों का केन्द्र झूठी शिक्षा पर है, और न कि मुख्य रूप से कलीसिया के संगठन पर है।

5) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़

1) भक्ति, 1:1

2) अनन्त जीवन की आशा पर, 1:2

3) परमेश्वर, जो झूठ नहीं बोल सकता, 1:2

4) अतारीख सत्कार, 1:8

5) यहूदियों की कथा कहानियाँ, 1:14

6) खरे उपदेश, 2:1

7) धीरज, 2:2

8) इस युग में, 2:12

9) धन्य आशा, 2:13

10) छुडा लेना, 2:14

11) नए जन्म के स्थान, 3:5

5) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) प्राचीन, 1:5

2) अध्यक्ष, 1:7

3) खतनावालों में से, 1:10

4) उन्हीं का भविष्यद्वक्ता, 1:12

5) हाकिमों और अधिकारियों, 3:1

6) तिखुकुस, 3:12

7) अपुल्लोस, 3:13

6) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

1) क्रेते, 1:5

2) निकुपुलिस, 3:12

7) चर्चा के प्रष्न

1) पिता परमेश्वर और यीशु मसीह दोनों को 'उद्धारकर्ता' कहा गया है? यह महत्वपूर्ण क्यों है?(3 बार)

2) 1:16 झूठे शिक्षकों से कैसे सम्बन्धित है?

3) 2:1–5 क्या कलीसिया के अगुवों या कलीसिया के सदस्यों की ओर संकेत करता है?

4) 2:11 एक मुख्य वचन क्यों है?

5) क्या 2:13 यीशु को परमेश्वर कहकर पुकारता है?

6) 3:5[अ] पौलुस का मूल षीर्शक क्यों है?

7) 3:5[ब] बप्तिस्मा के नये जन्म के बारे में क्या सिखाता है?

फिलेमोन का परिचय

1) प्राक्कथन

क) यह पुस्तक पहली षताब्दी ग्रिको–रोमी संसार की सबसे साधारण व्यक्तिगत पत्र का उदाहरण है। यह सम्भवतः एक पपाईरस कागज़ में सिमित हो सकती है (3 यहून्ना)। यह निश्चित नहीं है कि यह मूल तौर पर किसे सम्बोधित है :

1) फिलेमोन; 2) अफफिया और अर्खिप्पुस (कुलु.4:17) या 3) या किसी अर्थ में पूरी घरेलु कलीसिया को।

ख) यह पत्री इन बातों के बारे में हमे बताती है

1) प्रेरित पौलुस के मिशनरी तरीके

2) पहली षताब्दी की घरेलु कलीसियाओं (देखें, रोम.16:5; 1कुरि.10:19; कुलु.4:15)

ग) मसीहत प्रभावषाली रूप से भुमध्य संसार के सामाजिक तत्वों को परिवर्तित कर रही थी। सुसमाचार के लिए सामाजिक बाधायें टूट रही थीं (1 कुरि.12:13; गला.3:28; कुलु.3:11)।

2) लेखक

क) इस पत्री का व्यक्तिगत स्वभाव अनेक पठकों (एक अपवाद एफ.सी.बोर) को निश्चित कराता है कि इसका लेखक पौलुस था।

ख) फिलेमोन और कुलुस्सियों करीब से सम्बन्धित है।

1) एक ही उत्पत्ति

2) एक ही प्रकार के लोग अभिवादन करते हैं।

3) तिखुकुस ने कुलुस्सियों की पत्री को पहुँचाया था और उनेसिमुस के साथ यात्रा की थी। यदि फिलेमोन पौलुस से है तो कुलुस्सियों भी है (जिसके बारे में अनेक अधुनिक विद्वानों द्वारा संदेह किया जाता है)।

ग) यह प्रारम्भिक झूठे शिक्षक मार्सियों (जो 140 ई0 में रोम आया था) और अधिकार प्राप्त पुस्तकों की सूची, मुर्रोटोरियों के लेख (180–200 ई0 के बीच रोम में लिखी हुई), में इसे पौलुस की पत्रियों में रखा गया है।

3) तारीख

क) इस पत्री की तारीख पौलुस के (इफिसुस, फिलिप्पी, कैसिरिया, या रोम के) किसी एक कैद के दौरान से सम्बन्धित है। प्रेरितों के तथ्यों से रोमी कैद सही बैठता है।

ख) यदि रोम की धारणा करें तो प्रष्न उठता है कि किस समय? प्रारम्भिक 60 ई0 के दौरान पौलुस कैद में था, जिसका वर्णन प्रेरितों में है, पर वह फिर छोड दिया गया और उसने पासवानी पत्रियाँ लिखीं (1 और 2 तिमुथियुस और तितुस) और फिर उसे कैद किया गया और 9 जून 68 ई0 से पहले मार डाला गया, जो निरो की आत्मा हत्या का समय था। उच्च शिक्षित लोग इफिसियों के लिखने की तारीख प्रारम्भिक 60 ई0 में रोम की पौलुस की पहली कैद को मानते हैं। फिलिप्पियों को मध्य 60 ई0 में लिखा गया था।

ग) तिकिकुस, उनेसिमुस के संग, कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलेमोन की पत्रियों को आसिया माइनर ले गये होंगे और बाद में (सम्भवतः कई सालों बाद) इपफ्रुदितुस अपनी शारीरिक बिमारी से स्वस्थ हो गया था और फिलिप्पियों की पत्री को अपनी घरेलु कलीसिया को ले गया था।

घ) एफ. एफ. ब्रूस और मुर्रे हेरिस का अनुकरण करते हुए पौलुस की पत्रियों का समयकाल सम्भवतः

पुस्तक	तारीख	लिखने का स्थान	प्रेरितों से
गलातियों	48 (दक्षिणी सिद्धान्त)	सिरिया का अन्ताकिया	14:28; 15:2
1 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	18:5
2 थिस्स.	50	कुरिन्थुस	
1 कुरि.	55	इफिसुस	19:20
2 कुरि.	56 या 57	मकिदुनिया	20:2
रोमियों	57	कुरिन्थुस	20:3
कुलुस्सियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
इफिसियों	प्रारम्भिक 60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	28:30–31
फिलेमोन	60 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
फिलिप्पियों	62–63 ई0 (बन्दिगृह)	रोम	
1तीमुथियुस	63 या बाद	मकिदुनिया	
तितुस	63 या बाद	इफिसुस?	
2तीमुथियुस	64 (68 ई0 से पहले)	रोम	

5) पत्री के लिखने का कारण (फिलेमोन में बताये गये लोग)

क) फिलेमोन कुलुस्से में एक दास का स्वामी था। वह पौलुस के द्वारा विश्वासी बना, सम्भवतः जब पौलुस इफिसुस में सेवकाई कर रहा था।

ख) उनेसिमुस एक भागा हुआ दास था। वह भी पौलुस के द्वारा ही रोम की कैद में विश्वासी बना (61–63 ई0)। यह अनिश्चित है कि वे कैसे मिले। शायद 1) दोनों कैद थे, 2) उनेसिमुस पौलुस के पास कार्य के लिए भेजा गया था या, 3) उनेसिमुस भागने की योजना को छोड़ने के बाद पौलुस से सलाह मांगता है।

ग) इपफ्रास असिया का एक विश्वासी था और लिकुस नदी घाटी की कलीसियाओं का स्थापक था (कुलुस्से, लौदिकिया, और हिरापुलिस)। वह कैद में पौलुस के पास कुलुस्से में झूठी शिक्षा और फिलेमोन की विश्वासयोग्यता के बारे में खबर लाता है।

घ) तिखुकुस इस क्षेत्र में पौलुस की पत्रियों को ले जानेवाला था : कुलुस्से, इफिसुस और फिलेमोन (देखें, कुलु.4:7–9; इफि. 6:21–22)। उनेसिमुस भी उसके साथ गया कि वह अपनी बातों को रख सके (1:11)। नये नियम में फिलेमोन दो व्यक्तिगत पत्रों में से एक है (देखें, 3 यूहन्ना)।

करीब 50 साल बाद (110 ई0) इग्नेसियस ने, अपने रोम के मार्ग में शाहिद होने के लिए, इफिसुस के बिशप उनेसिमुस के नाम एक पत्र लिखा ('इफिसियों के लिए', 1:3)। वह शायद यही परिवर्तित दास हो सकता है।

5) पत्र का उद्देश्य

क) यह बताता है कि किस प्रकार पौलुस ने अपने प्रेरितिय अधिकार और पासवानी उत्साह का प्रयोग किया।

ख) यह दिखाता है कि किस प्रकार मसीहत ने दासों और दासों के स्वामीयों, धनी और गरीबों को भाई–बहिन बनाया। यह सत्य आने वाले समय में रोमी सम्राज्य को परिवर्तित कर देता है।

ग) यह पौलुस के विश्वास को दिखाता है कि वह रोम की कैद से रिहा हो जाएगा और असिया को वापस लौटेगा।

6) संक्षिप्त में पहचाननें हेतु शब्द और वाक्य खण्ड

1) घरेलु कलीसिया, व.2

2) अपने बच्चे उनेसिमुस, व.10

3) काम का न था...बड़े काम का है, व.11

4) मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तु ही है, व.19

7) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) अफफिया, व.2

2) उनेसिमुस, व.10

3) इपफ्रास, व.23

4) मरकुस, व.24

8) <u>मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान</u>

कोई नहीं

9) <u>चर्चा के प्रष्न</u>

1) 1:8 में पौलुस किस प्रकार अपने प्रेरितिय अधिकार का प्रयोग कर रहा है?

2) यह छोटी पुस्तक किस प्रकार दासत्व के मुद्दे को प्रभावित करती है?

3) क्या व.18 का अर्थ यह है कि उनेसिमुस ने अपने स्वामी के यहाँ चोरी की थी?

4) क्या व.19 का अर्थ यह है कि पौलुस समान्य तौर पर शास्त्री का प्रयोग करता था?

इब्रानियों का परिचय

1) गम्भीर प्राक्कथन

जैसे–जैसे मैंने इस पुस्तक को पढ़ा यह और भी स्पष्ट होता गया कि मेरा धर्मविज्ञान पौलुस के धर्मविज्ञान से आकार प्राप्त किया हुआ है। नये नियम के अन्य लेखकों की बहुस्थिति को अपने प्रेरित विचारों को प्रस्तुत करने की अनुमति देना मेरे लिए कठिन है क्योंकि मैं उन्हें पौलुस के श्रेणी में रख देता हुँ। यह विषेशकर इब्रानियों के विश्वास में निरन्तर बने रहने पर महत्व देने से प्रमाणित होता है। इब्रानियों में विश्वास एक अस्थिर स्थान नहीं है (विश्वास से धर्मी ठहराया जाना), परन्तु यह अन्त तक एक विश्वासयोग्य जीवन है (अध्याय 11–12)।

मुझे भय है कि इब्रानियों में कई प्रष्नों से मेरे संघर्ष का उत्तर उसके लेखक (न ही पतरस, न ही याकूब) द्वारा नहीं दिया गया होता। इब्रानियों अन्य नये नियमों की पुस्तकों के समान, एक सामयिक दस्तावेज है। मुझे इसके लेखक को बातें करने देना है चाहे वो मुझे विचलित करता है, चाहे वह मेरी पसंद की श्रेणी का प्रयोग न करे, या वह उन श्रेणियों का विनाश भी करे। एक प्रेरित नये नियम के लेखक को संदेश के बदले में अपने क्रमानुसार के धर्मविज्ञान को रखने का धेर्य नहीं करना चाहिए।

मुझे अपने धर्मविज्ञानिक सैद्धान्तिकवयाद से पश्चताप करना चाहिए और एक नये नियम के तनाव के भितर रहना चाहिए कि मैं पूर्ण समझ को नहीं रखता हुँ। मुझे भय है कि मैं नये नियम को आधुनिक सुसमाचारकिय, परम्परागत जाल के छन्ना से देखता हुँ। मैं बाइबल के वायदों को आश्वासित करना चाहता हुँ, परमेश्वर के प्रेम का वायदा, उनके प्रबंध का, और बने रहनेवाले सामर्थ्य का; पर तब भी मैं नये नियम के लेखकों के सामर्थ्य चेतावनियों और आज्ञाओं से आशवासित हुँ। मुझे अवश्य इब्रानियों के लेखक को सुनना है, पर यह अधिक दर्दनाक है। मैं इस तनाव को समझा देना चाहता हुँ। मै कल्पना करता हुँ कि वास्तव में, एक मुफ्त उद्धार को और सभी दाम वाले–मसीही जीवन को आश्वासित करूँ। पर मैं कहाँ पर रेखा को खीचूं जवकी इसका उदाहरण कहीं नहीं है? क्या परमेश्वर के साथ अनन्त संगति एक प्रारम्भिक विश्वास का प्रतिउत्तर है या एक निरन्तर विश्वास का प्रतिउत्तर? इब्रानियों एक निरन्तर विश्वास के प्रतिउत्तर की अवश्यकता को रखती है।

मसीह जीवन को अन्त से देखा जाता है, प्रारम्भ से नहीं।

इसका अर्थ एक कार्य केन्द्रित उद्धार नहीं है, पर एक कार्य केन्द्रित निश्चितता है। विश्वास एक प्रमाण है, प्रकिया नहीं (जो अनुग्रह है)। विश्वासी कार्य से नहीं पर कार्य के लिए बचाये जाते हैं। कार्य उद्धार का मार्ग नहीं हैं, पर उद्धार का परिणाम है। भक्ति, विश्वासयोग्य, प्रतिदिन की मसीह समानता वो नहीं है जो हम करते हैं, पर जो कि हम उसमें हैं। यदि कोई परिवर्तन, और परिवर्तन नहीं हो रहा है, विश्वास के जीवन में कोई प्रमाण नहीं है, कोई बचाव भी नहीं है। केवल परमेश्वर ही ह्रदय और परिस्थिति को जानते हैं। विश्वास के जीवन में आश्वासन एक सह यात्री है, जीवन शैली का प्रमाण रहित होना एक प्रारम्भिक धर्मविज्ञानिक दावा नहीं है।

मेरी प्रार्थना है कि हम इस प्रेरित नये नियम के लेखक को स्पष्ट बात करने दें और इब्रानियों को एक क्रमानुसार के धर्मविज्ञान के जाल में एक धर्मविज्ञानिक बिन्दु ना समझें, चाहे वह केल्विनवादी या अरमिनी हो।

2) प्रारम्भिक ज्ञान

क) यह पुस्तक अपने संदेश को समझाने के लिए राबिनी व्याक्याकारों द्वारा व्याख्या की गई पुराने नियम के लेखों का प्रयोग करती है। मूल लेखक के उद्देश्य को समझने के लिए, इस पुस्तक की व्याख्या पहली षताब्दी की राबिनी यहूदी मत के प्रकाश में करनी चाहिये, आधुनिक विचार से नहीं।

ख) यह पुस्तक एक प्रचार के समान प्रारम्भ होती है (कोई अभिनन्दन या नमस्कार नहीं है) और एक पत्री के समान समाप्त होती है (अध्याय 13 पौलुस का पराम्परागत समापन लगता है)। यह सम्भवतः एक आराधनालय का प्रचार है जो एक पत्री में परिवर्तित हो गया है। लेखक 13:13 में अपने पुस्तक को 'उपदेश की बातें' कहता है। इसी वाक्य खण्ड़ को प्रेरित.13:15 के एक प्रचार में प्रयोग किया गया है।

ग) यह मूसा के साथ वाचा की एक ज्ञानपूर्वक नई वाचा का टीका है :

1) पुराने नियम की एक अधिकारपूर्ण दृष्टि

2) पुरानी और नई वाचाओं की तुल्ना

3) नये नियम की केवल एक ही पुस्तक जो यीशु को हमारा महायाजक कहती है।

घ) यह पुस्तक पीछे हट जाने की चेतावनीयों से भरी है (10:38), या यहूदी मत की ओर लौट जाना। (अथार्थ : अध्याय 2, 4, 5, 6, 10, 12; देखें, आर. सी. ग्लेज जूनियर की नो इज़ी सैलवेषन, इनसाइट प्रैस द्वारा प्रकाषित)।

ङ) हालांकि यह अत्याधिक काल्पनिक है, यह पौलुस के द्वारा बताए गए उद्धार को सनातन परमेश्वर के पूर्ण कार्य के रूप पर अपने महत्व को देखने में सहायक है (अथार्थ, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना) और बचाव का प्रारम्भिक सत्य के रूप में दावा करती है। पतरस, याकूब और 1 और 2 यहून्ना की पत्रियाँ भी नई वाचा की निरन्तर जिम्मेदारियों पर ज़ोर देती हैं। और दावा करती हैं कि बचाव प्रतिदिन है, जो एक परिवर्तित और परिवर्तित हो रहे जीवन से प्रमाणित होता है। इब्रानियों का लेखक एक विश्वासयोग्य जीवन पर जोर देते हुए (देखें,अध्याय 11) बचाव का दावा जीवन के अनत के दृष्टिकोण से करता है। आधुनिक पाश्चातिय तर्किय विचार इन दृष्टिकोणों को मिलाने की कोशिश करते हैं, जबकि नये नियम के लेखक, एक दिव्य लेखक से (अथार्थ, आत्मा) इन्हें तनाव में पकड़ना चाहते हैं और तीनों को निश्चित करते हैं। आश्वासन कभी लक्ष्य नहीं है, पर परमेश्वर के वायदों पर एक क्रियशील विश्वास के द्वारा ही आष्वासन मिलता है।

3) <u>लेखक</u>

क) पूर्वि कलीसिया (सिकंदरिया, मिस्त्र) ने पौलुस के लेखक होने को ग्रहण किया है जो प्रारम्भिक पपाइरस की हस्थलिपी पी[46] की सूची में इब्रानियों को पौलुस के लेखों में रखा हुआ देखा जा सकता है। इस हस्थलिपी को छेस्टर बियाटी पपाइरी कहा जाता है और इसकी प्रतिलिपी दूसरी षताब्दी के अन्त में बनाई गई है। यह इब्रानियों को रोमियों के बाद रखती है। कुछ सिकंदरिया के अगुवों ने पौलुस के लेखक होने में कुछ साहित्यिक समस्याओं की पहचान की है :

1) सिकंदरिया के क्लेमेंट (150–215 ई0, यूसेबियस के द्वारा उद्घृतित) कहतें हैं कि पौलुस ने इब्रानी भाषा में लिखी थी और लूका ने इसका अनुवाद युनानी में किया था।

2) ऑरिगन दावा करता है कि इसके विचार पौलुस के हैं पर यह बाद के अनुयायी द्वारा लिखा गया है, जैसे लूका या रोम के क्लेमेंट।

ख) पाश्चातिय कलीसिया के द्वारा अपनाई गई पौलुस की पत्रियों की सूची, जिसे मुर्रौटोरियों का लेख कहा जाता है (रोम से अधिकार प्राप्त की हुई पुस्तकें 180–200 ई0), में यह नहीं है।

ग) <u>हम लेखक के बारे में क्या जानते हैं</u>

1) यह सम्भवतः दूसरी पीढ़ी का यहूदी मसीही था (2:3)।

2) वह पुराने नियम की युनानी अनुवाद से उद्घृति करता हैं जिसे *सेप्तुआजिंत* कहते हैं।

3) वह प्रचीन तम्बू की प्रकियाओं का प्रयोग करता है न की वर्तमान मन्दिर की रीतियों का।

4) वह युनानी शास्त्रीय व्याकरण और व्याख्या रचना का प्रयोग करता है (यह पुस्तक प्लेटोनिक नहीं है, इसका केन्द्र पुराना नियम है, न की फिलो)।

घ) यह पुस्तक गुमनाम है, पर स्त्रोतागणों को लेखक की सही पहचान थी (देखें, 6:9–10; 10:34; 13:7, 9)।

ङ) पौलुस के लेखक होने में संदेह क्यों है :

1) इसकी शैली पौलुस के अन्य लेखों से अत्यधिक भिन्न है (अध्याय 13 के अलावा)।

2) शब्दकोश भी भिन्न है।

3) शब्द और वाक्य खण्ड़ के प्रयोग और महत्व में सूक्ष्म भिन्नता है।

4) जब पौलुस अपने मित्रों और सहकर्मियों को 'भाई' कहता है तो उस व्यक्ति का नाम हमेशा पहले आता है (रोम.16:23; 1कुरि.1:1; 16:12; 2कुरि.1:1; 2:13; फिलि.2:25) पर 13:23 में 'तीमुथियुस, हमारा भाई' है।

च) <u>कृतित्व के विचार</u>

1) अपनी पुस्तक हाइपोताइपोसिस (यूसेबियस द्वारा उद्धृत किया गया) में सिकंदरिया के क्लेमेंट विश्वास करते थे कि लूका ने पौलुस की मूल इब्रानी में लेखों को युनानी में अनुवाद किया था (लूका ने उच्च कोइने युनानी भाषा का प्रयोग किया है)।

2) ऑरिगन ने कहा कि लूका या रोम के क्लेमेंट ने लिखा है पर पौलुस की शिक्षओं का प्रयोग किया है।

3) जेरोम और आगस्टिन ने पौलुस के कृतित्व का स्विकार किया है केवल पाश्चाति कलीसिया के नियमाधीन में इस पुस्तक को ग्रहण होने के लिए।

4) तरतुल्यन (डी प्यूडीक. 20) का विश्वास था कि बरनबास (पौलुस से जुड़े हुए एक लेवी) ने लिखा है।

5) मार्टिन लुथर ने कहा कि अपुल्लौस, पौलुस के साथ के एक सिकंदरियाई–प्रशिक्षित विद्वान (प्रेरित.18:24) ने लिखा है।

6) केलविन ने कहा कि रोम के क्लेमेंट (96 ई0 में सबसे पहले इसको उद्धृत करना वाला) या लूका ने लिखा होगा।

7) अडोल्फ वोन हारनाक ने कहा कि अक्विला और प्रिस्क्किला (उन्होंने अपुल्लौस को पूर्ण सुसमाचार बताया था और पौलुस और तीमुथियुस से जुड़े थे, प्रेरित.18:24) ने लिखा है।

8) सर विलियम रामसे कहते हैं कि फिलिप्पुस (सुसमाचारक) ने पौलुस के लिए लिखा है जब पौलुस कैसिरिया में कैद था।

9) कुछ अन्य व्यक्तियों ने फिलिप्पिस या सिलास(सिलवानुस) का दावा किया है।

4) <u>स्त्रोतागण</u>

क) शिषर्क 'इब्रानियों के नाम' इब्रानी लोगों को सम्बोधित करता है, इसलिए यह पुस्तक सभी यहूदियों को लिखी गई थी (देखें, सिकंदरिया के क्लेमेंट, युसेबियुस के द्वारा उद्धृत, एक्ले. हीसट्री. भाग 6. पृश्ठ 14)।

ख) आर. सी. ग्लेज जूनियर की नो इज़ी सैलवेषन में आन्तरिक प्रमाणों में दावा किया गया है कि विषेश यहूदी विश्वासियों के एक समूह या एक आराधनालय को सम्बोधित किया गया है (6:10; 10:32–34; 12:4; 13:7, 19, 23)।

1) वे यहूदी विश्वासी प्रतित होते हैं क्योंकि इसमें अनेक पुराने नियम की उद्धृत और विषय वस्तुएं पाइ जाती हैं (3:1; 4:14–16; 6:9; 10:34; 13:1–25)।

2) उन्होंने कुछ सतावों का अनुभव किया होगा (10:32; 12:4)। रोमी अधिकारियों द्वारा यहूदी मत एक कानूनी धर्म से पहचाना जाता था, बाद में पहली षताब्दी में जब मसीहत यहूदी आराधनालय से अलग हो गई तो उसे कानून के खिलाफ़ समझा जाता था।

3) वे लम्बे समय से विश्वासी थे, पर अब भी परिपक्व न थे (5:11–14)। वे पूर्ण तौर पर यहूदी मत से अलग होने से भयभीत थे (6:1–2)।

ग) अस्पष्ट अध्याय 13:24 का अर्थ यह हो सकता है कि वह लिखा गया : 1) इटली से, या 2) इटली के लिए, सम्भवतः रोम।

घ) स्त्रोतागणों के स्थान की पहचान लेखक को लेकर अनेक विचार से सम्बन्धित है :

1) सिकंदरिया – अपुल्लौस

2) अन्ताकिया – बरनबास

3) कैसारिया – लूका या फिलिप्पुस

4) रोम – रोम के क्लेमेंट और 13:24 में इटली का वर्णन।

5) स्पेन – यह सिद्धांत लीरा के निकोलास का था (1270–1340)।

5) तारीख

क) 70 ई0 में रोमी जनरल तितुस द्वारा यरूशलेम के विनाश के पहले :

1) लेखक पौलुस के सहकर्मी तीमुथियुस का नाम से वर्णन करता है (13:12)।

2) लेखक मन्दिर में बलिदानों की निरन्तरता को बताता है (8:13; 10:1–2)।

3) लेखक सताव के बारे में बताता है जो निरो के समय का हो सकता है (54–68 ई0)।

4) लेखक पाठकों को उत्साहित करता है कि वे यहूदी मत और उसकी रीतियों में वापिस न जायें।

ख) 70 ई0 के बाद :

1) लेखक तम्बू की रीतियों का प्रयोग करता है न की हेरोद के मन्दिर की।

2) लेखक सताव का वर्णन करता है

क) सम्भवतः निरो के समय में (10:32–34)

ख) बाद में डोमिश्यिन के समय में (12:4–13)

3) यह पुस्तक अन्तिम पहली षताब्दी के राबिनी यहूदीमत के पुनरगठन से सम्बन्धित हो सकती है (जामनिया के लेख)।

ग) 96 ई0 के पहले क्योंकि यह पुस्तक रोम के क्लेमेंट के द्वारा उद्धृत है।

6) उद्देश्य

क) यहूदी मसीहियों को यहूदी मत छोड़ने और सार्वजनिक (पूर्ण) तौर पर कलीसिया से पहचाने जाने को कहा गया है (13:13)।

ख) यहूदी विश्वासियों को सुसमाचार की मिशनरी आज्ञा को लेने को उत्साहित किया गया है (मत्ती 28:19–20; प्रेरित.1:8)।

ग) इन यहूदी विषवासियों के साथ यहूदी अविषवासियों की संगति अध्याय 6 और 10 का केन्द्र है। तीन समूहों की उपस्थिति पर ध्यान दें, 'हम', 'तुम', और ,'वे या उन्हें'। उन्हें व्यक्तिगत तौर पर चेतावनी दी गई है कि वे अपने मसीही मित्रों और सह–आराधकों के जीवनों में अनन्त और स्पष्ट प्रमाणों का प्रतिउत्तर दें।

घ) यह काल्पनिक ऐतिहासिक पुर्न निमार्ण आर. सी. ग्लेज जूनियर की नो इज़ी सैलवेषन से लिया गया है :

'समस्या मसीहियों के बहुमत और गैर–मसीहियों के कम होने के बीच का तनाव से नहीं थी। इसका सही विपरीत सत्य था। इस सभा के यहूदी विश्वासियों ने अपने विश्वास और भण्ड़ारीपन के अर्थ का इस प्रकार समझौता कर लिया था कि दोनों समूह अब एक साथ आराधना कर रहे थे। किसी भी समूह ने दूसरे के विवेक को चोट नहीं पहुँचाई थी। अभी मसीही समूह के प्रचार से आराधनालय के न बचाये गये सदस्यों में कोई कायल नहीं हो रहा था और न ही कोई निर्णय ले रहा था। साहसपूर्ण मसीही जीवन की मांगों को ग्रहण न करने की इच्छा के कारण मसीही स्थगित होने की स्थिति में थे। अविश्वासी निरन्तर तिरस्कार के कारण पूर्ण भिन्नता के बिन्दु तक कठोर हो गये थे। ये समूह अब एक साथ सहमत होने वाले बन गये थे।

मसीही समूह का 'सिद्धता की ओर बढते जाने' (6:1) को गम्भिरता से न लेने के दो कारण थे : यहूदी मत की परम्पराओं के प्रति उच्च आदर और मसीहत के साथ पहचान पाने के पूर्ण मूल्य को चुकाने की इच्छुक्ता का न होना, जो अधिक और अधिक एक अन्यजातिय अंदोलन बन रहा था' (पृश्ठ 23)।

7) संक्षिप्त रूपरेखा

1:1–3	भविष्यद्वक्ताओं से पुत्र की श्रेष्ठता
1:4–2:18	स्वर्गदूतों से पुत्र की श्रेष्ठता
3:1–4:13	मूसा की वाचा से पुत्र की श्रेष्ठता
4:14–5:10;6:13–7:28	हारून के याजकपन से पुत्र की श्रेष्ठता
5:11–6:12	अविश्वासी यहूदियों से विश्वासी यहूदियों की श्रेष्ठता
8:1–10:18	मूसा की वाचा की प्रकिया से पुत्र की श्रेष्ठता
10:19–13:25	विश्वासियों में पुत्र की श्रेष्ठता का समर्थन और प्रगटिकरण हुआ है।

8) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) इन अन्तिम दिनों में, 1:2

2) उसकी महिमा का प्रकाश, 1:3

3) उसके तत्व की छाप, 1:3

4) सामर्थ्य, 1:3

5) उनसे दूर न चलें जायें, 2:1

6) स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया वचन, 2:2

7) हर मनुष्य के लिए मृत्यु के स्वाद को चखे, 2:9

8) उद्धार के कर्ता, 2:10

9) महा याजक, 2:17; 4:15

10) प्रायश्चित, 2:17

11) प्रेरित, 3:1

12) महायाजक, 3:1

13) अंगीकार, 3:1; 4:14

14) आज का दिन, 3:13

15) सातवें दिन, 4:4

16) सब्त का विश्राम, 4:9

17) स्वर्गों से होकर गया, 4:14

18) निष्पाप निकला, 4:15

19) सिहांसन के निकट चलें, 4:16

20) आदि शिक्षा, 5:12

21) बपतिस्मा, 6:2

22) प्रतिज्ञा की हुई बात, 6:15

23) परदे, 6:19

24) यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा, 7:22

25) उनके लिए विनती करने, 7:25

26) तम्बू, 8:2

27) स्वर्ग में की वस्तुओं की प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब, 8:5

28) नयी वाचा, 8:8, 13

29) परमपवित्र स्थान, 9:3

30) हारून की छड़ी, 9:4

31) प्रायश्चित के ढ़कने पर, 9:5

32) गवाहों का ऐसा बड़ा बादल, 12:1

33) कड़वी जड़, 12:15

34) स्वर्गीय यरूशलेम, 12:22

9) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) पहिलौठा, 1:6

2) जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, 2:14

3) क्रोध दिलाया, 3:16

4) मलिकिसिदिक, 5:6

5) 5:11–6:8 में तीन समूहों का वर्णन हैः 'तुम', 'वे', 'हम'। ये हर एक किसको दिखाते है?

6) करूब, 9:5

7) हनोक, 11:5

8) राहाब, 11:31

9) भेड़ों का रखवाला, 13:20

10) तीमुथियुस, 13:23

10) <u>मानचित्र पर पहचानने हेतु स्थान</u>

1) शालेम, 7:1

2) यरीहो, 11:30

3) सिय्योन, 12:22

4) इटली, 13:24

11) <u>चर्चा के प्रष्न</u>

1) 1:2–4 में वर्णित 'पुत्र' की विषेशताओं को बतायें।

2) इब्रानियों के पहले अध्यायों में स्वर्गदूतों का इतना वर्णन क्यों है?

3) विश्वासियों से स्वर्गदूत कैसे सम्बन्धित है? (1:14)

4) यीशु स्वर्गदूतों से कुछ ही कम क्यों किया गया? (2:9)

5) 2:18; 4:15 का महान सत्य क्या है?

6) 3:1–6 में यीशु और मूसा की तुल्ना कैसे की गई है?

7) 3:7 पवित्र आत्मा का क्या महत्व बताता है?

8) 3:12 किसके बारे में बात कर रहा है?

9) 3:11 का क्या अर्थ है, 'वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पायेंगें'?

10) 3:14 मसीही आश्वासन के बारे में क्या कहता है?

11) 4:12 को अपने शब्दों में समझाएं।

12) हमारा लेखक एक प्राचीन कनानी याजक को क्यों ले आता है? (5:6–10)

13) 5:8–9 के महत्व को समझाएं।

14) 6:1–2 में सिद्धांतों की सूची दें। क्या वे यहूदी या मसीही हैं? क्यों?

15) 6:6 में यह शब्द 'अन्होना' क्यों उन लोगों का खण्ड़न करता है जो विश्वास करतें है कि आप बचाये, भटक जायें, और फिर बचाये जा सकते हैं?

16) मलिकिसिदिक के कोई माता–पिता नहीं है ऐसा क्यों कहा गया है? (7:3)

17) अब्राहम मलिकिसिदिक को अच्छे से अच्छे माल का दसवाँ अंश क्यों देता है? (7:3)

18) 8:13 और 10:4 पुराने नियम का क्या महत्व बताते हैं?

19) 9:22 हिन्दु मत का कैसे खण्ड़न करता है?

20) 10:25 और 39 ऐतिहासिक संदर्भ से कैसे सम्बन्धित है?

21) अध्याय 6 अध्याय 10 से कैसे सम्बन्धित है?

22) अध्याय 11 सारांष अपने शब्दों में करें।

23) 12:2 किसकी ओर संकेत कर रहा है?

24) 13:8 का इतना महत्व क्यों है?

याकूब की पत्री का परिचय

1) प्राक्कथन

क) यह सारेन किरकेगार्ड़ की नये नियम में प्रिय पुस्तक थी, क्योंकि यह व्यावहारिक, प्रतिदिन की मसीहत को महत्व देती है।

ख) यह मर्टिन लूथर की नये नियम में सबसे कम प्रिय पुस्तक थी क्योंकि यह रोमियों और गलातियों में महत्व दिये गये पौलुस के 'विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जान' के विरोध में है।

ग) यह अन्य नये नियम की पुस्तकों में से एक अलग साहित्य प्रकार है।

1) यह कोई कठोर भविष्यद्वक्ता द्वारा बोली गई नयी वाचा की नीतिवचन की पुस्तक के समान है।

2) यीशु की मृत्यु के कम समय बाद लिखी गई है परन्तु अभी भी अधिक यहूदी और व्यावहारिक है।

2) लेखक

क) पारम्परिक लेखक याकूब है, यीशु का सौतेला भाई (चारों में एक, देखें, मत्ती 13:55; मरकुस 6:3; प्रेरित.1:14; 12:17; गला.1:19)। वह यरूशलेम कलीसिया का अगुवा था (48–62 ई0, देखें, प्रेरित.15:13–21; गला.2:9)।

1) उसे 'निर्दोश याकूब' कहा जाता था और बाद में उसका उपनाम 'ऊँठ का घुटना' रखा गया था क्योंकि वह निरन्तर घुटनों में प्रार्थना किया करता था (हेगेसिपुस से, युसेबियुस के द्वारा उद्धृत)।

2) याकूब पुनरूत्थान से पहले विश्वासी नहीं था (मरकुस 3:21; यूह.7:5; 1कुरि.15:7)।

3) जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा आया तब वह ऊपरी कोठरी में उपस्थिति था (प्रेरित.1:14)।

4) वह विवाहित था (1कुरि.9:5)।

5) उसे पौलुस के द्वारा 'खम्बा' कहा गया (सम्भवतः एक प्रेरित, गला. 1:19) पर वह बारह में से एक नहीं था (गला.2:9; प्रेरित.12:17; 15:13 से आगे)।

6) एन्टीक्विटीस् ऑफ द ज्यूस, 20:9:1 में जोसिफस कहते हैं कि उसे 62 ई0 में महासभा के सदूकियों के द्वारा पत्थरवाह किया गया था, जबकि दूसरी परम्परा के अनुसार (दूसरे षताब्दी के लेखक, सिकंदरिया के क्लेमेंट या हेगेसिपुस कहतें हैं) उसे मन्दिर की दीवार से गिरा दिया गया था।

7) यीशु की मृत्यु के काफी समय के बाद यीशु के एक रिश्तेदार को यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा नियुक्त किया गया था।

ख) ऐ. टि. रोबिनसन की स्टडीस् इन द एपीस्टल ऑफ जेम्स में याकूब के लेखक होने को निश्चित करते हैं।

'इसके लिए अनेक प्रमाण है कि यह पत्री प्रेरित.15:13–21 में एक प्रचार के लेखक द्वारा लिखी गई थी – विचारों और शैली की समानता जो नकल करने और प्रतिलिपी बनाने के लिए बहुत सूक्ष्म है। यही समानता याकूब की पत्री और अन्ताकिया की पत्री के बीच में भी है, सम्भवतः वह भी याकूब के द्वारा लिखी गई होगी (प्रेरित.15:23–29)। यहाँ, इसके अलावा, पहाड़ी उपदेश की समानता भी दिखई देती है, जिसे याकूब ने व्यक्तिगत तौर पर सुना होगा या उसके कुछ तत्वों को सुना होगा। यीशु की शिक्षाओं की प्रमुख विषेशताओं की समानता इस पत्री में सजीव उपमाओं में भी है' (पृश्ठ. 2)।'

यहाँ पर ऐ. टि. रोबिनसन जे. बि. मेयर की द एपीस्टल ऑफ सेन्ट जेम्स, पृश्ठ 3–4 का अनुकरण कर रहे हैं।

ग) नये नियम के प्रेरितों की सूची में दो और याकूब नाम के व्यक्ति हैं। परन्तु, याकूब, यूहन्ना का भाई, प्रारम्भिक 44 ई0 में ही हेरोद अग्रिप्पा द्वारा मार ड़ाला गया था (प्रेरित.12:1–2)। दूसरे याकूब, 'वह कम' या 'छोटा' (मरकुस 15:40), का वर्णन प्रेरितों की सूची से बाहर वर्णित नहीं किया गया है। हमारे पत्री का लेखक सुपरिचित था।

ङ) याकूब के यीशु के साथ सम्बन्ध को लेकर तीन विचार उपलब्ध है :

1) जेरोम बताते हैं कि वह यीशु का चचेरा भाई था (अल्फायुस और क्लोपास की मरिय्यम के द्वारा)। उसे यह जानकारी मत्ती 27:56 की तुल्ना यूहन्ना 19:25 से करने से प्राप्त हुई।

2) रोमन कैथोलिक कलीसिया की परम्परा के द्वारा वा यूसुफ के पहले अन्य विवाह से उत्पन हुआ एक सौतेला भाई था (मत्ती 13:55 पर ऑरिगन की टिप्पणी और इपिफनियस की हेरसीस, पृष्ठ 78)।

3) तरतुल्यन (160–220 ई0), हलविदियुस (366–384 ई0) और कई प्रौटस्टन्ट दावा करते हैं कि वह यूसुफ और मरिय्यम द्वारा जन्मा असली सौतेला भाई था (मरकुस 6:3; 1कुरि.9:5)।

4) विकल्प 1 और 2 का निर्माण इसलिए किया गया कि रोमन कैथोलिक कलीसिया की मरिय्यम की कुवांरी होने के सिद्धांत को बचाया जा सके।

3) <u>तारीख</u>

क) यदि हम याकूब को लेखक मानते हैं तो तारीख की दो सम्भावनाएं हैं :

1) प्रारम्भ में, 49 ई0 में यरूशलेम सभा से पहले (प्रेरित.15), यदि यह तारीख सही है तब याकूब की पत्री नये नियम में सबसे पहली प्रचारित की गई पुस्तक है)।

2) बाद में, 62 ई0 में याकूब की मृत्यु से पहले।

ख) <u>प्रारम्भिक तारीख के पक्ष में</u> :

1) 2:2 में 'आराधनालय' का प्रयोग।

2) कलीसिया संगठन की कमी।

3) 5:14 में यहूदी अर्थ में 'प्राचीन' शब्द का प्रयोग।

4) अन्यजाति के मिशन पर विवाद का न होना।

5) याकूब यरूशलेम से दूर एक प्रारम्भिक यहूदी विश्वासी समूह को लिख रहा है और सम्भवतः पलिश्तिन के बाहर (1:1)।

ग) <u>बाद में की तारीख की पक्ष में</u> :

1) पौलुस की रोमियों की पत्री (4:1 से आगे) का सम्भवतः याकूब का प्रतिउत्तर (2:14–20), एक विपरीत तरीके का प्रयोग करते हुये झूठे शिक्षकों की एक गलत प्रयोग को सही करना (2 पतरस 3:15–16)। यदि यह सत्य है तो याकूब की पत्री का सही षीर्शक 'एक मध्य–कार्य संशोधन' होगा।

2) इसके इस पुस्तक में न होने के कारण यह पुस्तक मूल मसीही सिद्धांतों की धारणा करती है।

4) <u>स्त्रोतागण</u>

क) यहाँ पर 'उन बारह गोत्रों को जो तितर–बितर होकर रहते हैं' का उल्लेख हमारे लिए एक मुख्य प्रमाण है। और इस पत्री का 'कैथोलिक पत्रियों' में सम्मिलित होना इसके बहुप्रेषित स्वभाव को दिखाता है। एक विषेश परन्तु तितर–बितर हुए व्यक्तिगत लोगों का समूह एक कलीसिया के समान अवश्य प्रमुख नहीं है और यहाँ पर पलिश्तिन के बाहर यहूदी मसीह होने को दिखाता है।

ख) 1:1 की तीन सम्भावित व्याख्याएं हैं :

1) 'यहूदी–भाईयों' का निरन्तर प्रयोग और यीशु के बारे में मुख्य सुसमाचार के सत्य के न होने के कारण यह असम्भव दिखता है और बंधुवाई के बाद कई मूल बारह गोत्र वापस नहीं आये। इस उपमा का प्रयोग प्रकाशितवाक्य 7:4–8 में दिखावटी रूप में हुआ है।

2) यहूदी मसीही – याकूब यरूशलेम की कलीसिया में एक अगुवा होने के कारण और इस पुस्तक के यहुदी स्वभाव के कारण यह अधिक सम्भव लगता है।

3) कलीसिया एक आत्मिक इस्राएल के रूप में – 1 पतरस 1:1 में 'तितर–बितर' शब्द के प्रयोग के कारण और पौलुस कलीसिया (विश्वासी यहूदी और अन्यजाति) को एक आत्मिक इस्राएल के रूप में प्रगट करने के कारण (देखें, रोम. 2:28;4:16से; गला.3:29;6:16) यह सम्भव दिखता है।

5) प्रसंग – यहाँ पर दो प्रमुख विचार हैं :

क) अन्यजाति संदर्भ में जी रहे पहली षताब्दी के मसीहियों के लिए नई वाचा का प्रयोग करने की कोशिश।

ख) कुछ अन्य विश्वास करते हैं कि यह धनी यहूदी लोग थे जो मसीही यहूदियों को सता रहे थे। यह सम्भव है कि प्रारम्भिक मसीही सामी विरोधी अन्यजाति के शोशण के शिकार हुये। यह अवश्य शारीरिक पीढ़ा और सताव का समय था (देखें, 1:2–4, 12; 2:6–7; 5:4–11, 13–14)।

6) साहित्यिक प्रकार

क) यह पत्री या प्रचार बुद्धि साहित्य, नियमाधीन (आय्यूब – श्रेष्ठगीत) और अन्तर–बाइबलिय (सभोपदेषक, करीब 180 ई.पू.) दोनों। इसका महत्व व्यावहारिक जीवन–कार्य में विश्वास है (1:3–4)।

ख) कुछ तरिकों से इसकी शैली यहूदी बुद्धि शिक्षकों और युनानी और रोमी नैतिक प्रसिद्ध शिक्षकों के समान है (स्टोइक के समान)। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

1) ढीला ढाँचा (एक विषय से दूसरे विषय में कूदना)

2) अनेक आज्ञावाचक वाक्य (54 के करिब)

3) दोषारोपण (एक काल्पनिक विरोधी जो प्रष्न करता है, 2:18; 5:13)। यह मलाकी, रोमीयों और 1 यूहन्ना की पुस्तकों में भी है।

ग) हालांकि, पुराने नियम से कुछ प्रत्यक्ष रूप में उद्धृत पाए जाते हैं (1:11; 2:8, 11, 23; 4:6), प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के समान पुराने नियम की ओर अनेक संकेत भरे हुए हैं।

ङ) याकूब की रूपरेखा उसकी पुस्तक से भी बड़ी है। यह विषय से विषय में कूदने वाली राबिनी तकनीक को दिखाता है ताकि स्त्रोतागणों के ध्यान को बनाये रखा जा सके। रब्बी लोग इसे 'तारों पर मोती' कहते थे।

च) याकूब पुराने नियम के अनेक साहित्य प्रकारों का मेल दिखाई पड़ता है : 1) बुद्धिमान (ज्ञान के शिक्षक) और 2) भविष्यद्वक्ता (आमोस या यिर्मयाह के समान)। वह पुराने नियम के सत्यों का प्रयोग करता है पर उन्हें यीशु के पहाड़ी उपदेशों की शिक्षाओं में सम्मिलित करता देता है।

7) विषय सूची

क) याकूब नये नियम की अन्य पुस्तकों से, सहदर्शी सुसमाचारों में पाई जाने वाली यीशु की शिक्षाओं की ओर संकेत का प्रयोग करता है (अथार्थ : 1:5, 6, 22; 2:5, 8, 13; 3:12, 18; 4:10, 12; 5:12)। यह भी संभव है कि याकूब यीशु से उद्धृतों को सम्मिलित करता हो (1:27; 2:13; 3:18; 4:11–12, 17)।

ख) याकूब पहाड़ी उपदेश के समानता में है :

याकूब	पहाड़ी उपदेश
1:2	मत्ती 5:1–2
1:4	मत्ती 5:48
1:5	मत्ती 7:7 (21:26)
1:12	मत्ती 5:3–11
1:20	मत्ती 5:22
1:22–25	मत्ती 7:24–27
2:5	मत्ती 5:3 (25:34)
2:8	मत्ती 5:43; 7:12
2:13	मत्ती 5:7 (6:14–15; 18:32–35)
3:6	मत्ती 5:22, 29, 30
3:12	मत्ती 7:16
3:18	मत्ती 5:9; 7:16–17
4:4	मत्ती 6:24
4:11–12	मत्ती 7:1
4:13	मत्ती 6:34
5:2	मत्ती 6:19–20
5:10–11	मत्ती 5:12
5:12	मत्ती 5:34–37

ग) यह व्यावहारिक धर्मविज्ञान है (कर्म बिना विश्वास मृत है)। 108 वचनों में से 54 आज्ञावाचक हैं।

8) <u>नियमाधीनकरण</u>

क) याकूब का शामिल करना बड़ी देर में और कठिन था।

1) रोम से 200 ई0 के नियमाधीन की सूची में याकूब की पुस्तक नहीं थी जिसे मुर्रौटोरियों का लेख कहा जाता है।

2) यह उत्तरी अफरीका की नियमाधीन सूची में भी नहीं थी, 360 ई0, जिसे 'छेलतेनहेम की सूची' कहा जाता था (जिसे कर्ल मोम्मसेन की सूची भी कहा जाता है)

3) यह नये नियम की पुराने लतीनी अनुवाद में भी नहीं था।

4) यूसेबियस इसे विवादिय पुस्तकों की सूची में करता है (इब्रानियों, याकूब, 2 पतरस, 2 और 3 यहून्ना, यहूदा, और प्रकाशितवाक्य), हीस्टोरिकल एकले. 2:23:24–25; 3:25:3।

5) यह चौथी षताब्दी तक पाश्चातीय कलीसिया में ग्रहण नहीं की गई थी और यह पूर्वी कलीसिया में पाँचवीं षताब्दी के पेशीत्ता अनुवाद के पुनः निरिक्षण के समय तक दस्तवेजीत नहीं की गई थी।

6) यह मोपस्युतिया के थियोडोर (397–428 ई0) द्वारा तिरस्कार की गई थी, जो अन्ताकिया के बाइबल की व्याख्या के स्कूल का अगुवा था (उसने सारी कैथोलिक पत्रियों का भी तिरस्कार किया)।

7) ईरासिमुस इसके प्रति संदेह था, जिस प्रकार मार्टिन लूथर, जिन्होंने इसे एक 'तिनके जैसा पत्र' कहा था, क्योंकि उसे लगा कि यह रोमियों और गलातियों के 'विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराये जाने' के विरोधाभास में है।

ख) याकूब के खरेपन का प्रमाण

1) रोम के क्लेमेंट (96 ई0) के लेखों में इसकी ओर संकेत किया गया था और बाद के दूसरी षताब्दी में इग्नेसियस, पॉलिकार्प, जसटिन मार्टियर, और इरेनियुस द्वारा भी।

2) 130 ई0 के निकट एक अनियमाधीन पर प्रसिद्ध मसीही लेख ''षैपर्ड ऑफ हरमस'' में भी इसकी ओर संकेत है।

3) यहून्ना पर अपनी टीका 11:23 में ऑरिगन (185–245 ई0) ने इसे प्रत्यक्ष रूप में उद्धृत किया है।

4) अपने हीस्टोरीकल एक्ल.2:23 में यूसेबियुस ने इसे 'विवादिय पुस्तकों' में रखा था, पर कहा था कि यह अनेक कलीसियाओं द्वारा ग्रहण की जाती है।

5) 412 ई0 के सिरियाई अनुवाद के पुनः निरिक्षण में इसे शामिल किया गया था, जिसे पेशीत्ता कहा जाता है।

6) पूर्व में ऑरिगन और दमश्कि के यूहन्ना और पश्चिम में जेरोम और आगस्टिन के नियमाधीन ने इस पुस्तक को शामिल होने में सहायता की। इसे अधिकारी नियमाधीन की प्रतिष्ठा 393 ई0 में हिप्पो की सभा, और 397 ई0 में कार्थेज की सभा और फिर 419 ई0 में प्राप्त हुआ।

7) यह क्रिसोसतम (345–407 ई0) और थियोड़ोर (393–457 ई0) के द्वारा भी ग्रहण किया गया था, दोनों अन्ताकिया के व्याख्या के स्कूल के अगुवे थे।

9) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड

1) बारह गोत्र, 1:1

2) तितर–बितर हुए लोग, 1:1

3) बात समझो, 1:2

4) प्रतिज्ञा, 1:12

5) जीवन का मुकुट, 1:12

6) न कोई परिवर्तन, न अदल बदल के कारण छाया पडती है, 1:17

7) वचन पर चलनेवाले, 1:22

8) सिद्ध व्यवस्था, 1:25

9) दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं, 2:19

10) और भी दोषी ठहरेगें, 3:1

11) नरक कुण्ड़, 3:6

12) शपथ न खाना, न स्वर्ग की, न पृथ्वी की, 5:12

13) तेल मल कर, 5:14

14) एक दूसरे के सामने अपने–अपने के पापों को मान लो, 5:16

10) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) दुचित्ता व्यक्ति, 1:8

2) ज्योतियों के पिता, 1:17

3) राहाब, 2:25

4) सेनाओं के प्रभु, 5:4

5) अय्यूब, 5:11

6) प्राचीनों, 5:14

7) एलिय्याह, 5:17

11) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु व्यक्ति

कोई नहीं

12) चर्चा के प्रष्न

1) 1:2 कैसे सत्य हो सकता है?

2) प्रार्थना किस प्रकार सीमित है? (1:5–8; 4:1–5)

3) किस प्रकार 1:9 सांस्कृतिक भूमिका की अपेक्षा को उल्टा कर रहा है?

4) 1:13 मत्ती 6:13 के तुल्य कैसे है?

5) 1:22 पुस्तक का षीर्शक कैसे है?

6) क्या 2:1–7 आराधना के संदर्भ या कलीसिया के संदर्भ की बातें कर रहा है?

7) 2:7 एक मसीही की जीवन की किस घटना को दिखा रहा है?

8) 2:10 इतना महत्वपूर्ण सत्य क्यों है?

9) 2:17 ने कलीसिया में इतनी संघर्ष क्यों उत्पन्न किया? (देखें, 2:20)

10) किस प्रकार पौलुस और याकूब अब्राहम के उदाहरण का प्रयोग करते हैं? परन्तु भिन्न तरिकों से?

11) 3:1–5 की बात को अपने शब्दों में समझाएं।

12) संसारिक ज्ञान और स्वर्गीय ज्ञान के बीच के भिन्नता बतायें। (3:15–17)

13) 4:5 की व्याख्या करना कठिन क्यों है?

14) 5:1–6 यहूदी विश्वासियों को चकित क्यों कर देता है?

पतरस की पहली पत्री का परिचय

1) लेखन

क) पतरस प्रेरित के लिए आन्तरिक प्रमाण

1) 1:1 में वर्णित

2) यीशु और बारह के शब्दों और जीवन के अनुभवों की ओर संकेत (अर्थात, 5:1 का चश्मदीद गवाह)।

क) इ. जी. सेलविन की द फस्ट एपीस्टल ऑफ सेन्ट पीटर, 1946 से लिए गये उदाहरण

1:3	यूह.21:27
1:7–9	लूका. 22:31; मरकुस 8:29
1:10–12	लूका 24: 25 से आगे; प्रेरित.15:14 से आगे
3:15	मरकुस 14:29, 71
5:2	यूह.21:15 से आगे

ख) ऐलन स्टिब्स की द फस्ट एपीस्टल जनरल ऑफ पीटर, 1971 से लिया गया उदाहरण

1:16	मत्ती 5:48
1:17	मत्ती 22:16
1:18	मरकुस 10:45
1:22	यूहन्ना 15:12
2:4	मत्ती 21:42 से आगे
2:19	लूका 6:32; मत्ती 5:39
3:9	मत्ती 5:39
3:14	मत्ती 5:10
3:16	मत्ती 5:44; लूका 6:28
3:20	मत्ती 24:37–38
4:11	मत्ती 5:16
4:13	मत्ती 5:10 से आगे
4:18	मत्ती 24:22
5:3	मत्ती 20:25
5:7	मत्ती 6:25 से आगे

3) पतरस के प्रेरितों में प्रचार से शब्दों और वाक्य खण्ड़ों की समानतायें

क) 1:20 – प्रेरित.2:23

ख) 2:7–8 – प्रेरित.4:10–11

ग) 2:24 – प्रेरित.5:30; 10:39 (विषेशकर क्रूस के *जाइलोन* शब्द का प्रयोग)

घ) 4:5 – प्रेरित.10:45

4) समकालीन पहली षताब्दी मिशनरी तुल्नाएं

क) सिलवानुस (सिलास) – 5:12

ख) मरकुस (यूहन्ना मरकुस) – 5:13

ख) पतरस प्रेरित के लिए बाहरी प्रमाण

1) प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा बहुत पहले और विस्तार रूप में ग्रहण किया हुआ

क) एक समान वाक्य खण्ड़ों की रचना, रोम के क्लेमेंट की कुरिन्थियों की पत्री (95 ई0) से उद्धृत।

ख) एक समान वाक्य खण्ड़ों की रचना, सम्भवतः बरनबास से उद्धृत (130 ई0)।

ग) पेपियास की ओर से संकेत, हिरापुलिस का बिशप (140 ई0) युसेबियस की उद्धृत से।

घ) पॉलीकार्प के द्वारा अपनी फिलिप्पियों की पत्री 8:1 में उद्धृत, पर वह 1 पतरस को नाम से नहीं वर्णित करता है (वह 155 ई0 में मरा)।

ङ) इरेनियस के द्वारा उद्धृत (140–203 ई0)।

च) ऑरिगन के द्वारा उद्धृत (185–253 ई0)। ऑरिगन विश्वास करते हैं कि 1 पत.5:13 में जहाँ पर पतरस मरकुस को 'मेरा पुत्र' कह रहा है। इसका अर्थ है कि उसने पतरस का सुसमाचार लिखा।

छ) तरतुल्यन के द्वारा उद्धृत किया गया है (150–222 ई0)।

ग) प्रेरित पतरस का 1 पतरस का लेखक होने को प्रष्न करने के कारण

1) यह मुर्रोटोरियों के लेख में सूचित नहीं है, जो 180–200 ई0 के बीच रोम से नियमाधीन पुस्तकों की सूची थी।

2) इसकी युनानी अच्छी है, उच्च कोइने युनानी भाषा, जो एक अनपढ़ गलीली मछुआरे से आष्चर्य की बात है।

3) यहाँ पर पतरस पौलुस की रोमियों और इफिसियों के समान सुनाई पड़ता है।

4) सताव का वर्णन बाद की तारीख बताता है

क) डोमिश्यिन (81–96 ई0)

ख) त्राजन (98–117 ई0)

ङ) आधुनिक विद्वत्ता के चिताओं के संभव उत्तर

1) मुर्रोटोरियों के लेख जो सम्भवतः समाप्त हो चुके थे और इसमें से कम से कम गध्यांस की एक रेखा खो गई है (देखें, बि. एफ. वेस्टकोट की ए जनरल सर्वे ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट, सम्पादन 6, पृश्ठ 289।

2) पतरस अशिक्षित नहीं था (प्रेरित.4:13), पर राबिनी स्कूल में अनपढ़ था। वास्तिक तौर पर गलील में अधिकत्तर यहूदी जन्म से द्विभाषी होते हैं। इस चर्चा में दूसरा मुख्य मुद्दा पतरस का एक शास्त्री की सहायता है। 1 पत.5:12 के शब्दों से लगता है कि उसने सिलवानुस की सहायता (सिलास) ली थी।

3) पतरस और पौलुस दोनों कई बार प्रारम्भिक कलीसिया के प्रक्षिण या साहित्यिक सामग्री का प्रयोग करते थे। वे कई सालों के लिए सम्बन्धित थे (प्रेरितों, गलातियों, और 2 पतरस 3:15–16)।

पतरस के और पौलुस के लेखों की समानताओं के कारण को पतरस का पौलुस के मिशनरी सहकर्मी सिलानुस के प्रयोग से समझाया जा सकता है। यह अनिश्चित है कि लेखकों ने अपने शास्त्रीयों को बार–बार कितनी स्वतंत्रता दे रखी थी।

4) 1 पतरस जानबुझकर पूरे सम्राज्य के सताव को प्रतिबिम्बित नहीं करता। पतरस का विश्वासियों को शासकों के अधिन रहने का दावा करना एक पूरे सम्राज्य भर के अधिकारी सताव के दिन में असमान्य होगा।

निरो (54–68 ई0) की बढती मानसिक बिमारी (ग्रानदियुस का दावा) ने स्थानिय शासक की आराधना को उत्साहित किया था, विषेशकर आसिया में, ताकि स्थानिय सताव को प्रोत्साहन दे सके। 1 पतरस डोमीसियन या त्राजन के दिनों से निरो के दिनो से अधिक सही लगता है। यह भी संभव है कि कुछ सताव यहूदी समूहों के साथ साथ स्थानिय अधिकारियों और शासक आराधकों से हो सकता है।

ङ) 1 पतरस में स्वयं कुछ नहीं है जो एक बाद की तारीख की मांग करे।

2) <u>तारीख</u>

क) तारीख अवश्य ही लेखन से सम्बन्धित है।

ख) परम्परा पतरस और पौलुस की मृत्यु को रोम में निरो के अधिन में बताती है, सम्भवतः 65 ई0 में। यदि ऐसा है तो 1 पतरस की तारीख 63–64 ई0 के बीच लिखा होना चाहिए।

ग) एक पहली षताब्दी की तारीख संभव हो सकती है यदि 1 पतरस की ओर संकेत रोम के क्लेमेंट द्वारा हुआ है (95 ई0)।

घ) ए. टि. रोबिनसन विश्वास करते हैं कि पतरस की मृत्यु 67–68 ई0 में हो गई थी और 1 पतरस को 65–66 के बीच लिख लिया गया था। मैं सोचता हुँ कि वह 64–65 में मर गया और इससे पहले ही लिखा।

3) <u>स्त्रोतागण</u>

क) पहली षताब्दी की पत्रियों के समान स्त्रोतागणों का वर्णन 1:1 में देखा जा सकता है, उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया, और बिथुनिया में तितर–बितर होकर रहते थे। ये रोमी प्रान्त (धारण करते हुए कि गलातिया उत्तरी जातिय गलातिया है) उत्तरी आधुनिक तुर्कि में है। यह क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें शायद न तो पौलुस और न पतरस ने सुसमाचार प्रचार किया था (1:12)। सम्भवतः ये कलीसियायें पिन्तुकुस्त के दौरान परिवर्तित हुओं से शुरू हुई होगी।

ख) हालांकि मूल रूप से इन कलीसियाओं को पतरस द्वारा पत्र लिखने के समय ये यहूदी विश्वासियों द्वारा शुरू की गई होंगी, पर वे अधिकत्तर अन्यजातिय थीं।

1) 1:14 – पहले परमेश्वर के ज्ञान को नहीं रखते थे।

2) 1:18 – निकम्मा चाल–चलन जो बापदादों से चला आता है।

3) 2:9–10 – अब परमेश्वर के जन हैं।

4) 2:12 – अन्यजातियों के बीच में।

5) 4:3–4 – अन्यजातिय दुर्गुणों की सूची।

ग) यह पुस्तक यहुदी तत्वों को अवश्य रखती है।

1) 'परदेशी', 'तितर–बितर' शब्दों का प्रयोग पुराने नियम की पुष्टभूमि दिखाता है (युहन्ना 9:35; प्रेरित.7:6)।

2) पुराने नियम के शास्त्रों का प्रयोग

क) निर्गमन 19 (2:5, 9)

ख) यशा.53 (1:19; 2:22, 24, 25)

यह उदाहरण एक यहूदी कलीसिया को प्रतिबिम्बित नहीं करता परन्तु

3) इस्त्राएल से कलीसिया की ओर पुराने नियम के षीर्शकों के स्थानान्तरण को दिखाता है (अर्थात, एक 'याजकों का समाज')।

क) 2:5

ख) 2:9

4) एक कलीसिया के प्रषिक्षण दस्तावेज़, जो पुराने नियम के मसीहा के गध्यांसों का प्रयोग करता था।

क) 1:19 – यशा.53:7 (अर्थात : मेम्ना)

ख) 2:22 – यशा.53:5

ग) 2:24 – यशा.53:4, 5, 11, 12

घ) 2:25 – यशा.53:6

घ) हालांकि पतरस को विषेश तौर पर यहूदियों के बीच सेवाकाई की बुलाहट थी (गला.2:8) पर वह, पौलुस के समान, यहुदी और अन्यजातियों दोनों के साथ कार्य करता था (प्रेरित.10)।

4) <u>उद्देश्य</u>

क) 1 पतरस में सैद्धान्तिक और व्यावहारिक अंश दोनों है। परन्तु जिस प्रकार पौलुस अपनी पत्रियों के विभाजन में शुरू में सैद्धान्तिक और अन्त में व्यावहारिक अंश को रखता था, वहाँ पतरस दोनों को एक साथ रखता था। इसकी पुस्तक की रूपरेखा देना कठिन है। अनेक तरिकों में यह पत्री से अधिक एक प्रचार को प्रतिबिम्बित करती है (अर्थात, प्रकार)।

ख) मुख्य चर्चा का विषय यहाँ पर दुःख भोग और सताव है। यह दो तरिकों से हो सकता है।

1) यीशु को दुःख और तिरस्कार सहने के एक सिद्ध उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया गया है (1:11; 2:21, 23; 3:18; 4:1, 13; 5:1, 9, 10)।

2) यीशु के अनुयायीओं को उसके ढ़ंग और स्वभाव को अपनाने की प्रेरणा दी गई है (1:6–7; 2:19; 3:13–17; 4:1,12–19; 5:9)।

ग) मसीहत के प्रारम्भिक दिनों में जब दुःख और सताव अधिक समान्य बात थी, यह चकित होने की बात नहीं है कि कई बार दूसरे आगमन का वर्णन हुआ है। यह पुस्तक, अन्य नये नियम की पुस्तकों के समान, पूर्ण तौर पर अन्तिम दिनों के बारे में है।

5) <u>प्रकार</u> :

क) इस पुस्तक के प्रारम्भ और अन्त में पहली षताब्दी का ग्रिको–रोमी प्रकारात्मक पाया जाता है।

1) 1:1–2

क) लेखक

ख) स्त्रोतागण

ग) प्रार्थना

2) 5:12–14

क) अन्तिम नमस्कार

1) किससे

2) किसके लिए

ख) प्रार्थना

ख) पत्री का मुख्य अंश एक पत्री से अधिक एक प्रचार के समान है। कुछ लोगों की धारणा है कि :

1) पहले एक प्रचार है।

2) पहले एक बपतिस्मा की विधि है।

3) प्रारिम्भक कलीसिया के प्रषिक्षण वस्तुओं के पहले लेखों का संग्रह।

ग) एसा लगता है कि यह पत्री 4:11 के अन्तिम वचनों के साथ समाप्त हो रही है, पर कोई युनानी हस्तलिपी इस बिन्दु पर समाप्त नहीं होती। यह संभव है कि 4:12–5:11 पूरी पत्री का सारांष है।

घ) मैं व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करता हुँ कि 1 पतरस उन कलीसियाओं के लिए एक भेजा हुआ पत्र है जिसे पतरस ने स्वयं शुरू नहीं किया था, उसी प्रकार जैसे पौलुस की कुलुस्सियों की पत्री थी, पर विश्वासियों के लिए एक समान्य उत्साह कि आने वाली समस्याओं के प्रति सतर्क रहें, उसी प्रकार जैसे पौलुस की गलातियों और इफिसियों की पत्रियाँ।

यह पत्री जिस समय पर भेजी वह इसके व्यक्तिगत प्रारम्भ और अन्त के न होने को समझाता है। यह सताव के विषेश उदाहरणों के न होने को भी समझाता है।

6) <u>नियमीकरण</u>

क) मैं 1 पतरस की नियमीकरण की प्रकिया को इसलिए सम्मिलित करता हुँ, क्योंकि 2 पतरस के साथ यह मुद्दा अधिक विवादिय है।

ख) 1 पतरस यूसेबियस की हीस्टोरीकल एक्ले. 3:3:25 की सूची में एक 'अविवादिय पुस्तकों' में वर्णित है। प्रारिम्भक कलीसिया में इस पर कोई संदेह नहीं किया गया कि प्रेरित पतरस ने ही इसे लिखा है।

ग) पतरस के साथ अनेक नकली लेखों को जाड़ने के कारण यहाँ पर नियमीकरण के मुद्दे को उजागर किया जा रहा है। प्रारम्भिक कलीसिया ने इन लेखों को कभी ग्रहण नहीं किया था, केवल 1 पतरस और विवादिय 2 पतरस को ही प्रेरित पतरस की सही पत्रियाँ मना था।

क) पतरस के काम

ख) पतरस और अन्द्रियास के काम

ग) पतरस और पौलुस के काम

घ) पतरस और पौलुस की उमंग

ङ) पतरस और बारह के काम

च) पतरस का रहस्यमय लेख

छ) पतरस का सुसमाचार

ज) पतरस की उमंग

झ) पतरस का प्रचार

ञ) पतरस के दास तंत्र के काम

(इन सभी नकली लेखों की अधिक जानकारी के लिए देखें, जोवर्डन पीक्टोरियल एनसाइक्लोपिडीया ऑफ बाइबल, भाग–4, पृश्ठ 721–723, 732–733, 740)। पतरस के साथ जोड़े गये इन लेखों का कभी गंभीर रूप से नये नियम के नियमीकरण के लिए विचार भी नहीं किया गया था। यह, अपने में और अपने आप से, 1 और 2 पतरस के शामिल करने के बारे में अधिक कहता है।

<u>पतरस, व्यक्ति</u>

1) <u>उसका परिवार</u>

क) पतरस का परिवार गलील के झील (या तिबेरियास का झील, देखें यूह.1:44) के उत्तरी किनारे पर बैतसैदा के नगर में अन्यजातियों की गलील में था, पर किसी कारण वश कफरनहूम की ओर चले गये (मरकुस 1:21, 29)।

ख) पतरस के पिता का नाम योना था (मत्ती 16:17) या यूहन्ना (यूह.1:42; 21:15–17)।

ग) उसका नाम शमौन था (मरकुस 1:16, 29, 30, 36), जो पहली षताब्दी की फिलस्तीन में सामान्य था। यह यहूदी प्रकार का सिम्योन था (प्रेरित.15:14; 2 पत.1:1)।

यीशु ने उसका पुर्ननाम मत्ती 16:18; मरकुस 3:16; लूका 6:14; और यूह. 1:42 में पतरस रखा था (पेतरोस का अर्थ 'चट्टान' है, यह उसके आने वाले सामर्थ्य और निरन्तरता को दिखाने के लिए था)। इसका अरामी प्रकार कैफास है (यूह.1:42; 1कुरि. 1:12; 3:22; 9:5; 15:5; गला.1:18; 2:9, 11, 14)। अनेक बार नये नियम में यह दोनों नाम एक साथ देखे जा सकते हैं (मत्ती 16:16; लूका 5:8; यूह.1:40; 6:8, 68; 13:6, 9, 24, 34; 18:10, 15, 25; 20:2, 6; 21:2–3, 7, 11, 15)।

घ) पतरस के भाई का नाम अन्द्रियास था (मरकुस 1:16)। वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का चेला था (यूह.1:35, 40) और बाद में वह यीशु का विश्वासी और अनुयायी बन गया (यूह.1:36–37)। वह शमौन को यीशु के पास लाया था (यूह.1:41)। अनेक महिनों बाद यीशु गलील की झील में उनका सामना करते हैं और उन्हें अपने अधिकारी पूर्णकालीन चेले होने के लिए बुलाते हैं (मत्ती 4:18–20; मरकुस 1:16–18; और लूका 5:1–11)।

ङ) वह विवाहित था (मरकुस 1:30; 1कुरि.9:5), पर बच्चों का कोई वर्णन नहीं है।

2) <u>उसका व्यवसाय</u>

क) पतरस का परिवार अनेक नावों का मालिक था और दासों से भी काम करता था।

ख) पतरस का परिवार, याकूब, यूहन्ना और उनके पिता जब्दी का सहभागी था (लूका 5:10)।

ग) पतरस यीशु की मृत्यु के बाद कुछ समय के लिए मछली पकड़ने के लिए निकल गया था (यूह.21)।

3) <u>उसका व्यक्तित्व</u>

क) <u>पतरस का बल</u>

1) वह एक समर्पित अनुयायी था, पर बहुत आवेगी था (मरकुस 9:5; यूह.13:4–11)।

2) वह विश्वास के कार्यों की कोशिश करता था, पर अनेक बार असफल हो जाता था (उदा. पानी पर चलना, मत्ती 14:28–31)।

3) वह धैर्यवान और मरने के लिए भी तैयार था (मत्ती 26:51–52; मरकुस 14:47; लूका 22:49–51; यूह.18:10–11)।

4) अपने पुनरूत्थान के बाद यीशु ने उसे व्यक्तिगत तौर पर यूहन्ना 21 में बारहों का अविश्वसनीय अगुवा बनाया था और अगुवाईपन के प्रति पश्चाताप और पुनः स्थापना का एक और मौका दिया।

ख) <u>पतरस की कमज़ोरी</u>

1) उसमें यहूदी कानूनवाद के प्रति प्रारिम्भक लगाव था।

क) अन्यजातियों के साथ संगति (गला.2:11–21)।

ख) भोजन के नियम (प्रेरित.10:9–16)।

2) अन्य सभी प्रेरितों के समान, वह भी यीशु की उमंगी शिक्षाओं और उनके महत्वों को समझने न पाया।

क) मरकुस 9:5–6

ख) यूह.13:6–11; 18:10–11

3) वह अनेक बार यीशु के द्वारा फट़कारा गया था (मरकुस 8:33; मत्ती 16:23)।

4) वह गतसमनी में यीशु के महान घड़ी के समय प्रार्थना करने के बजाय सो रहा था (मरकुस 14:32–42; मत्ती 26:36–46; लूका 22:40–60)।

5) उसने बार–बार यीशु को जानने से इनकार कर दिया था (मरकुस 14: 66–72; मत्ती 26:69–75; लूका 22:56–62; यूह. 18: 16–18, 25 27)।

4) <u>उसका प्रेरितिय समूह का अगुवाईपन</u>

क) प्रेरितों की चार सूचीयाँ है (मत्ती 10:2–4; मरकुस 3:16–19; लूका 6:14–16; प्रेरित. 1:13)। पतरस का नाम हमेशा पहले आता है। बारहों को चार के तीन समूहों में विभाजित किया गया था। मेरा विश्वास है कि इसके कारण वे अपने अपने घरों में परिवारों को देखने भी जा सकते थे।

ख) पतरस हमेशा प्रेरित के समूह के लिए वक्ता का काम करता था (मत्ती 16:13–20; मरकुस 8:27 –30; लूका 9:18–21)। पर इसी संदर्भ में यीशु द्वारा उसे शैतान के यंत्र कहकर ड़ाँट पड़ती है।

और चेले जब विवाद कर रहे थे कि कौन सबसे बड़ा है, पतरस वहाँ पर उस स्थान को लेने की लालसा नहीं करता है (मत्ती 20:20–28, विषेशकर 24 व.; मरकुस 9:33–37; 10 :35–45)।

ख) पतरस यरूशलेम कलीसिया का अगुवा नहीं था। यह जिम्मेदारी यीशु के सौतेले भाई याकूब के ऊपर आ पड़ी थी (प्रेरित.12:17; 15:13; 21:18; 1कुरि.15:7; गला.1:19; 2:9, 12)।

5) <u>यीशु की मृत्यु के बाद उसकी सेवकाई</u>

क) प्रेरितों के पहले अध्यायों में पतरस की अगुवाई को देख सकते हैं।

1) वह यहूदा के बदले में किसी ओर की नियुक्ति की अगुवाई करता है (प्रेरित.1:15–26)।

2) वह पिन्तुकुस्त के समय पहला प्रचार करता है (प्रेरित.2)।

3) वह एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा करता है और दूसरा वर्णित प्रचार भी करता है (प्रेरित.3:1–10; 3:11–26)।

4) वह प्रेरित.4 में महासभा में साहस के साथ बोलता है।

5) वह प्रेरित.5 में हनन्याह और सफीरा के कलीसिया के चेलों पर अध्यक्षता करता था।

6) वह प्रेरित.15:7–11 के यरूशलेम सभा में बोलता है।

7) प्रेरितों में उसके साथ अनेक घटनाओं और चमत्कारों को जोड़ा गया है।

ख) परन्तु पतरस हमेशा सुसमाचार के महत्वों पर ध्यान नहीं देता था।

1) उसमें पुराने नियम की मानोधारणा थी (गला.2:11–14)।

2) कुरनेलियुस (प्रेरित.10) और अन्यजातियों को शामिल करने में उसे विषेश प्रकाशन की अवश्यकता थी।

6) <u>मौन वर्ष</u>

क) प्रेरित.15 की यरूशलेम सभा के बाद पतरस के बारे में कम या काई जानकारी नहीं है।

1) गला.1:18

2) गला.2:7–21

3) 1 कुरि.1:12, 3:22; 9:5; 15:5

ख) प्रारिम्भक कलीसिया की परम्परा

1) 95 ई0 में रोम के क्लेमेंट की कुरिन्थियों की पत्री में रोम में पतरस के शहीद होने का वर्णन है।

2) तरतुल्यन भी (150–222 ई0) पतरस की मृत्यु को रोम में निरो (54–68 ई0) के अधिन में बताते हैं।

3) सिकंदरिया के क्लेमेंट (200 ई0) भी कहतें है कि पतरस की मृत्यु रोम में हुई।

4) ऑरिगन (252 ई0) कहते हैं कि रोम में पतरस को क्रूस पर उलटा लटकाया गया था।

7) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u>

1) भविष्य ज्ञान, 1:2

2) लहु के छिडके जोने, 1:2

3) नया जन्म, 1:3

4) नाना प्रकार की परिक्षाओं, 1:6

5) परखा हुआ विश्वास, 1:7

6) यीशु मसीह के प्रगट होने पर, 1:7, 13

7) आत्माओं, 1:9

8) निर्दोष और निष्कलंक मेम्ना, 1:19

9) जगत की उत्पत्ति से पहले से जाना गया था, 1:20

10) परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन, 1:23

11) निर्मल आत्मिक दूध, 2:2

12) जीवता पत्थर, 2:4

13) याजकों का पवित्र समाज, 2:5

14) कोने के सिरे का पत्थर, 2:6

15) ठेस लगने वाला पत्थर, 2:8

16) अधीन रहो, 2:13

17) पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बितायें, 2:24

18) उसी के मार खाने से तुम चंगे हुये, 2:24

19) करुणामय, 3:8

20) उत्तर देने के लिए तैयार रहो, 3:15

21) बपतिस्मा तुम्हें बचाता है, 3:21

22) परखना, 4:12

23) सामना करो, 5:9

8) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1) बुलानेवाला पवित्र है, 1:15

2) प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष, 2:25

3) प्रचीनों, 5:1

4) प्रधान रखवाला, 5:4

5) सिलावानुस, 5:12

6) मरकुस, 5:13

9) <u>मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान</u>

1) पुन्तुस, 1:1

2) गलातिया, 1:1

3) कप्पदुकिया, 1:1

4) आसिया, 1:1

5) बिथुनिया, 1:1

6) सियोन, 2:6

7) बेबीलोन, 5:13

10) चर्चा के प्रष्न

1) विश्वासी की मिरास का वर्णन किजिये। (1:4–5)

2) 1:11 को अपने शब्दों में समझाएं

3) यह कैसे है कि स्वर्गदूत भी जानना चाहते हैं? (1:12)

4) मसीहियों को किस प्रकार 1:16 की आज्ञा माननी चाहिये?

5) एक व्यक्ति उद्धार के प्रति कैसे बढता है? (2:2)

6) 2:5 और 9 क्यों महत्वपूर्ण हैं?

7) 2:16 किस प्रकार रोमि.14 से सम्बन्धित है?

8) 3:3 किस प्रकार आज के संदर्भ से सम्बन्धित है?

9) अपने जीवन साथी के साथ हमारा सम्बन्ध किस प्रकार प्रार्थना को प्रभावित करता है? (3:7)

10) यीशु कैदी आत्माओं को प्रचार करने कहाँ गया था? (3:19)

11) 3:22 को ज्ञानवादी धर्मविज्ञान के प्रकाश में समझाएँ।

12) 1 पतरस का समान्य विषय क्या है?

पतरस की दूसरी पत्री का परिचय

1) प्राक्कथन वचन

क) इस परिचय का उद्देश्य या लक्ष्य पतरस की दूसरी पत्री की कृतित्व से सम्बन्धित समस्याओं पर चर्चा करना नहीं है। मैं व्यक्तिगत तौर पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हुँ कि पतरस की कृतित्व को इनकार करने का कोई कारण नहीं है। यह श्रोत इस मुद्दे पर विचार करने में सहायक है।

1) ब्रूस एम. मेत्जगर का लेख, लीट्रेरी फॉरग्रीस एण्ड केनोनिकल स्यूड्रोफीग्राफा इन द जनरलस ऑफ द सोसाइटी ऑफ बीबलीकल लीटरेचर, 1972, पृश्ठ 3–24।

2) माइकल जे. क्रुगर का लेख, ''द ऑथेन्टीसीटी ऑफ 2 पीटर,'' इन द जनरल ऑफ इवान्जलीकल थियोलौजीकल सोसाइटी, भाग 42, अंक 4, पृश्ठ 645–671.

3) ई. एम. बि. ग्रिन की पुस्तक, 2 पीटर रीकन्सीडरड़, टीण्डेल प्रैस, 1961.

ख) जिस प्रकार मैं पतरस की दूसरी पत्री के पतरस के लेखन पर संदेह करता हुँ, तो अनेक बातें मेरे मन से होकर जाती हैं।

1) जिसने भी पतरस की दूसरी पत्री लिखी हो परन्तु यह मेरे विश्वास को नहीं बदलता कि यह प्रेरित और विश्वासयोग्य है। कृतित्व व्याख्या को प्रभावित कर सकता है, प्रेरित होने को नहीं, जो एक विश्वास की पुर्वधारणा है और एक दस्तावेज की ऐतिहासिक प्रकिया है।

2) क्यों मैं एक नकली लेखक होने की चिन्ता करता हुँ? दिखावटी तौर पर पहली षताब्दी की ग्रिको–रोमी दुनिया इस प्रकार की चिज़ों से सुपरिचित थी (मेत्जगर की लेख)।

3) क्या मैं अपनी ही प्राथमिक्ताओं के कारण इसे अनुमति देता हुँ, या मैं ईमानदारी से इसके ऐतिहासिक प्रमाणों और पाठ–आलोचन का मुल्यांकन करता हुँ। क्या परम्परा ने मुझे एक विषेश निष्कर्ष पर स्थगित कर दिया?

4) प्रचीन कलीसिया ने पतरस के लेखन पर संदेह किया था, पर पुस्तक के संदेश पर नहीं (सिरियन कलीसिया के सिवाय)। यह अन्य नये नियम की पुस्तकों के साथ धर्मविज्ञानिक एकता रखने वाला एक परांपरागत संदेश है और प्रेरितों में पतरस के संदेश के साथ अधिक मेल खाता है।

ग) यूसेबियुस ने मसीही लेखों के वर्णन के लिए तीन वर्गों का प्रयोग किया था :

1) ग्रहण की गई

2) विवादिय

3) उग्रवादी

उसने पतरस की दूसरी पत्री को याकूब, यहूदा, यूहन्ना की दूसरी पत्री, और यूहन्ना की तीसरी पत्री को वर्ग 2) में रखा। यूसेबियुस ने पतरस की पहली पत्री को ग्रहण किया, पतरस की दूसरी पत्री के बारे में संदेह था, और पतरस की अन्य काल्पनिक लेखों को उग्रवादी के तौर पर उनका इनकार किया; 1) पतरस के काम, 2) पतरस का सुसमाचार; 3) पतरस का प्रचार ; और 5) पतरस का रहस्यमय लेख

2) <u>लेखन</u>

क) पारम्परिक लेखन को लेकर नये नियम में यह सबसे विवादिय पुस्तक है।

ख) इन संदेहों के कारण आन्तरिक (शैली और विषय सूची) और बाहरी (इसको विलम्भ से ग्रहण करना) दोनों है।

<u>आन्तरिक कारण</u>

1) शैली

क) इसकी शैली पहले पतरस से अधिक भिन्न है। यह ऑरिगन और जेरोम के द्वारा पहचाना गया था।

1) ऑरिगन ने स्वीकार किया कि कुछ लोगों ने पतरस के लेखन का इनकार किया है, पर वह अपने लेखों में 6 बार पतरस की दूसरी पत्री से उद्धृत करता है।

2) जेरोम ने इसका कारण पतरस का एक अन्य शास्त्री का प्रयोग बताया है। वह यह भी स्वीकार करता है कि कुछ लोग उसके समय में पतरस के कृतित्व का इनकार करते थे।

3) यूसेबियुस अपनी चितांओं को सम्बोधित अपनी हीसटोरीकल एक्ले. 3:3:1 में करते हैं : 'परन्तु यह दूसरी पत्री कहलाई जाने वाली पत्री को नियमीकरण में स्वीकार नहीं किया गया है, परन्तु यह कई लोगों के लिए उपयोगी दिखाई पड़ती है, इसे अन्य लेखों के साथ पढ़ा जा रहा है।

ख) पतरस की दूसरी पत्री की शैली विषेश है। ऐंकर बाइबिल, पृष्ठ 146–147, में याकूब, पतरस और यहूदा की पत्रियों को बि. रेईकि 'आसियावाद' कहते हैं।

'इसे आसिया की शैली इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी मुख्य लेखन प्रकार आसिया से आते हैं, और इसकी विषेशता एक भरी हुई, शब्द बहुलता, उच्च स्तरिय व्यक्तिकरण का ढँग जो नवीनता और अनोखापन, और समान्यता की उच्च आर्दश का उल्लंघन करने के प्रति अचिन्तित रहने की ओर ले जाता है... हमारी पत्री असंदेह से आसिया के स्कूल के नियमों के अनुसार लिखी गई है जो पहली मसीही षताब्दी के समय अधिक मुख्य थी।

ग) यह संभव है कि पतरस ने इसी एक भाषा में लिखने की कोशिश की (कोईने युनानी भाषा) जिसमें वह पूर्ण कार्यरत नहीं था। उसकी मातृ भाषा आरामी थी।

2) <u>प्रकार</u>

क) क्या यह पहली षताब्दी की प्रकार की पत्री है?

1) इसमें एक प्रकार का प्रारम्भ और अन्त है।

2) परन्तु यह अनेक कलीसियाओं को भेजी गई पत्री जैसी दिखती है, जैसे गलातियों, इफिसियों, याकूब, और यूहन्ना की पहली पत्री।

ख) यह एक विषेश यहूदी प्रकार की हो सकती है जिसे 'नियम' (टेस्टमेंट) कहते हैं, जिसकी यह विषेशताएं हैं :

1) अन्तिम वचन

क) व्यवस्थाविवरण 31–33

ख) यहोशु 24

ग) बारह पित्रों का नियम

घ) यूह.13–17

ङ) प्रेरित.20:17–28

2) एक सन्निकट मृत्यु की भविष्यवाणी (देखें, तीमुथियुस)

3) उसके सुनने वालों के लिए निर्देश कि वह अपनी परम्परा में बने रहें।

3) 2 पतरस 2 और यहूदा के बीच सम्बन्ध

क) यहाँ पर अवश्य कुछ साहित्यिक लेन देन हुआ है।

ख) अनियमीकरण की ओर संकेत ने अनेकों को यहूदा और 2 पतरस का इनकार करने को मजबूर किया होगा, पर 1 पतरस भी 1 हानोक की ओर संकेत करता है और पौलुस युनानी कवियों को भी उद्धृत करता है।

4) यह पत्री स्वयं् प्रेरित पतरस से होने का दावा करती है।

क) यह नाम 1:1 में है। उसे शमौन पतरस कहा गया है। उसे यीशु द्वारा पतरस नाम दिया गया था (मत्ती 16)। शमौन नाम बहुत ही असाधारण और असामान्य है। यदि कोई और पतरस के नाम से लिख रहा होता तो इस नाम का चुनाव नकली नाम के लिए अधिक चकित करने वाला और उच्च परिणाम के विरूध है।

ख) वह 1:16–18 में यीशु के रूपान्तर की चश्मदीद गवाह होने का दावा करता है (मत्ती 17:1–8; मरकुस 9:2–8; लूका 9:28–36)।

ग) वह पहली पत्री को लिखने का दावा करता है (3:1), जो पहला पतरस है।

5) परम्परानिष्ठता

क) इस पत्री में कुछ भी ऐसा नहीं है जो नये नियम की प्रेरितों की शिक्षा के विपरीत हो।

ख) यहाँ पर कुछ विषेश वस्तुएं हैं (अर्थात, संसार का अग्नि द्वारा भस्म होना और पौलुस के लेखों को शास्त्र के रूप में देखना), पर कोई ज्ञानवादी या दत्तकिय या झूठी शिक्षा नहीं है।

बाहरी कारण

1) यूसेबियुस पहली और दूसरी षताब्दियों के मसीही लेखों को तीन वर्गों में रखते हैं :

1) ग्रहण की गई

2) विवादिय

3) उग्रवादी

पतरस की दूसरी पत्री, इब्रानियों के साथ, याकूब, यहूदा, यूहन्ना की दूसरी पत्री, और यूहन्ना की तीसरी पत्री को विवादिय वर्ग में रखा है।

2) यूसेबियुस ने मसीही लेखों के वर्णन के लिए तीन वर्गों का प्रयोग किया थाः

1) ग्रहण की गई

2) विवादिय

3) उग्रवादी

उसने पतरस की दूसरी पत्री को याकूब, यहूदा, यूहन्ना की दूसरी पत्री, और यूहन्ना की तीसरी पत्री के वर्ग में रखा।

2) पतरस की दूसरी पत्री मार्सियों की नियमाधीनकरण (150 ई0) में नहीं शामिल की गई थी, पर मार्सियन ने अनेक नये नियम की पुस्तकों को भी शामिल नहीं किया गया था।

3) पतरस की दूसरी पत्री मुर्रौटोरियों के लेखों में भी दिखाई नहीं देती है (180–200 ई0), पर सूची नुकशान दायक नज़र आती है और यह इब्रानियों, याकूब, या पहली पतरस की भी सूची नहीं देती है।

4) यह पूर्वी कलीसिया (सिरियन) द्वारा तिरस्कृत की गई थी।

क) पेशित्ता में नहीं है (पाँचवी षताब्दी का पहला अंश)।

ख) यह ईराक से फिलोज़िनियाना (507 ई0) में सम्मिलित थी और उत्तरी अफ्रिका से हरक्लियन अनुवाद (616 ई0) में भी।

ग) मेपुसिया के क्रिसोसटम और थियोडोर (अन्ताकिया के व्याख्या की स्कूल के अगुवे) ने सारे केथोलिक पत्रियों का इनकार किया था।

5) पतरस की दूसरी पत्री नाग हमाटी ज्ञानवादी लेखों में 'सत्य की सुसमाचार' और 'यूहन्ना की अप्रमाणिक लेख' में उद्धृत मिलती है (देखें, द नाग हमाटी नॉस्टीक टेक्सटस् एण्ड द बाइबल, ऐंद्रयु. के. हेल्मबोल्ड़ द्वारा)। यह लेख कोप्ट भाषा में है जो पहली युनानी लेखों का अनुवाद है। यदि पतरस की दूसरी पत्री की ओर संकेत हुआ है तो इसका दूसरी षताब्दी में लिखा जाना असंभव होगा।

6) यह पी[72] में सम्मिलित है, यू बी एस[4] पृश्ठ 8 के द्वारा इसकी तारीख तीसरी या चौथी षताब्दी में बताई गई है।

7) यह रोम के क्लेमेंट के द्वारा सांकेतित या उद्धृत की गई है (95 ई0)।

क) 1 क्लेमेंट (9:2 – 2पतरस 1:17)

ख) 1 क्लेमेंट (23:3 – 2पतरस 3:4)

ग) 1 क्लेमेंट (35:5 – 2पतरस 2:2)

8) यह जेसटिन मार्टियर (115–165 ई0) के डायलॉग वीद ट्रायफो 82:1 में सांकेतित है – 2 पतरस 2:1। प्राचीन मसीही लेखों में केवल यही दो स्थानों पर युनानी शब्द *स्यिूड़ोप्पोफिताई* का प्रयोग हुआ है।

9) इरेनियस (130–200 ई0) सम्भवतः दूसरी पत्री की ओर संकेत कर रहा है (वह युसेबियुस के द्वारा हीसटोरीकल एक्ले. 5:32:2 – 2 पतरस 3:8 और 3:1:1 – 2पतरस 1:15 में उद्धृत किया गया है)।

10) सिकंदारिया के क्लेमेंट (150–215 ई0) ने 2 पतरस पर पहली टीका लिखी (हालांकि यह अभी मौजुद नहीं है)।

11) यह अथनेसियस की ईस्टर पत्री (367 ई0) में दिखाई देती है। जो एक वर्तमान नियमीकरण की सूची थी।

12) लौदिकिया (372 ई0) और कार्थेतेज (397 ई0) की प्रारम्भिक कलीसिया की सभा द्वारा इसे नियमीकरण में शामिल किया गया था।

13) यह आष्चर्य की बात है कि पतरस के अन्य धारणित लेखों को (पतरस के काम, पतरस और अन्द्रियास के काम, पतरस और पौलुस के काम, पतरस और पौलुस की उमंग, पतरस और बारह के काम, पतरस के रहस्यमय लेख, पतरस का सुसमाचार, पतरस की उमंग, पतरस का प्रचार, पतरस के दास तंत्र के काम पतरस के काम) प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा उग्रवादी (अर्थात, अप्रेरित) करके इनकार कर दिया था।

3) <u>तारीख</u>

क) यह कृतित्व पर निर्भर करता है।

ख) यदि कोई पतरस की कृतित्व पर विश्वास करता है तो यह उसके मृत्यु से पहले होगी (1:14)।

ग) कलीसिया की परम्परा दावा करती है कि पतरस रोम में मारा गया जब निरो षासक था। निरो ने 64 ई0 में मसीहियों के विरूध सताव आरम्भ किया। उसने 68 ई0 में आत्महत्या कर ली।

घ) यदि पतरस के अनुयायी ने उसके नाम से लिखा होगा, तो एक बाद की तारीख 130–150 ई0 संभव हो सकती है क्योंकि दूसरे पतरस की उद्धृत पतरस के रहस्यमय लेख और साथ ही साथ सत्य के सुसमाचार और यूहन्ना के अप्रमाणिक लेख में हुई।

ङ) सुपरिचित अमेरीकि पुरातत्वविज्ञानी डब्लयू. एफ. आलब्राईट इसके सोड़म सागर के लेखों के साथ समानत के कारण 80 ई0 से पहले लिखा हुआ मानते हैं।

4) <u>स्त्रोतागण</u>

क) यदि 2 पतरस 3:1 में 1 पतरस की ओर संकेत किया गया है तो स्त्रोतागण एक ही होंगे (अर्थात, उत्तरी तुर्कि के लोग)।

ख) 2 पतरस सभी विश्वासियों को परिक्षा में धीरज़ रखने, झूठे शिक्षकों का सामना करने, और दूसरे आगमन की अपेक्षा में सुसमाचार की परम्परा में विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिए एक प्रभावषाली पत्री हो सकती है।

5) <u>प्रसंग</u>

क) जैसे 1 पतरस सताव और दुःख भोग को सम्बोधित करता है, वैसे ही 2 पतरस झूठे शिक्षकों को सम्बोधित करता है।

ख) झूठी शिक्षा का सही स्वभाव निश्चित नहीं है, पर यह विधि विरोधी (ऐंटिमोनियन) प्रकार का ज्ञानवाद है (देखें, 2:1–22; 3:15–18)। यह पुस्तक प्रारम्भिक ज्ञानवाद और रहस्य धर्मों के प्रयोग के तकनीकी शब्दभण्डार का प्रयोग करती है। यह उनके धर्मविज्ञान का सामना करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण लिखित सफ़ाई हो सकती है।

ग) यह पुस्तक, 2 थिस्सलुनीकियों के समान, एक विलम्भित, पर निश्चित दूसरे आगमन को सम्बोधित करती है, जब परमेश्वर के संतान महिमा को पाएंगे और अविश्वासियों का न्याय होगा (देखें, 3:3–4)। यह रूचिकर बात है कि पहला पतरस

यीशु के पुनः आगमन के लिए *एपोकेलुप्सिस* शब्द का प्रयोग करता है, पर 2 पतरस *परूसिया* शब्द का प्रयोग करती है। यह सम्भवतः भिन्न शास्त्रियों के प्रयोग को दिखाता है (जेरोम)।

6) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड

1) दास, 1:1

2) ईश्वरीय सामर्थ्य, 1:3

3) भक्ति, 1:3

4) ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी, 1:4

5) अनन्त राज्य, 1:11

6) मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आनेवाला है, 1:14

7) अपने प्रभु यीशु मसीह का आगमन, 1:16

8) हम ने आप ही उसके प्रताप्त को देखा है, 1:16

9) मेरा प्रिय पुत्र, 1:17

10) भोर का तारा चमक उठे, 1:19

11) झूठे भविष्यद्वक्ता, 2:1

12) झूठे शिक्षक, 2:1

13) उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया, 2:4

14) नरक (अथार्थ, तारतारूस), 2:4

15) प्रभुता को तुच्छ जानते हैं, 2:10

16) स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में उनसे बड़े हैं, 2:10

17) पवित्र आज्ञा, 2:21

18) परमेश्वर के उस दिन की बाट जोहना, 3:12

19) नया आकाश और नई पृथ्वी, 3:13

20) निष्कलंक और निर्दोष, 3:14

7) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) नुह, 2:5

2)लूत, 2:7

3) बिलाम, 2:15

8) मानचित्र पर ध्यान देने वाले स्थान

कोई नहीं

9) चर्चा के प्रष्न

1) क्या 1:1 परमेश्वर को परमेश्वर कहता है?

2) 1:10 किस प्रकार परमेश्वर की सनातनता और मानव स्वेच्छा को सम्बोधित करती है?

3) यीशु ने पतरस को अपनी मृत्यु के बारे में कब कहा? (1:14)

4) अध्याय 1 यीशु के साथ पतरस के दिनों की किस प्रकार सूची देता है।

5) 1:20–21 किस महान सत्य का दावा करता है?

6) अध्याय 2 में झूठे शिक्षकों के वर्ग की सूची दिजिये।

7) क्यों 2:1 'उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेगें' दुःख–दायक है?

8) 2:8 क्यों चकित करने वाला है?

9) 2:20 को अपने शब्दों में समझाएं।

10) 3:4 में झूठे शिक्षक वास्तव में क्या दावा करते हैं?

11) पृथ्वी जल में से बनी है ऐसा क्यों कहा गया है? (3:5)

12) 3:8 का क्या महत्व है?

13) 3:9ब किस प्रकार 1 तीमु.2:4 से सम्बन्धित है?

14) बाइबिल में और कहाँ पर 3:10 का सत्य बताया गया है?

15) पतरस का पौलुस के बारे में वर्णन करना क्यों महत्वपूर्ण है?

16) दूसरे पतरस का मुख्य विषय क्या है?

यूहन्ना की पहली पत्री का परिचय

1) पुस्तक की विषेशता

क) पहली यूहन्ना की पत्री एक व्यक्तिगत पत्री नहीं है, यह मुख्य कार्यालय से एक आवेगपूर्ण कार्यालय का ज्ञापन या स्मरण पत्र है (सामूहिक पत्री)।

1) इसमें कोई पारम्परिक परिचय नहीं है (किससे, किसके लिए)।

2) इसमें कोई व्यक्तिगत अभिवादन या अन्तिम वचन नहीं है।

ख) कोई व्यक्तिगत नामों का वर्णन नहीं है। यह बहुत ही असामान्य है। नये नियम में कृतित्व को न रखनेवाली पुस्तकें केवल इब्रानियों और यूहन्ना की पहली पत्री हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि यह उन विश्वासियों के लिए लिखी गई जो वर्तमान में झूठे शिक्षकों के एक आन्तरिक कलीसिया की समस्या का सामना कर रहे थे।

ग) यह पत्री एक सामर्थ्य धर्मविज्ञानिक लेख है।

1) यीशु की केन्द्रियता

क) परिपूर्ण परमेश्वर और परिपूर्ण मानव

ख) उद्धार यीशु मसीह पर विश्वास से आता है, यह कोई रहस्यमय अनुभव या रहस्यमय ज्ञान नहीं है (झूठे शिक्षक)।

2) मसीही जीवन शैली की मांग

क) भाईचारे का प्रेम

ख) आज्ञाकारिता

ग) भौतिक संसार का त्याग

3) यीशु नासरी पर विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन का आश्वासन ('जानो 'शब्द का प्रयोग 27 बार)।

4) झूठे शिक्षकों को कैसे पहचाने

घ) नये नियम की किसी भी पुस्तक में से इसमें सबसे जटिल कोईने युनानी भाषा का प्रयोग किया गया है, परन्तु यह पुस्तक, किसी और से अधिक, यीशु मसीह में अद्‌भुत और अनन्त सत्यों की गहराई को बताती है।

ङ) यह संभव है कि पहली यूहन्ना की पत्री यूहन्ना के सुसमाचार के लिए एक सह पत्र हो। पहली षताब्दी की ज्ञानवादी झूठी शिक्षा दोनों पुस्तकों के लिए पृष्ठभूमि बनती है। यूहन्ना के सुसमाचार का सुसमाचार–प्रचार का कार्य था, पर पहली यूहन्ना की पत्री विश्वासियों के लिए लिखी गई थी।

सुपरिचित टीकाकार वेस्टकोट ने दावा किया था कि सुसमाचार यीशु के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है, जबकि पहली यूहन्ना की पत्री उसके मनुष्यत्व की पुष्टि करती है। यह पुस्तकें साथ–साथ की हैं।

च) यूहन्ना दैतवादी शब्दों का प्रयोग करता है। यह सड़ोम सागर की लेखों (मृत सागर कुण्डलपत्र) और ज्ञानवादी शिक्षकों की विषेशता थी। पहली यूहन्ना का रचित साहित्यिक दैतवाद मौखिक (ज्योति विरोध अंधकार) और शैलीगत (एक नकारात्मक वाक्य के साथ एक सकारात्मक वाक्य को लगाना) दोनों है। यह यूहन्ना के सुसमाचार से भिन्न है, जो उदग्र दैतवाद को सम्मिलित करती है (ऊपर के वचनों से नीचे)।

छ) यूहन्ना के निरन्तर विषयों के इस्तामाल से पहली यूहन्ना की रूपरेखा देना कठिन है। यह पुस्तक एक ही तरह की दोहराने वाली रीति की एकसाथ सीले गए सत्यों की रचना है (देखें, बिल हेंद्रिक्स की टापेस्ट्रीस ऑफ ट्रूथ, द लैटर ऑफ जॉन)।

2) लेखक

क) पहली यूहन्ना की पत्री के कृतित्व का मुद्दा यूहन्ना द्वारा लिखी गई पुरी पत्रियों का मुद्दा है – सुसमाचार, पहला यूहन्ना, दूसरा यूहन्ना, तीसरा यूहन्ना और प्रकारशितवाक्य।

ख) यहाँ पर दो मूल स्थान हैं

1) पारम्परागत

क) प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा के पित्रों के बीच सहमती है कि यूहन्ना, वह चेला जिससे यीशु प्रेम करता था, पहली यूहन्ना की पत्री का लेखक है।

ख) प्रारम्भिक कलीसिया के प्रमाणों का सारांष

1) रोम के क्लेमेंट (90 ई0) पहली यूहन्ना की ओर संकेत करते हैं।

2) स्मुर्ना के पॉलीकार्प, फिलिप्पियों (110–140 ई0) में पहली यूहन्ना को उद्धृत करते हैं।

3) जसटिन मार्टियर के डाइलॉग 123:9 (150–160 ई0) में वह पहली यूहन्ना की पत्री को उद्धृत करते हैं।

4) इन लेखों में पहली यूहन्ना के ओर संकेत हुआ है

क) अन्ताकिया के इग्नेसियस (उसके लेखों की तारीख अनिश्चित है, पर प्रारम्भिक तारीख 100 ई0 हो सकती है)।

ख) हिरापुलिस के पेपियास (50–60 ई0 के बीच जन्म और 155 ई0 के निकट शाहिद हो गए)।

5) लियोंस के इरेनियुस (130–202 ई0) पहली यूहन्ना की पत्री का लेखक प्रेरित यूहन्ना को मानते हैं। तरतुल्यन, एक प्रारम्भिक सफाई देने वाले लेखों को लिखने वाले जिन्होंने झूठे शिक्षकों के विरूध करिब 50 पुस्तकें लिखीं है, अनेक बार पहली यूहन्ना की पत्री को उद्धृत करते थे।

6) अन्य प्रारम्भिक लेख जो प्रेरित यूहन्ना को लेखक स्वीकार करते हैं वे क्लेमेंट, ऑरिगन और डायोनिसियस, तीनों सिकंदरिया से हैं, मुर्रौटोरियों के लेख (180–200 ई0) और यूसेबियुस (तीसरी षताब्दी)।

7) जेरोम (चौथी षताब्दी के दूसरे भाग में) ने यूहन्ना की कृतित्व को स्वीकार किया, पर यह ग्रहण किया कि कुछ लोगों ने उसके दिनों में यह इन्कार किया था।

8) मोपुसिया के थियोड़ोर, 392–428 ई0 से अन्ताकिया के बिशप, ने यूहन्ना के कुतित्व का इन्कार किया।

ग) यदि यूहन्ना लेखक है तो, हम यूहन्ना प्रेरित के बारे में क्या जानते हैं?

1) वह जब्दी और सलोमी का पुत्र था।

2) गलील के झील में अपने भाई के संग एक मछुआरा था (सम्भवतः अनेक नावों का मालिक था)।

3) कुछ विश्वास करते हैं कि उसकी माता, मरिय्यम, यीशु की माता, की बहिन थी (देखें, यूहन्ना 19:25; मरकुस 15:20)।

4) इसी कारणवश वह धनी था क्योंकि उसके पास :

क) मज़दूर थे।

ख) अनेक नावें थीं।

ग) यरूशलेम में एक घर था (मत्ती 20:20)।

5) यूहन्ना के पास यरूशलेम में महायाजक के घर में जाने का अधिकार था, जो बताता है कि वह एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति था (यूह.18:15–16)।

6) यह यूहन्ना था जिसके पास मरिय्यम, यीशु की माता, को सौंपा गया।

घ) प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा एकमत होकर गवाही देती है कि यूहन्ना अन्य सभी प्रेरितों से अधिक जीवित रहा, और यरूशलेम में मरिय्यम की मृत्यु के बाद वह आसिया चला गया और उस क्षेत्र के सबसे बड़े नगर इफिसुस में बस गया। इस नगर से उसे पतमुस टापू (उस तट के पास ही में) में भेज दिया गया था और बाद में वह छूट गया और इफिसुस वापस आ गया (यूसेबियुस पॉलीकार्प, पेपियास और इरेनियुस को उद्धृत करते हैं)।

2) <u>आधुनिक विद्वत्ता</u>

क) अधिकत्तर आधुनिक विद्वान सभी यूहन्ना के लेखों में समानता देखते हैं, विषेशकर वाक्य खण्ड़, शब्दभण्ड़ार, और व्याकरण के प्रकारों में। एक अच्छा उदाहरण इन लेखों की विषेशता बताने वाला अग्रही विरोधाभास : जीवन बनाम मृत्यु, सत्य बनाम झूठापन। इसी प्रकार के अग्रही दैता को हम उस समय के लेखों में भी देख सकते हैं; सड़ोम सागर के लेखों (मृत सागर कुण्डलपत्र) और प्रारम्भिक ज्ञानवादी लेख।

ख) पारम्परिक तौर पर यूहन्ना को लेखक माने जाने वाले लेखों के बीच के अन्तर–सम्बन्ध को लेकर अनेक विचार हैं। कुछ समूह कृतित्व का दावा एक व्यक्ति पर करते हैं, दो व्यक्ति, तीन इत्यादि। ऐसा प्रतित होता है कि यूहन्ना के सभी लेख एक ही व्यक्ति के विचार हैं, चाहे उसे अनेक चेलों के द्वारा लिखित रूप दिया गया हो।

ग) मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि यूहन्ना, वृद्ध प्रेरित, ने इफिसुस में अपनी सेवकाई के अन्त में सभी पाँच पुस्तकें लिखी थीं।

3) <u>तारीख – निश्चिय ही यह कृतित्व से सम्बन्धित है</u>

क) यदि यूहन्ना प्रेरित ने इन पत्रियों को लिखा है, विषेशकर पहली यूहन्ना को, तो हम कुछ पहली षताब्दी के अन्त के निकट की बात कर रहे हैं। यह ज्ञानवादी झूठे धर्मविज्ञान/तत्वज्ञान के विकास का समय था और पहली यूहन्ना की पत्री के शब्द भण्ड़ार में सही प्रतित होता है (बालकों) जो एक वृद्ध व्यक्ति का जवान विष्वासियों के समूह से बातें करने को दिखाता है। जेरोम कहते हैं कि यूहन्ना यीशु की मृत्यु के बाद 68 साल जीवित रहा था। यह इस परम्परा से सही प्रतित होता है।

ख) ऐ. टि. रोबिनसन का विचार है कि पहली यूहन्ना की पत्री को 85–95 ई0 के बीच लिखा गया, जबकि सुसमाचार को 95 ई0 के निकट लिखा गया था।

ग) आई. होवर्ड़ मार्शल की यूहन्ना की पहली पत्री पर द न्यू इन्टरनेषनल कॉमेन्ट्री श्रंखला दावा करती है कि 60–100 ई0 के बीच की एक तारीख इतनी निकट है जितनी आधुनिक विद्धत्ती यूहन्ना के लेखों का तारीख का मुल्यांकन करना चाहेगी।

4) <u>स्त्रोतागण</u>

क) परम्परा दावा करती है कि यह पुस्तक आसिया के मुख्य महानगर इफिसुस होने के बावजूद यह रोमी प्रान्त को लिखी गई थी।

ख) यह पत्री आसिया में एक विषेश कलीसियाओं के समूह को लिखी गई थी जो झूठे शिक्षकों द्वारा समस्या का समना कर रही थी (जैसे, कुलुस्सियों और इफिसियों)।

ग) अगस्टिन कहते हैं कि यह पार्थियों (बेबिलोनियों) को लिखा गया था। केसियोड्रस भी यही कहते हैं (प्रारम्भिक छठवीं षताब्दी)। यह सम्भवतः इस वाक्य खण्ड़ के अस्मंजस्ता के कारण हुआ होगा, 'चुनी हुई महिला' और 'जो बेबिलोन में', जो 1 पतरस 5:13 और 2 यूह.1 में प्रयोग की गई है।

घ) मुर्रोटोरियों के लेख, रोम में 180–200 ई0 के बीच लिखे गए नये नियम की एक प्रारम्भिक नियमीकरण सूची, दावा करती है कि यह पत्री 'उसके सह चेलों और बिशपों को निर्देश देने के बाद' लिखी गई थी।

5) <u>झूठी शिक्षा</u>

क) यह पत्री स्वयं एक प्रकार की झूठी शिक्षा के विरूध प्रतिक्रिय है (देखें, 'यदि हम कहें...'1:6 से आगे और 'जो कोई यह कहता है...' 2:9; 4:20 {दोषारोपण})।

ख) पहली यूहन्ना के कुछ प्रमाणों से हम इस झूठी शिक्षा के कुछ मूल सिद्धांतों को सीख सकते हैं।

1) यीशु का इस संसार में देह धारण करके आना।

2) उद्धार में यीशु की मुख्यता का इन्कार करना।

3) एक सही मसीही जीवन शैली की कमी।

4) ज्ञान को महत्व देना (अनेक बार रहस्यमय)।

5) व्यावर्तकतावाद की ओर लगाव।

ग) पहली षताब्दी का संदर्भ

पहली षताब्दी का रोमी संसार पूर्वी और पश्चिमी धर्मों के बीच एक उदारता का समय था। युनानी और रोमी सर्वेश्वर ईश्वरों की प्रसिद्धता नहीं थी। रहस्य धर्म देवता के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध और रहस्य ज्ञान जैसे तत्वों के कारण अधिक सुप्रसिद्ध था। भौतिक युनानी दर्शनशास्त्र भी अधिक प्रसिद्ध था। इस प्रकार के उदार धर्मों के संसार में मसीह विश्वास की व्यावर्तकता आयी (यीशु ही परमेश्वर की ओर जाने का मार्ग है, देखें, यूह.14:6)। झूठी शिक्षा की पृष्टभूमि कोई भी हो, यह मसीहत की दिखावटी सीमा को विस्तृत युनानी–रोमी स्त्रोतागणों के लिए एक विश्वासनीय और प्रज्ञात्मक तौर पर ग्रहणयोग्य बनाना था।

घ) कुछ संभव विकल्प, कि यूहन्ना किस ज्ञानवादी समूह को सम्बोधित कर रहा है।

1) प्रारम्भिक ज्ञानवाद

क) पहली षताब्दी के प्रारम्भिक ज्ञानवाद की मूल शिक्षा में आत्मा और वस्तु के बीच एक अनन्त दैतावाद को महत्व दिया गया। आत्मा (उच्च परमेश्वर) को अच्छ समझा जाता था, जबकि वस्तु जन्मजात से बुरा था। यह दैतवाद अध्यात्मवाद की काल्पनिक बनाम वास्तविकता, स्वर्गीय बनाम भौतिक, अदृश्य बनाम प्रगट को दिखाता है। वहाँ पर रहस्यमय ज्ञान की महत्वता (रहस्यमय शब्द जो एक आत्मा को स्वर्गदूतों के स्तर से उच्च ईश्वर की ओर ले जाता है) को उद्धार के लिए अधिक महत्वता दी जाती थी।

ख) पहली यूहन्ना की पृष्ठभूमि में दिखावटी तौर पर प्रारम्भिक ज्ञानवाद के दो प्रकार हो सकते हैं।

1) प्रतीयमानवादात्मक ज्ञानवाद, जो यीशु की सही मानवता का इन्कार करता है, क्योंकि वस्तु बुरी है।

2) सेरिन्थसयों का ज्ञानवाद, जो मसीह को अनेक ऐंयोंस या अच्छे उच्च ईश्वर और बुरी वस्तु के बीच के स्वर्गदूतों में से एक बताता है। इस 'मसीह आत्मा' ने व्यक्ति यीशु में उसके बपतिस्मे के समय वास किया और उसके क्रूसीकरण के पहले उसे छोड़ दिया।

3) इन दोनों समूहों में से कुछ लोगों ने अविवाहित रहने का अनुकारण किया (यदि शरीर उसे चाहता है तो यह बुरा है), और दूसरी विधिविराधिता (यदि शरीर चाहता है तो उसे दो)। पहली षताब्दी के विकसित ज्ञानवाद के कोई लिखित प्रमाण नहीं है। यह केवल दूसरी षताब्दी से बाद ही दस्तावेजित किए गए। ज्ञानवाद के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें,

क) हेंस जोनास की द नॉस्टीक रीलीजन, बैकॉन प्रैस द्वारा प्रकाषित

ख) ईलाइन पगेल्स की द नॉस्टीक गॉस्पलस, रेण्डम हॉउस द्वारा प्रकाषित

2) इग्नेसियस अपने लेखों 'स्मुरनियों के लिए 4:5' में इस झूठी शिक्षा के लिए एक और संभव स्त्रोत की सलह देते हैं। उन्होंने यीशु के देह धारण का इन्कार किया और विधिविरोधि जीवन को जीना शरू किया।

3) दूसरी कम सम्भावित झूठी शिक्षा का स्त्रोत अन्ताकिया के मियांडर हो सकता है, जो इरेनियुस के लेखों अगेन्सट हेरसीस 13 के नाम से जाना जाता है। वह सामरी शैमोन का अनुयायी था और एक रहस्यमय ज्ञान की वकालत करने वाला था।

ङ) आज के समय की झूठी शिक्षा

1) जब लोग मसीही सत्य को अन्य विचारों के सिद्धान्तों से जोडते हैं तो इस झूठी शिक्षा की आत्मा हमारे साथ आज भी है।

2) जब लोग व्यक्तिगत सम्बध और विश्वास रहित जीवन शैली 'सही' सिद्धान्त को महत्व देते हैं तो इस झूठी शिक्षा की आत्मा हमारे साथ आज भी है।

3) जब लोग मसीहत को केवल बोधिक उच्चस्तर में परिवर्तित कर देते हैं तब यह झूठी शिक्षा की आत्मा हमारे साथ आज भी है।

4) जब लोग वैराग और विधिविरोधिवाद की ओर मुढ़ते हैं तो इस झूठी शिक्षा की आत्मा हमारे साथ आज भी है।

6) <u>उद्देश्य</u>

क) इसमें विष्वासियों के लिए एक व्यावहारिक निर्देश हैं।

1) उनका आनन्द पूरा हो जाए (1:4)

2) उन्हें एक भक्ति के जीवन को जीने के लिए उत्साहित करने के लिए (1:7)।

3) मसीह में उनके उद्धार का निश्चय देने के लिए (5:13)।

4) उन्हें एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा देने (स्मरण दिलाने) के लिए।

ख) इसमें विष्वासियों के लिए एक सैद्धान्तिक लक्ष्य हैं।

1) यीशु के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व को अलग करने की गलती का खण्ड़न करने के लिए।

2) आत्मिकता को एक भक्ति रहित बोधिकवाद में अलग करने की गलती का खण्ड़न करने के लिए

3) इस गलती का खण्ड़न करने के लिए कि एक दूसरे से अलग होकर उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं।

7) <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड</u>

1) आदि से, 1:1

2) जीवन के वचन, 1:1

3) अनन्त जीवन, 1:2

4) सहभागिता *(कोइनोनिया),* 1:3

5) परमेश्यवर ज्योति है, 1:5

6) चलें, 1:6, 7

7) यीशु का लहु, 1:7

8) मेरे बालको, 2:1

9) प्रायश्चित,2:2;4:10

10) जान लेगें, 2:3, 4, 18, 20, 21, आदि

11) बना रहना, 2:6, 17, 24, 25, 27, आदि

12) नई आज्ञा, 2:7

13) उसके नाम से, 2:12

14) संसार, 2:15

15) अन्तिम समय, 2:18

16) अभिषेक, 2:20, 27

17) मान लेना, 2:23; 4:2, 3, 15, आदि

18) आत्माओं को परखों, 4:1

19) न्याय के दिन, 4:17

20) परमेश्वर से उत्पन्न, 5:18

8) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) सहायक, 2:1

2) झूठा, 2:4, 22

3) मसीह का विरोधी, 2:18; 4:3

4) जो तुम्हें भरमाते हैं, 2:26

5) शैतान, 3:8, 10

6) कैन, 3:12

7) दुष्ट, 5:18

9) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान

कोई नहीं

10) चर्चा के प्रष्न

1) 1 यूह.1:1–4 में हमारी इन्द्रियों को प्रतिबिम्बित करने वाली इतनी क्रियाओं का प्रयोग क्यों हुआ है?

2) 1:9 इतना महत्वपूर्ण वचन क्यों है? यह किस से बात कर रहा है?

3) आप 1:10 को 3:6 और 9 से कैसे जोड़ सकते हैं?

4) पहली यूहन्ना में 'जानना' शब्द का प्रयोग अनेक बार क्यों हुआ है? इसके इब्रानी अर्थ को बताइये।

5) इस निरन्तर वाक्य 'यदि हम कहें...' का क्या अर्थ है?

6) यूहन्ना किन झूठे शिक्षकों का सामना कर रहा है? उनके मत को समझाएं जो बाइबलीय मसीहत के विरोधाभास में है।

7) 3:2 किस सिद्धान्त से सम्बन्धित है?

8) 3:6 और 9 की व्याख्या करना क्यों कठिन है?

9) 4:8 झगडालु मसीहियों से कैसे सम्बन्धित है?

10) त्रिएकता के विचार को हम 4:13 –14 में पाते हैं। इसे अपने शब्दों में समझाएं।

11) 4:19 को अपने शब्दों में समझाएं।

12) 1 यूहन्ना में तीन परिक्षाएं हैं जो एक विश्वासी को मसीह होने का निश्चय देती हैं। इन तीनों की सूची दें।

13) 5:13 इतना महत्वपूर्ण वचन क्यों हैं?

14) 5:14–15 क्या विष्वासियों को वचन देता है कि उन्हे प्रार्थनाओं का हमेशा सकारात्मक उत्तर प्राप्त होगा?

15) मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप कौन सा है? (5:16)

16) क्या 5:18 विष्वासियों को वचन देता है कि वे शैतान के द्वारा कभी भी परखे नहीं जाएंगे? क्यों या क्यों नहीं?

17) इस वाक्य का क्या अर्थ है 'सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है'?

यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री का परिचय

1) प्राक्कथन

क) मैं यह सही में विचार करता हुँ कि यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री एक स्थानिय कलीसिया के लिए एक संतुलित संदेश का रूप लेती है, सम्भवतः आसिया के किसी रोमी प्रान्त में, पहली षताब्दी के अन्त में।

ख) यूहन्ना की दूसरी पत्री प्रारम्भिक झूठे शिक्षकों का सामना करती है, जबकि तीसरी पत्री प्रारम्भिक मसीही प्रचारकों की सहायता करने के लिए निर्देश देती है।

ग) यूहन्ना की तीसरी पत्री में तीन भिन्न लोगों के नाम बताए गए हैं :

1) गयुस (प्राप्तकर्ता कलीसिया में एक भक्तिपूर्ण व्यक्ति)

क) बाइबल के अन्य भागों में तीन गयुस नामक व्यक्तियों के नाम हैं : मकिदुनिया का गयुस, प्रेरित.19:29; दिरबे का गयुस, प्रेरित.20:4; कुरिन्थुस का गयुस, रोमी.16:23; 1 कुरि.1:14।

ख) 'प्रेरितों के संविधान' के लेख में तीसरी यूहन्ना की पत्री के गयुस का वर्णन, यूहन्ना द्वारा नियुक्त, पिरगमुन के बिशप, के रूप में है।

2) दियुत्रिफेस (प्राप्तकर्ता कलीसिया में समस्या को उत्पन करने वाला एक भक्तिहीन व्यक्ति)

क) नये नियम में इस व्यक्ति का वर्णन केवल यहीं हुआ है। उसका नाम बहुत ही कम पाया जानेवाला है जिसका अर्थ 'जूस का पाला–पोसा हुआ' है। यह कितनी विपरीत बात है कि 'जूस' के नाम का व्यक्ति यात्रियों के विरूध है, जबकि जूस 'यात्रीयों का रक्षक था'।

ख) उसके चरित्र का विवरण 9–10 पदों में दिया गया है।

3) दिमेत्रियुस (इस स्थानिय कलीसिया में यूहन्ना की पत्री को ग्रहण करने वाला था)

क) सम्भवतः वह एक यात्रा करने वाला मिश्नरी था और इफिसुस में प्रेरित से इस पत्री को ले जाने वाला था।

ख) 'प्रेरितों के संविधान' नामक परम्परा में दिमुत्रियुस को यूहन्न द्वारा नियुक्त फिलदिलफिया का बिशप बताया गया है।

घ) प्रारम्भिक कलीसिया इस बात से संघर्ष कर रही थी कि किस प्रकार यात्रा करने वाले प्रचारकों/शिक्षकों/सुसमाचार प्रचारकों का मुल्यांकन और सहायता करें। एक प्रारम्भिक अनियमीकरण लेख, द डीडाके ऑर द टीचिगं ऑफ द ट्वैल्व अपोस्टीस, में इन निर्देशों की सूची है :

पाठ 11 – शिक्षकों, प्रेरितों, और भविष्यद्वक्ताओं के लिए

इस कारण जो कोई आकर यह सब बातें सिखायें जो पहले से सिखाई गई हैं, उसे ग्रहण करो। पर यदि कोई शिक्षक स्वयं् फिरकर और इसके विनाश के लिए अन्य दूसरे सिद्धान्त को सिखायें, उसकी न सुनो; पर यदि वह इसलिए सिखायें कि धार्मिकता और प्रभु के ज्ञान को बढ़ाएं, उसे प्रभु जैसे ग्रहण करो। परन्तु प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लिए, सुसमाचार के नियम के अनुसार यह करो : होने दो कि हर प्रेरित जो तुम्हारे पास आता है वह प्रभु के समान ग्रहण हो। पर वह एक दिन के अलावा न रहे; पर यदि अवश्यकता हो, तो दूसरे दिन भी; पर यदि वह तीन दिन से अधिक ठहरे, तो वह झूठा भविष्यद्वक्ता है। और जब प्रेरित चला जाए, तो कुछ न ले जाए परन्तु केवल रोटी जहाँ तक वह रख सके; पर यदि वह पैसे मांगे तो वह झूठा भविष्यद्वक्ता है।' (पृष्ठ 380)

पाठ 12 – मसीहियों का सत्कार

'पर काई भी आत्मा में कहे, मुझे धन दें, या कुछ और तो तुम उनकी न सुनो; पर यदि वह कहे कि दूसरे के लिए दें जो जरूरत में है, तो कोई उसका न्याय न करे।

पर हर कोई जो प्रभु के नाम से आता है उसे ग्रहण करो, और फिर तुम उसे साबित करोगे और जानोगे; क्योंकि तुम्हें दायें और बायें समझ होगी। यदि जो आए वह पद यात्री हो, तो जहाँ तक हो सके उसकी सहायता करो; पर वह तुम्हारे साथ दो या तीन दिन से अधिक न रहे, यदि अवश्यकता हो। पर यदि वह तुम्हारे साथ वास करना चाहे, एक कारिगर होने पर, वह कार्य करे और भोजन करे; पर यदि वह कोई कार्य नहीं जानता हो तो, अपनी समझ से यह देखो कि एक मसीही होने के कारण वह तुम्हारे साथ व्यर्थ न रहे। पर यदि वह ऐसा न करना चाहे, तो वह एक अवैध–मसीही है। ऐसे लोगों से चौकस रहो।'(पृष्ठ 381)

2) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड

1) आदि से, 1:1

2) परमेश्वर ज्योति है, 1:5

3) मान लें, 1:9

4) मेरे बालको, 2:1

5) सहायक, 2:1

6) प्रायश्चित, 2:2

7) जान लेंगे, 2:3

8) बना रहना, 2:6

9) संसार से प्रेम न करो, 2:15

10) अन्तिम समय, 2:18

11), अभिषेक, 2:27

12) आत्मा और पानी और लहु, 5:8

13) मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप, 5:16

14) अपने आप को मूरतों से बचाये रखो, 5:21

8) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) जीवन के वचन, 1:2

2) मसीह का विरोधी, 2:18

3) मसीही विरोधियों, 2:18

4) चुनी हुई महिला, 1 व.

5) उसके बच्चों, 1 व.

6) तेरी चुनी हुई बहिन के बच्चे, 2 यूह.13 व.

7) गयुस, 3 यूह.9 व.

8) दियुत्रिफेस, 3 यूह. 9व

9) दिमेत्रियुस, 3 यूह. 12

4) मानचित्र पर ध्यान देनेवाले स्थान

कोई नहीं

5) चर्चा के प्रश्न

1) 1:1–5 में हमारे इन्द्रियों से सम्बन्धित इतनी सारी क्रियायें क्यों है?

2) कुछ लोग क्यों कहेंगे कि उनमें पाप नहीं है? (1:8)

3) 2:2 यूह.3:16 से कैसे सम्बन्धित है?

4) 2:7–8 को अपने शब्दों में समझाएं।

5) 2:12–14 कलीसिया में भिन्न उम्र के वर्गों से सम्बन्धित है या सभी मसीहियों से?

6) 2:22–23 को ज्ञानवादी धर्मविज्ञान के प्रकाश में समझाएं।

7) 2:28–3:3 के अंश का मुख्य विषय क्या है?

8) 3:6 और 9 की व्याख्या करना क्यों कठिन है?

9) क्या 3:15 पहाड़ी उपदेश से सम्बन्धित है?

10) 3:20 को अपने शब्दों में समझाएं।

11) हम किस प्रकार आत्माओं को परख सकते हैं? (4:1–6)

12) 4:2 ज्ञानवादी धर्मविज्ञान से कैसे सम्बन्धित है?

13) 4:7–24 का मुख्य सत्य क्या है?

14) 5:13 किस प्रकार पूर्ण पुस्तक के शीर्षक का कार्य करता है?

15) क्या परमेश्वर सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं? (5:14–15)

16) क्या 2 यूह.10 किसी घर या कलीसिया की ओर संकेत कर रहा है?

17) क्या 3 यूह.2 एक ऐसा पद है जो स्वास्थ और सम्पन्नता का वायदा करता है?

यहूदा की पत्री की परिचय

1) प्रारम्भिक वाक्य

क) यहूदा की पत्री गलती, विद्रोह, और न्याय के निरन्तर खतरे की चेतावनी देने वाली पुस्तक है। विश्वासियों को हरदम सतर्क रहना है। उनकी सुरक्षा 1) पिता की बुलाहट, प्रेम, और सामर्थ्य और 2) वचन के ज्ञान, भक्ति जीवन, और घायल हुये विष्वासियों के प्रति दया में है।

ख) परन्तु, इन चेतावनियों के बीच भी, यहूदा का अन्तिम वचन परमेश्वर के बचानेवाले सामर्थ्य के आश्वासन का एक सामर्थ्यशाली प्रार्थना है।

ग) यहूदा और दूसरे पतरस के बीच की सम्बन्ध अनिश्चित है कि :

1) कौन सी पहले लिखी गई थी।

2) उनमें इतनी समानता क्यों हैं परन्तु तब भी वे भिन्न क्यों हैं?

3) कोई कैसे आने वाली झूठी शिक्षा और वर्तमान झूठी शिक्षा का वर्णन दे सकता है।

4) क्या प्रारम्भिक कलीसिया का कोई दस्तावेज़ था जिससे दोनों ने सहायता ली।

5) क्या विद्रोह के उदाहरण में कोई विश्वासी शामिल थे।

घ) यह पुस्तक इन बातों के बीच धर्मविज्ञान के संतुलन दिखाती है।

1) परमेश्वर का सुरक्षित रखनेवाला सामर्थ्य (पद. 1, 24)

2) विष्वासियों का अपने आप को बनाये रखना (पद. 21)

2) लेखक

क) यहूदा (इब्री, यहूदा, या युनानी, युदास) अपने आप को दो उपनाम देता है :

1) 'यीशु मसीह का दास' – यह पौलुस की समान उपनाम जैसा नहीं है, हालांकि वे एक समान दिखाई देते है। पौलुस हमेशा संज्ञा 'दास' को पहले रखता था, उसके बाद सम्बन्ध कारक शब्द का प्रयोग करता था। दूसरे पतरस में भी ऐसा ही है।

परन्तु यहूदा में शब्दों का क्रम याकूब के समान ही है(सम्बन्ध कारक शब्द पहले)।

2) 'याकूब का भाई' – याकूब के नाम से नये नियम में कई लोग हैं, यह नाम स्वयं ही बिना किसी विवरण के, हमें याकूब 1:1 का स्मरण दिलाता है। याकूब, यीशु का सौतेला भाई, पौलुस के मिशनरी यात्रा के समय में वह यरूशलेम

कलीसिया का अगुवा था (प्रेरित.15)। ऐसी धारणा की जाती है कि दोनों सौतेले भाईयों ने, अपनी नम्रता से, चुना कि वे यीशु के साथ वास्तविक भाई होने की पहचान नहीं करेंगे।

ख) इस पत्री का सामान्य प्रारम्भ प्रारम्भिक कलीसिया में एक सुपरिचित और कार्यरत व्यक्ति को प्रतिबिम्बित करता है (1 कुरि.9:3), परन्तु इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। यदि कोई बाद के समय में भूतकाल के एक सुपरिचित व्यक्ति के नाम से लिखना चाहता हो (नकली लेख), तो यहूदा एक अच्छा दावेदार नहीं है।

ग) एक प्रचीन परम्परा कि यहूदा एक इब्रानी मसीही और यीशु का सौतेला भाई है (देखें, मत्ती 13:55; मरकुस 6:3) अनेक धारणाओं पर आधारित है :

1) याकूब के साथ एक पारिवारिक सम्बन्ध (याकूब 1:1)

2) पुराने नियम का विस्तार से प्रयोग

3) 'तीन' विशेश इब्रानी साहित्यों का प्रयोग

क) तीन धर्मत्याग की पुरानी नियम की घटनायें

ख) तीन पुराने नियम के चरित्र

ग) प्रारम्भिकभिक अभिवादन

1) तीन क्रियायें : 'बुलाये गये हो', 'प्रियो', 'बने रहना'

2) तीन प्रार्थनाओं की विनतीयाँ : 'दया', 'शान्ति', और 'प्रेम'

घ) यहूदा की युनानी शैली और प्रकार अच्छि लिखी *कोईने* युनानी भाषा है। यह यहूदा के महानगरीय अनुभव से होगा (1कुरि.9:5)।

वह व्यक्तित्व में याकूब के समान है; इस पाप और विद्रोह के संसार में भक्ति के जीवन जीने की अवश्यकता के लिए वह एक अर्थपूर्ण सिधे तरीके का प्रयोग करता है।

3) <u>तारीख</u>

क) यहाँ पर कोई निश्चयता नहीं है, पर केवल धारणायें हैं।

ख) आईए हम कुछ अनुमानों पर नज़र डालें

1) यहूदा के जीवनकाल के समय यदि वह याकूब का छोटा भाई और यीशु का सौंतेला भाई होता

2) पतरस की दूसरी पत्री के साथ यहूदा की पत्री का साहित्यिक सम्बन्ध। यहूदा में 25 वचनों में से, 16 वचनों का (पद. 3–18) दूसरा पतरस 2:1–18 से कुछ सम्बन्ध है। यदि पतरस की दूसरी पत्री का लेखक पतरस है तो तारीख उसके जीवनकाल के निकट है (वह 64 ई0 में मारा गया था)। परन्तु यह अनिश्चित है कि कौन किसे उद्धृत कर रहा है :

क) दूसरा पतरस यहूदा को उद्धृत कर रहा है।

ख) यहूदा दूसरे पतरस को उद्धृत कर रहा है।

ग) दोनों प्रारम्भिक प्रशिक्षण दस्तावेज़ या कलीसिया की परम्परा का प्रयोग कर रहे हैं।

ग) इस पुस्तक की विषय सूची एक मध्य–पहली षताब्दी की तारीख देती है। झूठी शिक्षा के विकास के लिए पर्याप्त समय निकल चुका थी। प्रेरितों की शारीरिक उपस्थिति अभी समाप्त हुई थी (18–19 पद)। परन्तु एक समान सिद्धान्त विकसित नहीं हुआ है। यहूदा झूठे शिक्षकों की नैतिक समस्या का वर्णन करता है, परन्तु उनकी सैद्धान्तिक गलतियों की चर्चा नहीं करता। वह पुराने नियम के उदाहरणों का प्रयोग करता है, यीशु की शिक्षाओं का नहीं (उद्धृति या कहानियाँ)।

घ) हीसटोरीकल एक्लेसीआसटीकस 3:19:1–20 में यूसेबियुस एक परम्परा का वर्णन करते हैं 1) कि यहूदा के नाते पोतों को देशद्रोह के अरोप में ड़ोमिश्यन के पास रोम ले जाया गया था; 2) कि वे यहूदी राजवंशावली से थे; और 3) कि वे यीशु नासरी के रिश्तेदार थे। ड़ोमिश्यन का शासन 81–96 ई0 के बीच था।

ङ) 60 –80 ई0 के बीच की तारीख संभव हो सकती हैं।

5) <u>स्त्रोतागण और प्रसंग</u>

क) प्रारम्भिक कलीसिया धर्मविज्ञानीकिय एकाश्म नहीं थी; प्रेरित भी सुसमाचार के भिन्न–भिन्न पहलुओं को महत्व देते थे। जैसे–जैसे प्रेरितों की मृत्यु हो रही थी (या वे कम हो गये थे और सलाह लेने के लिए अधिक दूरी पर थे) और दूसरा आगमन विलंबित हो रहा था, प्रारम्भिक कलीसिया ने सुसमाचार की शिक्षओं की ग्रहणयोग्य सीमाओं का मानकीकरण करने की चुनौति का सामना किया। पुराना नियम, यीशु के शब्द और कहानियाँ, और प्रेरितों का प्रचार मानक बन गये।

ख) यहूदा स्पष्ट अधिकार के परिवर्तन और विदारण के दिन में लिखी गयी थी। विश्वासी लोग (एक स्थानिय कलीसिय या एक भौगोलिक क्षेत्र अनिश्चित है) कल्पित धर्मविज्ञान और तत्व–ज्ञान के द्वारा गलतियों के भारी प्रहार का सामना कर रहे थे। इस झूठी शिक्षा के बारे में क्या जानकारी है :

1) यह झूठे शिक्षक कलीसिया सभाओं के भागी थे (प्रेम सभाओं, पद.12)।

2) यह झूठे शिक्षक अनैतिक, भरमानेवाले शिक्षक थे जो परमेश्वर के लोगों के बीच विभाजनों उत्पन कर रहे थे (पद.19)।

3) यह झूठे शिक्षक अपने धर्मविज्ञान में 'स्वर्गदूतों' की चर्चा करते दिखाई देते हैं।

4) ऐसा दिखाई देता है कि इन झूठे शिक्षकों ने ज्ञान (*नोसिस*) को महत्व दिया था।

यदि कोई पहली और दूसरी षताब्दियों के ग्रिको–रोमी संसार से परिचित हो, तो जान लेगा कि ये विशेशताएं तत्व–ज्ञान/धर्मविज्ञान के आंदोलन को दिखाती हैं जिसे 'ज्ञानवाद' कहते हैं। यह सही में सत्य है कि दूसरी षताब्दी की इन विषेश झूठी शिक्षाओं की उत्पत्ति में निकटिय पूर्वी विचारों के समान तत्व थे। दैतवाद के तत्व जो ज्ञानवाद के विषेशण हैं जो सड़ोम सागर के लेखों (मृत सागर कुण्डलपत्र) में पाए गए हैं। अनेक नये नियम की पुस्तकें (इफि.–कुलु., पासवानी पत्रियाँ, 1, 2, 3 यूहन्ना)इस प्रकार की झूठी शिक्षाओं/शिक्षकों का सामना करने के लिए लिखी गई थीं।

5) <u>उद्देश्य</u>

क) लेखक उनके सामूहिक उद्धार के बारे में लिखना चाहता था (पद. 3)।

ख) कलीसिया की आन्तरिक संगति के समय (पद.12) इन झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों के प्रहार ने लेखक को 'उस विश्वास के लिए...जो पवित्र लोगों को एक बार सौंपा गया था' (पद. 3,20) के गंभीर मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए मज़बूर किया। उसका लक्ष्य परम्परागत था, पर उसने उस विषय को भक्तिपूर्ण जीवन (व्यावहारिकता), ना की सिद्धान्त (याकूब 2:14–24 के समान) के द्वारा सुलझाया। लोग जिस प्रकार जीवन जीते हैं वह उनके धर्मविज्ञान को दिखाता है।

ग) लेखक को इन बातों के प्रति विष्वासियों को उत्साहित करना था :

1) आत्मिकता में बढ़े (पद. 20)।

2) उद्धार को लेकर निश्चित रहें (पद. 21, 24–25)।

3) गिरे हुओं को उठायें (पद. 22–23)।

6) <u>नियमीकरण</u>

क) प्रारम्भ में इस पुस्तक को ग्रहण किया गया था (करीब 94 ई0 में रोम के क्लेमेंट के द्वारा उद्धृति), फिर यह विवादित रही और अन्तिम में पूर्णता से ग्रहण किया गया (325 ई0 में निसिया की सभा में, 397 ई0 में कार्थेज़ की सभा में)।

ख) नियमाधीन को न पाने का कारण इसमें अनियमीकरण की पुस्तकों से उद्धृति का होना था (पहली हानोक और मुसा की धारणायें)। यह पुस्तकें, विषेशकर पहली हानोक, पहली षताब्दी के विष्वासियों के मध्य में अधिक भेजी गई और धर्मविज्ञानिक तौर पर अधिक प्रभावशाली थीं।

1) यह एक समस्या क्यों है? क्या इसका अर्थ है कि अनियमाधीन पुस्तकों के पास अधिकार नहीं है?

क) पुराना नियम अप्रेरितिय लेखों को उद्धृत करता है (देखें, गिनती 21:14–15, 26–30 {गिनती 22–23 में बिलाम की भविष्यद्वाणियाँ}; यहोशु 10:13; 2 शमु.1:18; 1 राजा 11:14; 14:19, 29; 15:7, 23, 31)।

ख) यीशु ने अनियमाधीन स्त्रोतों का प्रयोग बातों को समझाने के लिए किया (मत्ती 23:35)

ग) स्तिफानुस ने अनियमाधीन स्त्रोतों का प्रयोग किया (प्रेरित.7:4, 14–16)

घ) पौलुस ने अनेक बार अनियमाधीन स्त्रोतों का प्रयोग किया

1) रब्बानि मिद्रास मसीह के प्रति की वो वह चट्टान है जो इस्त्राएल के संतानों के साथ जंगल में साथ–साथ चलती थी (1 कुरि.10:4)।

2) निर्गमन 7:11, 22; 8:7 से फिरोन के तांत्रिकों के नाम (2 तीमु.3:8) जो कुछ अन्तर–नियमीय यहूदी लेखों से लिए गए हैं।

3) युनानी लेखक

क) कवि अरातूस (प्रेरित.17:28)

ख) कवि मिनांदर (1 कुरि.15:33)

ग) कवि एपिमेनिड़स या यूरिपस (तितुस 1:12)

ङ) याकूब ने 5:17 में रब्बानि परम्परा का प्रयोग किया है।

च) यूहन्ना ने प्रकाश.12:3 में निकटीय पूर्वी ब्रहमांड़ विद्या की काल्पनिक कहानियों का प्रयोग किया हैं।

2) यहूदा ने इस अनियमाधीन के स्त्रोतों का प्रयोग क्यों किया है?

क) सम्भवतः यह झूठे शिक्षकों द्वारा स्वतंत्रता से प्रयोग की जा रही थी।

ख) सम्भवतः उन पुस्तकों का आदर किया जा रहा था और प्राप्तकर्ताओं द्वारा पढ़ा जा रहा था।

ग) यहूदा की नियमाधीनता इनके द्वारा सहायता पा रही थी :

1) इनके द्वारा उद्धृत या संकेत किया गया है

क) रोम के क्लेमेंट (94–97 ई0)

ख) पॉलीकार्प (110–150 ई0)

ग) इरेनियुस (130–202 ई0)

घ) तरतुल्यन (150–220 ई0)

ङ) ऐथिनागोरस (177 ई0)

च) ऑरिगन (185–254 ई0)

(इन जानकारियों को इन्टरनेषनल क्रीटीकल कॉमेन्ट्री, पृश्ठ 305–308 से लिया गया है)

2) नामांकित की गई हैं

क) सिकंदरिया का क्लेमेंट (150–215 ई0)

ख) यरूशलेम का सिरिल (315–386 ई0)

ग) जेरोम (340–420 ई0)

घ) आगस्टिन (400 ई0)

3) इन के नियमीकरणों में सूचीत हैं।

क) मुर्रौटोरियों के लेख (200 ई0)

ख) बरोकोक्सिया (206 ई0)

ग) एथेनिसियस (36 ई0)

4) इन सभाओं के द्वारा निर्देशित की गई हैं

क) निसिया (325 ई0)

ख) हिप्पो (393 ई0)

ग) कार्थेज़ (397 और 419 ई0)

5) इन अनुवादों में यह उपस्थिति है।

क) पुरानी लतीनी (150–170 ई0)

ख) सिरियाई पुनरीक्षण, पशित्ता (पाँचवीं षताब्दी ई0)

घ) बाद की कलीसिया यहूदा को नियमीकरण के स्तर के बारे में निश्चित नहीं था। यूसेबियुस ने इसे विवादिय पुस्तकों की सूची में रखा था (हीसटोरीकल एक्ले. 3:25)। क्रिसोसतम और जेरोम दोनों इसके नियमीकरण को लेकर विवाद के कारण इसमें अनियमाधीन पुस्तकों की उद्धृतों को बताते हैं। इसका, पतरस की दूसरी पत्री, यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री के साथ प्रारम्भिक सिरियाई कलीसिया द्वारा इन्कार कर दिया गया था।

ङ) पहले हानोक के बारे में कुछ शब्द। इसे मूल तौर पर इब्रानी भाषा में लिखा गया था (पर अब यह खो गयी है, सडोम सागर के लेखों के मध्य कुछ आरामी भाषा के लेखों के अलावा), युनानी में इसका अनुवाद हुआ था (केवल कुछ टुकड़े बचे हैं) और इथियोपीयई भाषा में 600 ई0 के करीब प्रतिलिपी बनाई गयी थी (केवल एक प्रतिलिपी बची है)। यह पुस्तक अन्तर–बाइबलीय समय में लिखी गई थी, पर कई बार इसमे सम्पादकिय कार्य किया गया, जैसा कि इथियोपिय प्रतिलिपियाँ बताती हैं। यह प्रारम्भिक कलीसिया में अधिक प्रभावशाली थी; तरतुलियन इसको एक वचन के समान उद्धृत करते हैं। इसका

वर्णन बरनबास की पत्री में हुआ है (एक शास्त्र के रूप में) और इरेनियुस और सिकंदरिया के क्लेमेंट के द्वारा। चौथी षताब्दी तक इसने प्रारम्भिक कलीसिया में अपना प्रभाव खो दिया था।

7) संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़

1) वह उद्धार...जिसमें हम सभी सहभागी होगें, पद. 3

2) वह विश्वास...जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था, पद. 3

3) लुचपन, पद. 4

4) अपने निज निवास, पद. 6

5) अन्धकार में सदा काल के लिए बन्धनों में रखा है, पद. 6

6) पराये शरीर, पद. 7

7) आग के अनन्त दण्ड़, पद. 7

8) प्रेम की सभाओं, पद. 12

9) पवित्रों, पद. 14

10) पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, पद. 20

11) एकमात्र परमेश्वर, पद. 25

8) संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति

1) कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, पद. 4

2) जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिन न रखा, पद. 6

3) मीकाईल, पद. 9

4) बिलाम, पद. 11

5) कोरह, पद. 11

6) हानोक, पद. 14

7) जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, पद. 24

9) मानचित्र पर ध्यान देने हेतु स्थान,

1) मिस्र, पद. 5

2) सदोम और अमोरा, पद. 7

10) <u>चर्चा के प्रष्न</u>

1) यहूदा किस प्रकार के झूठे शिक्षकों की ओर संकेत कर रहा है? (पद. 8–13)

2) यहूदा क्यों अनियमीकरण पुस्तकों को उद्धृत करता है? (पद. 9, 14–15)

3) कोई अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में कैसे बनाए रख सकता है? (पद. 21)

4) यहूदा का मुख्य विषय क्या है?

5) यहूदा किस प्रकार 2 पतरस से सम्बन्धित है?

पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की परिचय

1) परिचय

क) प्रारम्भिक वाक्य

1) विश्वासी समुदाय भविष्यद्वाणी की व्याख्या के तरीके के प्रति सहमती नहीं जताते हैं। सदियों से एक पारम्परागत तरीके के प्रति अनेक सत्यों को स्थापित किया जा चुका है, परन्तु यह नहीं हैं।

2) पुराने नियम की भविष्यद्वाणी के अनेक चरण हैं।

क) पूर्व राजतंत्रीय (राजा शाऊल से पहले)

1) व्यक्ति जिन्हें भविष्यद्वक्ता कहा जाता था।

क) अब्राहम – उत्प.20:7

ख) मुसा – गिनती 12:6–8; व्यवस्था.18:15; 34:10

ग) हारून – निर्ग.7:1 (मुसा का वक्ता)

घ) मरियम – निर्ग.15:20

ङ) एलदाद और मेदाद – गिनती 11:24–30

च) दबोरा – न्यायियों 4:4

छ) अनामित – न्यायियों 6:7–10

द) शमूएल – 1 शमू.3:20

2) भविष्यद्वक्ताओं के समूह का वर्णन – व्यवस्था.13:1–5; 18:20–22

3) नबियों का दल – 1 शमू.10:5–13; 19:20; 1 राजा 20:35, 41; 22:6, 10–13; 2 राजा 2:3, 7; 4:1, 38; 5:22; 6:1, आदि।

4) नबी कहालाने वाला मसीहा – व्यवस्था.18:15–18

ख) अलेखिक राजतंत्रीय भविष्यद्वक्ता (वे राजा को सम्बोधित करते हैं)

1) गाद – 1 शमू.7:2; 12:25; 2 शमू.24:11; 1 इति.29:29

2) नातान – 2 शमू.7:2; 12:25; 1 राजा 1:22

3) अहिय्याह – 1 राजा 11:29

4) येहू – 1 राजा 16:1, 7, 12

5) अनामित – 1 राजा 18:4, 13; 20:13, 22

6) एलिय्याह – 1 राजा 18; 2 राजा 2

7) मीकायाह – 1 राजा 22

8) एलिशा – 2 राजा 2:8,13

ग) शास्त्रीय लेखिक भविष्यद्वक्ता (वे राज्य और राजा दोनों को सम्बोधित करते थे)

यशायाह – मालाकी (दानिय्येल के सिवाय)

ख) बाइबलीय शब्द

1) रोयेह = दर्शी, 1 शमू.9:9। यह उल्लेख 'नबी' शब्द के विकास को बताता है, जिसका अर्थ है 'भविष्यद्वक्ता' और 'बुलाना' के मूल शब्द से आता है। *रोयेह* एक साधारण इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ है 'देखना'। यह व्यक्ति परमेश्वर के मार्गों और योजनाओं को समझता था और किसी विषय के लिए परमेश्वर की योजना को पता लगाने के लिए इसके पास लोग जाते थे।

2) होज़ेह = दर्शी, 2 शमुएल 24:11। यह रोयेह का एक पर्यायवाची शब्द है। यह एक कम प्रयोग किया जाने वाला इब्रानी शब्द 'देखना' से लिया गया है। इसका कृदंत रूप नबियों के वर्णन के लिए प्रयोग किया जाता है।

3) नबी = भविष्यद्वक्ता, यह अकादि भाषा की क्रिया 'नबु' = 'बुलाना' और अरबी भाषा 'नाबाह'= 'घोषित करना' से सम्बन्धित है। एक भविष्यद्वक्ता को सम्बोधित करने के लिए यह पुराने नियम का सबसे समान्य उपनाम है। इसका 300 से अधिक बार प्रयोग किया गया है। इसका सही मूल शब्द अनिश्चित है, वर्तमान में 'बुलाना' उच्च विकल्प दिखता है। सम्भवतः इसकी सही समझ यहोवा की हारून के द्वारा फिरोन के साथ मुसा के सम्बन्ध के वर्णन से आती है (देखें, निर्ग.4:10–16; 7:1; व्यवस्था.5:5)। एक भविष्यद्वक्ता वो है जो अपने लोगों से परमेश्वर के लिए/के पक्ष से बात करता है (आमोस 3:8; यर्म. 1:7–17; यहेज.3:4)।

4) सभी तीन षीर्शकों का 1 इतिहास.29:29 में भविष्यद्वक्ता के कार्य लिए प्रयोग हुआ है; शमूएल–रोयेह; नातान–नबी; और गाद–होज़ेह।

5) यह वाक्य खण्ड़ 'ईशाह – 'एलोहिम, ''परमेश्वर का दास'', भी परमेश्वर के वक्ता के लिए एक विस्तृत उपनाम है। यह भविष्यद्वक्ता के प्रयोग के लिए पुराने नियम में 76 बार प्रयोग किया गया है।

6) यह शब्द 'भविष्यद्वक्ता' मूल रूप से युनानी शब्द है। यह 1) 'प्रो'–'पहले' या 'के लिए'; 2) 'फेमि'– 'बोलना' से आता है।

2) भविष्यद्वाणी की परिभाषा

क) अँग्रेजी भाषा से अधिक इब्रानी भाषा में 'भविष्यद्वाणी' शब्द का विस्तृत से प्रयोग है। यहूदियों ने यहोशु से राजाओं तक के इतिहास की पुस्तकों (रूत के अलावा) को 'पुर्व भविष्यद्वक्ता' का नाम दिया है। अब्रहाम (उत्पत्ति 20:7; भजन.105:5) और मूसा (व्यवस्था.18:18) दोनों को भविष्यद्वक्ताओं का नाम दिया है (मरियम को भी, निर्ग.15:20)। इसलिए एक काल्पनिक अंग्रेजी परिभाषाओं से चौकस रहिये।

ख) सही तौर पर भविष्यद्वाणी की परिभाषा इतिहास की वह समझ है जो अर्थों को केवल दिव्य चिंताओं, दिव्य उद्देश्यों, दिव्य भागी होने के रूप में ग्रहण करती है (इन्टरप्रेटर्स डीक्षनरी ऑफ द बाइबल, भाग 3, पृश्ठ 896)।

ग) भविष्यद्वक्ता न तो एक दार्शीनिक और न एक क्रमित धर्मविज्ञानिक हैं, परन्तु वह वाचा की मध्यस्ता करनेवाला है जो अपने लोगों को परमेश्वर का वचन देता है ताकि वह उनके वर्तमान को परिवर्तित करके उनके भविष्य को एक आकार दे सके (एनसाइक्लोपिडीया जूडाइका, भाग 13, पृश्ठ 1152)।

3) भविष्यद्वाणी का उद्देश्य

क) भविश्यद्वाणी परमेश्वर का अपने लोगों के साथ बातें करने का मार्ग है, उनके वर्तमान संदर्भ में मार्ग दिखाना और उनके जीवनों और संसार की घटनाओं पर अपने नियंत्रण की आशा देना। उनका संदेश बहुद्देश्य था। इसका अर्थ डाँट लगाना, उत्साहित करना, विश्वास और पश्चाताप को उत्पन्न करना, और परमेश्वर के लोगों को अपने बारे में और अपनी योज़नाओं के बारे में जानकारी देना है। अनेक बार यह एक वक्ता के प्रति परमेश्वर के चुनाव को स्पष्ट प्रगट करने के लिए प्रयोग की जाती है (व्यवस्था.13:1–3; 18:20–22)। परिणाम स्वरूप यह मसीहा की ओर संकेत करती है।

ख) अनेक बार भविष्यद्वक्ता अपने समय की ऐतिहासिक या धर्मविज्ञानिक अपाताओं को लेता है और उसे अन्तिम दिनों के संदर्भ में दिखाता है। इतिहास के इस अन्तिम समय की दृष्टि इस्राएल के लिए और उसके दिव्य चुनाव और वाचा के वायदों के प्रति अनोखी है।

ग) भविष्यद्वक्ता का कार्य परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए महायाजक के कार्य को संतुलित (यर्म.18:18) और परिपूर्ण करता हुआ दिखाई देता है। परमेश्वर के वक्ता से युरिम और थुंमिम्म मौखिक संदेश में परिवर्तित हो जाते है। मलाकी के समय के बाद भविष्यद्वक्ता का कार्य इस्राएल से दूर हुआ दिखाई पड़ता है। यह 400 वर्षों के बाद यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले तक दिखाई नहीं पड़ता। यह अनिश्चित है कि नये नियम की भविश्यद्वाणी का वरदान पुराने नियम से कैसे सम्बन्धित है। नये नियम के भविष्यद्वक्ता (प्रेरित.11:27–28; 13:1; 14:29, 32, 37; 15:32; 1 कुरि.12:10, 28–29; इफि.4:11) नये प्रकाशन के प्रगट करनेवाले नहीं हैं, पर वाचा की परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को आगे बतानेवाले और पूर्व कथन प्रगट करने वाले हैं।

घ) भविश्यद्वाणी स्वभाव से केवल या मूल तौर पर पूर्व कथन करना/ पूर्वानुमान लगाना नहीं हैं। पूर्व कथन करना उसके कार्य का दावा करने का केवल एक मार्ग है, पर यह ध्यान देने की बात है कि पुराने नियम की 2 प्रतिशत से भी कम मसीहा की भविश्यद्वाणीयाँ '5 प्रतिशत से भी कम नये वाचा के युग का स्पष्टिकरण देती है। 1 प्रतिशत से भी कम आनेवाली घटनाओं के बारे में बताती हैं।' (फी एण्ड स्ट्राउट, हाउ टू रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ 166)

ङ) भविष्यद्वक्ता लोगों के सामने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि याजक परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह एक समान्य कथन है। हबक्कूक के अतिरिक्त, जो परमेश्वर से अनेक प्रष्न करता है।

च) भविष्यद्वक्ताओं को समझना कठिन इस कारण से है क्योंकि हम नहीं जानते कि उनकी पुस्तकों का ढाँचा किस प्रकार का है। वे सयमानुसार नहीं थीं। वे विषयक प्रतीत होती हैं, पर किसी के अपेक्षा के अनुसार नहीं। अवश्य यहाँ पर कोई ऐतिहासिक संदर्भ, समय–क्रम, या भविश्यद्वाणियों के बीच स्पष्ट विभाजन नहीं है, यह कठिन है कि 1) एक ही बैठक में पुस्तकों को पढ़ डाले; 2) विषयानुसार उनकी रूपरेखा दें; और 3) हर भविश्यद्वाणी के मुख्य सत्य या लेखक के उद्देश्य को निश्चित करें।

4) <u>भविश्यद्वाणी की विषेशतायें</u>

क) पुराने नियम में 'भविष्यद्वक्ता' और 'भविश्यद्वाणी' के कार्यों का विकास दिखाई देता है। प्रारम्भिक इस्राएल में भविष्यद्वक्ताओं की संगति विकसित हुई, एलिय्याह या एलिशा जैसे सामर्थ्य कारिस्माई अगुवे उत्पन हुये। अनेक बार 'भविष्यद्वक्ताओं के चेले' वाक्यांष इस समूह के उपनाम के लिए प्रयोग हुआ है (2 राजा.2)। कई बार भविष्यद्वक्ता की विषेशता नबूवत के प्रकार से होती थी (1 शमूएल 10:10–13; 19:18–24)।

ख) परन्तु यह समय व्यक्तिगत भविष्यद्वक्ताओं के समय में परिवर्तित हो गया। कुछ ऐसे भविष्यद्वक्ता भी थे (सच्चे और झूठे दोनों) जो राजाओं के साथ पहचाने जाते थे, और राजभवन में रहते थे (गाद, नातान)। वे भी थे जो स्वतंत्र थे, कई बार इस्राएली समाज की यथापूर्व स्थिती से पूर्णता से अलग थे (अमोस)। वे पुरूष और महिला दोनों थे (2 राजा 22:14)।

ग) भविष्यद्वक्ता अनेक बार भविष्य को प्रगट करनेवाला था, मनुष्य के तुरन्त प्रतिउत्तर पर आधारित। अनेक बार भविष्यद्वक्ता का कार्य परमेश्वर की अपनी सृष्टि के प्रति ब्रम्हाण्ड की योजनाओं को दिखाना था जो मानव के प्रतिउत्तर से प्रभावित नहीं होती। यह ब्रम्हाण्ड के अन्तिम दिनों की योजना प्रचीन पूर्वी भविष्यद्वक्ताओं में अनोखी है। पूर्व कथन और वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता भविष्यद्वाणी के दो केन्द्रिय संदेश हैं (देखें, फि और स्टूर्वट, पृष्ठ 150)। यह इस बात को दिखात है कि भविष्यद्वक्ता केन्द्र के प्रति एकजुट थे। वे समान्य तौर पर, विषेश तौर पर नहीं, राज्य को सम्बोधित करते थे।

अधिक भविश्यद्वाणियों को मौखिक रूप में प्रस्तुत किया गया था। इसे बाद में विषयों या समय के आधार पर या पूर्वी साहित्य के रीतियों के अनुसार एकजुट किया गया, जो अभी खो गए हैं। क्योंकि यह मौखिक था, यह लिखित वाक्य खण्ड़ के समान रचित नहीं था। यह इन पुस्तकों को सीधे पढ़ने में कठिनाई उत्पन करता है और एक विषेश ऐतिहासिक संदर्भ के बिना समझने को भी कठिन बना देता है।

भविष्यद्वक्ता अपने संदेशों को बताने के लिए अनेक रीतियों का प्रयोग करते थे :

1) न्यायालय का चित्र – परमेश्वर अपने लोगों को न्यायालय ले जाते हैं; अनेक बार यह एक तलाक का मुद्दा होता है जहाँ पर यहोवा अपनी पत्नी (इस्राएल) को उसकी विश्वास हीनता के कारण तालाक देते हैं (होशे 4; मीका 6)।

2) मुत्यु गीत – इस प्रकार के संदेश का विषेश मापदण्ड़ और इसकी विषेशता 'हाय' इसको एक विषेश प्रकार के रूप में अलग करती है (यशा.5; हबक्कूक 2)।

3) वाचा की आशीषों की घोषणा – वाचा के शर्तीया स्वभाव को महत्व दिया जाता है और इसके परिणाम, सकारात्मक और नाकारात्मक दोनों, को भविष्य के लिए घोषित किया जाता है (व्यवस्था.27–28)।

5) <u>सच्चे भविष्यद्वक्ता की जाँच के लिए बाइबलीय योग्तायें</u>

क) व्यवस्था.13:1–5 (पूर्वकथन/चिन्ह)

ख) व्यवस्था.18:9–22 (झूठे भविष्यद्वक्ता/सच्चे भविष्यद्वक्ता)

ग) पुरूषों और स्त्रियों दानों को भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्तिनी सम्बोधित किया गया है।

1) मरियम – निर्ग.15

2) देबोरा – न्यायियों4:4–6

3) हुल्दा – 2 राजा 22:14–20; 2 इतिहास 34:22–28

उनके चारों ओर की संस्कृतियों में भविष्यद्वक्ताओं को उनकी भविश्यद्वाणियों से जाँचा जाता था। इस्राएल में उन्हें –

1) एक धर्मविज्ञान की जाँच – यहोवा के नाम के प्रयोग से

2) एक ऐतिहासिक जाँच से – सही पूर्व कथन

6) <u>भविश्यद्वाणियों की व्याख्या के लिए सहायक निर्देश</u>

क) मूल भविष्यद्वक्ता के उद्देश्य को हर भविश्यद्वाणी के ऐतिहासिक संदर्भ और साहित्यिक संदर्भ पर ध्यान देते हुए पता लगायें। सामान्य तौर पर यह किसी रीति से इस्राएल का मूसा की वाचा का उल्लघंन करना होगा।

ख) पूर्ण भविश्यद्वाणी को पढ़े और व्याख्या करें, केवल एक अंश को नहीं; विषय के आधार पर रूपरेखा दें। देखें कि वह उसकी दूसरी भविश्यद्वाणियों से कैसे सम्बन्धित है। पुरे पुस्तक की रूपरेखा देने की कोशिश करें।

ग) इस अंश की साहित्यिक व्याख्या की धारणा करें जब तक गधयांश में ही कोई रूपक प्रयोग आपको नहीं दिखता; फिर उस अंश में रूपक भाषा का प्रयोग करें।

घ) इसमें चिन्हों के तौर पर प्रयोग की गए कार्यों को ऐतिहासिक संदर्भ और समानांतर गधयांशों के प्रकाश में देखें। इस बात पर ध्यान दें कि यह एक प्रचीन पूर्वी साहित्य है, कोई पाश्चातीय या आधुनिक साहित्य नहीं है।

ङ) पूर्व कथनों को ध्यान से परखें

1) केवल लेखक के समय के लिए ही उनका क्या महत्व है?

2) क्या वे इस्राएली इतिहास में पूरे हुए?

3) क्या वे अभी भी भविष्य की घटनायें हैं?

4) क्या उनकी कोई आधुनिक पूर्णता है और फिर भी क्या वे भविष्य के लिए हैं?

5) बाइबल के लेखकों को, न आधुनिक लेखकों को, अपने उत्तरों के निर्देशों की सहायता करने दें।

<u>विषेश बातें</u>

1) क्या भविश्यद्वाणी कोई शार्तीय प्रतिउत्तर की मांग करती है?

2) क्या यह निश्चित है कि यह भविश्यद्वाणी किसको (और क्यों) सम्बोधित की गयी है?

3) क्या बाइबल के तौर पर या/और ऐतिहासिक तौर पर अनेक पूर्णताओं की सम्भवतायें हैं?

4) नये नियम के लेखक प्रेरणा के अधिन पुराने नियम के कई अंशों में मसीहा को देख सके जो हमें स्पष्ट नहीं हैं। वे कुछ प्रकार–विद्या का या शब्द खेल का प्रयोग करते दिखते हैं। क्योंकि हम प्रेरित नहीं है, हम इन तरीको को उन्हें दे दें।

7) <u>सहायक पुस्तकें</u>

ए गाइड टू बीबलीकल प्रोफेसी, कार्ल इ. अरमेरडींग एण्ड डवल्यू. वार्ड गासक्यू

हाउ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, गॉर्डन फी एण्ड डगलस स्ट्राउट

माय सरवेन्टस द प्रोफेट्स, एडवर्डस जे. यंग

द एक्सपोसीटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री, भाग–6, ''यषायाह–यहेजकेल''

द प्रोफेसीज़ ऑफ आइज़ेया, जे. ए. अलेक्सण्डर, 1976, जोन्डरवन एक्सपोज़ीसन ऑफ आइज़ेया, एच. सी. लीयोपोल्ड, 1971, बेकर

ए स्टडी गाइड कॉमेन्ट्री, ''आइज़ेया'', डी डेवीड़ गारलैंड, 1978, जोन्डरवन

प्रकाशितवाक्या का परिचय

गम्भीर परिचायक लेख (मसीही लोग प्रकाशितवाक्य पुस्तक की इतनी अधिक मताग्रही व्याख्या क्यों रखते हैं?)

अनेक सालों से अन्तिम दिनों के बारे में मेरे अध्यन के द्वारा मैंने जाना कि अनेक मसीही लोग एक विकसित, क्रमानुसार, अन्तिम दिनों की समय विद्या नहीं रखते हैं या नहीं चाहते हैं। कुछ मसीही लोग धर्मविज्ञानिक, मनोविज्ञानिक, या सांप्रादायिक कारणों के लिए मसीहत के इस क्षेत्र में ध्यान देते हैं या प्रमुख्ता हासिल करते हैं। यह मसीही लोग इन बातों में ही लगे रहते हैं कि यह सब कैसे समाप्त होगा, और कुछ कारणों से सुसमाचार की अत्यावश्यकता को खो देते हैं। विश्वासी लोग परमेश्वर के अन्तिम दिनों के विषय को प्रभावित नहीं कर सकते, पर वे इस उद्धार विज्ञान की आवश्यकता में भागी हो सकते हैं (मत्ती 28:19–20)। अनेक विश्वासी मसीह के दूसरे आगमन का दावा करते हैं और परमेश्वर के वायदों के समय से पहले पूरा होने का भी दावा करते हैं। व्याख्या से सम्बन्धित समस्यायें जो इस अल्पकालिक अन्त के समझ से उत्पन होती हैं अनेक स्त्रोतों से आती हैं :

1) पुरानी वाचा के भविष्य सूचक नमूने और नयी वाचा के प्रेरितीय नमूने के बीच का तनाव।

2) बाइबल की एक–ईश्वरवाद (सभी के लिए एक परमेश्वर) और इस्त्राएल के चुनाव (एक विषेश जाति) के बीच का तनाव।

3) बाइबल के वाचा के सशर्त पहलू और वायदों (यदि...तो) और गिरे हुई मानवजाति के छुटकारे के प्रति परमेश्वर की शर्तहीन विश्वासयोग्ता के बीच का तनाव।

4) निकटीय पूर्वी साहित्यिक प्रकारों और आधुनिक पाश्चातय साहित्यिक नमूनों के बीच का तनाव।

5) परमेश्वर के राज्य का वर्तमान रूप, पर भविष्य के राज्य के बीच का तनाव।

6) मसीह के शीघ्र आगमन और यह विश्वास कि कुछ घटनाओं को पहले होना है के बीच का तनाव।

हम इन तनावों की बारी–बारी से चर्चा करेगें।

पहला तनाव

पुराना नियम यरूशलेम में केन्द्रित पलिश्तिन में एक यहूदी राज्य की पुनः स्थापना की भविश्यद्वाणी करता है जहाँ पर सभी संसार के देश एक दाऊद वंष के शासक की स्तुति और सेवा करते हैं, पर नये नियम के प्रेरित इस विषय पर ध्यान नहीं देते हैं। क्या पुराना नियम प्रेरित नहीं है (देखें, मत्ती 5:17–19)? क्या नये नियम के लेखकों ने गम्भीर अन्तिम दिनों की घटनाओं को त्याग दिया?

संसार के अन्त के बारे में जानकारी के अनेक स्त्रोत हैं :

1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता

2) पुराने नियम के रहस्य लेखक (येहज.37–39; दानि.7–12)

3) अन्तरनियमों के, अनियमीकरण के यहूदी रहस्य लेखक (जैसे पहला हानोक)

4) स्वयं यीशु (देखें, मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21)

5) पौलुस के लेख (1कुरि.15; 2 कुरि.5; 1 थिस्लु.4; 2 थिस्लु.2)

6) यूहन्ना के लेख (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक)

क्या ये सभी अन्तिम दिनों के विषय को सिखाती हैं (घटनायें, समय विद्या, व्यक्ति)? यदि नहीं, तो क्यों? क्या वे सभी प्रेरित नहीं हैं (यहूदी अन्तरनियम के लेखों के सिवाय)?

पुराने नियम के लेखकों को आत्मा ने उनकी समझ के अनुसार शब्दों और वर्गों के अनुसार सत्यों का प्रगटिकरण किया।

परन्तु एक प्रगत्यात्मक प्रकाशनों के द्वारा आत्मा ने इन पुराने नियम के अन्तिम समय के विषयों को एक संसारिक रूप में विस्तृत किया। यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं :

1) यरूशलेम नगर परमेश्वर के लोगों (सियोन) के लिए एक रूपक के तौर पर प्रयोग किया गया है और नये नियम में इसका प्रगटिकरण सभी पश्चातापी, विश्वास करनेवाले मनुष्यों (प्रकाशितवाक्य का नया यरूशलेम) को परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने के लिए हुआ है। परमेश्वर के लोगों में एक साहित्यिक, भौतिक नगर के धर्मविज्ञानिक विस्तार को उत्पत्ति 3:15 में गिरी हुई मनुष्यजाति के छुटकारे कि लिए कोई भी यहूदी या यहुदी राजधानी नगर के होने से पहले ही परमेश्वर के वायदे में पूर्व संकेत किया गया था। अब्राहम की बुलाहट (देखें, उत्पत्ति 12:3) में भी अन्यजातियों का भागी होना था।

2) पुराने नियम में शरू लोग चारों ओर के निकट पूर्वी देश हैं, पर नये नियम में उनका विस्तार सभी अविश्वासी, परमेश्वर के विरूध, शैतान से प्रेरित लोगों की ओर हुआ है। युद्ध एक भौगोलिक, क्षेत्रिय संघर्श से ब्रम्हाण्ड का संघर्श हो गया है।

3) एक भूमि का वायदा जो पुराने नियम में इतना सम्बन्धित है (बाप–दादों के वायदे) अब पूरा संसार हो गया है। नया यरूशलेम एक पुनः रचित पृथ्वी पर आता है, केवल निकट पूर्वी में ही नहीं (प्रकाश.20–22)।

4) पुराने नियम की भविश्यद्वाणियों के विषय के विस्तार के कुछ और उदाहरण 1) अब्रहाम की संनतान अब वे हैं जिनका आत्मिक खतना किया गया है (रोमी.2:28–29); 2) वाचा के लोगों में अब अन्यजाति भी शामिल हैं (होशे.1:9; 2:23; रोमी. 9:24–26; लेव्य.26:12; निर्ग.29:45; 2 कुरि.6:16–18 और निर्ग.19:5; व्यवस्था.14:2; तितुस 2:14); 3) मन्दिर अब स्थानिय कलीसिया है (1कुरि.3:16) या व्यक्तिगत विश्वासी (1कुरि.6:19); और 4) इस्राएल और उसके विषेश वर्णन के वाक्य अभी पूरे परमेश्वर के लोगों को दर्शाते हैं (गला.6:16; 1 पतरस.2:5,9–10; प्रकाश.1:6)।

भविष्य सूचक नमूना अब पूरा, विस्तृत, और अधिक सम्मिलित करनेवाला हो गया है। यीशु और प्रेरितीय लेखक अन्तिम समय को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान प्रस्तुत नहीं करतें हैं (देखें, मार्टिन वेनगार्डन, द फ्यूचर ऑफ द कींगडम इन प्रोफेसी एण्ड फूलफिलमेन्ट)। आधुनिक व्याख्याकार जो पुराने नियम के नमूने को साहित्यिक और मानकीय बनाने की कोशिश करते हैं वे प्रकाशितवाक्य को एक अधिक यहूदी पुस्तक में परिवर्तित कर देते हैं और इसके अर्थ को यीशु और पौलुस के कणिक और अस्पष्ट वाक्यों में ठोस देते हैं। नये नियम के लेखक पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को अनदेखा नहीं करते, पर उनके परिणाम स्वरूप संसारिक महत्वों को दिखाते हैं। यीशु और पौलुस की अन्तिम समय विद्या के लिए कोई संगठित, तर्किय प्रणाली नहीं हैं। उनका उद्देश्य मूल रूप से छुटकारा और पासवानी का है।

परन्तु नये नियम के भीतर ही तनाव हैं। अन्तिम समय की घटनाओं का कोई स्पष्ट प्रणालीकरण नहीं है। अनेक तरीकों से प्रकाशितवाक्य अनोखे रूप से पुराने नियम की ओर संकेत का प्रयोग यीशु की शिक्षओं का वर्णन करने के बदले अन्तिम समय का वर्णन करने में करता है (मत्ती 24; मरकुस 13)। अन्तर नियमों के समय में विकसित साहित्यिक प्रकार का यह अनुकरण करता है (यहूदी रहस्यमय साहित्य)। यह सम्भवतः पुराने नियम और नये नियम को जोड़ने का यहून्ना का तरीका है। यह समय पुराने मानव के विरोध और छुटकारे के प्रति परमेश्वर के समर्पण को दिखाता है। पर यह ध्यान देने की बात है कि हालांकि प्रकाशितवाक्य पुराने नियम की भाषा, व्यक्तियों और घटनाओं का प्रयोग करता है, पर वह पहली षताब्दी रोम के प्रकाश में उनकी पुनः व्याख्या करता है।

<u>दूसरा तनाव</u>

बाइबल का महत्व एक व्यक्तिगत, आत्मिक, सृष्टिकर्ता–छुटकारा करनेवाले परमेश्वर पर केन्द्रित है। अपने दिनों में पुराने नियम की विषेशता उसके एक–ईश्वरवाद विचार में थी। चारों ओर के सभी देश बहुईश्वारवादी थे। परमेश्वर की एकता ही पुराने नियम के प्रकाशन का हृदय है (व्यवस्था.1:26–27)। परन्तु मनुष्यजाति ने विद्रोह किया, परमेश्वर के प्रेम, नेतृत्व और

उद्देश्य के विरूध (उत्पत्ति 3)। परमेश्वर का प्रेम और उद्देश्य इतना दृढ़ और निश्चित था कि उसने गिरी मनुष्यजाति के छुटकारे का वायदा किया (उत्पत्ति 3:15)।

तनाव तब उत्पन होता है जब परमेश्वर अन्य सभी मानवजाति की ओर पहुँचने के लिए एक मनुष्य, एक परिवार, एक देश का चुनाव करते हैं। परमेश्वर के अब्रहाम और यहूदियों को एक याजक के समाज के समान चुनाव (निर्ग.19:4–6) ने सेवा के बदले गर्व, सम्मेलन के बदले तिरस्कार को उत्पन किया। परमेश्वर द्वारा अब्रहाम की बुलाहट में सारी मानवजाति के लिए आशीष सम्मिलित थी (उत्पत्ति 12:3)। यह स्मरण करने और महत्व देने की बात है कि पुराने नियम का चुनाव सेवा के लिए था, उद्धार के लिए नहीं। समस्त इस्राएली का सम्बन्ध परमेश्वर से कभी भी सही नहीं था, उसके जन्म सिद्ध आधिकार पर अनन्तता से बचाये नहीं गये थे (यहून्ना 8:31–47), पर केवल व्यक्तिगत विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण। इस्राएल ने अपना मिशन खो दिया, अवश्यकता को अधिकार में, सेवा को एक विषेश पद में परिवर्तित कर दिया। परमेश्वर ने सभी का चुनाव करने हेतु एक का चुनाव किया।

तीसरा तनाव

सशर्त और शर्तहीन वाचाओं के बीच एक धर्मविज्ञानिक तनाव या विरोधाभास है। यह वास्तव में सही है कि परमेश्वर की छुटकारे की योजना/उद्देश्य शर्तहीन है (देखें, उत्पत्ति 15:12–21)। परन्तु मनुष्य का प्रतिउत्तर हमेशा सशर्त है।

पुराने और नये नियम में ''यदि...तब'' की रीति दिखाई पड़ती है। परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं; मानवजाति विश्वासयोग्य नहीं है। इस तनाव ने अधिक परेशानी उत्पन्न की है। व्याख्याकारों ने इस परेशानी, परमेश्वर की विश्वासयोग्ता या मानवीय कोशिश, परमेश्वर की सनातनता या मानवजाति की स्वेच्छा, के केवल एक पहलू पर ध्यान देने पर सीमित हो गए हैं। दोनों बाइबल के हैं और आवश्यक हैं।

यह अन्तिम समय की विद्या से, परमेश्वर के इस्राएल से पुराने नियम के वायदों से सम्बन्धित है। यदि परमेश्वर वायदा करते हैं, तो बात पूरी हो चुकि है, हाँ? परमेश्वर अपने वायदों से बन्धे हुए हैं; उनकी इज्ज़त का सवाल है (यहेज.36:22–38)। परन्तु मानवजाति आशीष के परमेश्वर का यंत्र है। सशर्त और शर्तहीन वाचायें मसीह में मिलती हैं (यशा.53), इस्राएल में नहीं। परमेश्वर की अन्तिम विश्वासयोग्ता उन सभी के छुटकारे में है जो पश्चाताप और विश्वास करते हैं, न कि तुम्हारे माता/पिता कौन थे। मसीह, न इस्राएल, परमेश्वर की सभी वाचाओं और वायदों की कुंजी हैं। यदि बाइबल मे कोई धर्मविज्ञानिक निक्षिप्त वाक्यांश हैं, तो वह कलीसिया नहीं, पर इस्राएल है (गला.3)।

संसार के छुटकारे का मिशन कलीसिया को सौंप दिया गया है (मत्ती 28:19–20; प्रेरित.1:8)। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर ने यहूदियों को पूरी तरह से त्याग दिया है (रोमी. 9–11)। यहाँ पर, अवश्य, विषेश नहीं, अन्तिम, विश्वास करनेवाले इस्राएल के लिए एक स्थान और उद्देश्य है (जकर्याह 12:10)।

चौथा तनाव

बाइबल की सही व्याख्या के लिए प्रकार एक गम्भीर तत्व है। कलीसिया एक पाश्चातय संस्कृति (युनानी) के संदर्भ में विकसित हुई। पूर्वी साहित्य पाश्चातय सांस्कृतिक साहित्य के नमूनों से कई अधिक रूपाकात्मक, उपमात्मक और प्रतिकात्मक हैं। मसीही लोग बाइबल की भविश्यद्वाणी की व्याख्या के लिए अपने ऐतिहासिक और साहित्यिक नमूनों का प्रयोग करने के दोषी है (पुराने और नये नियम दोनों)। हर पीढ़ी और भौगोलिक ईकाई ने प्रकाशितवाक्य की व्याख्या के लिए अपनी संस्कृति, इतिहास, और साहित्यपन का प्रयोग किया है। उनमें से हर एक गलत रहा है। यह सोचना घमण्ड़ होगा कि आधुनिक पाश्चातय संस्कृति ही बाइबल का केन्द्र है।

वह साहित्यिक प्रकार जिसमें मूल, प्रेरितीय लेखक लिखने को चुनता है वो पाठकों के साथ एक साहित्यिक अनुबंध था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ऐतिहासिक वर्णन नहीं है। यह पत्रियों (अध्याय 1–3), भविश्यद्वाणी, और अधिकांश रहस्यमय साहित्य का संयोजन है। बाइबल को उसके लेखक के उद्देश्य से अधिक कहलाना उतना ही गलत है जितना उसके लेखक के उद्देश्य से उससे कम कहलाना है। प्रकाशितवाक्य जैसी पुस्तकों में व्याख्याकारों का घमण्ड़ और धर्मसिद्धान्तवाद और अधिक सही नहीं है।

कलीसिया कभी एक सही व्याख्या पर सहमत नहीं है। मेरी चिंता पूरी बाइबल के प्रति है, कुछ चुने हुए भागों के प्रति नहीं। बाइबल की पूर्वी विचारधारा सत्यों को तनाव भरे हुए जोडों में प्रस्तुत करती हैं। प्रस्तावात्मक सत्यों के प्रति हमारा पाश्चातिय लगाव सही नहीं है, पर असंतुलित है। मैं सोचता हुँ कि प्रकाशितवाक्य की व्याख्या में निरन्तर आने वाले विष्वासियों के लिए उसके बदलते उद्देश्य पर ध्यान लगाकर कुछ रूकावटों को हटाया जाना संभव है। यह अनेक व्याख्याकारों को स्पष्ट है कि प्रकाशितवाक्य की व्याख्या उसके समय और प्रकार के प्रकाश में करनी चाहिए। प्रकाशितवाक्य और एक ऐतिहासिक तरीके को इस बात पर ध्यान देना है कि उसके पहले पाठकों ने क्या समझा होगा या समझा हो सकता है। अनेक तरीकों से आधुनिक व्याख्याकारों ने इस पुस्तक के कई चिन्हों के अर्थों को खो दिया है। प्रकाशितवाक्य का प्रारम्भिक उद्देश्य सताव झेल रहे विष्वासियों को उत्साहित करना था। इसने इतिहास पर परमेश्वर के नियंत्रण को दिखाया (जिस प्रकार पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता); इसने दावा किया कि इतिहास एक निर्धारित अन्त की ओर बढ़ रहा है, न्याय या आशीष (जिस प्रकार पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता थे)। इसने पहली षताब्दी यहूदी रहस्यमय लेख के आधार पर परमेश्वर के प्रेम, उपस्थिति, सामर्थ्य, और सनातनता का दावा किया।

यह हर पीढ़ियों के विष्वासियों के लिए इसी प्रकार की धर्मविज्ञानिक मार्गों में कार्य करता है। यह सच्चाई और बुराई की ब्रम्हाण्ड के संघर्श का प्रतिरूप है। पहली षताब्दी की जानकारियाँ सम्भवतः खो गई हैं, पर सामर्थ्यशाली, सांत्वना देनेवाले सत्य नहीं। जब आधुनिक पाश्चातय व्याख्याकार प्रकाशितवाक्य की बातों को अपने समकालीन इतिहास में डालते हैं तब झूठी व्याख्यायें निरन्तर चलती हैं।

यह संभव है कि पुस्तक की बातें अन्तिम पीढ़ी के मसीहियों के लिए फिर से साहित्यिक हो जायें जब वे परमेश्वर के विरूध अगुवे (2 थिस्लु.2) और संस्कृति का सामना करगें। कोई भी प्रकाशितवाक्य की इन साहित्यिक पूर्णताओं को नहीं जान सकता जब तक यीशु (मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21) और पौलुस की बातें भी ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित नहीं हो जाती। अनुमान लगाना, कल्पना, और मताग्रही सभी सही नहीं है। रहस्यमय लेख इस प्रकार की बातों की अनुमती देते हैं। रूपकों और चिन्हों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो जो ऐतिहासिक वर्णनों से परे हैं। परमेश्वर नियंत्रण में हैं। वह राज्य करते हैं। वह नियंत्रण में हैं।

अनेक आधुनिक व्याख्याकार साहित्यिक प्रकार की मुख्य बातों को खो देते हैं। आधुनिक पाश्चातय व्याख्याकार अनेक बार यहूदी रहस्यमय साहित्य की एक अनिश्चित, सांकेतिक और नाटकीय प्रकार के साथ सच्चा होने के बदले धर्मविज्ञान की एक स्पष्ट, तर्किय प्रणाली की खाज में रहते हैं। राल्फ पि. मार्टिन ने इस सच्चाई को अपने लेख, 'अप्रोचिस टू न्यू टेस्टामेन्ट एक्सीजिसीस,' पुस्तक 'न्यू टेस्टामेन्ट इन्टरप्रटेषन, सम्पादित जे. हॉवर्ड मार्षल' में सही रीति से वर्णित करते हैं।

''जब तक हम इस लेख के नाटकीय स्वभाव को नहीं पहचानेगें और धार्मिक सत्य को व्यक्त करने के लिए एक वाहन के रूप में भाषा के प्रयोग को स्मरण नहीं करेगें, हम इस रहस्यमय लेख की समझ में गलती करते हैं, और गलत रीति से इसके प्रकाशनों की व्याख्या करने की कोशिश करते हैं जैसे यह एक साहित्यिक गधयांश हो और यह अनुभूतियों और आँकड़ों के इतिहास की घटनाओं को वर्णित करने में चिंतित हो। इस बाद के तरीके की कोशिश करना व्याख्या की सभी प्रकार की समस्याओं की ओर भागना है। अधिक गम्भीर रूप से यह रहस्यमय लेख के मुख्य अर्थ को परिवर्तित कर देता है और मसीह में परमेश्वर के सनातनता की कथा–कविता की भाषा और उसके राज्य के विरोधाभास को जो सामर्थ्य और प्रेम को संयोजित करता है के नाटकीय दावे के रूप में नये नियम के इस अंश के महान मूल्य को खो देता है (देखें, 5:5, 6; सिंह ही मेम्ना है)'' (पृष्ठ 235)।

डवल्यू. रेनड़ोल्फ टेट अपनी पुस्तक, 'बीबलीकल इनटरप्रटेषन'' में कहते हैं :

''रहस्यमय साहित्यिक प्रकार के समान बाइबल की किसी भी पुस्तक को इतनी अधिक दुःखदायी परिणामों से पढ़ा नहीं गया, विषेशकर दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें। इसके साहित्यिक प्रकार, ढाँचे, और उद्देश्य के मूल गलतसमझ के कारण यह साहित्यिक प्रकार गम्भीर गलत व्याख्या के इतिहास से प्रभावित हुआ है। इसके हाल ही में होनेवाली घटनाओं के प्रगटिकरण के स्वयं के दावे के कारण, रहस्यमय लेख को भविष्य के मार्ग के मानचित्र और नीला नक्शा होने की धारणा से देखा जाता है। इस दृष्टिकोण में सबसे गम्भीर गलती यह धारणा है कि पुस्तक के संदर्भ की रूपरेखा लेखक के समयकालीन युग के बदले पाठकों का समकालीन युग है। रहस्यमय लेख के लिए यह गलत निर्देशित तरीका कार्य को ऐसे देखता है जैसे

यह कोई गुप्त संदेश हो जिसके द्वारा समकालीन घटनाओं का प्रयोग इस लेख के चिन्हों की व्याख्या के लिए प्रयोग किया जा सकता हो। पहला : व्याख्याकार को समझना है कि रहस्यमय लेख अपने संदेश का चिन्हों के द्वारा संप्रेक्षण करता है। एक चिन्ह का साहित्यिक तौर पर व्याख्या करना जब वह एक रूपक है तो यह गलत व्याख्या करना है। मुद्दा यह नहीं है कि क्या रहस्यमय लेख की घटनायें ऐतिहासिक है या नहीं। यह घटनायें ऐतिहासिक हो सकती हैं; वे वास्तव में घटित हुई होंगी, या हो सकती हैं, पर लेखक उन घटनाओं का प्रस्तुतिकरण और अर्थ का संप्रक्षण रूपकों और आद्यप्ररूपों के द्वारा करता है'' (पृष्ठ 137)।

राईकन, विलहोस्ट और लोंगमेन–3 के द्वारा संपादित, डीक्सनरी ऑफ बीबलीकल इमेजरी से :

''आज के पाठक इस साहित्यिक प्रकार से परेशान और उलझन में पड़ जाते हैं। अनापेक्षित रूपक और इस संसार से बाहर के अनुभव अत्याधिक शास्त्रों से अजीब और समान्य से बाहर दिखते हैं। इस साहित्य को इसके प्रत्यक्ष रूप के अनुसार ही लें तो यह अनेक पाठकों को यह निश्चित करने के लिए छोड़ देगा कि 'कब क्या घटित होगा', इस कारण रहस्यमय लेख के संदेश को चूक जाते हैं।'' (पृष्ठ. 35)

पाँचवा तनाव

परमेश्वर का राज्य वर्तमान और भविष्य दोनों है। यह धर्मविज्ञानिक विरोधाभास अन्तिम समय में केन्द्रित हो जाता है। यदि कोई इस्राएल के प्रति सभी पुराने नियम की भविश्यद्वाणियों के साहित्यिक पूर्णता की अपेक्षा करे तो राज्य केवल इस्राएल की एक भौगोलिक स्थान में पुनः स्थापना और एक धर्मविज्ञानिक प्रमुखता हो जाएगी। इसकी यह आवश्यकता होगी कि अध्याय 5 में ही कलीसिया उठा ली जाए और बचे हुये अध्याय इस्राएल से सम्बन्धित हों।

परन्तु यदि मसीह के पहले आगमान में राज्य का ध्यान वर्तमान में होता, तो मसीह का शरीर धारण करना, उनका जीवन, शिक्षा, मृत्यु, और पुनरूत्थान केन्द्र हो जाता। राज्य आ गया है, मसीह का सभी के लिए उद्धार में पुराना नियम पूरा हो जाता, न कुछ के ऊपर उसका हजार वर्षों का राज्य।

यह सत्य है कि बाइबल मसीह के दानों आगमन के बारे में बताती है, पर महत्व कहां पर देना है? मुझे ऐसे लगता है कि अधिकांश पुराने नियम की भविश्यद्वाणियाँ पहले आगमन पर ध्यान देती हैं, मसीहा के राज्य की स्थापना के बारे में (देखे, दानि. 2)। कई तरीकों से यह परमेश्वर के अनन्त राज्य (दानि.7) और मसीह के हज़ार वर्षों के राज्य के समान है (प्रकाश.20)। पुराने नियम में ध्यान परमेश्वर के अनन्त राज्य पर है, पर इस राज्य के प्रगटिकरण की प्रक्रिया मसीहा की सेवकाई है (1कुरि. 15:26–27)। सवाल यह नहीं है कि कौन सा सही है; दोनों सही हैं, पर कहाँ पर महत्व दिया गया है? यह कहना आवश्यक है की कुछ व्याख्याकार मसीह के हजार वर्षों के राज्य में इतना केन्द्रित हो जाते हैं कि वे पिता के अनन्त राज्य की बाइबल के केन्द्र को भूल जाते हैं। मसीह का राज्य करना प्रारम्भिक घटना है। जिस प्रकार मसीह के आगमन की दो घटनायें पुराने नियम में स्पष्ट नहीं थी, उसी प्रकार, मसीहा का अल्पकालीन राज्य भी।

यीशु की शिक्षाओं और प्रचारों की कुँजी परमेश्वर का राज्य है। यह वर्तमान (उद्धार और सेवा में) और भविष्य (व्यापक और सामर्थ्य में) दोनों हैं। प्रकाशितवाक्य, यदि वह एक मसीहा के हजार वर्षों के शासन पर ध्यान देता है (प्रकाश.20) तो यह प्रारम्भिक है, अन्तिम नहीं (प्रकाश.21–22)। यह पुराने नियम से स्पष्ट नहीं हैं कि अल्पकालीन राज्य आवश्यक है, तथ्य यह है कि, दानि.7 का मसीहा का राज्य अनन्तकालीन है, न हजार वर्षों का।

छठा तनाव

अनेक विष्वासियों को यह सिखाया गया है कि यीशु जल्द, अचानक, और अनापेक्षित आनेवाला है (मत्ती 10:23; 24:27, 34, 44; मरकुस 9:1; 13:30)। परन्तु हर पीढ़ी अभी तक गलत रही है। यीशु की शीघ्रता हर पीढ़ी के लिए एक सामर्थ्यशाली वायदे की आशा है, पर यह केवल एक के लिए ही वास्तविक है (और वह एक सताये गये हैं)। विष्वासियों को ऐसे जीना है जैसे वह कल आने वाला है, महान आज्ञा को पूरा करने के लिए योजनायें और कार्य करना है जैसे कि वह विलम्भ कर रहा है (मत्ती 28:19–20)।

सुसमाचार (मरकुस 13:10; लूका 17:2; 18:8) और 1 थिस्स. और 2 थिस्स. में कुछ गधयांश विलम्भ हो रहे दूसरे आगमन (परूसिया) के बारे में बताते है। यहाँ कुछ ऐतिहासिक घटनायें हैं जिन्हें पहले पूरा होना है :

1. संसार भर को सुसमाचार सुनाना (मत्ती 24:15; मरकुस 13:10)।

2. 'पाप के पुरूष' का प्रगटिकरण (मत्ती 24:15; 2 थिस्लु.2; प्रकाश.)।

3. महान सताव (मत्ती 24:21, 24; प्रकाश.)

यहाँ पर उद्देश्यपूर्ण रहस्य है (मत्ती 24:42–51; मरकुस 13:32–36)। हर दिन इस प्रकार जीयें जैसे कि वह आपकी अन्तिम योजना हो और भविष्य की सेवकाई के लिए अपने आप को प्रशिक्षित करें।

<u>निरन्तरता और संतुलन</u>

यह बताना अनिवार्य है कि आधुनिक अन्तिम समय की व्याख्या के विभिन्न समूह सभी आधे सत्य को ही पेष करते हैं। वे कुछ गधयांशों को अच्छी तरह समझाते और उनकी व्याख्या भी करते हैं। समस्या निरन्तरता और संतुलन में है। अनेक बार कुछ पूर्वधारणायें होती हैं जो बाइबल के पदों का प्रयोग पूर्व–निर्धारित धर्मविज्ञानिक ढाँचे के खाली स्थानों को भरने के लिए करती हैं। बाइबल एक तर्किय, समयानुसार, क्रमानुसार अन्तिम समय विद्या को प्रगट नहीं करती है। यह एक परिवार की फोटो अलबम की तरह है। इसके चित्र सभी सही हैं, पर एक क्रम, संदर्भ, तर्किय श्रेणी के अनुसार नहीं। कुछेक तस्वीरें इस अलबम से गिर गई हैं। इस परिवार की पीढ़ी के बाद के सदस्य नहीं जानते कि किस प्रकार उन्हें वापस रखें। प्रकाशितवाक्य की सही व्याख्या की कुँजी मूल लेखक का उद्देश्य है जिस तरह उसके साहित्यिक प्रकार के चुनाव में है। अनेक व्याख्याकार नये नियम के अन्य प्रकारों से अपने अर्थनिरूपण के यंत्रों और तरीकों को प्रकाशितवाक्य की व्याख्या में लगाते हैं। वे यीशु और पौलुस की शिक्षाओं को धर्मविज्ञानिक ढाँचा को स्थापित करने और प्रकाशितवाक्य स्वयं् को समझाने की अनुमति देने के बदले में पुराने नियम पर ध्यान देते हैं।

मैं यह स्वीकार करता हुँ कि मैं इस टीका को भय और भक्ति से साथ लिखता हुँ, प्रकाश.22:18–19 के कारण नहीं, पर परमेश्वर के लोगों के बीच इस पुस्तक की व्याख्या ने जो विवाद उत्पन्न किया है। मैं परमेश्वर के प्रकाशन से प्रेम करता हुँ। यह सत्य है कि सारे मनुष्य पापी हैं (रोमी.3:4)। कृपया इस टीका का प्रयोग विचार को उत्साहित करने के लिए करें और निश्चियतात्मक तौर पर नहीं, एक चिन्ह स्तंभ के समान और एक रास्ते के मानचित्र के समान नहीं, 'क्या यदि' के तौर पर और 'परमेश्वर यूँ कहता हैं' के समान नहीं। मैने अपने ही अपर्याप्ता, पक्षपात और धर्मविज्ञानिक मुद्दों का सामना किया। मैंने दूसरे व्याख्याकारों को भी देखा है। ऐसा दिखाई पड़ता है कि लोग प्रकाशितवाक्य में वह पाते हैं जिसे वे पाने की अपेक्षा करतें हैं। इस साहित्यिक प्रकार ने अपने आप को शोशण के लिए दे दिया है। परन्तु यह बाइबल में एक उद्देश्य से है। उसके 'अन्तिम कथन' के रूप में रखा जाना एक संयोग नहीं है। इसमें परमेश्वर द्वारा उनकी संतान और हर पीढ़ी के लिए संदेश हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम समझें। आईए हम हाथों को मिलायें, समूहों को न बनायें; आईए हम जो स्पष्ट और केन्द्रिय है उसका दावा करें, सभी सही नहीं हो सकते। परमेश्वर हमारी सहायता करें।

प्रकाशितवाक्य की व्याख्या करने के लिए अपने ही तरीके की सूची के लिए इस स्थान का प्रयोग करें। हम सभी इस पुस्तक के प्रति अपने पक्षपतों को लायें। उनकी पहचान करने से उन्ही से विजय प्राप्त कर सकतें हैं और मताग्रही को कम कर सकते हैं।

1.

2.

3.

4.

प्रकाशितवाक्य

क) मेरी अधिक शैक्षनिक/धर्मविज्ञानिक जीवन में यह पूर्वधारणा रही है कि जो बाइबल पर विश्वास करते हैं वे उसे साहित्यिक तौर पर ही ले लेते हैं (और यह ऐतिहासिक वर्णन के लिए सत्य है)। परन्तु यह मुझे और स्पष्ट हुआ है कि भविष्यद्वाणी, कविता, दृष्टांत, और रहस्यमय साहित्य को साहित्यिक तौर पर लेना प्रेरित हुए गधयांश के मुख्य विशय से चूक जाना है। लेखक का उद्देश्य, न की साहित्यिकता, बाइबल को समझने की सही कुँजी है। बाइबल को उसके लेखक के उद्देश्य से अधिक कहलाना उतना ही गलत है जितना उसके लेखक के उद्देश्य से उससे कम कहलाना है। ध्यान का केन्द्र विस्तृत संदर्भ, ऐतिहासिक संदर्भ, और पद में प्रगट हुए लेखक का उद्देश्य है और उसी प्रकार का चुनाव है। साहित्यिक प्रकार लेखक और पाठक के बीच एक साहित्यिक समझौता है। इस भेद से चूक जाना वास्तव में गलत व्याख्या की ओर ले जाता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में सही है, पर ऐतिहासिक वर्णन नहीं है, साहित्यिक तौर पर लेने के लिए नहीं है। यह प्रकार स्वयं इस विशय को बता रहा है कि हमें केवल सुनना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यह प्रेरित नहीं है, या सही नहीं है; यह केवल रूपकात्मक, रहस्यमय, प्रतिकात्मक, और विचारशील है।

ख) प्रकाशितवाक्य एक विशेश यहूदी साहित्यिक प्रकार है, रहस्यमय। यह कई बार तनाव भरे समय में प्रयोग किया जाता था इस आसवाशन को दिखाने के लिए कि इतिहास परमेश्वर के नियंत्रण में है और अपने लोगों का उद्धार करेंगे। इस प्रकार के साहित्य की यही विषेशता होती है :

1) परमेश्वर की सनातनता के बारे में एक दृढ़ विश्वास (एक–ईश्वरवाद और निश्चियतावाद)।

2) अच्छाई और बुराई के बीच एक संघर्ष, इस युग और आने वाले युग में (दैतवाद)।

3) रहस्यमय कूट शब्द का प्रयोग (सामान्य तौर पर पुराने नियम से या अन्तरनियम यहूदी रहस्यमय साहित्य से)।

4) रंग, संख्या, जानवर, कई बार जानवर/मनुष्य का प्रयोग।

5) दर्शनों और सपनों के द्वारा स्वर्गदूतों की मध्यस्थता का प्रयोग, पर सामान्य तौर पर स्वर्गदूतों की मध्यस्थता के द्वारा।

6) प्राथिमक तौर पर अन्तिम समय पर केन्द्रित है।

7) एक विषेश निधारित चिन्हों के समूह का प्रयोग, वास्तविक नहीं, अन्तिम समय के संदेश के संप्रेक्षण के लिए।

8) कुछ इस प्रकार के साहित्य प्रकारों का उदाहरण :

क) पुराना नियम

1) यशा.24–27, 56–66

2) यहेज.37–48

3) दानिय्येल 7–12

4) योएल 2:28–3:21

5) जकर्याह 1–6, 12–14

ख) नया नियम

1) मत्ती 24, मरकुस 13, लूका 21, और 1 कुरि.15 (कुछ तरीकों से)

2) 2 थिस्लु. 2 (कई तरीकों से)

3) प्रकाषितवाक्य (अध्याय 4–22)

9) अनियमीकरण

(ड़ि. एस. रस्सल, द मैथड एण्ड मैसेज ऑफ द ज्यूइस अपोकालिप्टीक, पृश्ठ 37–38)

क) 1 हानोक, 2 हानोक (हानोक का रहस्य)

ख) जूबलीस की पुस्तक

ग) सिबलाईन भविश्यद्वाणियाँ 3, 4, 5

घ) बारह पित्रों का नियम

ङ) सुलेमान के भजन

च) मूसा की धारणायें

छ) यशायाह का शाहीद होना

ज) मूसा का रहस्यमय लेख (आदम और हव्वा का जीवन)

झ) अब्रहाम का रहस्यमय लेख

ञ) अब्रहाम का नियम

प) 2 एसद्रास (4 एसद्रास)

फ) बारूक 2, 3

ग) यहाँ रहस्यमय लेखों को कभी मौखिक तौर पर प्रस्तुत नहीं किया गया था। वे उच्च रचित, साहित्यिक कार्य थे। ढाँचा इसकी सही व्याख्या के लिए बहुत ही गम्भीर है। प्रकाशितवाक्य पुस्तक के निर्धारित ढाँचे का भाग सात मुहरें हैं। हर चक्र के साथ न्याय बढ़ता रहता है : मुहरें, 1/4 विनाश, तुरहियाँ, 1/3 विनाश; धूपदान, पूर्ण विनाश। हर चक्र के अन्त में मसीह का दूसरा आगमन होता है, मुहरें, 6:12–17; तुरहियाँ, 11:15–18; धूपदान, 19:1–21। यह इस बात को दिखाता है कि यह पुस्तक समय के आधार पर क्रमानुसार नहीं है परन्तु अनेक अंशों का एक नाटक है जो एक ही समय काल को तीन प्रगतीशील प्रचंड पुराने नियम के न्याय के उद्देश्य के रूप में पहले देखती है।

यहाँ पर सात साहित्यिक अंश और एक प्राक्कथन और अन्तिम कथन है :

1) 1:1–8 (प्राक्कथन)

2) 1:9–3:22

3) 4:1–8:1

4) 8:2–11:19

5) 12:1–14:20

6) 15:1–16:21

7) 17:1–19:21

8) 20:1–22:5

9) 22:6–21 (अन्तिम कथन)

यह स्पष्ट है कि संख्या 'सात' पुस्तक के ढाँचे में एक अन्यधिक कार्य करती है जिसे सात कलीसियायें, सात मुहरें, सात तुरहियाँ, और सात धूपदान से देखा जा सकता है। 'सात' के अन्य उदाहरण :

1. सात दीवटें, 1:12

2. सात परमेश्वर की आत्मायें, 1:4; 3:1; 4:5; 5:6

3. सात तारे, 1:20;2:1

4. सात गरजते शब्द, 10:3

5. सात धन्य वचन, 1:3; 14:13; 16:15; 19:9

6. सात राजा, 17:10

7. सात विपत्तियाँ, 21:9

8. सात जानवरों के साथ सम्बन्धित

   क. सात सिंह... सात आँखें, 5:6

   ख. सात सिर... सात राजमुकुट, 12:3; 13:1

   ग. सात सिंहोंवाले पशु पर बैठी स्त्री, 17:3, 7, 9

   घ. सात पर्वतों पर बैठी स्त्री, 17:9

घ) इस पुस्तक की व्याख्या को धर्मविज्ञानिक पक्षपात का अधिक शिकार होने की सम्भावन है। किसी एक की पुर्नधारणा रहस्य बातों की व्याख्या की ओर ले जा सकती है। यह धर्मविज्ञानिक पुर्नधारणायें अनेक स्तरों में कार्य करती हैं :

1. <u>चिन्हों की उत्पत्ति</u>

   क. पुराने नियम की ओर संकेत

      1. पुराने नियम के विषय जैसे सृष्टि, मनुष्य का पापी हो जाना, जल–प्रलय, निर्गमन, पुर्नस्थापित यरूशलेम

      2. अन्तरनियम का यहूदी साहित्य (हानोक, बारूक, सिबिलाईन भविश्यद्वाणियाँ, 2 एसद्रास)

      3. पहली षताब्दी का ग्रिको–रोमी संसार

      4. प्राचीन निकटिय पुर्वीय ब्रहमाण्ड की रचना का वर्णन (विषेशकर प्रकाश.12)

2. <u>पुस्तक की समय रूपरेखा</u>

   क. पहली षताब्दी

   ख. हर षताब्दी

   ग. आखरी पीढ़ी

3. <u>क्रमानुसार धर्मविज्ञानिक ढाँचा</u>

   क. सहस्त्रवर्षीय

   ख. सहस्त्रवर्ष के बाद

   ग. पूर्व–सहस्त्रवर्षीय

घ. ईश्वरीय पूर्व–सहस्त्रवर्षीय

व्याख्या को मोडने (व्याख्या करने के विभिन्न तरीके) और असिद्ध मताग्रहि (सब कुछ जानने का स्वभाव) के प्रकाश में किस प्रकार एक व्याख्याकार को आगे बड़ना है? पहला, हमें यह स्वीकार करना है कि आधुनिक पाश्चातय मसीही लोग साहित्य प्रकार को नहीं जानते हैं और उस ऐतिहासिक संकेतों को नहीं पहचानते हैं जो पहली षताब्दी के मसीही लोग तुरन्त समझ जाते। दूसरा, हमें यह स्वीकार करना है कि हर पीढ़ी के मसीहियों ने प्रकाशितवाक्य को अपने व्यक्तिगत ऐतिहासिक संदर्भ में घुसेड़ा और सभी अब तक गलत रहे हैं। तीसरा, हम धर्मविज्ञानिक प्रणालियों को पढ़ने के बदले पहले बाइबल पढ़े। हर दर्शन/भविश्यद्वाणी के साहित्यिक संदर्भ को देखने की कोशिश करें और मुख्य सत्य को एक घोषित वाक्य में बतायें। हर पीढ़ी के मसीहियों के लिए मुख्य सत्य वही होगा जिसके विवरण की स्पष्टता केवल पहले और/या अन्तिम पीढ़ी के मसीहियों के लिए ही महत्वपूर्ण होगी। विवरण महत्वपूर्ण होगें, पर इतिहास, धर्मविज्ञान नहीं, जो उनके उद्देश्य को दिखाता है। चौथा, हम इस बात का ध्यान रखें कि यह पुस्तक प्राथमिक तौर पर अविश्वासियों द्वारा सताव सह रहे विश्वासियों की विश्वासयोग्यता के लिए एक सांत्वना और उत्साह का संदेश है। यह पुस्तक हर पीढ़ी के मसीही के उत्साह के लिए नहीं है, न ही अन्त के समय की घटनाओं के विपरीत रूपरेखा देती है। पाँचवा, यह दावा करना सही होगा कि पापमय मानव समाज परमेश्वर के राज्य के साथ टकराव के मार्ग में है। पहले ऐसे लगता है कि संसार ने जित लिया है (कलवारी के समान), पर रूकें; परमेश्वर सनातन हैं, इतिहास, जीवन और मृत्यु उनके नियंत्रण में है। उनके लोग उनमें जयवन्त हैं।

ङ) व्याख्या की कठिनता और अनिश्चिता के होने पर भी, इस पुस्तक का एक संदेश है और परमेश्वर से अपने लोगों के लिए हर युग में प्रेरित वचन है। इस अद्भुत पुस्तक का अध्यन करने के लिए कुछ और कोशिश सराहनीय है। नये नियम का नियमाधीन इसके स्थानिय मुख्य संदेश के बारे में बताता है। प्रकाशितवाक्य पर एक संक्षिप्त टीका में एलन जोंसन कहतें हैं, 'सही में, ऐसा हो सकता है कि, सुसमाचारों को छोड़, रहस्यमय लेख में मसीही सिद्धान्त और शिष्यत्व पर अत्याधिक और छू देनेवाली शिक्षा है जो पूरे नये नियम में कहीं नहीं हैं। कुछ लोगों का कट्टरवाद जिन्होंने अपने ध्यान को मसीह के बदले भविश्यद्वाणी में केन्द्रित किया है, न कि व्याख्या के भिन्न दृष्टि बिन्दू मसीही सत्य को इस अद्भुत तरह से अनुकरण करने के लिए निरउत्साहित किया' (पृश्ठ 9)।

स्मरण रखें कि यह कलीसिया के लिए यीशु के अन्तिम वचन हैं। आधुनिक कलीसिया इसका त्याग न करे। परमेश्वर की सनातनता (एक–ईश्वरवाद), दुष्ट की वास्तविकता (सीमित दैतवाद), पाप की निरन्तर परिणाम (मानव विरोध), और मानवजाति के छुटकारे के लिए परमेश्वर के वायदे (सशर्त वाचा, देखें, उत्पत्ति 3:15; 12:1–3; निर्ग.19:5–6; यूहन्ना.3:16; 2 कुरि.5:21) के प्रकाश में यह सताव और संघर्ष के लिए विश्वासियों को तैयार करने के लिए है।

2. <u>लेखक</u>

क. यूहन्ना प्रेरित के कृतित्व का आन्तरिक प्रमाण।

1. लेखक ने अपने आप को चार बार यूहन्ना बताया है (1:1, 4, 9; 22:8)

2. उसने अपने आप को इन नामों से भी बुलाया है :

क. एक दास (1:1; 22:6)

ख. क्लेश में एक भाई और सहभागी (1:19)

ग. एक भविष्यद्वक्ता (22:9), और अपने पुस्तक को एक भविश्यद्वाणी कहा है (1:3; 22:7, 10, 18, 19)।

ख. प्रारम्भिक मसीही लेखकों से यूहन्ना प्रेरित के कृतित्व के बाहरी प्रमाण।

1. <u>यूहन्ना प्रेरित, जब्दी का पुत्र</u>

क. जस्टिन मार्टिर (रोम. 250 ई0) ''डायलॉग वीद ट्रायफो 81'' में।

ख. इरेनियूस (लियोंस) अगेन्सट हेरसीस–4:14:2; 17:6; 21:3; 5:16:1; 28:2; 30:3; 34:6; 35:2

ग. तरतुल्यन (उत्तरी अफरिका) अगेन्सट प्राक्सीस 27 में

ङ. ऑरिगन (सिकंदरिया) में

- ऑन द सोल, 50:8:1
- अगेन्सट मारसीयन, 2:5
- अगेन्सट हेरेटीक्स, 3:14, 25
- अगेन्सट सेलसस, 6:6, 32; 7:17

च. मुर्रोटोरियों की नियमाधीनकरण (रोम से 180–200 ई0)

2. अन्य प्रत्याशी

क. यूहन्ना मरकुस – यह पहले डयोनिसियुस, सिकंदरिया का बिशप (247–264 ई0), द्वारा बाताया गया जिसने यूहन्ना प्रेरित के कृतित्व का इन्कार किया पर इस कार्य को नियमाधीन मानता था। उनसे अपने इन्कार को शब्दभण्ड़ार, और शैली और यूहन्ना के अन्य लेखों की गुमनाम स्वभाव पर किया। उसने कैसिरिया के यूसेबियूस को भी आसवाशित किया।

ख. प्राचीन यूहन्ना – पापियास से यूसेबियूस में उद्धृत से आता है। परन्तु, पापियास की उद्धृति ने सम्भवतः प्रेरित यूहन्ना के लिए कुछ और लेखक का दावा करने के बदले इस शीर्षक का प्रयोग किया।

ग. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला – (कुछ बाद के सम्पादन कार्य के साथ)

जे. मेस्सिनबर्डि फोंड़ के द्वारा एंखर बाइबल टीका में बताया गया है, प्राथमिक तौर पर यीशु के लिए 'मेम्ना' शब्द के प्रयोग के आधार पर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को लेखक बताया गया है, यह शीर्षक प्रकाशितवाक्य में भी पाया जाता है।

ग. डियोनिसियूस, सिकंदरिया का बिशप (247–264 ई0), इन बातों के आधार पर यूहन्ना प्रेरित के कृतित्व के बारे में सबसे पहले संदेह व्यक्त करने वाला था (उसकी पुस्तक खो गयी है मगर यूसेबियूस के कैसिरिया द्वारा उसे उद्धृत किया गया है, जो उसके साथ सहमत था) :

1. यूहन्ना प्रेरित अपने सुसमाचार और पत्रियों में अपने आप को यूहन्ना नहीं बताता है, पर प्रकाशितवाक्य ''यूहन्ना'' से है।

2. प्रकाशितवाक्य का ढाँचा सुसमाचार और पत्रियों से भिन्न है।

3. प्रकाशितवाक्य का शब्दभण्डार सुसमाचार और पत्रियों से भिन्न है।

4. प्रकाशितवाक्य की व्याकरण शैली सुसमाचार और पत्रियों से कम स्तर की है।

घ. सम्भवतः प्रेरित यूहन्ना के कृतित्व को गम्भीर आधुनिक चुनौति आर. एच. चार्ल्स की सेन्ट जॉन, भाग 1 पृश्ठ 39 से आगे से आती है।

ङ. अधिकत्तर आधुनिक विद्वानों ने कई नये नियम की पुस्तकों की पारम्परिक कृतित्व का इन्कार किया है। इस धारा से सम्बन्धित एक अच्छा उदाहरण रेमण्ड़ ई. ब्राउन, एक सुपरिचित कैथलिक यूहन्ना पाठ के विद्वान। एंकर बाइबल टीका का परिचय इस प्रकार कहता है, ''एक यहूदी मसीही भविष्यद्वक्ता के द्वारा लिखा गया जिसका नाम यूहन्ना था जो न यूहन्ना, जब्दी का पुत्र, न ही यूहन्ना के सुसमाचार या पत्रियों का लेखक था'' (पृष्ठ 774)।

च. कई तरीकों से कृतित्व अनिश्चित है। प्रेरित यूहन्ना के अन्य लेखों के साथ चकित करनेवाली समानतायें और भिन्नतायें भी हैं। इस पुस्तक की समझ इसके मानवीय लेखक में नहीं है, पर इसके दिव्य लेखक में हैं। लेखक का विश्वास था कि वह एक प्रेरित भविष्यद्वक्ता है (देखें,1:3; 22:7, 10, 18, 19)।

3. तारीख

क. यह घनिष्ठता से निश्चित कृतित्व से सम्बन्धित है।

ख. कुछ सम्भावित तारीखें :

1. पारम्परिक तारीख ड़ोमिश्यिन के शासन के दौरन है (81–96 ई0) क्योंकि यह सातव के आन्तरिक प्रमाणों से सही बैठती है।

क. इरेनियूस (यूसेबियूस के द्वारा उद्धृत) अगेन्सट हेरसीस, भाग 30:3 में कहते हैं, ''यह (सताव) बहुत पहले देखा नहीं गया था, करीब हमारी पीढ़ी में, ड़ोमिश्यिन के शासन के अन्त में''।

ख. सिकंदरिया के क्लेमेंट

ग. सिकंदरिया के ऑरिगन

घ. कैसिरिया के यूसेबियूस, कलीसिया का इतिहास, 3.23:1

ङ. विटोरिनुस, रहस्यम लेख. 10:11

च. जेरोम

2. इपिफुनियूस, एक तीसरी षताब्दी का लेखक, हारे 51:12,32 में कहतें हैं कि यूहन्ना ने पतमुस से अपने रीहा होने के बाद क्लौदियुस के शासन के दौरान लिखा (41–54 ई0)।

3. कुछ अन्यों ने इन कारणों के कारण निरो के शासन (54–68 ई0) की धारणा की :

क. सम्राट आराधना की सताव की स्पष्ट पृष्टभूमि

ख. कैसर निरो, इब्रानी में लिखा जायें तो 666 के बराबर है जो उस पशु के संख्या के बराबर है।

4. स्त्रोतागण

क. 1:4 से स्पष्ट है कि मूल स्त्रोतागण आसिया के रोमी प्रांत की सात कलीसियाएं थी। इन कलीसियाओं को इस तरह सम्बोधित किया गया है जैसे कि यह इस पत्र को ले जानेवाले की यात्रा के मार्ग का वर्णन हो।

ख. प्रकाशितवाक्य का संदेश सभी कलीसियाओं और विश्वासियों से विषेशतौर पर सम्बन्धित है जो एक पापमय संसार के विचारों से सताव का अनुभव कर रहे थे।

ग. नये नियम के नियमीकरण के समापन के तौर पर यह पुस्तक सभी युग के सभी विश्वासियों के लिए एक पूर्णता का संदेश है।

5. प्रसंग

क. संदर्भ सताव था, जो स्थानिय कलीसिया को यहूदी मत को दिए गए रोमी सरकारी सुरक्षा से अलग होने के कारण था। यह अलगाव अधिकारिक तौर पर 70 ई0 में हुआ जब जामनिया से रब्बियों ने एक व्यक्ति को नियुक्त किया जिसने स्थानिय यहूदी आराधनालय के सदस्यों को यीशु नासरी को श्रापित करने की मांग रखी।

ख. रोमी दस्तावेज संकेत करते हैं कि निरो के शासन (54–68 ई0) से ड़ोमिश्यिन (81–96 ई0) तक सम्राट की आराधना कलीसिया के साथ एक गम्भीर संघर्ष बन गई थी। परन्तु एक अधिकारिक तौर पर पूरे सम्राज्य भर के सताव का प्रलेखन नहीं था। जैसे दिखाई पड़ता है प्रकाशितवाक्य रोमी सम्राज्य के पूर्वी प्रान्त में स्थानिय सम्राट आराधना की आधिक्य को प्रतिबिम्बित करता है (देखें, बीबलीकल आर्कियोलौजी रीव्यू, मई/जून 1993, पृश्ठ 29–37)।

6. वाक्यरचना

क. युनानी मूल पाठ में व्याकरण की अनेक समस्यायें हैं।

ख. इन समस्याओं के कुछ सम्भावित कारण :

1. यूहन्ना की आरामी भाषा के विचार की रीति।

2. पतमुस में उसके पास लिखने के लिए कोई शास्त्री नहीं था।

3. दर्शनों के उत्साह अधिक हावी हो जोने वाले थे।

4. वे प्रभाव के लिए उद्देश्यपूर्ण है।

5. यह साहित्यिक प्रकार (रहस्यमय) अधिक रूपकात्मक है।

ग. समान्य व्याकरण के प्रकृति वैशिष्ट्य अन्य यहूदी रहस्यमय लेखों में भी पाये जाते हैं।

7. नियमीकरण

क. यह पूर्वी कलीसिया के द्वारा प्रारम्भ में ही इन्कार किया गया था; यह पुस्तक पेशित्त (5वीं षताब्दी के सिरियायी अनुवाद) में नहीं है।

ख. प्रारम्भिक 5वीं षताब्दी में यूसेबियूस ने, तीसरी षताब्दी में सिकंदरिया के ड़ियोनिश्यिूस का अनुकरण करते हुए, कहा कि प्रकाशितवाक्य प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखा नहीं गया था। उसने इसकी सूची विवादिय पुस्तकों की सूची में रखी थी पर अपने नियमीकरण की सूची में सम्मिलित किया (देखें, एक्ले. हीस. 3:24:18; 3:25:4; 3:39:6)।

ग. लौदिकिया की महासभा (360 ई0) ने इसे नियमाधीन पुस्तकों की सूची से हाटा दिया था। जेरोम ने नियमीकरण से इसका इन्कार किया पर कार्थेज की महासभा (397 ई0) ने इसे सम्मिलित किया। प्रकाशितवाक्य को पूर्वी कलीसिया की वकालत के द्वारा एक शर्त में सम्मिलित किया जिसमें इब्रानियों की पुस्तक भी थी (जो पाश्चात्य कलीसिया द्वारा वकालत किया गया था)।

घ. यह हमें स्वीकार करना है कि यह विष्वासियों की पुर्नधारणा है कि पवित्र आत्मा ने मसीही नियमीकरण में सम्मिलित करने की ऐतिहासिक प्रक्रिया का निर्देशन किया।

ङ. प्रोटेस्टेंट अंदोलन के दो मुख्य धर्मविज्ञानिकों ने मसीही सिद्धांत में इसके स्थान का इन्कार किया।

1. मार्टिन लूथर ने इसे न भविश्यद्वाणी या प्रेरित बताया, एक अर्थ में इसके प्रेरित होने का इन्कार किया।

2. जॉन केलविन, जिन्होंने नये नियम की हर पुस्तक पर टीका लिखी प्रकाशितवाक्य के अलावा, एक अर्थ में इसके महत्व का इन्कार किया।

8. व्याख्या के ऐतिहासिक सिद्धान्त

क. यह व्याख्या करने हेतु अधिक कठिन रही है; इसलिए मताग्रहि सही नहीं हैं।

ख. चिन्हों को इनसे लिया गया है :

1. पुराने नियम के रहस्यमय गधयांश

क. दानिय्येल

ख. यहेजकेल

ग. जर्कयाह

घ. यशायाह

2. अन्तरनियम का यहूदी रहस्यमय साहित्य

3. पहली षताब्दी के ग्रिको–रोमी ऐतिहासिक संदर्भ (विषेशकर प्रकाश.17)

4. सृष्टि के वर्णन की प्राचीन निकट पूर्वी कथा कहानियाँ। (विषेशकर प्रकाश.12)

ग. समान्य तौर पर व्याख्या की चार मुख्य धारायें हैं :

1. अतीतवादी – यह समूह इस पुस्तक को प्राथमिक या विषेश तौर पर पहली षताब्दी की आसिया के रोमी प्रान्त की कलीसियाओं से सम्बन्धित देखता है।

2. इतिहासवादी – यह समूह इस पुस्तक को इतिहास की रूपरेखा के तौर पर देखता है, प्रथमिकता से पाश्चातिय सभ्यता और कुछ अर्थों में रोमन कैथोलिक कलीसिया की। कई बार अध्याय 2 और 3 की सात कलीसियाओं की पत्रियों का प्रयोग कुछ निश्चित समय काल के वर्णन के लिए किया जाता था। कुछ लोग इसे अल्पकालीन तुल्यकालीक और अन्य लोग समयविद्या के तौर पर क्रमानुसार देखते हैं।

3. भविष्यवादी – यह समूह इस पुस्तक को मसीह के दूसरे आगमन से तुरन्त पहले की घटनाओं की ओर संकेत करती हुई देखते हैं जो साहित्यिक और ऐतिहासिक तौर पर पूरी हो गयी है।

4. विचारवादी – यह समूह इस पुस्तक को पूर्ण तौर पर अच्छे और बुरे के बीच के संघर्ष के चिन्ह के तौर पर देखता है जिसका कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं है।

इन सब का कुछ मूल्य है, पर वे सभी यूहन्ना के चुनाव के प्रकार और रूपकों की उद्देश्यपूर्ण अनिश्चितता से चूक जाते हैं। समस्या संतुलन की है, न की कौन सी सही है।

9) पुस्तक का उद्देश्य

क. प्रकाशितवाक्य का उद्देश्य इतिहास में परमेश्वर की सनातनता और उसमें सभी वस्तुओं की पूर्णता के वायदे को दिखाना है। विश्वासियों को इस पापमय संसार की प्रणाली के सताव और विद्रोह के मध्य में भी विश्वासयोग्य और आशा के साथ रहना है। इस पुस्तक का ध्यान पहली षताब्दी और हर षताब्दी के विष्वासियों का सताव और विश्वासयोग्यता पर है। स्मरण करें कि भविष्यद्वक्ताओं ने वर्तमान को सही करने के लिए भविष्य के बारे में बोला। प्रकाशितवाक्य केवल अन्त कैसे होगा के बारे में नहीं है, पर कैसे चल रहा है के बारे में भी है। द एक्सपोसीटरस बाइबल कॉमेन्ट्री, भाग–1 जिसका शीर्षक ''बाइबल की अन्तिम समय की विद्या'' है, रोबर्ट एल. सेनसी कहते हैं, ''बाइबल के भविष्यद्वक्ता प्राथमिकता से भविष्य के घटनाओं का समय और समयविद्या के क्रमानुसार होने की चिंता नहीं करते थे। उनके लिए उनके समयकालीन लोगों के आत्मिक स्थर अधिक प्रमुख थे और परमेश्वर के महान अन्तिम समय में अधर्मियों के न्याय और पवित्र लोगों की आशीष के लिए आने को वर्तमान में नैतिक प्रभाव के लिए बीच में रखते थे'' (पृष्ठ 104)।

ख. टि. इ. वि और एन. जे. बि के अनुवादों के संक्षिप्त परिचयों में इसका साधारण उद्देश्य का संक्षिप्त रूप है।

1. टि. इ. वि, पृष्ठ 1122, ''यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य तब लिखा गया जब मसीही लोगों को यीशु मसीह को प्रभु विश्वास करने के लिए सताया जा रहा था। लेखक का मुख्य उद्देश्य अपने पाठकों को आशा और उत्साह देना है, और उन्हें पीड़ा और सताव के समय में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करना था।''

2. एन. जि. बि, पृष्ठ 1416, ''बाइबल इस पुस्तक की आशा का संदेश और धनी प्रतिकात्मिकता में संक्षेपित है। यह परमेश्वर के लोगों पर आनेवाली परिक्षाओं से छुटकारे का दर्शन और एक महिमामय भविष्य का वायदा है। इसका संदेश रूपकों से वर्णित है जो पूरे बाइबल से लिया गया है, ताकि पुराने नियम से सुपरिचित एक व्यक्ति के लिए हर विषेशता, पशु, रंग, संख्या, उस पाठक के लिए उद्बोध करनेवाला और अधिछवि करने वाला हो। इस तरीके से यह आनेवाली चीज़ों के बारे में एक रहस्य और संकेत करनेवाला प्रकाशन है, हालांकि आराधना के महान कार्य का स्वभाविक चित्रण और नये पवित्र नगर के मसीहा की महिमा का अन्तिम दर्शन स्पष्ट है। यहूदी मत में दानिय्येल से इस प्रकार के लेखों की परम्परा रही थी, परिणामस्वरूप छुटकारा और विजय के आसवासन के साथ सताव में परमेश्वर के लोगों को बल प्रदान करने के लिए।

ग. यह प्रमुख है कि व्याख्याकार छुटकारे के विषय को महत्व दें।

1. परमेश्वर मसीह द्वारा व्यक्तिगत, सामूहिक, और ब्रम्हाण्ड का उद्धार लाए।

2. परमेश्वर का छुटकारा आत्मिक और शारीरिक है। कलीसिया बचाई गयी है पर सूरक्षित नहीं है। एक दिन वह हो जाएगी।

3. परमेश्वर अब भी पापमय, विद्रोही, स्व–केन्द्रित मानवजाति से प्रेम करते हैं। मुहरों और तुरहियों में परमेश्वर का क्रोध छुटकारे के लिए है (9:20–21; 14:6–7; 16:9, 11; 21:7; 22:17)

4. परमेश्वर न केवल पापमय मानव को पुनः स्थापित करते हैं, पर पापमय सृष्टि को भी। हरेक स्तर की बुराई निकाली जायेगी।

घ. इस पुस्तक को दूसरे आगमन की घटनाओं, समयों, और तरीकों की समयविद्या के चित्रण के रूप में नहीं देखना है। इसकी व्याख्या पाश्चातय इतिहास के लिए अनेक बार 'रहस्य' के तौर पर की गई है। हर पीढ़ी ने अपने इतिहासों को रहस्यमय लेखों के चिन्हों में जबरन डाला है; हरेक अब तक गलत रहा है।

इन भविश्यद्वाणियों का विवरण मसीह विरोधी के अधिन में सताव को सह रहे अन्तिम विष्वासियों की पीढ़ी को स्पष्ट होगा। इस पुस्तक की साहित्यिक व्याख्या ने कुछ लोगों के द्वारा इसका इन्कार करने (केलविन), कम मूल्यांकन करने (लूथर 'न प्रेरित या न भविश्यद्वाणी'), और कुछ अन्यों (सहस्त्राब्दीवादी) के द्वारा अधिक महत्व दिये जाने का कारण बना दिया है।

10. व्याख्या करने के लिए बोब की कुँजी

क. हमे यहूदी पृष्टभूमि पर ध्यान देना है।

1. पुराने नियम का रहस्यमय साहित्यिक प्रकार एक उच्च प्रतिकात्मक साहित्यिक प्रकार है।

2. पुराने नियम से अनेक संकेतों को लिया गया है (404 वचनों मे से 275 पुराने नियम की ओर संकेत करते है); इन चिन्हों के अर्थों की पुनः व्याख्या पहली षताब्दी रोमी परिस्थिति के अनुसार की गई है।

3. भविश्यद्वाणी का पूर्वसंकेत वर्तमान घटनाओं को अन्तिम घटनाओं के पूर्व संकेत की ओर ले जाता है। कई बार यह पहली षताब्दी की ऐतिहासिक पुर्णतायें अन्तिम समय की ऐतिहासिक पूर्णताओं की ओर संकेत करती हैं।

ख. इस पुस्तक का सम्पूर्ण ढाँचा लेखक के उद्देश्यों को देखने में सहायता करता है।

1. मुहरें, तुरहियाँ, और धूपदान एक समान समय काल को प्रगट करता है। प्रकाशितवाक्य क्रमानुसार अंशों का नाटक है।

2. अल्पकालीन मसीहा का शासन पिता के अनन्त राज्य से पहले है (देखें, 1 कुरि.15:26–28)। स्वर्गीय राज्य पृथ्वी के राज्य को पीछे छोड़ देता है।

ग. पुस्तक की किसी भी व्याख्या में उसके ऐतिहासिक संदर्भ पर ध्यान देना अवश्य है।

1. सम्राट आराधना की उपस्थिति।

2. पूर्वी प्रान्त में स्थानिय सताव।

3. बाइबल उस अर्थ को नहीं बता सकती जो अर्थ उसने कभी नहीं रखा था। प्रकाशितवाक्य की व्याख्या को यूहन्ना के पहले दिन से सम्बन्धित करना। उसकी अनेक पूर्णतायें या महत्व हो सकते हैं, पर उन्हें मूल पाठ और पहली षताब्दी के समय से देखना होगा।

घ. कुछ गुप्त शब्दों का अर्थ हमारी संस्कृति, भाषा और वास्तविक संदर्भ के कारण खो गए हैं। सम्भवतः अन्तिम समय की घटनायें स्वयं इन चिन्हों की सही व्याख्या पर प्रकाश डालेगी । ध्यान दें कि इस रहस्यमय भविश्यद्वाणी के सभी विवरणों को त्याग न दें। आधुनिक व्याख्याकारों को हर एक दर्शन के मुख्य सत्य को खोजना है।

ङ. कुछ मुख्य व्याख्या की कुँजीयों को संक्षिप्त में बताता हुँ।

1. प्रतीकवाद की ऐतिहासिक उत्पत्ति

क. पुराने नियम के कई विषय

ख. पुराने नियम की ओर संकेत

ग. अन्तरनियमों का रहस्यमय साहित्य

घ. पहली षताब्दी का ग्रिको–रोमी संदर्भ

2. अपनी प्रतीकवाद की परिभाषा देने का लेखक का तरीका।

क. स्वर्गदूतों की सहायता से वार्तालाप

ख. स्वर्गीय गायकों का गीत

ग. लेखक स्वयं् अर्थ को बताते हुये

3. पुस्तक का ढाँचा (विषेशकर मुहरों, तुरहियों और धूपदानों के बीच की समान्नतरतायें)

च. <u>अत्याधिक सहायता</u>

1. प्रकाशितवाक्य पर मेरे दो प्रिय टीकाकार जोर्ज ऐलदन लेड़ और ऐलन एफ. जोनसन हैं। भक्तिपूर्ण, शिक्षित, विश्वासयोग्य विद्वानों के बीच इतनी अधिक असहमती है कि चौकन्ना रहने की अवश्यकता है। मैं ऐलन जोनसन की उनकी पुस्तक कॉमेन्ट्री ऑन रेवलेषन को उद्धृत करना चाहुँगा :

''प्रकाशितवाक्य के अन्त तक अध्याय 4:1 से लिए गए रूपकों और दर्शनों के विस्तृत प्रयोग और यह सवाल कि यह चीज़ें किस प्रकार अध्याय 1–3 से सम्बन्धित हैं की दृष्टि में, यह आष्चर्य की बात नहीं है कि टीकाकार इन अध्यायों के विवेचन में अधिक भिन्न हैं। एक समस्या व्याख्या की है : इन रूपकों और दर्शनों का क्या अर्थ है? दूसरी समस्या समय विद्या की है : यह चीज़ें कब होंगी? इससे अधिक यह सवाल है कि क्या यूहन्ना अपने द्वारा निरन्तर प्रयोग किए गए पुराने नियम के रूपकों की व्याख्या उनके पुराने नियम की स्त्रोतों के अनुसार ही करता है, या वह स्वतंत्रता से इनकी पुनः व्याख्या करता है? इनमें क्या प्रतीकात्मक है और क्या साहित्यिक है? इन सवालों का उत्तर व्याख्याकार के तरीके को निश्चित करेगा। क्योंकि इनमें से कुछ सवाल मताग्रहि उत्तरों के योग्य है, यहाँ पर भिन्न प्रकार के तरीकों को सहने की अवश्यकता है इस आशा में कि आत्मा स्वतंत्र–मन की चर्चा के प्रयोग से हमें रहस्यमय लेखों के अर्थों में और आगे ले चलें।'' (पृष्ठ 69)

2. प्रकाशितवाक्य के पुराने नियम से सम्बन्ध के सामान्य परिचय के लिए, मैं जॉन पी. मेलटन की प्रोफेसी इनटरप्रेटिड और जॉन ब्राईट की द अथोरीटी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट को पढ़ने की सिफ़ारिस करूँगा। प्रकाशितवाक्य के पौलुस से सम्बन्ध के लिए मैं जेमस् एस. स्टिवार्ट की ए मैन इन क्राइस्ट की सिफ़ारिस करूँगा।

11. <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु शब्द और वाक्य खण्ड़</u>

1. वे बातें जिनका शीघ्र होना है, दिखाएं, 1:1, 3

2. बादलों के साथ आनेवाला है, 1:7

3. आमीन, 1:7

4. अल्फ़ा और ओमेगा, 1:8

5. उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी, 1:16

6. मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ, 1:18

7. अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है, 2:4

8. जो जय पायेगा, 2:7

9. जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, 2:7

10. शैतान की सभा, 2:9, 3:9

11. दूसरी मृत्यु, 2:11

12. शैतान की गहरी बातें, 2:24

13. जीवन की पुस्तक, 3:5

14. दाऊद की कुंजी, 3:7

15. नया यरूशलेम, 3:12

16. मैं आत्मा में आ गया, 4:2

17. काँच का सा समुद्र, 4:6

18. एक पुस्तक, 5:1

19. सात मुहरें, 5:1

20. मानो एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा था, 5:6

21. सात सींग और सात आँखें, 5:6

22. महाक्लेश, 7:14

23. सोने का धूपदान, 8:3

24. कुण्ड़, 9:2

25. हाल्लिलूय्याह, 19:1

26. मेम्ने के विवाह के भोज, 19:9

27. परमेश्वर की भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड़ में दाख, 19:9

28. हजार वर्ष के लिए बाँध दिया गया, 20:2

29. नया यरूशलेम, 21:2

30. भोर का चमकता हुआ तारा, 22:16

12. <u>संक्षिप्त में पहचानने हेतु व्यक्ति</u>

1. अपने स्वर्गदूत के द्वारा बताया, 1:1

2. यूहन्ना, 1:1

3. सात आत्माओं, 1:4

4. सर्वशक्तिमान, 1:8

5. 1:12–16 में कौन वर्णित है? यह वर्णन कहाँ से आता है?

6. नीकुलइयों, 2:6, 15

7. इजेबेल, 2:20

8. प्राचीन, 4:4, 10

9. यहूदा के गोत्र का वह सिंह, 5:5

10. एक स्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिये हुए है, 6:2

11. वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा जो...वध किये गये थे, 6:9

12. माथे पर मुहर, 7:3

13. बड़ी भीड़, 7:9

14. स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता, 9:1

15. एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत, 10:1

16. दो गवाहों, 11:3

17. एक स्त्री, 12:1

18. एक बड़ा लाल अजगर, 12:3

19. एक बेटा, एक बच्चा, 12:5

20. एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, 13:1

21. एक और पशु को पृथ्वी पर से निकलते देखा, 13:11

22. बेबीलोन, 14:8

23. बड़ी वेश्या, 17:1

24. एक स्वेत घोड़ा और उस पर एक सवार, 19:11

25. गोग और मागोग, 20:8

13. मानचित्र पर ध्यान देने वाले स्थान

1. पतमुस, 1:9

2. इफिसुस, 1:11

3. स्मुरना, 1:11

4. पिरगमुन, 1:11

5. थुआतीरा, 1:18

6. फिलदिलफिया, 3:11

7. लौदीकिया, 3:14

8. सिय्योन पहाड़, 14:1

14. चर्चा के प्रश्न

1. प्रकाशितवाक्य का साहित्यिक प्रकार कौन सा है? इसके विषेशण बतायें।

2. अध्याय 2 और 3 में सात कलीसियाओं का वर्णन क्यों हैं?

3. पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती क्यों पीटेंगें? (1:7)

4. अध्याय 1 की सारी कलीसियाओं की सूची दें।

5. इसका क्या अर्थ है कि यीशु एक कलीसिया की दीवट को उसके स्थान से हटा देगें? (2:5)

6. इन सात कलीसियाओं के संदेशों में पाई जाने वाली सामान्य वस्तुओं की सूची दें।

7. अध्याय 4–5 का संदर्भ क्या है?

8. सात मुहरें, सात तुरहियाँ, और सात धूपदानों के बीच क्या सम्बन्ध है?

9. अध्याय 6 के सात घुड़ सवार कौन हैं? यह रूपक कहाँ से आता है?

10. 144,000 कौन है? यहूदी गोत्रों की सूची सही क्यों नहीं है?

11. न्याय क्यों मुहरों में 1/4 से तुरहियों में 1/3 बढ़ जाती है, ताकि धूपदानों में विनाश पूर्ण हो जाता है?

12. 9:13–19 में 200,000,000 की सेना किसकी ओर संकेत करती है?

13. 12:7–10 में स्वर्ग में युद्ध का वर्णन दें।

14. परमेश्वर क्यों पशु को सन्तों से युद्ध करने की आज्ञा देते हैं? (13:7)

15. पशु मसीह की नकल कैसे करता है?

16. पहले पुनरूत्थान के भागी कौन होंगे? (2:4–6) दूसरे पुनरूत्थान के भागी कौन होगें?

17. 22:3 का महत्व क्या है?

18. 22:5, 20:4 से कैसे सम्बन्धित है?

19. 22:18–19 को अपने शब्दों में समझाएं।

20. प्रकाशितवाक्य का मुख्य विषय क्या है?